गुरु जम्भेश्वर जी की दृष्टि में विष्णु का वैदिक स्वरूप

जगन्नियन्ता, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वशक्तिमान, परमपिता के असंख्य नाम गुणवत्ता के आधार पर वर्णित किये जाते हैं। जिस समय जिस गुण को ध्यान में रखकर परमात्मा का वंदन किया है उस समय उसी गुणवत्ता के साथ परमेश्वर का नाम लिया जाता है। जब हम न्याय की परम सत्ता के रूप में ईश्वर को पुकारते हैं तो वह सदा न्यायकारी के रूप में माना जाता है, जब हम किसी बात को घट जाने के बाद जानते हैं, तो वह कैसे घटी, क्यों घटी। उसकी सत्यता को हम पूर्णतः नहीं जानते हैं तो सम्पूर्ण रूप में जानता है जिससे बढ़कर और कोई साक्षी नहीं हो सकता उस समय हम परमात्मा को सर्वज्ञ के रूप में याद करते हैं। जिस समय अपने भी हमें बिलखते हुए छोड़कर मुख मोड़ लेते हैं उस समय हम केवल परमात्मा की ही शरण लेकर उसको दया करने के लिए पुकारते हुए दयालुरूप से उसका स्मरण करते हैं। इसी प्रकार से जब हम परमात्मा को कण-कण वासी कहते हैं, हर जगह उसकी सत्ता को स्वीकार करते हैं तथा एक-एक वस्तु के पालक के रूप में उसे स्वीकार करते हुए उसको महान-से-महान तथा अणु-से-अणु स्वीकार करते हैं तो उसकी सर्वव्यापकता को प्रकट करने के लिए परमात्मा को एक नाम विष्णु लिया जाता है- **''वेवेष्टि सर्वान् पदार्थान् व्याप्नोतीतिविष्णुः''** अर्थात् जगत के प्रत्येक कण-कण में जिसका वास है तथा जो दृष्ट और अदृष्ट का पालन करने वाला है उसी को विष्णु कहते हैं।

गुरुवर जम्भेश्वर जी ने परमात्मा के विष्णु नाम को अधिक महत्व दिया है। उन्होंने विष्णु की परम सत्ता को स्वीकारते हुए मानव समाज को उद्‌बोधन दिया है कि हे मनुष्य तू अल्पज्ञ है तथा तेरी शक्ति सीमित है। इसलिए कण-कण वासी सर्वशक्तिमान विष्णु से वैर करना या उसकी परम सत्ता के विषय में सर्वव्यापकता के विषय में वाद या विवाद नहीं करना चाहिए क्योंकि जो परमसिद्ध है तथा स्वयम्भू परमेश्वर विष्णु है उसके विषय में किसी प्रकार शंका करना अपनी हानि करना है क्योंकि जिन जीवों ने अविद्या, अज्ञान, अंधकार से आवृत्त होकर परम विष्णु की अवहेलना करके अपने आपको सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रतिष्ठित करने का दुःसाहस किया। वे देखते ही देखते परम सत्ता विष्णु के कोपभाजन होकर नष्ट हो गये तथा उनका नाम संसार में अपयश के रूप में लिया गया। वेद में कहा है कि **'मा प्रगाम पथावयम् मा यज्ञाद्'** अर्थात् हम कभी विष्णु रूप यज्ञ के मार्ग से विचलित न हो। विष्णु रूप यज्ञ से विचलित होने पर हमारे अंदर आसुरी प्रवृत्तियों का उदय होगा तथा

धीरे-धीरे हम दैव वृत्ति से दूर होकर (अर्थात् देवताओं से दूर जाकर) दैत्यवृत्ति के वशीभूत होकर दानव होकर दैत्य वर्ग में प्रविष्ट हो जाएंगे। इस वेद वाणी के मर्म को गुरुवर जम्भेश्वर जी ने इस प्रकार कहा है- **राय विष्णु से वाद न कीजे काय वधारो दैत्य कुलूं।** मनुष्य जिसके सम्पर्क में रहता है उसके गुण दोषों का उस पर प्रभाव अवश्य पड़ता है क्योंकि कहा भी है कि-

हीयते हि मतिस्तात हीनैः सहसमागमात्।
समैश्च समतामेति विशिष्टैश्च विशिष्टताम्॥

दुराचारी के साथ दुर्बुद्धि का उदय होता है समान गुण वालों के साथ गुणों में समता बनी रहती है। विशिष्ट गुण वालों के साथ रहने से विशिष्ट गुणों का समावेश हमारे जीवन में होता है। जिस समय विशिष्ट जनों के साथ रहता हुआ व्यक्ति भगवान विष्णु का गुणगान करने संकीर्तन करने में लगता है तो वह सामान्य प्राणी न रहकर विष्णु का भक्त बनकर विशेष अवस्था वाला हो जाता है क्योंकि जल से सम्पर्क होने पर आर्द्रता तथा अग्नि से सम्पर्क होने पर उष्णता का आना स्वाभाविक है। इसलिए गुरुवर जम्भेश्वर जी ने बड़े सरल शब्दों में उपदेश दिया है कि '**विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी, विष्णु भणन्ता अनन्त गुणूं** (शब्द ६७)' वेद में मानव जीवन को उन्नत करने के लिए संदेश देते हुए कहा है कि हे मनुष्य तू जिस शरीर पर मन पर अपने अभ्युदय पर तथा अपने अबाध गति पर अहंकार के मद में उन्मत्त होकर शुद्ध विचारों से दूर हो जाता है और शनैः शनैः महान दुःख के सागर में डूबने लगता है। तुझे जानना चाहिए कि तेरी कंचन जैसी काया एक दिन समाप्त हो जायेगी तथा तेरी अबाध गति ऐसी अवरूद्ध होगी कि एक पग भी चलना असम्भव सा लगेगा। इसी संदेश को वेद में निम्न प्रकार कहा गया है-

तव शरीरं पतयिष्णवर्वन्तव चित्तं वात इव ध्रजीमान्।
तव शृङ्गणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति॥ यजु० २९, २२

समय-समय पर युग पुरुष महा प्रचेता के रूप में अवतीर्ण होकर मानव मात्र के कल्याण के लिए उपदेश देकर कहते हैं कि हे मनुष्य तूने उत्तम देव कोटि का शरीर धारण किया है। इससे अच्छे काम करते हुए धर्म का आचरण करते हुए परमात्मा भजन करने में मन को लगाकर मानव जीवन को सार्थक कर। वेद में भी यही संदेश मिलता है-

उप प्रागाच्छसनं वाज्यर्वा देवद्रीचा मनसा दीध्यानः।
अजः पुरो नीयते नाभिरस्यानु पश्चात् कवयो यन्ति रेभाः॥
यजु० २९, २३

गुरुवर जम्भेश्वर जी ने मानव जीवन को सफल करने वाले इस शाश्वत वैदिक संदेश को अपनी शब्द वाणी में अत्यन्त सरल तथा सहज रूप में कहा है-

लोहि मास विकारो होयसी मूर्ख फिरे अभागो॥
काय रे प्राणी विष्णु न जंप्यो। सबद-६९

वेद में विष्णु की सर्व व्यापकता को बताते हुए कहा है कि पृथ्वी, अंतरिक्ष तथा द्युलोक में वह विष्णु व्याप्त हो रहा है। पृथ्वी स्थानीय 11 देवों में अंतरिक्ष स्थानीय 11 देवताओं में द्युलोकीय 11 देवताओं में भगवान विष्णु की सत्ता निहित है। उसकी परम सत्ता का कोई अतिक्रमण नहीं कर सकता। सभी देवता शक्तिशाली होकर उसी की प्रेरणा से हमारी रक्षा करते हैं। हे मनुष्यों ! तुम विष्णु की सत्ता का जगत् के एक-एक कण में अनुभव करो ऐसा करने वाले जीव का सखा बनकर वह हर क्षण संरक्षक बनता है। प्रकाश के पुत्र बुद्धिमान होकर उस परम विष्णु के परं स्वरूप को संसार की हर रचना में देखकर आनन्द को अनुभव करते है। क्योंकि हर वस्तु का निर्माता वही है। उसी अनुपम शक्ति से सामर्थ्य से संसार का प्रत्येक पदार्थ निर्मित है। विष्णु के भजन भक्ति के प्रियतम मार्ग का जो अनुसरण करते हैं वे दिव्य भावों के ऐश्वर्य को प्राप्त होकर उस आनंद को प्राप्त करते हैं। जिसे देवता सदा अनुभव करते हैं। ये भाव वेद के निम्न मन्त्रों में अभिस्यूत है-

अतो देवा अवन्तु नो यता विष्णुर्विचक्रमे।
पृथित्वाः सप्त धामभिः। ऋक्, १, २२,१६
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा विदधे पदम्।
समूढ़महमस्य पांसुरे॥ ऋ १, २२, १७
त्रीणी पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः।
अतो धर्माणि धारयन्॥ ऋक् १,२२, १८
विष्णोः कर्माणि पश्यततो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा॥ ऋक् १,२२, १९
तद् विष्णोः पदमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्॥ ऋक् १,२२, २०

गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है कि जो मनुष्य विष्णु का भजन या जाप नहीं करता है, वह संसार में प्रशंसा नहीं, निन्दा को प्राप्त करता है। उसका जन्म निरर्थक होकर उन योनियों में जाता है जो निम्न कही जाती हैं। शब्दवाणी इस प्रकार है-

बिम्वै वेला विष्णु न जप्यो ताते बहुत भई कसवारुं॥
जा जन मन्त्र विष्णु न जप्यो ते नर कुवरण कालूं॥
जा जन मन्त्र विष्णु न जप्यो ते नगरे कीर कहारुं॥
जा जन मन्त्र विष्णु न जप्यो कांध सहै दुःख भारुं॥
जा जन मन्त्र विष्णु न जप्यो ते घणतण करे अहारूं॥

जा जन मन्त्र विष्णु न जप्या लोही मांस विकारू॥
जा जन मन्त्र विष्णु न जप्या गाडर सहरे सूवर जन्म जन्म अवतारुं॥ १३
विष्णु विष्णु भज अजर जरीजै यह जीवन का मूलूं॥ १५

गुरु जम्भेश्वर जी ने प्रातःकाल को बिम्बै वेला कहा है जिसको शास्त्रों में ब्राह्म वेला कहा गया है। ब्रह्म वेला का अर्थ विष्णु के भजन एवं संकीर्तन तथा ध्यान करने से है। इसी को शास्त्र तथा वेद इस प्रकार कहते हैं'

नतिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यस्तु पश्चिमाम्।
स शूद्रवद् बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः॥मनु. २,१०३
नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्रया नमो दिवा॥ अथर्व० ११, २,१६
उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावहस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥ ऋक् १,१,७

केवल शब्द विद्या को वेदों में ज्ञान नहीं कहा है क्योंकि ज्ञान के बिना कैवल्य (मोक्ष) की प्राप्ति संभव नहीं है। अतः परमात्मा का ज्ञान करना उसकी उपासना तदनुसार आचरण करना ही ज्ञान कहलाता है। जो व्यक्ति केवल शब्द जगत में रमता हुआ परमात्मा के आनन्द को प्राप्त करना चाहता है, यह उसका भ्रम है। परं विष्णु के स्मरण के बिना उसके ज्ञान केवल ऋचा के पढ़ने मात्र से मोक्षानन्द की उपलब्धता संभव नहीं है। अतएव वेद भगवान कहते हैं–

ऋचोऽक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधिविश्वेनिषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत् तद्विदुस्त इमे सामसते॥
ऋक् १,१६, ४,२९

गीता में भी कहा गया है कि शुद्ध ज्ञानी जन सात्विक वृत्ति के होते हैं। वे पर प्रकाश युक्त विष्णु का स्तवन यज्ञ के द्वारा करते हैं। राजसी वृत्ति के लोग यक्ष तथा राक्षसों का स्तवन करते हैं तथा तामसी वृत्ति वाले प्रेत भूतगणों का स्तवन करते हैं यथा–

यजन्ते सात्त्विका देवान् यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः॥ गीता

महाभारत में भी कहा है कि आचरण हीन मनुष्य परमात्मा की उपासना न करने वाला होकर निरर्थक जीवन जीता है। यथा–

आचार हीनं न पुनन्ति वेदाः, यद्यप्यधीताः सह षड्भिरङ्गैः।
च्छन्दांस्येनं मृत्युकाले त्यजन्ति, नीडं शकुन्ता इव जात पक्षाः॥ महाभारत

गुरुवर जम्भेश्वर जी ने भी यही कहा है कि केवल वेद पुराणों के पढ़ने मात्र से जीवन सार्थक नहीं होता है। परमात्मा की भक्ति के बिना पढ़े हुए शास्त्र

केवल भार बनकर रह जाते हैं।

कायरे प्राणी विष्णु न जंप्यो।
कीयो कंधै को तांणौ॥ शब्द ६९
वार महूर्ता पोथा थोथा।
पुस्तक पढ़िया वेद पुराणों॥
भूत परेती कांय जपीजै।
यह पाखण्ड परमाणो॥ शब्द ६९
ओ३म् विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी जो मन मानै रे भाई॥ शब्द ६७
हिरदै नाम विष्णु का जंपो। हाथे करो टवाई॥ शब्द ६७
भूला प्राणी विष्णु जंपोरे। ज्यूं मौत टलै जिरवाणो॥ शब्द ६८
ओ३म विष्णु विष्णु भण अजर जरीजै।
धर्म हुवै पापां छूटीजै॥ शब्द १०२
जोय जोय नांव विष्णु के दीजै।
अनंत गुणा लिख लीजै॥ शब्द १०३
विष्णु कूं दोष किसोरे प्राणी।
आपे रवता कमाणी॥ शब्द ११०

वेदों में परं सत्तावान् विष्णु की उपासना धर्मपरायणजन ही करते हैं। वह जिसको तारना चाहते हैं उसका मन बुद्धि वैसा ही कर देते हैं। धर्मात्मा की दृष्टि में परं विष्णु का स्थान सर्वोपरि होता है। धर्मात्मा जानता है कि चर अचर का निर्माता तथा उसमें बसने वाला विष्णु ही है। अतः उसका नाम पुकारता है।

विष्णु उरुक्रम है कोई भी उसका उल्लंघन नहीं कर सकता है। विष्णु समस्त भुवनों को जानता है। वह समस्त देवों का अधिदेव है। वह सुखों का सागर है। उसी की उपासना से प्राणी सुख का अनुभव करते हैं। जो विष्णु का उपासक होता है उसकी रक्षा वह स्वयं करता है तथा जो उसका निंदक होकर उससे वैर करने लगता है वह देखते ही देखते समूल नष्ट होता है। वेद में निम्न मंत्रों में विष्णु की महिमा का वर्णन है–

तद् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते।
विष्योर्यत् परमं पदम्॥ ऋक् १,१२२,२१
विष्णोर्नु कं नीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिनानि विममे रजांसि।
योऽस्कमायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः॥ ऋक् १,५,४,१
यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वध्यामदन्ति।
य उत्रिधातु पृथिवीमुत द्योमेको दाधार भुवनानि विश्वा॥ ऋक् १,५,४,४

तदस्य प्रियमभि पाथे अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ॥ ऋक् १,१५४,५
विष्णुं स्तोमास पुरुदस्ममर्का भगस्येव कारिणो यामनिग्मन्।
उरुक्रम ककुहो यस्य पूर्वी र्न मर्धन्ति युवतयो जनित्रीः ॥ ऋक् ३, १५४,१४
विष्णुर्गोपा परमं पाति पाथः प्रिया धामान्यमृता दधानः।
अग्निष्टा विश्वा भुवनानि वेद मदद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ऋक् ३,५५,१०
विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा
आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु मे॥ ऋक् १०, १८४,१
विष्णुरित्था परमस्य विद्वाञ्जातो वृहन्नभि पाति तृतीयम्।
आ सा यदस्य पथो अक्रत स्वं स सचेतसो अभ्यर्चन्त्यत्र॥ ऋक् १०, १,३

निखिल शास्त्रों के तत्त्वभूत पुराणों के निर्माता भगवान वेद व्यास को आधार मानकर कहा गया है कि विष्णु का गुणगान न करने वाला व्यक्ति जघन्य की श्रेणी को प्राप्त होता है।

केचिद् वदन्ति धनहीन जनो जघन्यः,
केचिद् वदन्ति गुणहीन जनो जघन्यः,
व्यासो वदत्यखिलशास्त्रगिरां प्रणेता,
नारायण स्मरणहीन जनो जघन्यः॥

एक संस्कृत के उत्कृष्ट कवि ने कहा है कि करोड़ों काम छोड़कर हरि विष्णु का भजन करना श्रेष्ठ कार्य है। खाना अच्छा है परंतु स्नान उससे अच्छा, स्नान अच्छा है परंतु दान देना उससे अच्छा, दान देना अच्छा है परंतु विष्णु भजन सबसे अच्छा है। जैसे कि–

शतं विहाय भोक्तव्यं सहस्रं स्नानामाचरेत्।
लक्षं विहाय दातव्यं कोटिं त्यक्त्वा हरि भजेत्॥

अर्थात् सौ काम त्यागकर भोजन करे, हजार काम त्याग कर स्नान करें, लाखों काम त्याग कर दान देवें और करोड़ों काम त्याग कर विष्णु का भजन करना परम कर्तव्य है।

वैदिक मन्त्रों के आधार पर गुरुवर जम्भेश्वर जी ने जो विष्णु महत्त्व को दर्शाया है वह सहज ज्ञान की अनुभूति है। उसी आत्मानुभव के आधार पर उपदेश देते हुए हैं–

ओ३म् विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी।
इस जीवन कै हावै॥
क्षण क्षण आव घटंती जावै।
मरण दिनो दिन आवै॥ शब्द १२०
ओ३म् विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी।

पैंके लाख उपाजूं॥

रतनकाया वैकुण्ठे वासो तेरा जरा मरण भय भाजूं॥ शब्द ११९

विष्णु अजंप्या जन्म अकारथ॥ शब्द २७

जंपो विष्णु न दोय दिल करणी।

जंपो विष्णु न निन्दा करणी॥ शब्द २३

भूलै प्राणी विष्णु न जंप्यो मूल न खोज्यो।

फिर फिर जोया डालूं ॥ शब्द ३१

विष्णु जपंता जीभ जू थाकै।

तो जीभड़िया विन सरियूं॥ शब्द ३४

नाम विष्णु कै मुसकल घातै ते काफर सैतानी॥ शब्द ५०

श्री जम्भेश्वर जी ने पुराण साहित्य का भी वर्णन किया है। उन्होंने '**विष्णु पुराणे॥ बिंबा बाणे सूर उगाणे। विष्णु बिवाणे कृष्ण पुराणे॥**' शब्द ५४ में कहकर विष्णु जी के महत्त्व के पुराण साहित्य से संपुष्ट किया है। एक स्थान पर वेद में कहा है कि परमात्मा का गुणगान जब-जब किया जाता है तो मनुष्य के गुणों में वृद्धि होती है। वह ही उसकी अनश्वर दैवी सम्पदा होती है क्योंकि वह अक्षय्य विष्णु सर्वव्यापक की आनन्द सम्पदा है।

कदु प्रचतसेमहे वचो देवाय शस्यते।

तद् इद्ध्यस्य वर्धनम्॥ सामवेद

इसी अर्थ को अपनी वाणी के उपदेश द्वारा इस प्रकार कहा गया है-

जोय जोय नाम विष्णु कै बीजै।

अनन्त गुणा लिख लीजैं॥ शब्द ५३

विष्णु विष्णु भण लई न साई।

सुर नर ब्रह्मा को न गाई॥ शब्द ६४

जो नर भगवान विष्णु के भक्त होकर रहते हैं वे ही नर सर्वव्यापक विष्णु के स्वरूप को जानते हैं और मानते हैं। परमात्मा यज्ञ रूप है एक स्थान पर कहा गया है यज्ञ रूप परमात्मा में समग्र ज्ञान तथा जानने योग्य समस्त ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ है। यज्ञ को एक स्थान पर विष्णु रूप में जाना गया है। यज्ञो वै विष्णु अर्थात् यह यज्ञ विष्णु रूप है। यज्ञ भी विष्णु की तरह समस्त जगत में व्यापक होकर विद्यमान है जो सर्वत्र विद्यमान वह विष्णु है।

वेद में यज्ञाग्नि के अधिष्ठाता विष्णु स्वरूपाग्नि से प्रार्थना करता हुआ भक्त कहता है कि हे अग्ने! तुम निरन्तर जागते हो मेरे प्रत्यक्ष परोक्ष कर्म को आप सर्वज्ञ होकर सदा जागते हुए जानते हो, मेरे रक्षक आप ही हो। अतः मुझे सोते हुए

को जगाकर शुभ कर्म में प्रवृत्त करो। मैं सदा आपके नाम स्मरण में और उपासना भक्ति कर्म में जागता रहूं, जिससे मेरा जीवन सफल हो सके–

अग्ने त्वं सुजागृहि वयं सुमन्दिषीमहि।

रक्षाणो प्रयच्छन् प्रबुधे नः पुनस्कृधि॥ यजु० ४. १४

वेद के इन मन्त्रों के आत्मभूत अर्थों को मानव जगत के अल्पज्ञ मनुष्यों को सुख देने, ज्ञान देने, शुभ कर्म में प्रवृत्त करने, यज्ञादि अनुष्ठान करने, विष्णु की भक्ति करने, दुष्कर्मों से बचने, परमानन्द प्राप्त करने तथा मानव चोले को सार्थक करने हेतु अपनी जनभाषा में परम मुक्त ज्ञान के महार्णव परमपिता के परम उपासक तपः पूत परमपावन जन–जन के संतापहारक गुरुवर जम्भेश्वर जी ने जम्भवाणी के माध्यम से जो उपदेश दिये वे मानव जगत में सर्वदा ग्राह्य, मान्य, अनुपालनीय, अनुकरणीय, अनुभवनीय, तथा निरंतर संकीर्तनीय रहेंगे।

महामहोपाध्याय प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री
पूर्व कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

सबदवाणी : अपरंपर वाणी

गुरु जाम्भोजी की वाणी अपरंपर है अर्थात् परंपरा से प्राप्त ज्ञान धारा से विलग है। ऐसा अनेकश: सबदों में कहा गया है। यह वाणी अगोचर अर्थात् संसार में दृष्टिगोचर होने वाले विषयों को ही अवगत नहीं कराती है किन्तु अलौकिक आत्मा परमात्मा ईश्वर ब्रह्म के बारे में बताने वाली है। यह अगोचर वाणी कहां से सिखी है ? इसके बारे में बतलाया है कि म्हे 'सरहै' यानि किसी पाठशाला में बैठकर यह वाणी प्राप्त नहीं की है किन्तु **''निरत सुरत सब जाणी''** अर्थात् संसार सागर के विषयों से निरत-विरक्त होकर, ब्रह्म से एकाकार सुरति-वृति से सभी कुछ जान लिया है।

अन्यत्र दूसरे शब्दों में कहते हैं कि गुरु के मुख से निसृत अनुभवी वाणी धर्म का बखान करती है। धर्म क्या है और अधर्म क्या है इसका निर्णय सबद श्री वायक ब्रह्म महा वाक्यों द्वारा होता है ऐसी ही गुरुदेव के मुखारविंद से निसृत तत्व महारस का आस्वादन कराने वाली यह सबदवाणी हैं ऐसे गुरु के शब्द असंख्य जिज्ञासुओं को प्रबुद्ध करने वाले हैं। गुरु के सबदों का उच्चारण कर्ता दोनों ही प्रसन्नचित हो जायेंगे 'शब्दों के अर्थ ग्रहण करने की योग्यता आ सकेगी और अपने जीवन को कृतार्थ कर सकेंगे।

गुरू जाम्भोजी ने कहा है कि मेरे सबद ही वेदों का व्याख्यान है। जो कण तत्व को बताने वाले हैं। जिससे ज्ञान की प्राप्ति हो सके तत्व का अन्वेषण हो सके वही वेद-ज्ञान है। इस मरु भाषा रूपी घट में अमृत रूपी ज्ञान भरा हुआ है सभी के लिये यह अमृत पेय सुलभ हैं कहां वेद कुराण कुमाया जाल में भटकोगे। खोजी होकर शब्दों में ही खोये तो जीवन जीने की कला और युक्ति मुक्ति सहज ही में प्राप्य है **''शब्दे शब्द समाई''** शब्द ब्रह्म में समाहित होकर गुरु महाराज कहते हैं कि ये शब्द मैंने उच्चारित किये हैं। यह अद्‌भुत वाणी उस शब्द-ब्रह्म से ही निसृत हुई है। यह किसी वेद शास्त्रों की नकल नहीं है इसलिये अपरंपर वाणी है। शब्द ही ब्रह्म हैं क्योंकि शब्द आकाश का गुण है आकाश सर्वत्र व्यापक है तो उसका गुण भी गुणी आकाश के साथ ही रहेगा इसलिये तो इस समय हम कही अनंत दूर उच्चारण किया हुआ शब्द यहां ग्रहण श्रवण कर लेते हैं। आधुनिक यंत्र शब्द को ग्रहण करने की क्षमता रखता है हमारे प्रकृति से प्राप्त कर्ण भी शब्द ग्रहण करते हैं किन्तु सीमित दूरी तक ही कर पाते हैं ब्रह्म तत्व शब्द की प्राप्ति, ज्ञान, ध्यान, नाद, वेद से ही हो सकती है।

गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है कि गीता नाद है, यह कोई काल्पनिक कविता नहीं है ''अर्जुन पूछी हरि कहिनै, सो संवाद संभाल'' उसी प्रकार गुरु जाम्भोजी ने

भी शब्दों का उच्चारण अर्जुन की तरह जिज्ञासुओं के पूछने पर किया था। वह नाद कृष्ण गीता है यह नाद जम्भगीता है वहां पर महाभारत युद्ध था यहां पर संसार सागर था 'वहां अर्जुन मोहमाया के पंक में लिप्त था यहां पर भी संसार के प्राणी अज्ञानता के पंक में लिप्त होकर संसार सागर में डूब रहे थे। उन्हें बचाने के लिये उनको पथ दिखाने के लिये ''सबद ''श्रीवायक'' का उच्चारण हुआ था।

अधिकांश विद्वान व्यास आदि शास्त्रों का व्याख्यान तो करते हैं किन्तु जैसा कहते हैं वैसा करते नहीं हैं। कथनी और करणी में अन्तर होने से कुछ भी वक्ता एवं श्रोता को लाभ होता नहीं है इसलिये जाम्भोजी ने कहा दो मन दो दिल से कार्य नहीं हो सकेगा। ''**पहले क्रिया आप कमाइये तो औरा नै फरमाइये**'' वेद शास्त्रों को कण्ठस्थ करके दूसरों को कहना यह तो केवल जानकारी मात्र है इसे ज्ञान नहीं कह सकते इसलिए कहा है **काजी कथै कुराणै, न चीन्हौ फरमाणो'' बल बल भणत व्यासू''।**

संसार में अनेकों प्रकार की दंत कथाएं प्रचलित हैं और अनेकों शास्त्र शब्दों का भण्डार है। उन्हें कोई कण्ठस्थ भी करले दूसरों को समझा भी दे ''**क्यूं क्यूं भणता क्यूं-क्यूं सुणता, समझ विना कुछ सिद्धि न पाई**'' किन्तु जब तक स्वयं के समझ में यानि अनुभूति में नहीं आयेगी तो कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकेगा समझ में आ जाना ही वस्तुतः ज्ञान है।

आदि में तो एक शब्द ब्रह्म ही था वह एक ओ३म् के रूप में अनहद वाणी ही था। सम्पूर्ण सृष्टि की प्रलयावस्था में भी एक अनहद – नाद वाणी ब्रह्म ओंकार ही रहता है। उसी ब्रह्म से ''**एकोअहं बहुस्याम् प्रजायेय**'' एक से अनेक हो जाऊं प्रजा के रूप में वही से सृष्टि की सृजना प्रारम्भ होती है इसलिये इस सृष्टि का मूल एक ब्रह्म ओंकार ही है वही विष्णु है। वही मूल तत्व है जिसे खोजने का आदेश गुरु महाराज ने अपनी अपरंपर वाणी द्वारा दिया है।

भगवान विष्णु के नौ अवतार परंपरा से हैं 'किन्तु जाम्भोजी कहते हैं कि मैं तो ''**शेष जम्भराय आप अपरंपर, अवल दिन से कहिये**'' इन नौ अवतारों का कार्य अवशिष्ट रह गया था उसे पूरा करने के लिये इन अवतारों की परंपरा से बाहर होकर आया हूं। मैं ही नहीं गोरख भी इसी प्रकार से अपरंपर है किन्तु यहां के काजी मुला, पढैया पंडित – गंवार लोग निंदा करते हैं यदि आप लोग गुरु का शब्द स्वीकार कर लो तो सहज ही में भवसागर से पार उतर जाओगे। गुरु जी कहते हैं कि मैं सच्ची अनुभूत बात ही कहता हूं किसी की सुनी सुनाई या पढ़ी पढ़ाई बात नहीं कहता क्योंकि मैंने धूर की खोज की है।

''मैं बाचा दई प्रहलाद सूं, सुचेलो गुरु लाजै'' प्रहलाद सतयुग में हुआ था, उस समय गुरु महाराज कहते हैं कि मैंने नृसिंह रूप में प्रहलाद को वचन दिया था।

उस वचन को पूरा करने के लिये मैं यहां पर आया हूं उन बारह करोड़ प्रहलाद के अनुयायी यहीं इस समय जीवन जी रहे हैं उनको पथ पर लाकर उनका उद्धार करने के लिये मेरा यहां पर ''**सुर नर तणो संदेशो आयो**'' सुर और नर दोनों संयुक्त रूप में मेरा यहां थलसिर आना हुआ है" मैं अपना कार्य पूर्ण करके वापिस इस आलौकिक शरीर को छोड़कर चला जाऊंगा अधिक दिन नहीं ठहरूंगा। ''**सतगुरु मिलियो सतपंथ बतायो**'' आप लोगों को सतगुरु मिला है और सतपंथ बताया है भ्रान्ति मिटाई है। हे लोगो! सावधान हो जाओ। यह अनादि पंथ है इसी पंथ पर चलते हुए सतयुग में प्रहलाद पांच करोड़ का उद्धार कर्ता हुआ। त्रेता में हरिश्चन्द्र सात करोड़ और द्वापर में युधिष्ठिर नौ करोड़ का उद्धार कर्ता हुआ। इस समय वही पंथ आप लोगों को बताया है और यह सनातन पंथ आगे भी चलता रहेगा। इस पर चलकर मानव युक्ति मुक्ति को प्राप्त करते रहेंगे।

''**अबजू मण्डल भई अवाजू, म्हे सून्य मण्डल का राजूं**'' वेद गीता और सबदवाणी अवजूं मण्डल की आवाज है। यह अवजू मण्डल क्या है ? जहां पर नाद ध्वनि ब्रह्म ध्वनि होती है जहां पर किसी भी प्रकार की सांसारिक ध्वनियां, विचारों का प्रवाह नहीं है ऐसे शुद्ध पवित्र संसार में एकाग्र वृति द्वारा उस शुद्ध पवित्र नित्य ध्वनि का श्रवण किया जाता है। ये वेद गीता जाम्भोजी की वाणी भी वहीं से उतरी है और श्रवणकर्ता जनों ने श्रवण किया है। उच्चारण तो ऋषियों कृष्ण एवं जाम्भोजी के मुखारबिन्द से हुई है किन्तु श्रवण जिज्ञासुओं ने किया है और आज हमारे पास यह अपरंपर वाणी आयी है। इसे हम ठीक उसी प्रकार से श्रद्धाभाव से उच्चारण करेंगे तो यह नाद ध्वनि हमारे अमृत के द्वार को खोल देगी। कहा भी है ''अमृत का फल एक मन रहिबा ''मेवा मिष्ट सुभायो।"

निर्विचार की स्थिति में ही अध्यात्म प्रसाद की प्राप्ति होती है। ''निर्विचार वैसारद्ये अध्यात्म प्रसादः'' गुरु महाराज कहते हैं कि मैं कभी भूलकर भी स्थूल व्यर्थ की बात नहीं बोलता। '**साथ सही मैं कूड़ न कहबा ''म्हे सून्य मंडल का राजू**'' हम तो शून्य मंडल के राजा हैं क्योंकि ''**कांयदा सिद्ध पुरी विश्रामलियो**'' कुछ समय ध्यानावस्था में सिद्धों की पुरी में विश्राम लेता हूं, वही हमारा असली घर है, यहां संसार में तो विचारों के तूफान चलते रहते हैं जो सुख से विश्राम करने ही नहीं देते हैं ऐसी अवस्था में आगन्तुक वाणी ही श्रीदेव जी कहते हैं कि यह मेरी अपरंपर वाणी है। प्रचलित जन्मे हुए जीवों का जप करना मेरी वाणी नहीं बतलाती है। जैसा आप लोग कुपंथ में पड़ गये हो यह कुपंथ तुम्हें अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंचने नहीं देगा। जीवन में भटकाव के कारण दुख ही रहेगा।

जाम्भोजी के सबद स्वतः ही प्रमाण है अन्य शास्त्रों से प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है कहा भी है ''शास्त्रे पुस्तके लिखणां न जाई'' अन्यत्र शास्त्रों में

ये बातें शायद ही आपको मिले इसलिये ''शब्दे शब्द समाई'' यही शब्दों द्वारा शब्द ब्रह्म में समाहित करके खोज करे तो तत्व की प्राप्ति होगी। इसलिये कहा जा सकता है कि जाम्भोजी की वाणी वास्तव में अलौकिक, अगोचर, शब्दवाणी, सबद श्री वायक''। शून्य मंडल से आयी हुई गुरु मुख धर्म बखाणी है।

उसी भाव से हम सस्वर उच्चारण करे तो अवश्य ही आलौकिक अमृत रस की प्राप्ति हो सकेगी। उच्चारण कर्ता और श्रोता दोनों ही कृतकृत्य हो जायेंगे यह बात मैं भी अपनी अनुभूति से कह रहा हूं मुझे यह प्राप्त हुआ है और हो रहा है आप भी करके देखिये ।। अस्तु।

❍ आचार्य कृष्णानन्द

विश्नोई मंदिर, ऋषिकेश उत्तराखण्ड

गुरू जांभोजी का अलौकिक व्यक्तित्व

गुरु जांभोजी -
अवतार - वि.सं. 1508, भादवा बदी अष्टमी, ग्राम पीपासर में
पंथ प्रवर्तन - वि.सं. 1542, कार्तिक बदी अष्टमी, समराथल धोरे पर
निर्वाण - वि.सं. 1593, मिगसर बदी नवमी, ग्राम लालासर में
- वर्ष सात बाललीला निरहारी
- वर्ष सताईस बहुधा धेनु चारी
- वर्ष इक्कावन ज्ञानोपदेश धर्मधारी
बाल-ग्वाल गुरू-ज्ञान, पूग्या सवा पिच्यासी।

गुरु शब्द का अर्थ है बड़ा, भारी, महान, सर्वोच्च, दिव्य। जांभाणी साहित्य में गुरू शब्द ईश्वर के लिए और सत्-गुरू शब्द जांभोजी के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

''गुरु चीन्हो गुरू चीन्ह पुरोहित।'' सबदवाणी- 1 तथा **''सत गुरू मिलिया सत-पंथ बतायौ।''** - स.वा. 23

गुरु जांभोजी ने अपने प्रथम सबद में ही यह स्पष्ट कर दिया कि वे परम पिता परमात्मा ईश्वर को पहचानते हैं और हम भी उन्हें जाने। उन्होनें अपने विषय में कहा कि वे सृष्टि, प्रलय और काल की सीमा से परे हैं। स्वयंभू हैं। उन्होंने अपने शरीर को अपने आप संवारा है। उनके आद मूल के रहस्य को, कोई नहीं जानता।

''आद अनाद तो हम रचीलो, हमें सिरजीललो सै कौण।'' सं.वा. 2 तथा कोई ना जाणत म्हारी आद मूल का भेवों।'' स.वा. 88

जब सर्वत्र धुंध ही धुंध छाई हुई थी। शून्य। महाशून्य। एक अकेला ब्रह्म। दूसरा कोई नहीं। न ध्वनि, न शब्द, न रूप। ऐसे में अनन्त-अनन्त युग बीत गये।

एकाएक विस्फोट हुआ। ब्रह्म का मन जागा। एक से अनेक बनूं। इच्छा क्रिया शास्ति। क्या? कैसे? ज्ञान पूर्व क्रिया परा। जगत् जागरण। संचरण - प्रति संचरण का क्रम प्रारम्भ।

''जुग छत्तीसों, शून्य ही बरत्या। सतजुग माँही सिरजी सारी।
ब्रह्मा, इन्द्र सकल जग थरप्या, किन्ही करामात केती बारी॥
चंद-सूर दोय साक्षी थरप्या।'' स.वा. 94

स्वयं ब्रह्म ने अपनी क्रिया शक्ति, प्रकृति, और ज्ञान शक्ति माया के द्वारा इस जीव-जगत संसार का रूप धारण किया। इसी का नाम लोक है तथा जो प्राणी एवं विषय इससे सम्बन्धित हैं, वे लौकिक और जो केवल एक अकेले ब्रह्म से सम्बन्धित हैं, वे सब अलौकिक।

''पांच, पच्चीस अस दस लखे। चार तीन अस दोय।

उनचासों का गर्म मिले, ज्ञान गोष्ठी तब होय।।''सा.ज.

इन उनचासों के रहस्यों को जान लेने पर ही, विचार-विमर्श का वातावरण बनता है। यह जगत का क्षेत्र है। लोक की सीमा रेखा है। इनसे जो भिन्न है, वह अलौकिक है। वह पुरुष-प्रकृति का भाग नहीं है। यद्यपि कपिल का सांख्या इसे लोक और अलौक दोनों मानता है, परंतु शंकर का अद्वैत इससे भिन्न है।

एकल वाई थल खड़ों।

जो अनन्त-अनन्त युगों तक, शून्य में खड़ा रहा, वही ब्रह्म, गुरू जांभोजी के रूप में अवतरित होकर, इस मरूधरा पर एक अकेला खड़ा है।

किसी के व्यक्तित्व का आधार उसका कृतित्व और सम्पूर्ण जीवन-वृत रहता है। इस परिप्रेक्ष्य में गुरू जांभोजी का अवतार, जीवन, कृतित्व और व्यक्तित्व सब अलौकिक एवं दिव्य है। उन जैसा कोई विशेष पुरुष, आज तक इस लोक में अवतरित नहीं हुआ। वे अद्वितीय हैं।

अवतरण के समय माता-हंसा को कोई कष्ट नहीं, पिता लोहट जी को उनके ध्यान कक्ष में, एक अलौक, ज्योति रूप में दर्शन देना। जन्म-घूंटी न लेना, निराहारी रहना, ये सब आश्चर्यजनक है।

उनकी बाल-क्रिड़ाओं में अनेक चमत्कारिक घटनाओं का उल्लेख हुआ है। इसी प्रकार उन्होंने अपने गो-चारण काल में भी कई अलौकिक क्रियाएं की। यथा गाय-बच्छड़ों को अपने आदेशानुसार जंगल में चराना, कूवे पर पानी पिलाना तथा दूदाजी मेड़तियों का मेड़ता भाल करना। खेल-खेल में सिंह बन जाना। कभी छिप जाना, फिर प्रकट हो जाना। ऐसी अनेक आश्यर्चजनक, अलौकिक घटनाओं का वर्णन हमें साहित्य में मिलता है।

इस परिप्रेक्ष्य में यदि हम एक सामान्य लौकिक व्यक्ति के जीवन के आधार पर तुलनात्मक दृष्टि से, गुरु जांभोजी के व्यक्तित्व की अलौकिकता का आंकलन करें तो हमारे लिए इसमें ज्यादा स्पष्टता, सुगमता और प्रमाणिकता रहेगी।

एक साधारण रूप में जन्म धारण करने वाले बालक का शरीर आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी, इन पांच तत्वों के पंजीकृत रूप से निर्मित होता है। जबकि जांभोजी की देह केवल तीन ही तत्वों- आकाश, वायु और तेज (अग्नि) से बनी हुई थी। जल और पृथ्वी तत्व उनकी देह के घटक नहीं थे। यही कारण था कि वे आजन्म निराहारी रहे। उन्होंने कभी अन्न-जल ग्रहण नहीं किया। पृथ्वी तत्व के अभाव के कारण, किसी अस्त्र-शस्त्र का उनके शरीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सिकन्दर की तलवार हवा में लहरा कर रह गई।

इसी तरह उनका शरीर केवल सतोगुणयुक्त था। उसमें रजोगुण एवं तमोगुण का अभाव था। इसी कारण किसी ने कभी उन्हें क्रोध में भर कर

लड़ते-झगड़ते नहीं देखा। जब देह में तमोगुण ही नहीं तो नींद कैसी। वास्तव में जांभोजी का जन्म नहीं अवतार हुआ।

''म्हे ऊंडे नीर अवतार लियो।'' स.वा. 67

तीन तत्वों और एक गुण की तरह ही उनका शरीर सप्त-धातु का बना हुआ नहीं था।

''मोरे छाया न माया, लोही न मांसू, रक्तू न धातूं।
मोरे माई न बापू, आपण आपूं।।'' स.वा. 2

पांच तत्व, तीन गुण, सप्तधातु आदि देह घटकों के अभाव के कारण ही उनका जीवनक्रम असामान्य दिखता था।

''जीमत, पीवत, भोगत, बिलसत दीसां नाहीं, म्हापण को आधारूं।।

जहां एक सामान्य लौकिक व्यक्ति खाने-पीने-भोग-भोगने के लिए ही जीता है, गुरू महाराज का भोग-विलास से कोई सरोकार नहीं था।

दिव्य देह धारी गुरू जांभोजी आजन्म बालब्रह्मचारी रहे। राम, कृष्ण, बुद्ध आदि अवतारी पुरुष भी गृहस्थ बन कर रहे। स्त्री-पुत्र, सगे-सम्बन्धी, राज्य-भोग, युद्ध आदि लौकिक व्यवहार जगत में जीवित रहे, परन्तु गुरू महाराज का सम्पूर्ण जीवन एक अनोखा अलौकिक दृष्टान्त प्रस्तुत करता है।

जहां तक जीवन लक्ष्यों का प्रश्न है एक साधारण, सांसारिक व्यक्ति जिन लक्ष्यों के लिए जीवन जीता है तथा कर्म करता है वे हैं-

देह, गेह, वित्त, काल्ति, पुत, पद और प्रतिष्ठा।

उद्देश्य की दृष्टि से भी जांभोजी के अवतार तथा जीवन का लक्ष्य पूर्णत: भिन्न है।

''प्रहलादा सूं वाचा कीवी, आयौ बारां काजै।
बारा में सूं एक घटे तो, सुचेलो, गुरु लाजे।।'' स.वा. 118

कहां तो शरीर, घर, धन-दौलत, स्त्री, बाल-बच्चे, बड़ा पद और प्रतिष्ठा पाना और कहां कल्याण की भावना से, बारह करोड़ जीवों को मोक्ष धाम पहुंचाना। जांभोजी का सब कुछ अलौकिकता से प्रेरित है।

बारह करोड़ जीवों को, जीवन में जुगत और मरने से पूर्व मुगत देने के लिए, उन्होंने उन्नतीस धर्म नियमों के आधार पर, एक आचार-संहिता की रचना की। यह उन्नतीस नियमों का संविधान ही वह सत्-पंथ है जिस पर चल कर करोड़ों जीव मोक्ष को पा सकते हैं।

इन बातों के अलावा उनका जो ज्ञानोपदेश है, एक सौ बीस सबदों की जो परम, अलौकिक, सूक्ष्म, झीणी बाणी है, उसमें स्थान-स्थान पर उनके व्यक्तित्व की अलौकिकता प्रकट हुई है। यथा-

''नव अवतार नमों नारायण। तेपण रूप हमारा थीयूं।
म्हे जपां न जाया जीऊँ।।'' स.वा. 5

यद्यपि मच्छ, कच्छ, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध ये नव अवतार उन्हीं के रूप हैं, परन्तु वे स्वयं इनमें से किसी का जप-तप-ध्यान नहीं करते। अवतारों को जन्मा हुआ जीव मान कर वे किसी की पूजा-प्रार्थना नहीं करते। यह उनकी अलौकिकता को ही प्रकट करता है। जहां उनके समकालीन भक्त, कवि, दार्शनिक किसी न किसी देवी-देवता की पूजा-अर्चना करते देखे गये हैं।

कबीर के गले में राम की जेवड़ी है। तुलसी ''मोह'' की फांस में फंसे हुए हैं। सूर अपने को पतितन का टीका मान कर, मुक्ति के लिए गिड़गिड़ा रहे हैं, वही दर्द दिवानी मीरां अपने सांवरिये के रंग में रंग कर, ''खोल मिली तन गाती'' जा रही है, वहां गुरू जांभोजी ने यह स्पष्ट घोषणा की कि वे किसी जाये हुए जीव का जाप नहीं करते।

''महे सरे न बैठा, सीख न पूछी। निरत-सुरत सब जाणी।
म्हे खोजी, थापण होजी नाहीं, खोज लहां धुर-खोजूं।।'' स.वा. 6

एक सामान्य लौकिक व्यक्ति की तो बात ही अलग है, राम, कृष्ण आदि बड़े-बड़े अवतारी पुरूषों ने भी गुरू के पास बैठ कर, उनसे ज्ञान प्राप्त किया था। उनके आश्रमों में रहे, परन्तु जांभोजी न किसी के आश्रम में गये, न किसी के पास बैठ कर, उनसे किसी प्रकार की शिक्षा ग्रहण की। वे स्वयं सत्य के अन्वेषी हैं। उन्होंने अविद्या और अज्ञान का पर्दा हटा कर, स्थूल-सूक्ष्म, निष्क्रिय-सक्रिय ब्रह्माण्ड के जड़ तथा चेतन, दोनों स्वरूपों की तह तक जा कर पहचान लिया है। ऐसे अद्वितीय, महान, अस्तित्व की अलौकिकता हमारे लिए स्वयं स्पष्ट है।

अपने स्वरूप की व्यापकता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा-

''रूप अरूप रमूं पिण्डे, ब्रह्मण्डे। घट-घट अघट रहायौं।
अनन्त जुगां में अमर भणीजूं। ना मेरे पिता न मायौ।
माया न छाया, रूप न रेखा, बाहर-भीतर अगम अलेखा।'' स.वा. 19

वे सर्वत्र व्याप्त हैं। पिण्ड से ब्रह्माण्ड तक। वे अजर-अमर है। उनके कोई माता-पिता नहीं है। वे आकार-प्रकार, रंग-रूप से परे हैं। उनकी अलौकिकता असंदिग्ध है।

जगत् में प्राणी मात्र के लिए मौत सर्वाधिक भयकारी है परन्तु उनका अस्तित्व भय मुक्त है।

''साहिल्या हुआ, मरण भय भागा।'' स.वा. 23

जिसने भी सत्य को जान लिया। आत्म-तत्व को पहचान लिया वह भय से मुक्त हो गया।

''न मेतव्वं''-महावीर

अभय सर्व धर्मो का मूल है। जो भयभीत है, वह कभी अहिंसक नहीं हो सकता। भय अपराध का मूल कारण है। संसार का इतिहास भय और युद्धों का इतिहास है।

भय के कारण इन्द्र के पास वज्र, ब्रह्म के पास ब्रह्मास्त्र, शिव के पास त्रिशूल, विष्णु के पास चक्र, राम के पास धनुष-बाण तो कृष्ण के पास चक्र एवं गदा है। हर देवता के पास कोई न कोई अस्त्र-शस्त्र अवश्य है, परन्तु गुरू जांभोजी के पास के पास कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं था -

''मोरे छुरी न धारूं, लेह न सारूं, न हथियारूं।

सूर जको रिपु बिहन्डा नाहीं, ताते कहा उठावत भारूं।। स.वा. 3

शूरवीर के लिए भय नहीं, भय नहीं तो हथियार नहीं। अज्ञान और अंधेरा, सत्य और प्रकाश के शत्रु नहीं हो सकते।

''ज्ञान खड़गु जथा हाथे, कौण होयसी हमारा रिपू''।। स.वा. 45

गुरू जांभोजी अजात शत्रु हैं। जिनके हाथ में ज्ञान की तलवार है, वहां अज्ञान का अस्तित्व नहीं रहेगा। जैसे सत्य का अभाव नहीं तो असत्य का अस्तित्व नहीं।

अविद्या, अज्ञान और भय के अंधेरे में डूबे हुए भ्रमित लोगों को, जांभोजी ने अपनी अलौकिक शक्ति एवं क्षमता की ओर संकेत भी किया है।

''चार चक, नवदीप थरहरे, जो आपो प्रकाशूं''। स.वा. 73

उनका कहना है कि यदि वे अपने विराट रूप को प्रकट करें तो- यह चौखण्ड पृथ्वी और इसके नव महाद्वीप थर-थर कांपने लगे। क्या कोई लौकिक व्यक्तित्व का धनी, ऐसी बात करने की हिम्मत कर सकता है? झूठे चमत्कार और पाखण्ड को खण्डित करते हुए लक्ष्मणनाथ एवं मृगनाथ को यह कहना कि-

''मृग छाला पावोड़ी कांय फिरावो,

मंतू तो उगन्तो भाण थमाऊं'' स.वा. 116

यदी वे चाहे तो उदय होते हुए सूरज को रोक सकते हैं बादलों से पत्थरों की वर्षा करा सकते हैं। परन्तु वे कहते हैं कि चमत्कार दिखाना और पाखण्ड रचना सत्गुरू का कार्य नहीं होता। तुलना करना द्वेत का स्वभाव है। अद्वैत, जो अकेला हैं, वहां तुलना नहीं। ब्रह्म अकेला है। जांभोजी स्वयं ब्रह्म स्वरूप है। उनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती।

''म्हेपण म्हेई, थे पण थेई, सा पुरूषां की लच्छ कुलूं''। स.वा. 67

वे कहते हैं-

हम तुम है, तुम, तुम हो। हमारी-तुलना कैसी। तुम लौकिक और हम अलौकिक। तुम मे से कोई पुरुष है कोई स्त्री, परन्तु,

''म्हे पुरुष न लेणा नारी।'' स.वा. 107

गुरू जांभोजी न पुरुष है, न स्त्री, अर्थात् स्त्री-पुरुष यह भेद सृष्टि, प्रकृति का भाग है जबकि जांभोजी संकल्प की दृष्टि है।

भारतीय वाङ्मय का पौराणिक इतिहास इस बात का साक्षी है कि मनु और सत्रूपा से पूर्व काल में, केवल संकल्प द्वारा ही सृष्टि रची जाती थी। ब्रह्म स्वयं अपने संकल्प से, एक से दो हुए। गुरू जांभोजी का व्यक्तित्व इसी कारण अलौकिक रहा है कि उनका शरीर, नारी के गर्भ मे रह कर, पांच तत्व, तीन गुण और सप्त धातु से नहीं रचा गया।

''म्हे आपे आप हुआ अपरंपर।'' स.वा. 107

अत: यह लोक मैथुन की सृष्टि है, जबकि जांभोजी की देह संकल्प की सृष्टि रही है।

सार-संक्षेप-

गुरू जांभोजी साक्षात् ब्रह्म रूप है। उनका सम्पूर्ण जीवन, कृतित्व एवं व्यक्तित्व दिव्य तथा अलौकिक रहा है। वे सामान्य व्यक्ति नहीं, विशेष पुरुष रहे हैं। उनका जन्म नहीं, अवतार हुआ।

उनका शरीर सप्त-धातु का बना हुआ नहीं था। वास्तव में उनके कोई माता-पिता नहीं थे। उनकी देह केवल तीन तत्वों आकाश, वायु और तेज (ऊर्जा) से निर्मित थी। तीन गुणों के स्थान पर, वे केवल सतोगुणधारी थे। उन्होनें तो-जीवन में अन्न-जल ग्रहण नहीं किया। वे किसी देवी-देवता के उपासक नहीं थे। उन्होंने कभी किसी से शिक्षा ग्रहण नहीं की। वे जड़-चेतन, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के ज्ञाता थे।

उनके अवतार लेने का कारण, बारह करोड़ प्रहलाद-पंथी जीवों का उद्धार करना था। उसी हेतु उन्होनें जीवन में ''जुगत'' और मरने पूर्व ''मुगत'' देने वाला एक सत-पंथ चलाया ताकि यह संसार स्वर्ग बन जाये और मनुष्य देवता।

उनके द्वारा रचित उन्नतीस नियमों का संविधान, छ: संस्कार मन्त्र और एक सौ बीस सबदों की वेदवाणी, इस युग का पांचवा वेद कहलाता है।

त्रिकालदर्शी गुरू जांभोजी ने पृथ्वी एवं जल तत्वों से रहित देह रच कर, भावी युगों में, एक अलौकिक दिव्य सृष्टि के अस्तित्व में आने की सम्भावना प्रकट की है। इसके साथ ही जीन एवं गुण-सूत्र विज्ञान पर, शोध करने वाले वैज्ञानिकों के सन्मुख एक चुनौती भरा प्रश्न भी रखा है कि क्या संकल्प से दृष्टि होना सम्भव है?

❍ **श्रीकृष्ण बिश्नोई**
पूर्व व्याख्याता
जे.ड़ी. मगरा, नोखा, बीकानेर (राज.)

जम्भवाणी एवं भगवद्गीता

जम्भवाणी युग-द्रष्टा जाम्भो जी के वचनामृत की संहिता है। बिश्नोई समाज में गुरु जाम्भोजी का वही स्थान है जो सत्य सनातन-हिन्दू धर्म में भगवान् श्रीकृष्ण का है। इसी प्रकार जम्भवाणी को वही प्रतिष्ठा प्राप्त है जो भगवान् श्रीकृष्ण-प्रोक्त भगवद्गीता और वेद-उपनिषद् को है।

गुरु जाम्भो जी ने स्वयं कहा है - 'मेरा उपाख्यान वेदूं' - (शब्द सं. 14)। अर्थात् मेरा उपाख्यान वेदामृत है। 'गीता नाद कविता नाउं। रंग फटा रस टारूं। (शब्द संख्या 33) अर्थात् गीता मात्र कविता ही नहीं है अपितु यह अनहद नाद वाणी है। गीता-ज्ञान ने ही अर्जुन के मोह का नाशकर उन्हें कर्तव्य-पथ पर आरूढ़ किया था। गुरु जाम्भो जी को श्रीकृष्ण का ही अवतार माना जाता है। गुरु जी का अवतरण भी भगवान् श्रीकृष्ण के समान विक्रम संवत् 1908 (सन् 1451 ई.) को भादव वदि अष्टमी की अर्द्धरात्रि को ग्राम पीपासर (जिला नागौर, राजस्थान) में हुआ था। वे जाति से पंवार राजपूत थे। उनके पूज्य पिता का नाम लोहट जी पंवार था। उनकी माता हांसा देवी भगवान् श्रीकृष्ण के पवित्र कुल-यादववंश की कन्या थी। वे यादववंशी भाटियों से निःसृत खिलहरी कुल के मोहकमसिंह भाटी की पुत्री थी, जो छापर गांव के निवासी थे। यादव कुल की महिमा के बारे में श्रीमद्भागवत में लिखा है - 'यदोर्वंशंनरः श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।। यत्रावतीर्णो भगवान् परमात्मा नराकृतिः। - भागवत 9/23/19-20)। अर्थात् यदुवंश का इतिहास सुनने से मनुष्य पाप-मुक्त हो जाता है, क्योंकि यही वह पवित्र वंश है जिसमें परमात्मा ने मनुष्य रूप में अवतार लिया था।

जाम्भोजी के जीवन-चरित्र और कार्यों का प्रामाणिक विवरण उनके समकालीन और उनकी परम्परा में हुए रचनाकारों की रचनाओं से मिलता है। वील्हो जी (सन 1532-1673), केसोजी (सन् 1573-1679), सुरजन जी (सन् 1583-1691) ऊदोजी नैण (सन् 1447-1538) आदि ने गुरु जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सम्यक् प्रकाश डाला है। जाम्भो जी की परम्परा में वील्होजी अत्यन्त प्रामाणिक रचनाकार माने जाते हैं। इन्होंने अपने एक कवित्त में जाम्भोजी के जीवन-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण घटनाएं वर्णित की हैं। इसके अनुसार जाम्भोजी ने सात वर्ष बाल-लीला में बिताये, 27 वर्ष तक गायें चराईं और इक्यावन वर्ष तक 'सबद' - कथन किया। इस प्रकार 85 वर्ष 3 माह बीते। विक्रम संवत् 1593 के मार्गशीर्ष वदि नवमी (सन् 1536 ई.) को उनका वैकुण्ठवास हुआ। -

बरस सात संसार बाल लीला निरहारी। बरस पांच बावीस पाल एता दिन चारी।
ग्यारै और चालीस सबद कथिया अविनासी। बाल गुवाल गुरज्ञान मास तीन व्रस पच्यासी।
पनरासै 'र तिराणवें वदि मंगसर नुंवि आगले। पालटे रूप रहियो रिधू इडग जोति संभराथलै।

भगवान् श्रीकृष्ण की भांति प्रभु जाम्भो जी ने लोकमंगल के अनेक कार्य किये थे। मुस्लिम शासकों सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई.), अजमेर के सूबेदार मल्लू खां, नागौर के मुहम्मद खां नागौरी तथा कर्नाटक के नवाब शेख सद्दो को ज्ञानोपदेश दिया तथा उनसे गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगवाया। मुल्तान का सधारी मुल्ला भी उनसे ज्ञानचर्चा करके प्रभावित हुआ था। कुछ ने तो मांस खाना भी छोड़ दिया था। गुरुजी ने मेड़ता के राव दूदा (मीरा के दादा), जैसलमेर के यादव (भाटी) राजा रावल जैतसी, जोधपुर के राठौर राव सांतल और मेवाड़ के राणा सांगा (संग्रामसिंह), रानी झाली, जोधपुर के राजा मालदेव आदि को प्रभावित कर शासन में लोक-कल्याणकारी तत्वों का समावेश कराया। राजस्थान में अकाल पड़ने पर गुरु महाराज ने अन्न-वितरण कराकर लोगों का कष्ट दूर किया। वि.सं. 1542 तदनुसार सन् 1485 ई. में गुरु जाम्भोजी जी ने धर्म की रक्षा, सनातन मूल्यों की सुरक्षा, यज्ञीय ज्वाला को बर्धापना, पशु-पक्षी-वनस्पति-कल्याण -कामना तथा धर्मान्तरण से रक्षा जैसे पवित्र कार्यों की सिद्धि के लिए निर्मल बिश्नोई पंथ की स्थापना की। सर्वहितकारी 29 नियमों की संहिता में समाज को दीक्षित किया।

सबदवाणी का लक्ष्य :-

सबदवाणी का लक्ष्य कर्मशीलता, आत्मज्ञान और लोकमंगल है। वह मानव को जड़ता, कुसंस्कार, अज्ञान और भ्रम से मुक्त कराकर उसको ऊंचा उठाती है। वेद का तात्पर्य ज्ञान है और वे शब्दपरक है। अत: सबद (शब्द) का अर्थ है ज्ञान। जाम्भो जी गुरु है और हमारी संस्कृति में गुरु की प्रतिष्ठा ब्रह्म के समान ही है। अत: बिश्नोई-पंथ-परम्परा में गुरुवाणी या सबदवाणी को वेदवाणी के रूप में स्वीकार किया गया है और वह स्वत: प्रमाण है। अल्लूजी कविया (1463-1563) तथा गोकलजी आदि कवियों ने इसको पांचवां वेद माना है -

पांचवों वेद सांभलि सबद, च्यार वेद हूंता चलू।
केवली झंभ सावल कवल, आज साच पायो अलू।। - अल्लू कविया।
गुर पांचमूं वेद पढ़ै मुख परगट सो गुरुवाणी सांभलियो।। - गोकल जी।

गोरक्षा व्रत: - गुरु जाम्भो जी और भगवान् श्रीकृष्ण को जो महान् कृत्य बिल्कुल समीप ला देता है, वह है गोरक्षा, गोपालन, गोसंवर्द्धन। यह बात ध्यान देने की है कि श्रीकृष्ण ने ग्यारह वर्ष की आयु तक गोकुल में गोचारण किया था। गोसंवर्द्धन

और संरक्षण के लिए ही उनका देवराज इन्द्र से संघर्ष हुआ था। अनेक राक्षसों का वध भी उन्होंने गो-गोप और ग्वालों की रक्षा हेतु ही किया था। मध्यकाल में (पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी ईस्वी) गुरु जाम्भो जी और संत कवि नरहरि ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया था। गुरु नानक ने सोलह वर्ष तक गोचारण किया था और गुरु जाम्भोजी ने सत्ताईस वर्ष तक गोमाता की सेवा की थी। गुरु जी मुसलमानों को समझाते हैं भाई से प्यारा बैल है, तुम उसके गले पर छुरी क्यों चलाते हो (शब्द 9)। तुम गाय की हत्या क्यों करते हो ? यदि यह वैध है तो करीम (ईश्वर=कृष्ण) ने गाएं क्यों चराई थीं ? यदि गोवध करते हो तो उसका दूध, दही, घी आदि क्यों खाते हो ? और उसके ये पदार्थ खाकर उसका मांस, रक्त क्यों खाते-पीते हो ? (सबद सं. 9)।

गुरु जाम्भो जी की शिक्षा की एक विशेषता उन्हें अन्य गुरुओं से पृथक कर देती है और ऊंचा भी उठा देती है, वह है - ''गलदश्रु भावुकता, अपने को अधम और पतित मानने की भावना जाम्भो जी में नहीं है और न ही वे इसका उपदेश देते हैं। वे झुकते हैं तो केवल गुणों के सम्मुख। उन्होंने अपने गुणवान शिष्यों का दास तक होना स्वीकार किया है।
- (डॉ. हीरालाल माहेश्वरी-जाम्भोजी पृ. 46, 47, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1981 ई0)

जम्भवाणी एवं भगवद्गीता में समरूपता

सारी-की-सारी जम्भवाणी भगवान् श्रीकृष्ण के चरित्र के महिमागान से समलंकृत है उदाहरणार्थ -

'कृष्णचरित बिन काचै करवे रह्यो न रहसी पाणी'।।1।।'कृष्ण चरित बिन क्यों क्यूं बाघ डारत गाई'।।14।।'कृष्ण चरित बिन सींचाण कबही न सुजाऊ।।14।।'कृष्ण चरित बिन ओछा कबही न पूरूं''कृष्ण माया चौखण्ड कृषणी, जम्बूदीप चरीलो'। 'कृष्ण चरित बिन नाहिं उतरिबा पारूं'।।32।।'तउवा दान जू कृष्णी माया, और भी फूलत दानों'। 58। 'सहजै राखीलो म्हे कन्हड़ बालो आप जती।।67।। गुरु महाराज कहते है। द्वापर युग में कृष्णावतार के समय मैंने भौमासुर के कारागार से सोलह सहस्र गोपियों को स्वतंत्र कराया था। दुष्टों का वध किया था। 'कान्ह चराई रनबे बानी, निरगुन रूप हमें पतियानौ।।75।। निराकार श्रीकृष्ण ने साकार होकर कृष्ण रूप में गौएं चराई, वंशी की मधुर ध्वनि सुनायी। हमें भी गऊ पालन की दिव्य प्रेरणा दी और वन की महत्ता बतलायी। **'कृष्ण मया तिहूं लोका साक्षी, अमृत फूल फलीजै।''तीन भवन की राहीं रूक्मणा मतूंतो थल सिर आण बसाऊं।।116।।** गुरु जी एक नाथ योगी से

कहते हैं – 'तू मुझे ये तुच्छ सिद्धियां दिखा रहा है। मैं चाहूं तो तीनों लोकों की महारानी रूक्मिणी को यहां लाकर दर्शन करा दूं। कौरव पाण्डव योद्धाओं को उपस्थित कर दूं, उदय होते हुए सूर्य को रोक दूं'' (जैसा श्रीकृष्ण ने जयद्रथ वध के समय किया था)। इस प्रकार से पाहल मन्त्र में भी श्री कृष्ण की पाहल कह करके कृष्ण की महत्ता प्रदर्शित की है। – (आचार्य कृष्णानन्द 'शब्द–वाणी दर्शन, पृ. 131–40) बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश, देहरादून, उत्तराखण्ड सन् 1993 ई.)।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गुरु वाणी अर्थात् जम्भवाणी श्रीकृष्ण महिमा से ओत–प्रोत है। उसके ताने–बाने में गीता के प्रवक्ता श्रीकृष्ण रचे–बसे हैं और सौ बात की एक बात यह है कि स्वयं जम्भेश्वर जी अपने को श्रीकृष्ण का अवतार ही घोषित करते हैं और गीता को ब्रह्म का अनहद–नाद स्वीकार करते हैं।

अवतारवाद : श्रीकृष्ण–प्रोक्त भगवद्गीता अवतारवाद की स्थापना और उसका सशक्त प्रतिपादन करती है। भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं – ''जब–जब धर्म की ग्लानि होती है, तब–तब मैं अवतार लेता हूं। धर्म की स्थापना करता हूं और दुष्टों का नाश करता हूं।'' –''**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।**'' – (गीता 4/7)। गुरु जी जम्भवाणी में अल्लाह, अलेख, अयोनि, स्वयम्भू, विष्णु, राम, परशुराम, कृष्ण, बुद्ध, मत्स्य, वराह, नृसिंह, वामन आदि अवतारों को स्वयं अपना स्वरूप बतलाते हैं। ईश्वर प्रत्येक प्राणी के हृदय में निवास करता है, इस पर प्रकाश डालते हुए गुरु जी कहते हैं – 'अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर, बाहर लोका चारूँ। यही बात गुरु जी से चार हजार पांच सौ वर्ष पहले भगवान् श्रीकृष्ण भक्त अर्जुन से कहते हैं – 'ईश्वरःसर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।' (गीता 18/61)। गुरु जी होम (यज्ञ); जाप (जप) और तप की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि जिस दिन किसी भी व्यक्ति ने ये कर्म नहीं किये तो समझना चाहिये कि उसने जान–बूझ कर घर में आई हुई कपिला (कामधेनु) गाय को भगा दिया – '**जा दिन तेरे होम न जा न तप न किरिया, जान कै भागी कपिला गाई।।** (शब्द 7)। श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं –

यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।। – गीता 18/5।।

अर्थात् 'यज्ञ, दान और तप कभी नहीं त्यागने चाहिये। ये बुद्धिमान् पुरुषों को भी पवित्र करने वाले हैं'। श्रीभगवान् ने कामधेनु गौ को अपना ही स्वरूप बताया है – ''धेनूनामस्मिकामधुक। (गीता 10/28)।

उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण किरिया सांरू।।शब्द 26।।

उत्तम कुल में जन्म लेने मात्र से कोई महान् नहीं हो सकता। मनुष्य के श्रेष्ठ गुण-कर्म ही उसे श्रेष्ठ बनाते हैं और दुर्गुण उसका पतन कर देते हैं। श्री भगवान् ने कहा है –

चतुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। – (गीता 4/13)।

अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों का समूह गुण और कर्मों के विभागपूर्वक मेरे द्वारा रचा गया है। महाभारत के वन पर्व में स्पष्ट आया है कि श्रेष्ठ गुणों से चाण्डाल भी ब्राह्मण हो जाता है और दुर्गुणों से ब्राह्मण भी चाण्डाल हो जाता है। संत कबीर ने भी कहा है – 'ऊंचे कुल का जनमियां करनी ऊंच न होय। सुबरन कलस सुरा भरा साधू निन्दा सोय।।

पहलै किरिया आप कमाइये, तो औरं ने फरमाइये। (शब्द 30)।

किसी दूसरे को कहने से पहले, वह कार्य स्वयं करके दिखाना चाहिये। अन्यथा कथनी करनी में अन्तर होने पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। गीता में श्री भगवान् कहते हैं यद्यपि मुझे कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं है, फिर भी लोक-शिक्षण के लिए मैं कर्म-रत रहता हूं, अन्यथा लोग अकर्मण्य होकर नष्ट हो जाएंगे –

न मे पार्थास्ति कर्तव्य त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
नानवाप्तवाप्तव्यं वर्त एवं च कर्मणि।। – (गीता 3/22)।
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।
सङ्करस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः।। –(गीता 2/24)

शास्त्रों में ईश्वर प्राप्ति के लिए सात्विक आहार पर बड़ा बल दिया गया है – 'आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवास्मृतिः। – छन्दोग्योप. 7/26 अर्थात् आहार की शुद्धि और मनः शुद्धि से परमात्मा का सतत् स्मरण होता है'। गुरु जाम्भो जी सात्त्विक आहार को लक्ष्य करते हुए कहते हैं –'**अन्नें धन्नें दूधू दहीयूं, घीयूं मेऊं जे लाभंते। भूख मरै तो जीवन ही, बिन सरियों। (शब्द 34)** अर्थात् यदि आपको भरपूर अन्न, धन, दूध, दही, घी, मेवा आदि (सात्त्विक पदार्थ) सुलभ हैं तो इन का अवश्य भोग करो। (मांस, मदिरा, भांग, अफीम, तम्बाकू आदि असेवनीय वस्तुओं का सेवन मत करो)। भगवद्गीता भी इसी बात को इस प्रकार व्यक्त कर रही है – 'आयु, बुद्धि, बल आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले, रसयुक्त, चिकने और स्थिर रहने वाले तथा स्वभाव से ही मन को प्रिय – ऐसे आहार (खाद्य पदार्थ) सात्त्विक पुरुष को प्रिय होते हैं।

जाम्भो जी सर्वोच्च सत्ता (ईश्वर) के विषय में कहते हैं कि वह परम तत्त्व सातों पातालों, तीनों लोकों, चौदह भुवनों एवं आकाश में, बाहर और भीतर सर्वत्र विद्यमान हैं – '**सप्त पताले तिहूं तृलोके। चवदा भवने गगन गहीरे।। बाहर**

भीतर'' सर्व निरंतर। जहां चीन्हों तहां सोई।' (शब्द 40)। भगवद्गीता भी कहती – 'मत्तः परतंर नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय। मयि सर्वमिदं प्रोंत सूत्र मणिगणा इव।।'' – (गीता 7/7)। जम्भवाणी का स्वर अद्वैत प्रधान है। भगवद्गीता में भी स्थान-स्थान पर अद्वैत मत की प्रतिष्ठा है, यद्यपि उसमें द्वैत और त्रैतवाद समर्थक भी वचन विद्यमान हैं। जाम्भोजी पुनर्जन्म और कर्म-सिद्धान्त में अटल विश्वास रखते हैं। चौरासी लाख योनियों का उन्होंने मान्यतापूर्वक उल्लेख किया है **'लख चौरासी जीवा जूंणि न हुंती।'** (शब्द 3)। फल प्राप्ति अपने-अपने कर्मों के अनुसार होती है – **'भोम भली कृषाण भी भला। बूठो हैं जहां बाहियें। करषण करो सनेही खेती। तिसिया साख निपाइये।** (शब्द 28)। मनुष्य अपने कर्मों के अच्छे-बुरे फल का स्वयं उत्तरदायी है, ईश्वर नहीं। गीता कहती है –

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोग स्वभावस्तु प्रवर्तते।।14।।
नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ।।15।। – गीता, अ. 5।।

आत्मसाक्षात्कार में काम और क्रोध विघ्नकारी हैं इसलिए गुरु जी कहते हैं – हे अवधूत ! काम-क्रोध आदि को वश में कर तथा मन को वश में कर तथा वीर्य की रक्षा कर अपने स्वरूप का साक्षात्कार कर ले –
भगवान् श्रीकृष्ण भी गीता में कहते हैं –

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।। – गीता 3/37।।

निरन्तर विष्णु-विष्णु जप करना चाहिये। मनुष्य की आयु तिल-तिल घटती जा रही है, मृत्यु पास आ रही है। निरन्तर भवत् स्मरण से मोक्ष-लाभ होता है – **'बिसन बिसन तूं भंणि रे प्राणी ईंह जीवन के हावै। तिल तिल आव घटंती जावै मरण न नैड़ो आवै।'** शब्द 120)। **'बिसन बिसन तू भंणि रे प्राणी। पैंकै लाख उपाजूं। रतन काया बैकुंठे वासो जरामरण भय भाजूं।** (शब्द 119)। गीता में भी श्रीभगवान् कहते हैं –

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःख दोषानुदर्शनम्।। -गीता 13/8।।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिमार्यामेवैष्यस्यसंशयम्।। – गीता 8/7।।

जाम्भोजी ने परमतत्त्व के लिए विषणु के साथ-साथ ओ३म्, परब्रह्म,

परमेश्वर, नारायण, हरि, राम, सतगुरु, कृष्ण, श्याम, लक्ष्मण, परशुराम, रहीम, रहमान, करीम, खुदाबन्द, अल्लाह आदि शब्द भी प्रयुक्त किये हैं जिनसे सिद्ध होता है कि जाम्भो जी ईश्वर को किसी मत-मतान्तर की घेरा-बन्दी में कैद नहीं करते। इससे उनकी सारग्रहिणी और समन्वयवादिनी प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। भगवान् श्रीकृष्ण-प्रोक्त भगवद्-गीता का तो प्रधान स्वर ही समन्वयवादिता का है। इसीलिए स्वामी विवेकानन्द ने सर्वधर्म-समन्वय की दृष्टि से शिकागो की विश्व-धर्म-संसद (11 सितम्बर 1893 ई.) में भगवद्गीता का यह परम प्रसिद्ध श्लोक उद्धृत किया था -

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्थैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।। - गीता 4/11।।

अन्त में मैं बिश्नोई साहित्य के तपस्वी विद्वान् और खोजी साधक डॉ. हीरा लाल माहेश्वरी जी के इस कथन के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूं :-

''जाम्भो जी के हृदय में श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति बड़ी निष्ठा है। वे न केवल उसकी प्रशंसा करते हुए उसे अन्य 'काव्य ग्रन्थों' में सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, अपितु स्पष्ट शब्दों में घोषित करते हैं कि जिस प्रकार फिटकरी जल के गन्दलेपन को दूर कर देती है, उसी प्रकार यह सद्ग्रन्थ भी हमारे मन की सारी भ्रान्तियां नष्ट कर देता है (शब्द सं. 33)। वे वस्तुतः उसी के सदुपदेशों का स्मरण दिलाते हुए यह बताते हैं कि निष्काम भाव से कर्म करते हुए ही कार्यक्षेत्र में मर जाना सदा श्रेयस्कर एवं मुक्तिदायक हैं (शब्द सं. 33)''

- (डॉ. हीरालाल माहेश्वरी: जाम्भो जी, पृ. 40)

हम डॉ. हीरालाल माहेश्वरी के स्तुत्य मूल्यांकन में इतनी बात और जोड़ना चाहते हैं कि भगवान् जम्भेश्वर जी की आप्तवाणी जम्भगीता में आगे-पीछे-बीच में सर्वत्र ही हर्षित नयन प्रसन्नवदन हृषीकेश भगवान श्रीकृष्ण का आभामय श्रीविग्रह मन्द-मन्द मुस्कान विकीर्ण कर रहा है। सम्भवतः अन्य किसी भी मध्यकालीन संत ने श्रीकृष्ण को इतना आत्मसात् नहीं किया है। जम्भवाणी का कोई भी प्रसंग भगवान् श्रीकृष्ण के पुण्य स्मरण के बिना पूर्ण नहीं होता। कभी-कभी तो ऐसी अनुभूति होती है कि जाम्भोजी के श्रीमुख से स्वयं ही लोकपावन भगवान् हृषीकेश ही बोल रहे हैं उदाहरणार्थ भगवान् श्रीकृष्ण अपनी विभूतियों पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं -

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एवं च ।।गीता 10/20।।

मैं आदित्यों में विष्णु, ज्योतियों में सूर्य, नक्षत्रों में चन्द्रमा, देवों में इन्द्र,

प्राणियों में चेतना, रुद्रों में शंकर, पुरोहितों में बृहस्पति, सेनापतियों में स्कन्द, महर्षियों में भृगु, शब्दों में अक्षर अर्थात ओंकार, यज्ञों में जपयज्ञ, वृक्षों में पीपल, देवर्षियों में नारद, सिद्धों में कपिल, गौओं में कामधेनु, दैत्यों में भक्त प्रह्लाद शस्त्रधारियों में श्रीराम, सरिताओं में गंगा हूं, छन्दों में गायत्री हूं।

जो-जो भी विभूतियुक्त, कान्तियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है, उस-उसको तुम मेरे तेज के अंश की ही अभिव्यक्ति समझो । -

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम्।। - गीता 10/41।।

इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ही इस प्रकार की विभूतियों को अपना ही स्वरूप बता रहे हैं और स्वयं जाम्भो जी स्वीकारोक्ति कर रहे हैं - 'द्वापर में मैं ही कृष्ण था।' -

सोलह सहस नव रंग गोपी। छोलम छालम। सहजे राखलो,
म्हे कान्हड़ बालो आप जती।। **-जाम्भोजी, शब्द सं. 67।**

❍ रमेश कृष्ण

कृष्णकुटीर, कृष्णपुरी, लाइन पार, मुरादाबाद, उ.प्र.

गुरू जाम्भोजी का अलौकिक व्यक्तित्व

महापुरुषों, सन्तों, भक्तों और धर्म-प्रवर्त्तकों के व्यक्तित्वों में जन-साधारण से भिन्नता होती है। जनसाधारण का जीवन सांसारिक कार्यों, व्यवहारों और उदरपूर्ति तक ही सीमित होता है। महापुरुषों का अवतरण जीवन और जगत की विशेष परिस्थितियों में होता है। जब गुरू जाम्भो जी का अवतरण भारतभूमि में हुआ उस समय विदेशी आक्रमणकारियों का शासन भारत में था। **'जां जां शैतानी करे उफारु, तां तां महंतज फलियों।'** आचार्य स्वामी रामानन्द परिव्राजक लिखते हैं। ''सोहलवीं शताब्दी के संतयुग में भगवान् श्रीकृष्ण ने ही श्रीगुरु जम्भेश्वर भगवान् के रूप में अवतार लिया। सतयुग में स्वयं प्रभु ने धर्मोद्धार के लिये मैं स्वयं आकर तुम्हारे, बारह कोटि जीवों की रक्षा (मुक्ति) प्रदान करूँगा तथा कृष्णावतार में नन्द बाबा व यशोदा की प्रार्थना पर वचन दिया था कि और तो सभी प्रकार की बाल-लीला आदि से सन्तुष्ट है जन्म लीला अवशिष्ट है तो उसे मैं कलियुग में आपके यहाँ करूँगा।''

श्री साहब राम जी ने इस तथ्य को इस प्रकार प्रमाणित किया है

'जंभ गुरु के चरित अपारा, सुर नर मुनि जन लहतन पारा[2]
लोहट है नन्दराय, जसोदा हाँसा भई।
मरुस्थल वृज भौम, पीपासर बृज है सही।
पीपासर ब्रज है सही में, वचन के प्रतिफल।।
कृष्ण कवल के कारणै, गुरु जम्भ लियो अवतार।'

साहब राम जी ने गुरु जम्भोजी के बाल्य-काल की लीलाओं का तुलना सूरदास जी के भगवान् श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं के समान चित्रण किया है।

गुरु जाम्भो जी सात वर्ष तक मौन रहे, माता हाँसा को बड़ी चिंता हुई, लोग उनको गूँगा कहने लगे उनके सम्बन्ध में तरह-तरह की चर्चा होने लगी, माता-पिता ने कुछ उपाय करने का विचार किया और नागौर से एक ब्राह्मण को बालक को ठीक करने के लिये लाये। गुरु जाम्भोजी ने पुरोहित को कच्चे धागे से कुएं को जल निकाल कर सबको चमत्कृत कर दिया और कहा - **गुरु चीन्हो गुरु चीन्ह पुरोहित, गुरुमुख-धर्म बरवाणी।**[1]

गुरु जाम्भो जी कहते है कि हे संसार के लोगों! आप सदा अपना कल्याण चाहते हो भगवान् के ओम नामी गुरु को पहचानो। हे पुरोहित तू भी गुरु को पहचान और गुरुमुख होकर सद्धर्म का उपदेश कर। गुरु जाम्भोजी गोचारण के समय संभराथल पर विराजमान थे। सबद संख्या दो में उनके अलौकिक चरित्र का वर्णन इस प्रकार है।

मोरे छाया न माया लोही न माँसू।
रक्तं न धातू मोरे माई न बापूँ।[2]

इस शब्द में यह बताया गया है कि आत्मा और परमात्मा अभेद है। इस शुद्ध स्वरूप में न तो माया है और न मायारूपी अज्ञान की छाया है।

डाकुओं से ऊँट छुड़वाये और शब्दोपदेश दिया। उनके जीवन की अनेक अलौकिक घटनायें या लीलायें हैं। उनको केवल संक्षिप्त विवरण दिया जा सकता है। अन्यथा विस्तार से इस आलेख में चित्रण करना संभव नहीं है। एक बार श्री जोधा जी के पुत्र बीदा ने पूछा कि हे देव! आपके शरीर से सुगन्ध आ रही है।

'मोरे अंग न अलसी तेल न मलियों, ना परमल पीसायो।' उनके शरीर में से प्राकृतिक सुगन्ध आ रही थी। मानवजाति तथाकथित तीर्थों में भटकती है। वहाँ नाम माया का किन्तु अड़सठ तीर्थ तो हृदय में ही हैं बाहर भटकने की क्या आवश्यकता है। गुरु जाम्भो जी का उपदेश है।

'अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर, बाहर लोकाचारूँ।' ये पशुहिंसा के घोर विरोधी थे। वे काजी मुल्ला को फटकारते हैं। **'चर फिर आवै सहज दुहावै, तिसका खीर हलाली'** जो पशु जंगल में चर कर आते हैं, दूध देते है, यह एक प्रकार का वैध कार्य है। किन्तु जिनका गला काटते हो, यह किस धर्मशास्त्र के अनुसार न्यायोचित है। कुरानशरीफ को पढ़कर भी तुम्हारे पल्ले कुछ नहीं पड़ा और अज्ञानी ही रहे। **'जिसके गले करद क्यूं सारो थे पढ़ सुण रहिया खाली, महमद मरद हलाली होता, तुम ही भये मुरदारूँ,'** पैगम्बर मोहम्मद ने सन्मार्ग बताया था, किन्तु तुम मुर्दाखोर माँसाहारी होकर उनके अनुयायी कैसे हो सकते हो?

यह मानव जीवन अमूल्य है। भवसागर से पार जाने के लिए कोई तन्त्र-मन्त्र जड़ी-बूँटी काम नहीं देगी। केवल भगवान् विष्णु की भक्ति ही भव सागर की नौका है। यह सब कर्मों का फल है भोगना पड़ेगा। यथा -

तांतै तंत न मंत न जड़ी न बूँटी, ऊँडी पड़ी पहारूँ
विष्णु न दोष किसो रे प्राणी, तेरी करणी का उपकारूं।

गुरु जी जाम्भो जी कहते हैं 'मोर उपाख्यान वेदूं' मैं जो कह रहा हूँ, वह वेदवाणी है। वेद संसार में सबसे पहले ग्रंथ हैं, जिनको किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, वे स्वत: प्रमाणित और अपौरुषेय हैं। उनको ऋषियों ने समाधि अवस्था में सुना था, इसलिए उनको श्रुति भी कहते हैं। उनके अलौकिक चरित्र का सबसे बड़ा गुण है कि कोई भी व्यक्ति उत्तम कुल में जन्म लेने से उत्तम नहीं होता। कर्म प्रधान है। जन्म उच्च कुल में हैं,करनी नीच है, तो वह कैसे बड़ा कहा जा सकता है। वह इस भवसागर को पार नहीं कर सकता।

घणा दिन का बड़ा न कहिवा, बड़ा न लंघिबा पारूँ।

उत्तम कुली का उत्तम न होयबा कारण किरिया सांरूं।

तथा

गोरख ढीठा सिद्ध न होयबा, पोह उतरबा पारूं।

केवल गुरु गोरखनाथ के दर्शन मात्र से कोई सिद्ध या गुरु नहीं हो सकता। उसके लिये तप करना आवश्यक है। उनका सबसे बड़ा उपदेश यह है कि व्यक्ति को स्वयं मदिरा, मांस का सेवन करे, दूसरों को शाकाहारी होने के लिए कहे तो यह व्यवहारिक नहीं है। गुरु जी ने कहा है **'पहले किरिया आप कमाइये, तो औरा न फरमाइये।'** [1] गोस्वामी तुलसीदास जी भी इस तथ्य को दोहराते हैं पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

उर्दू में भी इस प्रकार की कहावत है 'खुद मियाँ फजीहत औरों को नसीहत, यदि मनुष्य रात दिन धर्माचरण करता है तो वह देवलोक को प्राप्त कर सकता है। श्रीमद्भागवत् गीता में भी कहा गया है पुण्य कर्म करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है और पुण्य-क्षीण होने पर 'मृत्यु लोके वसन्ति'।

गुरु जी गीता की महिमा का गान करते हैं **गीता नाद कवीता नाऊँ, रंग फटारस टांरूँ।**[2] भगवान् श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से निकली गीता अनाहद नाद है, यह किसी कवि की कल्पना नहीं है। अर्जुन के विषाद (मोह) की निवृत्ति गीता के ज्ञान द्वारा ही हुई थी। यह निष्काम कर्मयोग का उपदेश है। गुरु जी सत्संग को ही कल्याण-मार्ग मानते हैं, जैसा संग वैसा रंग चढ़ता है।

'उत्तम संग सुसंगू, उत्तम रंग सुरंगू उत्तम लंग सुलंगू।' उन्होंने सतगुरु की महिमा का भी गान किया है। सतगुरु मिलियों सतपंथ बतायो, भ्रान्त चुकाई, अवर न बुझावा उन्होंने धर्म के नाम पर जो पाखण्ड फैलता है, उसका भी खण्डन किया है। पाखण्ड एक प्रकार की अविद्या है, जो नरक का द्वार है।

'थे कान चिरावो चिरघट पहरो, आयसां यह पाखंड तो जोग न होई, जटा बधारो जीव सिंघारों, आयसा इहि पाखण्ड तो जोग न होई।' दान भी सुपान को देना चाहिए, तब वह फलता फूलता है **'दान सुपाते बीज सुखेते, अमृत फूल फलीजैं।'**

अंहकार, पांच विकारों में सबसे बड़ा विकार है। अहंकारी दुर्याधन ने भगवान् श्रीकृष्ण का हस्तिनापुर में राजसभा में अपमान किया था। इसलिए वह दुर्गति को प्राप्त हुआ न राज मिला, न सुगति प्राप्त हुई।

को होयसी राजा दुर्योधन सो, विष्णु सभा महलाशों।
तिणही तो जोय जोय पार न पायो, अधविचं रहीयो ठालूं।[2]
जां जां शैतानी करै उफारूं, तां तां महं तज फलियो
जुरा जम राक्षस जुरा जुरिन्द्र, कंश-केशी चडूरूँ।

मधु-कीचक हिरणाक्ष हिराकुश।[3]

गुरु जी के व्यक्तित्व का एक बड़ा गुण था उनका अवतार ही विश्व-उद्धार के लिये हुआ था। संसार में वर्षा करके मेघ धरती को हरा भरा करते हैं। '**संसार में उपकार ऐसा, ज्यूं घण बरखता नीरूँ।**' वे शरणागत वत्सल भी थे। दूणपुर गाँव के मोती मेघवाल की रक्षा बीदा जी से की थी।

भूत, प्रेत, यक्ष, पिशाच, आदि योनियाँ मनुष्य का कुछ भी बुरा नहीं कर सकती। उनकी शक्ति का प्रदर्शन एक पाखण्ड मात्र है, जैसे भूसे में अन्न का दाना निकालने के समान है। आज भारत में सेक्यूलेरिज्म की बड़ी चर्चा है। आज सचमुच सम्प्रदाय-निरपेक्षता का कोरा नाम है। वह व्यवहार में नहीं है। गुरु जी ने आज से छः सौ वर्ष पहले सर्वधर्म समभाव का आदर्श रखा था। जो सबदवाणी में स्पष्ट झलकता है।

वेद और कुरान दोनों ही बड़े है। विद्वान लोग उनका निर्वाचन अपने ढंग से करते हैं। साधारण जनता शब्द जाल में फंसकर उनका अंधानुकरण करती है। वास्तविक अर्थ को ग्रहण नहीं कर पाती इसलिए साम्प्रदायिक तनाव होता है। गुरु जी का युगबोध बहुत बड़ा था। उन्होंने अपने जीवन काल की परिस्थितियों का सजीव और यथार्थ चित्रण किया है। कलियुग का रंग निराला है, नये आविष्कारों के बताये हुए सन्मार्ग को वेद और कुरान समझकर उस पर आचरण करना। '**कलि का माया जाल फिटाकर प्राणी, गुरु की कलम कुरांण पिछाणी।**' गुरु जी मंदिरों, मठों और महलों में निवास नहीं करते थे। वे तो संभराथल में हरीभरी छायादार कंकेहड़ी के नीचे आसन लगाकर बैठते थे।

हरी कंकहेड़ी का आदर करते थे और मनमुखी से उदासीन रहते थे। जिस प्रकार सन्त कबीर ने हिन्दू और मुसलमान को कुमार्ग पर चलने के लिये फटकारा और सचेत किया है। गुरु जी ने भी यह कार्य किया था। निम्न पंक्तियां प्रमाण हैं।

जोगी रे तू जुगत पिछांणी, काजी रे तू कलम कुराणी।।

तथा

गऊ विणासो काहे-तानी, राम रजा क्यूं दीनहीं दानी
कान्ह चराई रनवे बांनी, निरगुन रूप हमें पतियानी।।

नशाखोरी और मदिरापान का 29 धर्म नियमों में भी खण्डन है। '**मुग्धा सेती यूं टल चलो, ज्यूं खड़कै पाति धनूंरी।**' गुरु जी ने मधुरवाणी बोलने को सुखकर बताया है और भगवान् विष्णु के नाम के जप को श्रेष्ठ बताया है। '**सुवचन बोल सदा सुहलाली, नाम विष्णु को हरै सुणो।**' जिस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भागवद्गीता में अपनी विभूतियों का वर्णन किया है उसी प्रकार गुरु जी ने श्रेष्ठ जनों का नामोल्लेख सबद वाणी में किया है। सुमेरु के समान कोई पर्वत नहीं है। सागर के समान कोई सरोवर नहीं है। लंका के समान कोई किला नहीं है।

दशरथ के समान पिता नहीं है, देवकी समान माता नहीं, सीता जी के समान कोई नारी नहीं है, श्रीहनुमान जी के समान भक्त या सेवक नहीं है। भीम के समान कोई बलवान नहीं है। रावण के समान कोई राजा नहीं है। जैसे पहले कहा जा चुका है, गुरु जी का युगबोध बहुत बड़ा था। वे त्रिकालदर्शी थे। उनके युग में जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक अवस्थायें थी। उनका बड़ा ही पारदर्शी चित्रण सबदवाणी में मिलता है। लोगों की कथनी और करनी में अंतर बताया था। जैसे

पढ़ वेद कुराण कुमाया जालों, दंत कथा जुग छायों।

उन्होंने अवतारों का वर्णन किया है। वे उनके ही पूर्व रूप थे, ऐसी उनकी मान्यता है, वाराह नृसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण (कन्हड़ होयकर बंसी बजाई, गऊ चराई) बुद्ध आदि विष्णु भगवान् के अवतार।

अंत में कहा जा सकता है उनका व्यक्तित्व व चिन्तन दोनों ही अलौकिक थे। उन्होंने जो कार्य किया व जो दिव्य उपदेश दिया वह किसी लौकिक व्यक्ति के वश की बात नहीं थी। उनकी वाणी में अनेक स्थलों पर उनकी अलौकिकता का संकेत मिलता है, जिसके पश्चात् और अधिक प्रमाणों की आवश्यकता नहीं रह जाती है।

संदर्भ ग्रन्थः

1. श्रीमद्भागवद्गीता
2. सबदवाणी जम्भसागर
3. जम्भसार (भाग दो)
4. कबीर वाणी
5. श्रीरामचरितमानस
6. अमर ज्योति पत्रिका

❍ **डॉ. ब्रह्मानन्द**

पूर्व अध्यक्ष (हिन्दी विभाग)

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय (हरियाणा)

वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के दौर में गुरु जाम्भोजी के सिद्धान्तों का महत्व

बिश्नोई पंथ के प्रवर्त्तक श्री जाम्भोजी का अवतार सम्वत् 1508 को भादो बदि अष्टमी को वर्तमान नागौर जिले के पीपासर गांव में हुआ था। बिश्नोई पंथ में जाम्भोजी को विष्णु माना जाता है और उसी रूप में उनकी अराधना की जाती है। जाम्भोजी ने भी सबदवाणी में अपना परिचय विष्णु के रूप में दिया है। उन्होंने सात वर्ष की अवस्था में सबदवाणी का प्रथम सबद कहा था और उसके बाद वे जीवन पर्यन्त लोगों को 'जीया नै जुगती अर् मूवां नै मुगती' का उपदेश देते रहे थे। सबदवाणी जाम्भोजी के विचारों को जानने का प्रामाणिक आधार है। इसमें जाम्भोजी ने जो विचार व्यक्त किये हैं, वे किसी वर्ग विशेष या जाति विशेष के लिए न होकर मानव मात्र के लिए हैं। इसके साथ-साथ सबदवाणी में व्यक्त विचार, जितने जाम्भोजी के समय में उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण रहे हैं, उतने ही वे आज हैं और उतने ही वे आगे रहेंगे। वस्तुतः सबदवाणी जाम्भोजी की कालजयी वाणी है, जिसका महत्व अक्षुण्ण है। जब-जब मानव जाति किसी संकट, दुविधा, भटकाव एवं जीवन के अनुचित रास्ते पर अग्रसर होगी, तब-तब सबदवाणी प्रेरणाप्रद बनकर मानव जाति को जीवन का सच्चा रास्ता दिखाती रहेगी। इसलिए आज के इस वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के दौर में जाम्भोजी के सिद्धान्तों का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है। आवश्यकता इस बात की है कि जाम्भोजी के सिद्धान्तों का आज अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाये, जिससे मानव जाति का सर्वाधिक हित हो सके। इक्कीसवीं शताब्दी की मानव जाति, जो आज नैतिकता, प्रेम, भाईचारा, त्याग, सेवा भावना, परोपकार एवं दान आदि प्रवृत्तियों को त्याग कर स्वार्थ, विलासिता, अहं एवं विवेकहीनता के रास्ते पर अग्रसर हो रही है, उससे जाम्भोजी के सिद्धान्तों की नैया ही सांसारिक कष्टों से मुक्ति दिला सकती है और जीवन के सच्चे रास्ते पर चला सकती है।

वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद सदी की प्रमुख प्रवृत्तियां बनी हुई हैं, जिसमें मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गई है। मीडिया एवं संचार के साधनों ने आज सम्पूर्ण विश्व को एक गांव के रूप में बदल दिया है। इसी कारण आज विश्व के किसी भी कोने में घटने वाली घटना पूरे विश्व को झकझोर देती है। मीडिया के साधनों में भी टेलीविजन प्रमुख साधन है। यह हर किसी के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। इसी के माध्यम से विकसित देशों ने वैश्वीकरण का नारा देकर शोषण का एक नया जाल फैला दिया है, जिसमें विश्व के गरीब देश फंसते जा रहे हैं और 'जिससे दुनिया में गरीबी और अमीरी का नया विभाजन पैदा

हो रहा है।'[1] टेलीविजन पर बार-बार विज्ञापन को देखकर लोग आवश्यकता न होने पर भी वस्तुएं खरीदते रहते हैं और फिजूल खर्ची के शिकार होते रहते हैं, जिससे लोगों में सादगी एवं सन्तोष से जीवन व्यतीत करने की आदत छूटती जा रही है। जीवन के नैतिक मूल्य नष्ट हो रहे हैं तथा लोग बेईमानी, झूठ, चालाकी एवं असन्तोष के शिकार हो रहे हैं। इसके साथ ही टेलीविजन के विज्ञापनों में जो नग्नता दिखाई जा रही है, उससे युवा वर्ग में विलासिता बढ़ती जा रही है और वह विभिन्न प्रकार के नशे का शिकार हो रहा है तथा उसमें अपराध एवं असंतोष की प्रवृत्तियां तभी आ सकती हैं, जब लोग जाम्भोजी के कहे अनुसार अमल, तमाखू, भांग, मद सूं दूर ही भागै' आदि नियमों का पालन करके तथा सादगी एवं सन्तोष के साथ जीवन व्यतीत करें।[2] जाम्भोजी के अनुसार मनुष्य को यथाशक्ति परिश्रम करना चाहिये[3] और उसे जो रूखा-सूखा मिले, उसे श्रेष्ठ समझकर ग्रहण कर लेना चाहिये,[4] साथ ही मनुष्य को अपने जीवन में संयम को धारण करके प्रसन्न चित्त रहना चाहिये।[5] इक्कीसवीं सदी का मनुष्य यदि जाम्भोजी के बताये इन सिद्धान्तों को अपने जीवन में अपना ले, तो वह अनेक प्रकार के कष्टों एवं शोषण से मुक्त हो सकता है और अपने भौतिक जीवन को सुख के साथ व्यतीत कर सकता है। इन सिद्धान्तों के द्वारा ही आज का मनुष्य वैश्वीकरण एवं बाजारवाद से उत्पन्न विभिन्न बुराइयों पर विजय प्राप्त करने में सफल हो सकता है।

आज विश्व के विकसित देशों ने अपने स्वार्थ एवं चालाकी से सम्पूर्ण विश्व को एक आकर्षक बाजार बना दिया है, उसमें शोषण का तांडव नृत्य हो रहा है। इस बाजार में ग्राहक एवं वस्तु का ही महत्त्व है, मनुष्यता के लिए कोई स्थान नहीं है। पश्चिमी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण आज हमारे देश में भी पश्चिमी संस्कृति की विलासिता, नग्नता, अनुशासनहीनता, नशा खोरी, एवं हिंसा आदि की प्रवृत्तियां बढ़ती जा रही है और हमारे सांस्कृतिक मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं। भौतिकता के रंग में रंगे जाने के कारण आज भारत वर्ष में भी पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इस विश्व व्यापी समस्या ने मानव जीवन के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। विश्व में फैला हुआ यह पर्यावरण प्रदूषण विश्व के समस्त विकास को ही निगल न जाये, इससे पूर्व मानव को सचेत होना होगा। पर्यावरण प्रदूषण को समाप्त करने एवं विश्व के पर्यावरण को सुरक्षित रखने हेतु जाम्भोजी ने हमें जो मूल मंत्र दिया है, वह है - **जीव दया पालणी अर् रूंख लीलौ नहिं घावै** अर्थात् पृथ्वी के जीवों पर दया करो और हरे वृक्ष मत काटो। वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के इस युग में मनुष्य की स्वार्थी भावना एवं विलासी प्रवृत्ति अपनी चरम सीमा पर पहुंच गयी है, जिसके कारण मनुष्य ने कुल्हाड़ी एवं छुरी के अन्धाधुंध प्रयोग के कारण आज विश्व में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकट हो गई है।

इसलिए हमें आज जाम्भोजी की शिक्षा-'जीव दया पालणी अर् रूंख लीलौ नहिं धावै' को अपनाकर कुल्हाड़ी एवं छुरी को पूर्णतया त्यागना होगा। इसी से प्रकृति के तीनों घटकों में सन्तुलन रह सकता है और विश्व में पर्यावरण का संरक्षण हो सकता है। इसी सिद्धान्त के द्वारा मानव सुख-शान्ति के साथ जीवन व्यतीत कर सकता है तथा विकास के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

मानव मूल्य एक जैसे दिखाई देने पर भी, उनके रूप, स्थान एवं काल के अनुसार अलग-अलग हो जाते हैं। इसी कारण ''अभिधा में मूल्य कुछ और होते हैं, जबकि लक्षणा और व्यंजना में वे भिन्न-भिन्न रूप धारण कर लेते हैं। वसुधैव कुटुंबकम और भूमंडलीकरण लगभग एक जैसा अर्थ वहन करते हैं। परन्तु सब जानते हैं कि दोनों एक नहीं हैं, उल्टे इन्हें दूसरे के विपरीत कहा जाये तो कोई हर्ज नहीं है। भूमंडलीकरण द्वारा अमीर द्वारा गरीब देशों पर आर्थिक साम्राज्यवाद लादना इसका कूटार्थ है। गांधी होते तो इसे बड़े देशों द्वारा छोटे और पिछड़े देशों की हिसां कहते।[6] वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के दौर में फैली हुई इसी हिंसा को देखते हुए आज विश्व को सर्वाधिक आवश्यकता अहिंसा की है। आज संसार में विनाशकारी अस्त्रों का विशाल भंडार है और ऐसे में कोई भी देश अपने स्वार्थ पूर्ति या अहं के कारण इनका प्रयोग करके मानव जाति का विनाश कर सकता है। ऐसे में हमें आज अहिंसा की एक विश्व व्यापी व्याख्या के साथ-साथ उसे क्रिया में बदलने के उपाय करने होंगे।[7] इसके लिए विश्व को जाम्भोजी के अहिंसा सम्बन्धी सिद्धान्तों को अपनाना होगा। जाम्भोजी प्राणी मात्र का हित चाहते थे। इसलिए उन्होंने जीव हत्या का तर्क सहित विरोध किया है।[8]

जाम्भोजी कर्म के साथ - साथ वचन से भी हिंसा नहीं चाहते थे। किसी को बुरी बात कहकर मानसिक कष्ट पहुंचाना भी हिंसा ही है। इसीलिए उन्होंने झूठ न बोलना, निंदा न करना तथा वाद-विवाद न करना आदि नियमों को उन्नतीस नियमों में सम्मिलित किया है और इन्हीं बुराइयों का उन्होंने सबदवाणी में विरोध किया है।[9] पाणी, वाणी, ईधणी, दूध इतना लीजै छाण, के माध्यम से भी कर्म एवं वचन से हिंसा न करने का समर्थन किया गया है। इस तरह वैश्वीकरण के नाम पर आज शक्तिशाली देशों द्वारा जो शोषण किया जा रहा है, उसे समाप्त करने तथा विश्व को आणविक हथियारों के खतरे से बचाने के लिए मानव जाति को जाम्भोजी के अहिंसा सम्बन्धी सिद्धान्तों को अपनाना आवश्यक है।

वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के इस दौर में आज मनुष्य की जो स्वार्थी प्रवृत्ति बढ़ रही है, उसके कारण आज नैतिकता के लिए कोई स्थान नहीं रहा है। टेलीविजन में जो विज्ञापन दिखाए जा रहे हैं, उनमें नैतिकता को त्याग कर विलासिता स्पष्ट रूप में दिखाई जाती है और उन्हें बार-बार दिखा कर वस्तुओं को बेचने का उद्देश्य स्पष्ट

रूप से झलकता है। उदाहरण के लिए विभिन्न प्रकार के विज्ञापनों के माध्यम से कोक एवं पेप्सी को विदेशी कम्पनियों ने आज इतना लोकप्रिय बना दिया है कि वे गांव एवं ढाणियों तक प्रचलित हो गये हैं। इनके अत्यधिक प्रचार-प्रसार के कारण आज ये ही पेय पदार्थ हमारे सामाजिक उत्सव एवं आतिथ्य सत्कार के आधार बने हुए हैं तथा हमारे देश के परम्परागत पेय ठंडाई, लस्सी एवं शिकंजी आदि लुप्त प्राय: हो गये हैं। कोक एवं पेप्सी को सुंदर, आकर्षक तथा स्वादिस्ट बनाने के उद्देश्य से इनमें कीटनाशक एवं रंगों का प्रयोग हो रहा है, जिससे देश में जानलेवा बीमारी कैंसर के रोगी बढ़ गये हैं। इस बढ़ते हुए केंसर एवं इससे होने वाली मौत को देखकर भारत इन पेय पदार्थों में प्रयुक्त होने वाले कीटनाशक एवं रंगों के प्रयोग का विरोध भी किया है पर इसका कोई अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ रहा है और आज इस वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव के कारण एक ओर हमारा आर्थिक शोषण हो रहा है तो दूसरी ओर हम पैसा खर्च करके कैंसर तथा अन्य बीमारियों के माध्यम से मौत खरीद रहे हैं। आज टेलीविजन पर कोक-पेप्सी आदि के जो विज्ञापन आ रहे हैं उससे हम सब भ्रमित होकर इसके अन्धाधुंध प्रयोग के लिए विवश होते जा रहे हैं। आज हम कोक-पेप्सी के माध्यम से मौत के जिस मक्कड़ जाल में फंस गये हैं, उससे बाहर निकलने का केवल एक ही रास्ता है और वह है - जाम्भोजी के सिद्धान्त। कोक-पेप्सी ऐसी वस्तुएं नहीं हैं कि जिनके बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता हो। आवश्यकता से अधिक मात्रा में खाने-पीने का भी जाम्भोजी ने विरोध किया है। अधिक खाने से केवल शरीर का भार ही बढ़ता है, जो विभिन्न रोगों को जन्म देता है।

घण तण जीम्यां को गुण नांही, मल भरिया भंडारूं।
आगै पाछै माटी झूलै, भूला भवै जमवारूं।। 24 (1,2)

इनकी तुलना में हमारे परम्परागत पेय ठंडाई, लस्सी, शिकंजी एवं शरबत आदि अधिक सस्ते भी हैं तथा स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक नहीं हैं। हमें उन्हीं पर सन्तोष करना चाहिये, क्योंकि जाम्भोजी ने सन्तोष एवं संयम धारण करने पर बल दिया है।[10] इसके साथ-साथ भारत के परम्परागत पेय को तैयार करने के लिए जो थोड़ा परिश्रम करना पड़ता है, उसकी आदत भी हमें डालनी चाहिये। जाम्भोजी ने अपने हाथों से परिश्रम करने पर जोर दिया है। इस तरह जाम्भोजी के सिद्धान्तों के अनुरूप सन्तोष, संयम एवं परिश्रम को अपनाकर हम आज कोक-पेप्सी के धीमे जहर से बचकर आर्थिक शोषण एवं कैंसर जैसे जानलेवा रोग से बच सकते हैं और वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के सबसे बड़े शोषक अमेरिका जैसे देश की शोषण नीति को रोक सकते हैं। बस आवश्यकता इस बात की है कि हम जाम्भोजी के सिद्धान्तों को अपनाये तथा मानव कल्याण के लिए उनका विश्व में अधिक से

अधिक प्रचार-प्रसार करें।

विश्व के शक्तिशाली एवं विकसित देश समय-समय पर बाहरी रूप में विश्व कल्याण की बातें करते रहते हैं। इसी क्रम में मुद्रा कोष, विश्व बैंक एवं विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाओं का गठन किया गया है। इनके गठन का उद्देश्य विश्व का अधिक से अधिक हित करना है पर वास्तविकता कुछ और ही है। धीरे-धीरे इन संस्थाओं पर विकसित देशों का एकाधिकार हो गया है और इन्होंने कमजोर देशों का शोषण प्रारम्भ कर दिया है। विश्व स्तर के ये संगठन भी अपने विश्व कल्याण के मूल उद्देश्य से भटक कर विकसित देशों का शोषण करने की नीति में सम्मिलित हो गये हैं।[11] इस तरह वैश्वीकरण में जो जन कल्याण की बात को स्वीकार किया गया था, वह शोषण में परिवर्तित हो गई है और इसके प्रभाव से भारत भी अछूता नहीं रहा है। यहां भी वैश्वीकरण के कारण जनसाधारण की रोजी-रोटी के साधन लघु कुटीर उद्योग समाप्त प्राय हो गये हैं, जिससे बेरोजगारी एवं महंगाई बढ़ती जा रही है। 'किसान आत्म हत्याएं कर रहे हैं, गरीबों की फौज खड़ी हो रही हैं, धन बलियों का वर्चस्व कायम हो रहा है। मुनाफा कमाने और दौलत जमा करने की लिप्सा बढ़ रही है तथा हिंसा व आतंकवाद का नंगा नृत्य हो रहा है।'[12] ऐसे में हमें जाम्भोजी के उदारवादी सिद्धान्तों को अपनाने की आवश्यकता है, जिससे सभी लोगों का हित हो सके। जाम्भोजी मानव-मानव को समान समझते रहे हैं। उन्होंने भेद भाव एवं ऊंच-नीच की भावना का विरोध करते हुए कहा है कि सभी मनुष्यों में वहीं श्वास है, वही मांस है, वही देह है और वही प्राण है। फिर किसी को उत्तम और किसी को नीच क्यों समझते हो तथा यह भेद भाव की दृष्टि क्यों रखते हो ?[13] उन्होंने सभी धर्मों तथा जातियों के लोगों को एक ही प्रकार के उपदेश देकर न केवल पारस्परिक सहिष्णुता का पाठ पढ़ाया है अपितु उन्हें इसके साथ ही आदर्श मानवता की बातों को समान रूप से अपनाने की भी प्रेरणा दी है।[14] जाम्भोजी ने न केवल मानव-मानव को समान समझकर सेवा एवं भलाई करने की बात की है[15] अपितु उससे भी आगे बढ़कर उन्होंने प्राणी मात्र एवं वृक्षों पर दया करने और उनकी रक्षा करने पर जोर दिया है। वस्तुत आज विश्व में जिस वैश्वीकरण की बात कही जा रही है, वह तभी सार्थक हो सकती है जब हम स्वार्थ से ऊपर उठकर सम्पूर्ण विश्व के हित की बात सोचें और जो सर्वाधिक पिछड़े हुए हैं उन्हें ऊंचा-उठाने का प्रयास करें। पर यह कार्य तब तक पूरा नहीं हो पायेगा, जब तक मनुष्य अपनी स्वार्थ की भावना को त्याग कर उदारता का परिचय नहीं देगा। इसके लिए हमें जाम्भोजी के जीव दया पालणी तथा परोपकार के सिद्धान्तों को अपनाना होगा[16] इसके साथ ही जाम्भोजी ने यह भी कहा है कि मनुष्य को सांसारिक धन-दौलत एवं महल आदि सबको यहीं छोड़कर जाना होगा।[17] ऐसे में

वैश्वीकरण के इस युग में विकसित देशों द्वारा शोषण एवं अपनीति द्वारा गरीब देशों को गरीब बनाकर धन संग्रह करना अनुचित है। जाम्भोजी शत्रुता के द्वारा तथा किसी को मार-पीट कर धन संग्रह करने को दोष मानते रहे हैं। **कै तैं बैर विरोध धण हट लोड्या - 59/10 कै तैं वाटिकूटि धन लीयौ** - 59/18 अत: आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व के विकसित देश जाम्भोजी द्वारा बताये गये शोषण सम्बन्धी इन दोषों से अपने को दूर रखें तथा गरीबों के उत्थान में सहयोग करें, तभी वैश्वीकरण का उद्देश्य पूरा हो सकता है।

वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के इस युग में आज विश्व के विकसित देश अपने माल को विकासशील एवं गरीब देशों के बाजार में बेचने के प्रयास में लगे हुए हैं, जिसके मूल में विकसित देशों की शोषण की नीति ही प्रमुख है। बड़े देश विज्ञापनों के द्वारा गरीब देशों को अपने घटिया माल को खरीदने के लिए विवश कर रहे हैं, जिसके मूल में कुछ का विकास एवं अधिकांश के विनाश की नीति कार्य कर रही है, जबकि जाम्भोजी प्राणी मात्र का हित करना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने विचार समाज के सामने प्रस्तुत किये थे। आज का मनुष्य, अपनी विवशता, गरीबी एवं भीड़ के कारण निराश हो रहा है। ऐसे निराश एवं हताश मनुष्य को अपने लक्ष्य तक पहुंचाने का सरल उपाय जाम्भोजी ने बताया है। उनके अनुसार अपने कर्त्तव्य का पालन करने वाला तथा विनम्र एवं क्षमाशील मनुष्य ही अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।[18] आज के इस दिगभ्रमित वातावरण में संसार में धोखा देने वाले कलाबाजों की कमी नहीं है। ये कलाबाज सरल हृदय लोगों को सच्चाई के रास्ते से हटाकर झूठी बातों का प्रचार-प्रसार करते रहते हैं। जाम्भोजी के अनुसार सुखमय जीवन जीने के लिए ऐसे कलाबजों से हर युग में सावधान रहने की आवश्यकता है[19] तथा सच्चाई को जानकर ही आगे बढ़ना चाहिये।[20] आज जिस तरह से शक्तिशाली देशों द्वारा गरीबों का शोषण किया जा रहा है, ऐसे में हमें गरीबों के विकास के लिए जाम्भोजी द्वारा बताये गये लोक कल्याण के रास्ते पर चलना चाहिये तथा निरर्थक बातों को छोड़कर सार की बातों को ग्रहण करते हुए[21] भौतिक जीवन को सुखी बनाने का प्रयास करना चाहिये।

वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के इस दौर में आज धन का महत्व बहुत बढ़ गया है। जहां धन का महत्व सर्वोपरि हो जाता है, वहां व्यक्ति में स्वार्थ की भावना प्रबल हो जाती है। उसके लिए मानवीय मूल्य नगण्य हो जाते हैं। आज यही स्थिति बनी हुई है, जिसके कारण मानव के दिलों की दूरियां बढ़ती जा रही हैं। ''भूमंडलीकरण के रूप में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया अपने चरम पर पहुंच गयी है। अब सारा जगत एक ही सांचे में ढाल दिया जायेगा जो इस सांचे में ढलने को तैयार नहीं होंगे, उन्हें छंटनी के सिद्धान्त के तहत नष्ट होने के लिए हाशिये पर फेंक दिया जायेगा।[22]

आज आपसी प्रेम, भाईचारा, विश्वास, करूणा एवं परोपकार जैसी भावनाएं क्षीण होती जा रही हैं। धन के बढ़ते हुए महत्व के कारण अमीर एवं गरीब की खाई भी अधिक चौड़ी होती जा रही है। जबकि जाम्भोजी ने लोक मंगलकारी कार्यों को अधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार मनुष्य के पास जो कुछ है, उसमें से उसे यथा शक्ति दूसरों की भलाई के लिए दान देना चाहिये।[23] ऐसा करने में मनुष्य का लोक-परलोक आनन्दमंय हो सकते हैं।[24] आज के बाजारवाद के इस दौर से गुजरने वाले व्यक्ति आदि जाम्भोजी के इस सिद्धान्त के अनुसार सत्य के मार्ग पर चले, सन्तोष को धारण करें तथा दूसरों की भलाई करें[25] तभी वे असन्तोष, दु:ख एवं कुंठा से मुक्त हो सकते हैं।

वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के इस युग में राजनीति का वर्चस्व बहुत अधिक बढ़ गया है। राजनीति, जो कभी समाज सेवा का पर्याय रही है, वही आज नैतिकता से रहित होकर स्वार्थ पूर्ति का माध्यम बन गयी है। दूषित राजनीति आज समाज में हिंसा एवं आतंक का वातावरण बनाकर कमजोर लोगों का शोषण कर रही है। सता के घमंड के कारण राजनेता कानून को ताक पर रखकर हर प्रकार के अपराध कर रहे हैं, जिससे समाज में कलह एवं अशान्ति बनी हुई है। राजनीति के इस दूषित रूप के समाप्त हुए बिना मानव समाज का हित नहीं हो सकता। यह तभी सम्भव हो सकता है, जब आज के राज नेता जाम्भोजी के कहे अनुसार घमंड का त्याग करे। घमंड युक्त व्यक्ति विवेकहीन हो जाता है और वह अच्छे-बुरे में भेद नहीं कर सकता है।[26] इसलिए आज जितने भी विकसित एवं शक्तिशाली देशों के नेता हैं, उन्हें जाम्भोजी के सिद्धान्तों के अनुसार घमण्ड को छोड़कर, दया[27], नम्रता, क्षमा[28], सेवा एवं परोपकार की प्रवृत्तियों को अपनाकर कथनी एवं करणी में समानता रखकर[29] मानव हित का कार्य करना चाहिये, जिसमें अमीर-गरीब का भेद मिट सके और समाज में व्याप्त शोषण समाप्त हो सके।

मनुष्य के बढ़ते हुए अवगुणों के कारण आज बाजार का रूप अत्यंत अमानवीय होता जा रहा है। शोषण एवं स्वार्थ की अधिकता के कारण आज बाजार के सारे सम्बन्ध अर्थ से सम्बंधित हो गये हैं। बाजार की इस अन्धी दौड़ में मनुष्यता की रक्षा करना कठिन होता जा रहा है। वैश्वीकरण एवं विलासिता के इस दौर में मनुष्य के तन एवं मन दोनों को स्वस्थ रखने के साधन निरन्तर नष्ट होते जा रहे हैं, वह विभिन्न बीमारियों का शिकार होता जा रहा है। ऐसे में आज के स्वार्थी मनुष्य के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अपने तन एवं मन को स्वस्थ कैसे रखें ? इस चुनौती के लिए उसे जाम्भोजी के 'जीया नै जुगती अर् मूवां नै मुगती' के सन्देश को अपनाने की आवश्यकता है। युक्तिपूर्वक जीवन जीने एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए जाम्भोजी ने दो उपाय बताये हैं - '**हिरदै नांव विसन का जंपो हाथे करो**

टबाई।' अर्थात् हृदय में विष्णु का स्मरण करो और अपने हाथों से अच्छे कर्म करो। युक्तिपूर्वक जीवन के लिए जाम्भोजी ने जीवन यापन की विधि बताई है। जीवन विधि को जानने वाला मनुष्य इस संसार में सुखपूर्वक रहकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। जीवन-विधि को जानने के लिए जाम्भोजी ने जीवित मरने पर सर्वाधिक बल दिया है।[30] जीवित मरने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य को अच्छे कार्य के लिए अपने जीवन का बलिदान कर देना चाहिये। जीया नै जुगती के उद्देश्य से ही जाम्भोजी ने कर्ममय जीवन का उपदेश दिया है। इस तरह वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के युग में जीने वाला मनुष्य जाम्भोजी के सिद्धान्तों के अनुसार श्रेष्ठ कार्यों एवं विष्णु स्मरण के माध्यम से अपने तन एवं मन को स्वस्थ रख सकता है और इन्हीं उपायों द्वारा आज भी पूरे मानव समाज को स्वस्थ बनाया जा सकता है और इसी से मानव विकास के रास्ते पर अग्रसर हो सकता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के प्रभाव के कारण आज जिस गति से विश्व में अवगुणों का निरन्तर विकास होता जा रहा है तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है एवं मनुष्य बुराइयों के मक्कड़जाल में उलझता जा रहा है, जिसमें मनुष्य का भौतिक जीवन कलह, तनाव, अविश्वास, आतंक व असुरक्षा आदि में जकड़ा जा रहा है, ऐसी स्थिति में जाम्भोजी द्वारा मनुष्य को दया, नम्रता, क्षमा, सादगी, सच्चाई, ईमान, अहिंसा आदि मानवीय गुणों को अपनाने एवं अहं, काम, क्रोध, आडम्बर, घृणा, निंदा, झूठ, हिंसा एवं नशे आदि अवगुणों को त्यागने की जो राह बताई है, उसे अपनाने की आवश्यकता है। मानव समाज में जब तक अवगुणों का अस्तित्व रहेगा, तब तक जाम्भोजी द्वारा 'जीया नै जुगती अर् मूवां नै मुगती के सन्देश का महत्व बना रहेगा। आज वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के युग में, जिस गति से मानव समाज में बुराइयाँ पनप रही है और साधारण मनुष्य का जीवन जिस तरह दु:खों से घिरता जा रहा है, ऐसे में जाम्भोजी के सिद्धान्त ही मनुष्य के भौतिक जीवन को सुखी बना सकते हैं और उसे मोक्ष के रास्ते पर अग्रसर कर सकते हैं।

संदर्भ :-

1. डॉ. विश्वम्भर नाथ उपाध्याय - समकालीन सिद्धान्त और साहित्य - पृ. 17
2. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी 111. (1, 2)
3. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 83- (27, 28)
4. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी 74- (1,2)
5. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी 69- (1)

6. स. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी – समकालीन भारतीय साहित्य, मार्च–अप्रैल, 2010 – पृ. 150
7. स. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी – समकालीन भारतीय साहित्य, मार्च–अप्रैल, 2010 – पृ. 151
8. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 7–(5,6), 8– (3, 4, 15, 16, 23, 24), 9–(7, 9)
9. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 52–(1 से 4), 22– (1,2), 6– (11,12), 21–(9), 15–(13), 19–(14,15), 98–(1)
10. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 21– (21,22), 109– (1), 69 (1)
11. एन मोहनन – आलोचना के आयाम (2008), पृ. 43–44
12. दस्तावेज – जनवरी मार्च (2007) – पृ. 3
13. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 39– (1,2)
14. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी, पृ. 36
15. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 21 – (7)
16. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 64– (10)
17. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 61– (1 से 4), 66– (3,4)
18. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 67– (10, 11), 105 (6,8)
19. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 90– (9, 10)
20. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 13– (7,8), 29– (1,2)
21. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 51– (15)
22. अभय कु. दुबे– भारत का भूमंडलीकरण – पृ. 439
23. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 54– (9, 10)

24. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 83- (13, 14)
25. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 106- (3,4)
26. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 18 -(15, 16), 51 - (22, 23)
27. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 18- (1, 2, 7, 8)
28. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 21 - (16, 17, 18)
29. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 28 - (31, 32)
30. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवाणी (मूल और टीका) 105- (6)

❍ **डॉ. बनवारी लाल सहू**
प्राचार्य
व्यापार मण्डल महिला महाविद्यालय
हनुमानगढ़ टाऊन, राजस्थान

गुरु जम्भेश्वर जी की वाणी में मुसलमानों से सम्बंधित प्रसंगों में वैश्विक चिंतन

बिश्नोई पंथ के संस्थापक गुरु जाम्भोजी (1451-1536 ई.) एक सर्व समन्वयी महापुरुष थे। बिश्नोई पंथ में हिन्दू, मुसलमान, जैन, नाथ आदि सभी धर्मों एवं पंथों के लोग शामिल हुए थे।[1] बिश्नोई कवि आलम के अनुसार जातियों, सतियों, सोफियों, जोगियों, दरवेसों, मुसलमानों, हिन्दुओं आदि सबकी आशा जाम्भोजी पूरी करते थे। उन्होंने सबको उत्तम किया।[2] गुरु जाम्भोजी ने स्वयं कहा था- सबमें मांस, सांस, देह प्राण एक जैसे होते हैं, फिर ये ऊंच-नीच का भेद क्यूं मानते हो?[3] उन्होंने पुनः कहा था- केवल श्रेष्ठ कुल में जन्म लेने से कोई श्रेष्ठ नहीं हो जाता, यदि उसमें गुण न हो। मनुष्य श्रेष्ठ तो अच्छे कार्य करने से बनता है।[4]

गुरु जाम्भोजी एक महान समाज सुधारक और क्रांतिकारी थे। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों दोनों को ही स्पष्ट उपदेश दिया था। उन्होंने कहा- वेद और कुरान के नाम पर दंत कथाएं बहुत फैल चुकी हैं।[5] ब्राह्मण वेद को भूल चुका है और काजी ने भी अपनी कलम खो दी है।[6] हे काजी, हे मुल्ला,[7] गुरु की कलम को पहचानो।[8] यह जान लो कि अल्ला सबका हिसाब लेगा।[9] उनमुन रहने वाले मुल्ला।[10], मनहठी काजी और पण्डित ये सब अपने-अपने संकीर्ण मार्गों पर ही चलते हैं।[11] ये काजी, मुल्ला, पढ़े-लिखे पंडित आदि मूर्ख हैं, जो निंदा करते हैं।[12] हिन्दू और मुसलमान दो अलग-2 पंथ नहीं हैं।[13] ये तो अल्ला और ईश्वर को प्राप्त करने के अलग-अलग दो रास्ते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में खुदा का प्रकाश है। मुसलमान होकर हज के लिए काबे की यात्रा करना केवल भूल का प्रमाण है।[14] इसलिए हे शेख, सूफी,काफिर चिश्ति तुम सभी सुनो ये शरीर झूठाहै। उत्पन्न और नष्ट होता है।[15] हिन्दू और मुसलमान सभी को उस अल्ला (ब्रह्म) का स्मरण करना चाहिए[16] क्योंकि अंत में खुदा सब बातों का हिसाब लेंगे। तब सभी को उस प्रभु के स्मरण न करने पर मलाल होगा।[17]

गुरु जाम्भोजी की शरण में दिल्ली का बादशाह सिकन्दर लोदी, नागौर का मुहम्मद खां, नागौरी अजमेर का मल्लू खां, कर्नाटक का शेख सद्दो, हासम-कासम दर्जी आदि मुसलमान भी आये थे।[18] बिश्नोई लोक कथाओं एवं सबदवाणी के प्रसंगों के अनुसार जाम्भोजी समुद्र पार गये थे।[19] वहां पर अनेक बादशाह, नवाब एवं काजी जाम्भोजी के सम्पर्क में आये थे। ईरान के बादशाह ने तो उन्हें एक लाख पट्टे की जागीर का परवाना लिखकर दिया था।[20] काबुल के सुखन खां, सेफन अली, हसन अली और मुलतान के नवाब गुरु जाम्भोजी को इसी भ्रमणकाल में मिले थे। इन सबके संदर्भ में जाम्भोजी द्वारा कहे गये सबदों का उल्लेख मिलता है।

एक समै जाम्भोजी मकै-मदीनै लवयान की पाण्ठ उपरै खड्या रह्या। एक झींवर जाक ले आओ। जाम्भोजी झींवर नै कहयौ- जक मां जाक मत रैड़। झींवर जक मां जाक रेड्यौ। एक मछी आई जाभैजी नफर न कहे दवा सुणाई। मछी अमर हुई झींवर कनी या मछी काजी लीवी। काजी करद चलावै, मछी कटै नहीं, तीन दिन आंतस मां उकलाई, मछी कै आंच लागी नहीं। काजी झींवर नै पकड़ मंगायो।

क्यों वे कुटणायो, मछी कहां तै ल्यायो। काजी हकीकत कही। काजी मछी ले पीर के पास आया। काजी कहै, तुम गुण मरद हो। जाम्भोजी कहै- हमें, या ही कहेगी। मछी कह- विस्मिलाह रहमाने रहीम: रोजे ही याय शेख जिहान मां वा मकै मदीनै व जिवाय जिकर करद अद न सबुद।.....काजी ने किताब में इस सबद को लिख लिया। पीर की कदम पोसी की और जीव हत्या करनी पड़ी।[21]

'एक समै बिश्नोई गंगापार पूरब का अरज कीवी। जाम्भाजी तुरकाणी को जोर है। कोई हमकूं तुरक संतावै तो क्या जवाब देंगे। जाम्भैजी कोरै कागद में लपेट र दीन्हौ। उघाड़ र देखे तो माही अरबी दसकत है। फारसी नवीसा नूं वंचाया। पंज नामो निसरयौ-विस्मिल्लाह रहमाने रहीम फरमान बन्दगी। हजरत शेख मल सायखे अवलीया हजरत.....।[22]'

कथा सिकन्दर की [23] से दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई.) का जाम्भोजी से संबंध का पता चलता है। कथा के अनुसार एक बार गंगा पार के बिश्नोई जाम्भोजी के दशनार्थ सम्भराथल जा रहे थे। उन्होंने दिल्ली में हासम-कासम दर्जियों के घर के सामने रात्रि का विश्राम किया था। रात्रि जागरण में उनके प्रवचनों को सुनकर वे दर्जी भी उनके साथ संभराथल चले गये थे। वहीं पर उन्होंने जाम्भोजी से ज्ञानोपदेश ग्रहण किया था और बिश्नोई पंथ में दीक्षित हो गये थे। जब वे दिल्ली आये तो बादशाह को एक बात का पता चल गया। बादशाह सिकन्दर लोदी ने उन्हें कैद में डाल दिया था। जाम्भोजी अपने शिष्य रणधीर जी बाबल के साथ दिल्ली गये थे। जाम्भोजी ने हासम-कासम को बादशाह की कैद से छुड़ाया था। इस समय जाम्भो जी और बादशाह में कुछ संवाद हुए थे, देखिये पूछै **सिकन्दर पातशाह, हिन्दू तुरक कहै दो राह। सची बात कहो कर चीन्हूं, दोनूं मांहि बड़ा गुण दीन॥**

भगवान कहै सांभलि पातशाह, अलील पुरख का दोन्यौ राह।
क्या हिन्दू क्या मुसलमान, बड़ा सोई चीन्है रहमान।
सोचे समझे कोई सुजान, दोन्यौ बड़ा जिसमें ईमान॥

इसी तरह गुरु जाम्भोजी की वाणी का एक सबद भी है, जिसमें सिकन्दर लोदी का भेजा हुआ मुल्ला जाम्भो जी से चार प्रश्न करता है, जिसका वे उत्तर देते हैं, देखिये- **कुण स मोमिण, कुण स माण, कुण पुरष अछै रहमाण।**
किण पुरष आ जिमीं उपाई, मुसलमानी कहां सै आई॥

जाम्भो कहते हैं-

पुवण स मोमिण, पाणी माण, अलील पुरषअछै रहमाण।

अलख पुरष आ जिमीं उपाई, महमद तैं मुसलमानी आई।[24]

इस शब्द को सुनकर सिकन्दर लोदी ने प्रश्न किया- हे देव मेरे पास धन-दौलत, हाथी-घोड़ा बहुत हैं और मैंने इनका दान भी बहुत किया है। क्या मेरे ये काम आएंगे। तब जाम्भोजी ने ये शब्द उसे सुनाया-

कूड़ी माया जाल न भूली रे राजेंद्र, अलगी रही ओजूं की वाटूं॥[25]

इन बातों की पुष्टि जाम्भोजी के एक अन्य सबद से होती है। जिसमें उन्होंने कहा है- **जम्बूदीय अैसो चर आयो, इस कंदर चेतायो। मान्यो सील हकीकत जाग्यो, हक की रोटी धायो।**[26]

एक समय बीकानेर के राव लूणकरण (1504-26 ई.) और नागौर के नवाब मुहम्मद खां नागौरी (1426-1519 ई.) में इस बात को लेकर विवाद हो गया कि जाम्भोजी हिन्दुओं के देव हैं अथवा मुसलमानों के पीर हैं। इसलिए उन्होंने अपने पुरोहित और काजी को यह बात जानने के लिए जाम्भोजी के पास भेजा।[27] जाम्भोजी ने तब मुहम्मद खां नागौरी के काजी को जीव-हिंसा न करने का यह शब्द सुनाया-

सुणि रे काजी सुणि रे मुल्ला, सुणि रे बकर कसाई।

किण री थरपी छाली रोसौ, किण री गाडर गाई?[28]

ऐसा ही उनका एक सबद और देखिये-

दिल साबत हज काबो नेड़ो, क्या उलबंग पुकारो?

भाई नाऊं बलद पियारो, तिंहकै गलै करद कयौं सारौ।[29]

काजी कहने लगा हम तो ओजू करते हैं और पाक है। जाम्भोजी ने उसे संदेश दिया-

आप खुदायबन्द लेखो मांगै, रे विनही गुन्हैं जीव क्यूं मारौ?

थे तकि जाणों तकि पीड़ न जाणौं, विणि परचै वाद निवाज गुजारौ॥

चरि फिरि आवै सहज दुहावै, तिहकी खीर हलाली।

तिंहकै गलै करद कयों सारो, थे पढ़ि गुणि रहिया खाली॥

चड़ि-चड़ि भींतै मड़ी मसीतै, क्या उकबंग पुकारो?

कारण खोटा करतब हीणां, थारी खाली पड़ी निवाजूं॥

किंह ओजू तम धोवो आप, किंह ओजूं तुम खंड़ो पाप?

किहं ओजूं तुम धरो धियान, किंह ओजूं चीन्हू रहमान।

रे मुल्ला मन माही मसीत निवाज गुजारियै।[30]

काजी बोला देव जी हम तो महमंद का जाप करते हैं।

जाम्भोजी ने बताया-

महमंद महमंद न करि काजी, महमंद का तो विषय विचारूं।
महमंद हाथि करद जो होती लोहे घड़ी न सारूं।
महमंद साथि पकंबर सीधा एक लख असी हजारूं।
महमंद मरद हलाली होता तुम्ही भया मुरदा मुरदारूं॥[31]

इस तरह जाम्भोजी ने अपनी वाणी से पुरोहित और काजी को संतुष्ट किया। उन्होंने कहा कि मैं सच्चे हिन्दू का देव हूं और सच्चे मुसलमान का पीर हूं। उनकी इन बातों से राव लूणकरण एवं मुहम्मद खां के भ्रम भी दूर हुए। मुहम्मद खां तो उनकी बातों से इतना प्रभावित हुआ कि वह अपनी समस्याओं के समाधान के लिए जाम्भोजी के पास संभराथल आने लगा।

इसी तरह एक बार मुहम्मद खां संभराथल जाम्भोजी के पास आया और उनसे आकार-निराकार के विषय में पूछने लगा। तब देवजी ने उसे यह सबद सुनाया।

राज न भूलीलो राजिन्दर,दुंनी न बन्धे मेरूं।
पुवणां झोलै बीखर जैंला, धुंवरि तणां ज लोरूं॥[32]

एक बार मुहम्मद खां के साथ शेख मनोहर नामक व्यक्ति भी आया। तब मुहम्मद खां ने पूछा देव जी जीव के अंदर रूहका प्रवेश कैसे होता है। तब देव जी ने कहा- वेद कुरान में क्या है। जाम्भोजी का मूल सबद देखिये-

पढ़ि कागल वेदों सासतर सबदों, पढ़ि गुणि रहिया कछू न लहिया
निगुरा उमग्या काठ पखाणो,
कागज पोथा ना कुछि थोथा, ना कुछि गाया गीयौ[33]

तब शेख मनोहर ने भी पूछा की रूह का वर्ण कैसा है, तब देवजी बोले-

मछी मछ फिरै जल भीतरि, तिंहका माघ न जोयबा।
परम तंत है अैसा, आछै उरवार न ताथै पारूं॥[34]

गुरु जाम्भोजी की वाणी के प्रसंगों से पता चलता है कि अजमेर के सूबेदार मल्लूखां ने नेतसी सोलंकी को कैद कर लिया था। यह जोधपुर के राव सांतल आदि का भानजा था। राठौड़ उसे छुड़ाना चाहते थे। तब मल्लूखां एवं राठौड़ों का युद्ध होने की संभावना थी। सेना के पड़ाव के पास थांवला गांव था। वहां जाम्भोजी का पड़ाव भी था। राव दूदा के कहने पर राव सांतल जाम्भोजी से मिला। जाम्भोजी हिन्दुओं का कोई वर देंगे, यह सुनकर मल्लूखां भी वहां आ गया। मूल प्रसंग देखिये-

राठौड़ां वन्दयौ विसन, चाल सुणी चहुं फेर।
कुण वर देसी हिंदवां, खान सुण्यो अजमेर॥[35]

ऐसा सुनकर मल्लूखां जाम्भोजी के पास थांवले की साथरी आ गया। देव जी ने उसे यह सबद सुनाया।

उमाज गुमान पंज गंज यारी, रहिया कुपहिया सैतान की यारी।

सैतान लो सैतान लो सैतान बहो जुग छलियौ, सैतान लोड़ न रलियौ[36]

मल्लू खां बोला देवजी ऐसा उपाय बतावो जिससे भिस्त (स्वर्ग) मिले। तब जाम्भोजी ने बताया –

विसमल्ला रहमान रहीम, जिंहके सिदके भीना भीन।
तो भेंटि लो रहमान रहीम, करीम क्या दिल करणी॥
कलमां करतब कवल कुराणौ, दिल खोजो दरवेस भईलो।
तइया मुसलमाणौ।[37]

तब मल्लूखां बोला देवजी मुसलमानों में मांस खाना मना नहीं है। तब देवजी ने उसे समझाया–

'जोगी रे तूं जुगत पिछाणी, काजी रे तूं कलम कुराणी[38]
गऊ विणासौ काहे तांई, राम राय सूं दीन्हीं दानी॥'

आपके कहनानुसार चलने से मुझे मुसलमान कहेंगे कि मैं कुराह चलता हूं। तब देवजी ने उसे समाधान बताया–

तन मन धोइयै संजम होइयै हरख न खोइयै।
ज्यौं ज्यौं दुनियां करै खंवारी त्यौं-त्यौं किरीया पूरी।
मुगधा हु तै ऊं टलि- चालौ, ज्यौं खड़कै पासि धनूरी।[39]

इसके बाद सभी क्षत्रियों (हिन्दू-मुसलमानों) को जाम्भोजी ने उपदेश देते हुए यह सबद कहा–

हक हलाल हक साच किसनूं, सुकरत अहल्यो न जाई।
भल वाहीलो भल बीजीलो, पवणां वाडि वलाई॥[40]

मुलतान का सधारी मुल्ला जाम्भोजी से- उनकी मक्के-मदीने यात्रा के समय मिला था। वह भी एक बार संभराथल आया। देव जी ने उसे यह सबद सुनाया–

जके पंथ का भाजणा, गुरु का निंदणां।
स्याम का दुसमणा कुफर ते काफरा॥

पुन: देवजी ने उसे ईमान और धर्म के विषय में बताया–

ईमां मोमिण-चीमा गोयम, महमंद फुरमाणी।
उरकां फुरकां निवाज निवाज फरीजा, खासा खबरि विनाणी
अल्ला रासति ईमां मोमिण मारफत मुल्लाणी॥[42]

जाम्भोजी ने कर्नाटक के शेख सद्दो से गौ-हत्या बन्द करवाई थी। उन्होंने कहा

सुणि रे काजी सुणि रे मुल्ला, सुणियौ लोग लुगाई। म्हे नर निरहारी एकलवाई
जिणि ओ राह फरमाई।
जोर जरब करद जो छाडौ, तो कलमां नांव खुदाई।
जैं हक साच सिदक ईमान सलामति, जिणि आ भिसत ज पाई।[43]

पुनः उसे एक और सबद फारसी में कहा- **हसचिदारी सरफ कुं : दर राह कुः।**
लुकत ना कुल वेरह तात तुलफ कुं: ।[44]

जाम्भोजी ने एक सबद लखनऊ के स्वांतिशाह के प्रति कहा था, देखिये-

ईमान ईलाह आकीन हकबर, हक हजरत कर जाणो।
इतन तसकर वसकर मन महमंद, उर सुध आदम आणो।
ईलाह रासती ईमां मोमिण, करणी करीम पिछाणो।[45]

जाम्भोजी ने अन्य समुदाय के लोगों को भी मुसलमानों में व्याप्त पाखण्डों के विषय में बताया था। एक जोगी को उन्होंने कहा

काजी कथै कुराणो, न चीन्है रहमाणो।
काफर थूक भयाणो, जइया गुरू न चीन्हो।
तइया सींच्या न मूलूं, को को बोलत थूलूं॥[46]

जाम्भोजी ने अपनी वाणी के विभिन्न सबद विभिन्न समुदाय के लोगों के संदर्भ में कहे थे। ऐसी मान्यता है कि उन्होंने अनंत सबद कहे थे। अभी तक उनकी वाणी के 160 सबद ही मिले हैं, जिनमें 120 सबद ही अधिक प्रचलन में हैं। उनकी वाणी के 35 सबदों में मुहम्मद साहिब, इस्लाम एवं इस्लामिक शब्दावली का प्रयोग हुआ है। उनकी वाणी के 21 सबद पूर्णतया मुसलमानों के संदर्भ में कहे गये हैं जबकि उनके 14 सबदों में उक्त शब्दावली का आंशिक उल्लेख मात्र है। उनकी वाणी के दो सबद दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी को, सात सबद मुहम्मद खां नागौरी और नागौर के काजीको, पांच सबद अजमेर के मल्लूखां को, दो सबद कर्नाटक के शेख सद्दो को, दो सबद मुलतान के काजी को कहे गये हैं।

जाम्भोजी की वाणी के मुसलमानों संबंधी प्रसंगों से उस समय के इतिहास पर एक नवीन प्रकाश पड़ता है। जाम्भोजी के समकालीन मुसलमान बादशाह, सूबेदार, नवाब आदि उनकी शरण में आये थे लेकिन शेख, काजी, मुल्ला, मौलवी एवं सामान्य मुसलमान भी उनके दर्शन करके धन्य हो गये। समसदीन, अमीयांदीन, दीन मुहम्मद, दीन सुदरदी, रहमतजी आदि। ये सभी काजी मुसलमान सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कवि थे, जिन्होंने जाम्भोजी के संबंध में अपने पद भी लिखे थे। इनके अतिरिक्त हासम-कासम दर्जी अली, आलम आदि पुरुष एवं आल्ही, सीरीयां, मरीयम, सवीरी, टाकूं आदि स्त्रियां भी जाम्भोजी के सम्पर्क में आई थी। जाम्भोजी की वाणी के मुसलमानों संबंधी इन प्रसंगों से पता चलता है कि उनके प्रत्येक जाति के लोग मिलते थे और अपनी समस्याओं का निदान पाते थे। जाम्भोजी ने जातिगत विशेषताओं के आधार पर समाज के विभाजन को स्वीकार नहीं किया था। यही मुसलमानों के संदर्भ में जाम्भोजी की वाणी के प्रसंगों का महत्व है।

संदर्भ

1. परमानन्द का पोथा, लि. क. परमानन्द, लि. का संवत् 1818-19 पत्र 24-25
2. बिश्नोई संतों के हरजस- डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, सन् 1994, पृ. 21
3. परमानन्द का पोथा, सबद-47
4. वही सबद-5
5. जम्भसागर-स्वामी रामानन्द गिरी, संवत् 2011, हिसार, सबद-92
6. वही, सबद-85, 7. वही, सबद-27, 8. वही, सबद-72, 9. वही, सबद-27, 10. वही, सबद-6, 11. वही, सबद-42, 12. वही, सबद-94, 13. वही, सबद-105, 14. वही, सबद-50, 15. वही, सबद-41, 16. वही, सबद-64, 17. वही, सबद-77,
18. बिश्नोई संतों के हरजस-डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, 1994, पृ. 139
19. बिश्नोई लोक कथाओं में ऐतिहासिक तत्व - डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) पृ. 53, 20. जम्भसागर, आठवां प्रकरण, पृ. 229, 21. परमानन्द जी का पोथा, पत्र-20, सबद-124
22. वही, पत्र 20-21, सबद-125
23. विविध बिश्नोई लोक कथाएं लि.क. श्रीराम मिश्रि, लि.का. संवत 1944 पत्र 27-42, 24. परमानन्द जी का पोथ, पत्र-20, सबद-123
25. वही, पत्र,18, सबद-99, 26. वही, पत्र-6, सबद-27
27. विविध बिश्नोई लोक कथाएं, लि.क. श्रीराम मिश्र, लि.का. सं. 1944 पत्र 46-48, 28. जम्भसागर-स्वामी रामानन्द गिरि, सबद-8
29. वही, सबद-9, 30. वही, सबद-11, 31. वही, सबद-12, 32. वही, सबद-25, 33. वही, सबद-27, 34. वही, सबद-28
35. श्री जम्भदेव चरित्र भानु-स्वामी ब्रह्मानन्द, पृ. 95-100
36. परमानन्द जी का पोथा, सबद-68, पत्र 14
37. वही, सबद-69, पत्र-14, 38. वही, सबद-70, पत्र-14
39. वही, सबद-71, पत्र-14, 40. वही, सबद-72, पत्र-14
41. जम्भसागर-स्वामी रामानन्द गिरि, सबद-112
42. वही, सबद-113, 43. वही, सबद-106
44. परमानन्द जी का पोथा, सबद-122
45. जम्भसार-साहबरामजी राहड़, वि.सं. 1978 सबद-106, सोहलवां प्रकरण
46. जम्भसागर-स्वामी रामानन्द गिरि, सबद-36

❍ **डॉ. कृष्ण लाल बिश्नोई**

B-111, समतानगर, बीकानेर (राजस्थान)

जंभवाणी में युगबोध

युग शब्द का अर्थ समय या काल से लिया जाता है। बोध का अर्थ ज्ञान अथवा जानकारी से है। बोध का संबंध इन्द्रियों से होता है। बोध शब्द संस्कृत की 'बुध्' धातु से घञ् प्रत्यय लगने से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है-प्रत्यक्ष ज्ञान, जानकारी, समझ आदि। 'बोध' शब्द के अनेक पर्यायवाची शब्द हैं। जैसे प्रज्ञा, प्रतिभा और चेतना आदि।[1] चेतना द्वारा ही देखने, सुनने, समझने एवं चिंतन करने का कार्य सम्पन्न होता है। मनुष्य द्वारा सुख-दुख की अनुभूति चेतना पर आधारित होती है, जिसका मनुष्य को पहले ही बोध हो जाता है। मानव क्रियाशीलता सामाजिक वातावरण के संपर्क में बौद्धिक आधार पर गतिमान होती है।[2] अत: युग बोध स्थान विशेष और समय विशेष की चिन्तनधारा होती है, जो तत्कालीन परिस्थितियों के वातावरण में उत्पन्न होती है।

जिस युग में गुरु जांभोजी का आविर्भाव हुआ, वह राजनीतिक दृष्टि से बड़ा विकट था परंतु भक्तिधारा की दृष्टि से स्वर्णयुग था। ऐसे विरोधाभास के युग में उनका अवतरित होना समाज के लिए वरदान स्वरूप था। उन्होंने भटकते हुए समाज को सन्मार्ग की ओर जे जाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये। जांभोजी त्रिकालदर्शी थे। अवतारी महापुरुष होने के कारण उन्हें भूत, वर्तमान और भविष्य का सम्यक् बोध था, जिसकी अभिव्यक्ति 'जंभवाणी' में पूर्णरूपेण हुई है।

गुरु जी जब केवल सात वर्ष के थे, तो उनका व्यवहार सामान्य बालकों के समान नहीं था। वे अधिकांश मौन रहते थे। माता-पिता उनके संबंध में चिंतित रहते थे- **हांसा लोहट ने कहें, सुनो बात चित्तलाय। बालक मोटो, बोले नहीं, कोई जतन कराय।**[3] उस युग में जनता अंधविश्वासों में जकड़ी हुई थी। तब उन्होंने नागौर से एक पुरोहित को बुलाया, जिससे बालक के ऊपर पड़ी हुई किसी की छाया उतर जाए परंतु वह बालक तो पूर्व जन्म के ही ज्ञानी थे। वे स्वयं पुरोहित से कहते हैं- **गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पुरोहित, गुरुमुख धर्म बखाणी।**[4] **और गुरु का परिचय देते हैं- गुरु आप संतोषी अवरां पोखी, तंत महारस बाणी।**[5] पुरोहित बालक के अलौकिक स्वरूप को देखकर वहां से खिसक गया।

गुरु जी बड़े होकर गाए चराने लगे। इससे यह संदेश मिलता है कि गोधन भारत का सबसे बड़ा धन माना जाता था, जिसकी आज दुर्गति हो रही है। जांभोजी प्राकृतिक वातावरण में रहते थे। पर्यावरण-संरक्षण के लिए केवल भारत ही नहीं पूरा विश्व घोर संकट में पड़ गया है। उनका सबसे बड़ा बोध पर्यावरण-संरक्षण था, जो उनकी दूरदर्शिता का परिणाम है। वे जन्जजात योगी और ब्रह्मज्ञानी थे। उनका व्यक्तित्व इतना अलौकिक था, जिसे देखकर जोधपुर नरेश जोधा जी के भ्राता कान्हा जी व पुत्र उधा जी भी आश्चर्यचकित हो गए। उधा जी कहने लगे कि मैं आपके

चारों ओर प्रकाश देखता हूं तथा आपके मुखारविन्द की ज्योति दृष्टिगोचर होती है। यह बड़ा रहस्य है। वे उत्तर देते हैं- **मोरे छाया न माया लोही न मांसूं, रक्तूं न धातूं मोरे माईन बापूं।**[6]

सांसारिक प्राणी परमात्मा की खोज तीर्थ स्थानों में करने का प्रयत्न करते हैं परंतु जांभोजी का इस संदर्भ में रहस्यपूर्ण कथन है- **अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर बाहर लोकाचारूं।**[7] इसी तथ्य को परवर्ती संत कबीरदास ने भी पुष्ट किया है- **बन्दे कहां ढूंढ़े मैं तो तेरे पास में। ना मैं मंदिर, ना मैं मस्जिद, ना काबा कैलास में॥**[8]

उस युग में हिन्दू और मुसलमानों में साम्प्रदायिक भावना बड़ी प्रबल थी। हिन्दू समाज में धार्मिक भावना का अभाव था। जांभोजी ने अपनी वाणी में इसे इस प्रकार अभिव्यक्त किया है- **हिन्दू होय कै हरि क्यूं ना जंप्यो कांय दहदिश दिल पसरायों।**[9] **तथा भूला प्राणी आल बखाणी, न जंप्यो सुर रायों।**[10] उन्होंने तत्कालीन भ्रमित साधुओं का भी पथ-प्रदर्शन किया- **पार ब्रह्म की सुध न जाणी, तो नागे जोग न पायो।**[11] इस युग में पशुओं की हिंसा होती थी। जिस प्रकार वे दिग्भ्रमित हिन्दू पाखण्डी साधुओं को फटकारते थे, उसी प्रकार मुसलमानों मुल्लाओं और काजियों की भी भर्तस्ना करते थे- **सुणरे काजी सुणरे मुल्ला सुणरे बकर कसाई।**[12] महापुरुष पैगम्बर ने यह विधान कहां बनाया है कि तुम मनमुखी होकर निरीह जीवों की हत्या करते हो। वस्तुतः जांभोजी का युगबोध निष्पक्ष और विश्वमानवतावादी था।

गुरु जांभोजी की दृष्टि में मानव जीवन केवल भगवान की भक्ति करके भवसागर से मुक्ति प्राप्त करने के लिए हुआ है। यह अज्ञानी पुरुष तीन अवस्थाओ में बंधा हुआ है। इस मानव योनि में भी यह भगवान विष्णु की भक्ति नहीं करता। यह बहुत बड़ी हानि है। मानव जीवन क्षणभंगुर है। जीवन का समय निरंतर घटता जाता है। इस संदर्भ में जांभोजी मानव को सावधान करते हुए कहते हैं- **अहनिश आव घटंती जावै, तेरे श्वास सभी कास वारूं।**[13] इसी संदर्भ में संत कबीर ने भी कहा है- **पानी केरा बुदबुदा अस मानस की जात। देखत ही छिप जाएगा ज्यों तारा प्रभात।**[14]

मानव अज्ञान से ओतप्रोत है। वह जीवन के उद्देश्य से भटक गया है। जांभोजी ने जीवन के मूल मंत्र को अपनी वाणी में इस प्रकार व्यक्त किया है- **विष्णु विष्णु भण अजर जरीजै, यह जीवन का मूलूं॥**[15] सच्चे ज्ञान और अक्षर ज्ञान में अंतर है। व्यक्ति हो या समाज दया-धर्म बहुत जरूरी है। अन्यथा समाज में विकृतियां, विसंगतियां और अराजकता उत्पन्न हो जाएंगी। जैसे आजकल समाज में भ्रष्टाचार और अराजकता का बोलबाला है। जांभोजी ने इस भाव को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है- **जां जां दया न धर्मूं, तां तां बिकरम कर्मूं।**[16]

जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल मिलेगा। उन्होंने खेती को उत्तम बताया है। वर्षा के जल को महत्त्व प्रदान किया है। उस युग में अनेक प्रकार के गुरु होते

थे। सतगुरु होना बड़ा कठिन था। उन्होंने सतगुरु की महिमा बताई, जो समाज के लिए बड़ी हितकारी है। **सतगुरु मिलियो सतपंथ बताओ, भ्रांत चुकाई, मरणे बहु उपकारी करै।**[17] इसी संदर्भ में आधुनिक संत ब्रह्मानन्द सरस्वती ने भी कहा है– **यह तन विषय की बेल है, गुरु अमृत की खान। तन–मन–धन दिये गुरु मिले, फिर भी सस्ता जान॥**[18]

जांभोजी का महत्वपूर्ण युगबोध था कि उच्च कुल और जाति में जन्म लेने से कोई बड़ा नहीं होता। सुकर्म से व्यक्ति बड़ा होता है– **उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण किरिया सारूं॥**[19] मनुष्य का आचरण ही प्रधान होता है। कोरे उपदेश नहीं। अंग्रेजी में भी कहा गया है *Perception is better than preaching.* जांभोजी आचरण को प्रधान मानते हुए लिखते हैं– **पहलै किरिया आप कमाईये, तो औरा न फरमाइये।**[20] तुलसीदास ने भी कहा है– **पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जो न आचरहे ते नर फकेरे॥**[21] स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने भी लिखा है– **बदलदे सारी दुनिया को बदलना ही तेरा काम है। सबसे पहले आप बदल जा इसी में तेरा नाम है।**[22]

जांभोजी ने भगवान श्रीकृष्ण जी की लीलाओं का अनेक स्थानों पर वर्णन किया है– **जां जां बाद बिबादी अति अहंकारी, लबद सबादी कृष्ण चरित बिन नाहिं उतरिबां पारूं॥**[23] उन्होंने सत्संग को भवसागर की नौका कहा है– **उत्तम रंग सुरंगू, उत्तम संग सुरगूं उत्तम लंग सुलंगू।**[24] सत्संग की महिमा और कुसंग की हानि का वर्णन प्राचीनकाल से ही होता आ रहा है। आज समाज में सत्संग की अपेक्षा कुसंग का बोलबाला है। समाज में कलह, हिंसा, भ्रष्टाचार और अशांति व्यापत है। गुरु शिष्य परंपरा वैदिककालीन है। गुरु कल्याण पथ का प्रदर्शक है और निगुरा भटकता है।

उस युग में नाथ सम्प्रदाय में अनेक प्रकार की भ्रांत धारणाएं फैली हुई थी। योग साधना के स्थान पर अन्य साधनाएं प्रचलित थी। जांभोजी ने उनको भी सन्मार्ग प्रदान किया। उन्होंने दान की महिमा का भी वर्णन किया है क्योंकि कलियुग में दान को धर्म का चौथा चरण माना गया है। दान सुपात्र को देना चाहिए, कुपात्र को नहीं। बीज उपजाऊ धरती में बोने चाहिएं, बंजर भूमि में नहीं तभी अच्छी फसल होती है– **दान सुपाते बीज सुखेते, अमृत फूल फलीजैं।**[25] उन्हें पशुपालन के अतिरिक्त खेती बाड़ी का भी बड़ा बोध था। इसलिए उनके अनेक प्रतीक कृषि व कृषक वर्ग से संबंधित है। समाज के अपराधों के प्रति भी उनका बोध था। उन्होंने परोपकार को बड़ा महत्त्व प्रदान किया है। सांसारिक प्राणी राग–रंग और भोग विलास में ही प्रसन्न रहते हैं। जांभोजी राज महलों, मंदिर, मठों में निवास नहीं करते थे, वे तो प्रकृति की गोद में आनन्द मग्न रहकर लोककल्याण करते थे– **हरी कंकहड़ी मंडप मैड़ी, जहां हमारा बासा॥**[26] उनके प्रकृति प्रेम और विश्व पर्यावरण का अनुपम उदाहरण है।

जांभोजी को कलियुग का भी अद्‌भुत बोध था। उन्होंने भगवान विष्णु

की भक्ति पर विशेष बल दिया है और मनुष्य जीवन को रत्न के समान अनमोल माना है। भगवान की भक्ति से सभी भय मिट जाते हैं- **विष्णु विष्णु तू भणरे प्राणी पैंके लाख उपाजूं। रतन काया बैकुंठे बासो, तेरा जरा मरण भय भाजू॥**[27]

जांभोजी केवल एक स्थान समराथल पर ही निवास नहीं करते थे। वे बहुत बड़े परिव्राजक थे। उन्होंने भारत के अनेक स्थानों की यात्राएं की थी और अनेक राजाओं, नवाबों जैसे सिकंदर लोधी आदि के संपर्क में आए थे जो उनके महान व्यक्तित्व से प्रभावित होकर सन्मार्गी हो गए थे। उन्होंने समाज में प्रचलित अंधविश्वासों, पाखण्डों, भूत-प्रेत, पिशाचों की पूजा आदि का घोर खण्डन किया था। उन्होंने 29 धर्म नियमों का प्रतिपादन किया, जो मानवजाति के लिए कल्याणकारी हैं। 29 धर्म नियम आज के इस कलिकाल, भौतिकवादी, विश्वबाजारवाद से भ्रांत मानवजाति के लिए वैश्वीकरण के दौर में प्रकाश-स्तम्भ हैं। उन्होंने 'श्रीमदभगवतद्गीता' को महान ग्रन्थ माना केवल कविता नहीं। **गीता नाद कविता नाऊं।** उन्होंने श्रीकृष्ण के चरित्र को मानवजाति का आदर्श माना। विष्णु के अवतारों का भी उन्होंने वर्णन किया है। अंत में कहा जा सकता है कि उनका सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक युगबोध 'सबदवाणी में प्रतिबिम्बित है।

संदर्भ

1. सम्पा., वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ. 721
2. डॉ. लीलावती, प्रसाद साहित्य में युग चेतना, पृ. 20
3. टीकाकार कृष्णानंद आचार्य, शब्दवाणी जंभसागर, पृ. 15
4. वही, पृ. 17, 5. वही, पृ. 18, 6. वही, पृ. 21, 7. वही, पृ. 24
8. सम्पा., श्यामसुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
9. टीकाकार, कृष्णानन्द आचार्य, शब्दवाणी जंभसागर, पृ. 34
10. वही, पृ. 35, 11. वही, पृ. 37, 12. वही, पृ. 38, 13. वही, पृ. 48
14. सम्पा., श्यामसुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
15. टीकाकार, कृष्णानन्द आचार्य, शब्दवाणी जंभसागर, पृ. 55
16. वही, पृ. 65, 17. वही, पृ. 74
18. श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द पचासा, पद 446, पृ. 47
19. टीकाकार, कृष्णानन्द आचार्य, शब्दवाणी जंभसागर, पृ. 79
20. वही पृ. 48, 21. तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस
22. श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द पचासा, पद 229 पृ. 26
23. टीकाकार, कृष्णानन्द आचार्य, शब्दवाणी जंभसागर, पृ. 105
24. वही पृ. 113, 25. वही पृ. 147, 26. वही पृ. 211, 27. वही पृ. 324

❍ **डॉ. बाबूराम (डी.लिट्.)**

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

मो. : 09315844906

भारतीय दार्शनिक परंपरा के संदर्भ में गुरू जंभेश्वर जी महाराज की आध्यात्मिक अवधारणा

अध्यात्म शब्द का व्युत्पतिमूलक अर्थ है आत्मदर्शन करना और आत्मा और परमात्मा इन दोनों के गुणों, स्वरूपों, पारस्परिक संबंधों के विषय में किया जाने वाला चिंतन निरूपणा और विवेचन हैं। अध्यात्म ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है, यही आत्मा का विज्ञान है और वही वास्तविक ज्ञान है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है अध्यात्म विद्या विद्यानां अर्थात् विद्याओं मैं अध्यात्म विद्या हूं। आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करना ही मनुष्य की वास्तविक उन्नति है। अध्यात्म उन्नति द्वारा हर प्रकार की उन्नति संभव है।

परंतु धर्मशास्त्र में आध्यात्मिक परंपरा का व्यापक अर्थ है। जिसमें आत्मा परमात्मा के अतिरिक्त भक्तियोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग तीनों का समन्वयवादी दृष्टिकोण अध्यात्म है। जिसमें जीव, ईश्वर, ब्रह्म, जगत, माया, पाप-पुण्य, कर्म, धर्म, दर्शन, साधना, पुनर्जन्म, मुक्ति इत्यादि आयामों को शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त आत्मा की अमरता, शरीर की नश्वरता, माया का प्रभाव, जगत की प्रतीति, जीव का स्वरूप, जगत की अवधारणा, ज्ञान की महता, उपयोगिता, कर्म की एकनिष्ठ साधना, दर्शन की गहराई, ब्रह्म की असीमता के विषय में गुरू जांभो जी की मान्यताओं और दर्शन में जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योगदर्शन, मीमांसा, अद्वैत वेदांत इत्यादि का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

जैन दर्शन

जैन दर्शन एवं सिद्धांत के प्रवर्त्तक ऋ षभदेव थे। इस धर्म में 24 महापुरूष हुए हैं जिनको तीर्थकर कहते हैं। जैन धर्म में तीर्थकर की उपाधि सबसे बड़ी है। इसी आचार्य परंपरा द्वारा जैन धर्म और दर्शन अनादिकाल से सुरक्षित है। महावीर(वर्धमान) अंतिम तीर्थकर थे तथा जिन्होंने जैन धर्म को एक योजनाबद्ध ढंग से स्थापित करने का कार्य किया। महावीर ने चित्तशुद्धि के द्वारा सम्यक चरित्र तथा कैवल्यज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने पांच महाव्रतों का पालन करने तथा उनको जीवन-जगत तथा व्यवहार में लाने का उपदेश दिया।

जैन दर्शन भी आधा आस्तिक दर्शन और कुछ विचारधारा के अनुसार आस्तिक दर्शनों से उसका मतभेद भी है। तथापि यह उसी मार्ग का पथिक है जिससे होकर आस्तिक दर्शनों की विचारधारा बहती है। दु:ख की आत्यन्तिक निवृत्ति, या परम सुख की प्राप्ति, इनका चरम लक्ष्य है। कठोर तपस्या, साधना आदि के द्वारा कायिक, मायिक तथा मानसिक क्रियाओं पर नियंत्रण कर अंत:करण की शुद्धि करना एवं परमात्मा का साक्षात्कार करना इनका भी चरम उद्देश्य है। इसलिए

जैन धर्म के लोग सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् चरित्र इन तीन रत्नों की प्राप्ति के लिए जीवन भर प्रयत्न करते हैं। ये सभी बातें आस्तिक दर्शनों में भी हैं।

जैन धर्म-दर्शन में सात प्रकार के मूल तत्वों का वर्णन हुआ है। इन्हीं मूल तत्वों से जगत की समस्त वस्तुओं का परिणाम होता है। ये तत्व-जीव, अजीव, आस्त्रव, बंध, सम्वर, निर्जरा तथा मोक्ष है। इनमें जीव और अजीव दोनों तत्वों को द्रव्य भी कहते हैं। आत्मा या चेतन को संसार की दशा में जीव कहते हैं। इसमें प्राण हैं। इसमें शरीरिक, मानसिक तथा इंद्रियजन्य शक्ति है। जीव की सभी क्रियाएं उनके अपने किए कर्मो के फलस्वरूप हैं अर्थात जीव या प्राणी अपने कर्मो का स्वयं जिम्मेदार है। इस संदर्भ में गुरू जंभेश्वर जी ने भी जीव को अपने कर्मो का भोक्ता और कर्त्ता बताया है-

आयो हंकारो जीवड़ो बुलायो, कहि जीवड़ा के करण कुमायो ?

अनादि, अविद्या के कारण कर्म जीव में प्रवेश करता है जिसके कारण जीव बंधन में रहता है। बंधन की दशा में जीव में चैतन्य रहता है। बंधन से मुक्त होने पर जीव का सम्यक् ज्ञान अभिव्यक्त होता है। सम्यक् ज्ञान से ही युक्त होने के कारण जीव मुक्ति की ओर अग्रसर होता है। परिणाम के प्रभाव से या किसी विशेष शक्ति के अनुग्रह से जीव सम्यक् ज्ञान को प्राप्त करता है। प्रत्येक जीव में स्वभाव से ही अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान तथा अनंत सामर्थ्य होता है।

2. अजीव तत्व- अजीव के पांच भेद हैं। जिनमें धर्म, अधर्म, आकाश तथा पुद्गल और काल शामिल हैं। काल में क्रिया नहीं है। ये सभी द्रव्य है। स्वभावत: इनका नाश नहीं होता है। पुदगल को छोड़कर अन्य अजीव द्रव्यों में रूप, रस, स्पर्श, गंध नहीं होते हैं। पुदगलों में रूप, स्पर्श, रस और गंध होते हैं। धर्म, अधर्म, आकाश ये एक ही हैं। किंतु पुदगल तथा जीव प्रत्येक अनेक हैं। प्रथम तीनों में क्रिया नहीं है। किन्तु पुदगल और जीवों में क्रिया हैं।

3. आस्त्रवतत्व- आस्त्रव उसे कहते हैं जिसमें काययोग, वागयोग तथा मनोयोग रहते हैं। कर्म पुदगलों का जीव में योग के द्वारा प्रवेश करने को आस्त्रव कहते हैं। इस आस्त्रव के संपर्क से जीव कर्म बंधन में पड़ जाता है। यह आस्त्रव बंधन का एक कारण हैं।

4. बन्धतत्व-जीव में कर्म पुदगलों के प्रवेश होने के पूर्व उसमें भावास्त्रव उत्पन्न होता है। उसके पश्चात जीव में जो बंधन उत्पन्न होता है उसे ही भाव बंध कहते हैं। बाद में कर्म पुदगलों का प्रवेश होने पर जीव में द्रव्यास्त्रव उत्पन्न होता है। उसके पश्चात जीव में जो बंधन हो जाता है, उसे द्रव्यबन्ध कहते हैं। आस्त्रव के संपर्क से जीव का वास्तविक स्वरूप नष्ट हो जाता है और वह बंधन में फंस जाता है।

5. संवरतत्व-अन्य दर्शनों की तरह जैन दर्शन का चरम लक्ष्य है बंधनों से मुक्ति

पाकर आनंद को पाना हैं। इसके लिए जब वह कार्मिक पुदगलों का संबंध जीव से नहीं छूटेगा, तब तक जीव बंधन से मुक्त नहीं हो सकता। अतएव कार्मिक पुदगलों का जीव में प्रवेश करने तथा उसके कारणों को रोकना आवश्यक है। इसी रोकने को संवर कहते हैं।

6. निर्जरातत्व-आत्मा में कर्म पुदगलों के प्रवेश को रोकने से मुक्ति का मार्ग बाधा रहित हो जाता है। इनको रोकने से नए पुदगलों का प्रवेश तो न होगा किंतु जब तक उन पुदगलों का, जो पहले ही से आत्मा में चिपक गये हैं, नाश न हो जायेगा, तब तक मोक्ष नहीं मिल सकता। बंधन के बीज उन कर्मपुदगलों का नाश कर देते है। इस नाश की प्रक्रिया को निर्जरा कहते हैं। निर्जरा के नियम को पालन करने के लिए कठोर तपस्या करनी पड़ती है। इस अवस्था में निदध्यासन की बड़ी आवश्यकता है। राग, द्वेष आदि दुर्गुणों का बिना सर्वथा परित्याग हुए इस अवस्था तक कोई नहीं पहुंच सकता है। इन सभी क्रियाओं से नितांत, निर्मल अंतकरण वाला जीव अपने शरीर में ही स्थित आत्मा का दर्शन कर सकता है।

7. मोक्षतत्त्व-राग, द्वेष तथा मोह के कारण आस्त्रव होता है और तभी जीव बंधन में फंस जाता है। तपस्या के द्वारा तथा नियमों के पालन करने से राग, द्वेष आदि का नाश हो जाता है। फिर संवर तथा निर्जरा के द्वारा आस्त्रव का नाश होता है। इस प्रकार कर्म पुदगलों से मुक्त होने से जीव सर्वज्ञ, सर्वदृष्टा होकर मुक्ति का अनुभव करने लगता है। इस अवस्था को भाव मोक्ष या जीवन मुक्ति कहते हैं। गुरू जंभेश्वर जी ने अपने उपदेशों तथा वाणी व कार्यों में जीवन मुक्ति प्राप्त करने का उपदेश दिया है-'**जीवत मरो रे जीवत मरो, जिण जीवणं की विधि जांणी।**'

इस प्रकार जैन धर्म के विभिन्न सिद्धांतों का 29 धर्म नियमों तथा गुरूवाणी से काफी साम्य और वैषम्य है, परंतु निष्कर्षत यह कहा जाता है कि दोनों धर्म मतों की मान्यताएं सतपथ की ओर ले जाकर मुक्ति प्राप्त कराने में उपयोगी हैं।

बौद्ध धर्म-दर्शन

बौद्ध धर्म-दर्शन पहले आचारशास्त्र था। बाद में उनके शिष्यों ने आध्यात्मिक रूप दे दिया और फिर उसको दार्शनिक शास्त्र बना दिया। दर्शन शास्त्र के दो अंग हैं-एक आचार या कर्मकांड तथा दूसरा ज्ञानकांड या आध्यात्मिक चिंतन। जो उपनिषदों की विचारधारा पर आधारित है। उन्होंने दु:ख की निवृति के लिए बुद्धत्व की प्राप्ति की तथा चार आर्य सत्यों की खोज की-1. संसार दु:खमय है(सर्वदु:खम)2. दु:खों का कारण है(दु:ख समुदय:)। 3. दु:ख से पीड़ित होकर उसके नाश करने के उपायों को ढूंढना अर्थात् उनको विश्वास है कि दु:ख का नाश होता है(दु:ख निरोध:) 4. दु:खों के नाश के लिए उपाय भी हैं(दु:ख निरोधगामिनी)। इन चारों बातों को लोगों को समझाने और आचरण में लाने को कहा। ये ही चार आर्य सत्य

हैं। उन्होंने स्वयं के दु:ख को दूर कर उसके कारणों को खोजा। उन्होंने दु:ख का मूल कारण अविद्या बतलाया है अर्थात् एक कारण के आधार पर एक कार्य उत्पन्न होता है। जो अविद्या का एक स्वरूप है तथा जो भिन्न कारण होकर एक भिन्न कार्य को उत्पन्न करता है। यह कार्य कारण परंपरा का स्वरूप इस प्रकार है–अविद्या से संस्कार, संस्कार से विज्ञान, विज्ञान से नामरूप, नामरूप से षड़ायतन अर्थात् मनसहित पांच ज्ञानेन्द्रिया, षड़ायतन से स्पर्श, स्पर्श से वेदना, वेदना से तृष्णा, तृष्णा से उपादान(राग), उपादान से भव, भव से जाति, जाति से जरा और जरा से मरण। ये सभी बुद्ध के चार आर्य सत्यों से ही अभिव्यक्त होते हैं। इनमें कुछ भूतपूर्व कारण है और वर्तमान में कार्यरूप में हैं तथा कुछ वर्तमान के कारण हैं और कुछ भविष्य में कार्य होने के लिए है। इनमें से प्रथम और द्वितीय(अविद्या तथा संस्कार) दूसरे आर्य–सत्य से संबंद्ध हैं और पूर्व जन्म से संबंध रखने वाले वर्तमान जन्म के कारण है और ये दुख–समुदय से संबंधित हैं। इन्हीं कार्य कारणों की परंपरा में संसार चक्र चलता रहता है। इसे भवचक्र कहते हैं।

जब तक जीव इस भवचक्र से मुक्त नहीं होता, तब तक उसके दु:ख का नाश नहीं होता। अत: दु:ख का नाश करके जीव अपने जीवन के परमपद की प्राप्ति कर सकता है। दु:ख निरोध के लिए उन्होंने अष्टांगिक मार्ग का भी उपदेश दिया। इसके लिए उन्होंने सम्यक् दृष्टि (आर्य सत्यों का ज्ञान),सम्यक् संकल्प अर्थात् राग–द्वेष, हिंसा तथा संसारी विषयों का परित्याग के लिए दृढ संकल्प होना। सम्यक् वाक् अर्थात् मिथ्या, अनुचित तथा दुर्वचनों का परित्याग एवं सत्य वचन की रक्षा करना। गुरू जंभेश्वर जी ने चार आर्य सत्यों पर प्रत्यक्ष रूप से न कह करके दु:खों का विभाजन की विभिन्न स्थितियों, स्वरूपों और विशेष प्रसंगों पर अपनी वाणी में कहा है–

एक दुख लखमंण बंधू हइयौ। एक दुख बूढै घरि तरणी अइयौ।
एक दुख बालक की मा मुइयौ। एक दुख ओछै की जमवारूं।
एक दुख तूटै सूं वौहारूं। तेरा लखणां अंत न पारूं।

सम्यक् कर्मान्त हिंसा, परद्रव्य का लोभ, वासनापूर्ति की इच्छा का परित्याग कर शुभ एवं पवित्र कार्य करना अर्थात् सुकृत कार्य करना। गुरू जांभोजी ने अपनी वाणी में सुकृत कार्य करने को कहा है।

सुकरत अहल्यौ न जाई।

सुकृत कार्य व्यर्थ नहीं जाते हैं। इसलिए मनुष्य को सदैव निष्काम भाव से शुभ कर्म करते रहना चाहिए। सम्यक् आजीव (न्यायपूर्ण जीविका)की तरह गुरू जांभो जी ने भी हक और न्यायपूर्ण आजीविका से भरण–पोषण करने को कहा है–

ईह हेडै हर दिन की रोजी। तो इसही रोजी सारो।।

++++++++++++++

हक हलाल पिछांण्यौं नांहीं। निहचै बिन गाफिल दोरै दीयौ।।

पवित्र एवं शुद्ध संसाधनों द्वारा न्यायपूर्ण एवं हक की कमाई करनी और उसका ही प्रयोग घर में करना चाहिए।

सम्यक् व्यायाम में बुराइयों को समाप्त करके, अनैतिक आदतों पर नियत्रंण करना, चोरी, निंदा, झूठ तथा लोभ-लालच इत्यादि पर नियंत्रण करके शुभकार्यो को करना। सम्यक् स्मृति में लोभ-लालच तथा अजर को जरना। जिससे चित्त शुद्ध हो जाये। सम्यक् समाधि-चित्त की एकाग्रता जिससे ध्यान की अवस्था स्थिर रहती है। इन आठों आचरणों का पवित्रता से पालन करना आवश्यक है। बुद्ध ने अपने शिष्यों के लिए एक संघ बनाया जिसमें दस शिक्षाओं के पालन का उपदेश है। अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, धर्म में श्रद्धा, दोपहर के भोजन का निषेध, विलास से विरक्ति, सुगंधित द्रव्यों का निषेध, सुखप्रद शय्या तथा आसन का परित्याग, सुवर्ण तथा चांदी आदि मूल्यवान वस्तुओं को अस्वीकार करना।

न्याय दर्शन

इस प्रकार ईसा पूर्व छठी सदी में महर्षि गौतम द्वारा न्याय दर्शन का प्रवर्तन किया गया जिसमें विभिन्न प्रमाणों की सहायता से वस्तु तत्व की परीक्षा की गई। इस दर्शन में तर्क के आधार पर सत्य और असत्य के द्वारा निर्णय करना इसका प्रमुख लक्ष्य है। इस दर्शन की मोक्ष संबंधी धारणा गुरू जंभेश्वर की मुक्ति से सामंजस्य रखती है। उनकी दृष्टि में मोक्ष मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। जंभवाणी में वैशेषिक दर्शन की भांति भ्रमपूर्ण ज्ञान का कारण और उसका निवारण भी बतलाया है उसका कारण ज्ञानगतदोष है। न्याय दर्शन का प्रसिद्ध उदाहरण है कि जहां जहां धुआं होता है वहां वहां आग होती है। जांभो जी ने कहा है - **'मोरी आदि न जांणत महियल धूआं वखांणतं।'**

गुरू जांभो जी शब्द प्रमाण को मानते हैं-**'वेदगरथ उदगारूं और मेरा सबद खोजो ज्यूं सबद सबदे समाई**-कहकर उन्होंने सबद प्रमाण पर प्रामाणिकता की मोहर लगाई है। न्याय दर्शन में कारण और कार्य की चर्चा है। कारण सत् होता है और कार्य असत् होता है। विश्व के मूल में परमाणु, आत्मा, ईश्वर ऐसे नित्य पदार्थ विद्यमान हैं जिनके कारण ही इस जगत की सता विद्यमान है। ईश्वर अनुमान के द्वारा ही गम्य है और मोक्ष में सुख और दुख दोनों ही नहीं रहते। जीवन मुक्ति और विदेह मुक्ति की इस दर्शन में मान्यता है। इसलिए न्याय दर्शन एक ईश्वरवादी दर्शन है जिसमें जीवन मुक्ति और विदेह का गुरू जांभो जी के मुक्ति संबंधी दृष्टिकोण से गहरा सामंजस्य है।

वैशेषिक दर्शन

वैशेषिक दर्शन के रचयिता महर्षि कणाद(ईसा पूर्व 400) और इनका

दार्शनिक ग्रंथ वैशेषिक सूत्र है। न्याय और वैशेषिक के अनेक सिद्धांतों में समानता है। न्याय में प्रमाण और तर्क को मान्यता दी गई है तथा वैशेषिक में तत्व दर्शन को मान्यता दी गई है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों को मिलाकर पूर्ण दर्शन बनता है। उन्होंने वेद के वचन को प्रमाणिक माना है तथा जगत की वस्तुओं को पदार्थ माना है। गुरू जंभेश्वर जी ने वेद ज्ञान को प्रामाणिक माना है। वैशेषिक दर्शन में जगत की सभी वस्तुओं को छह पदार्थों में बांटा गया है जिनमें द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष तथा समवाय शामिल हैं। कारण, कर्म और गुण के आश्रयभूत पदार्थ को द्रव्य कहते हैं। द्रव्य नौ हैं। इस दर्शन के अनुसार नित्य कर्म करना आवश्यक है। इससे तत्व ज्ञान की उत्पति होती है जो मोक्ष प्राप्ति का कारण है। गुरू जांभो जी ने-**कैं तैं कारण किरिया चूक्यों ?** कहकर इसी ओर संकेत किया है। न्याय और वैशेषिक दोनों में पृथ्वी, जल, तेज और वायु इन चार द्रव्यों का अस्तित्व है। इस अवस्था में प्रत्येक जीवात्मा अपने मन के साथ, पूर्व जन्म के संस्कारों के साथ, धर्म, अधर्म के साथ अदृश्य रूप में विद्यमान रहती है।

सांख्य दर्शन

सांख्य दर्शन का संबंध योग दर्शन से है। इसके रचयिता महर्षि कपिलमुनि हैं। गीता में श्रीकृष्ण ने कपिल मुनि को अपनी विभूतियों में माना है। इस दर्शन का प्रमुख ग्रंथ सांख्यकारिका है। सांख्य का विचार सम्यक् विचार है(अमरकोश)। इसी को विवेक बुद्धि या प्रकृति पुरूष विवेक कहा गया है। इस कारण इस दर्शन का नाम सांख्य पड़ा है। उनकी दृष्टि में प्रकृति जगत का मूल कारण हैं। दोनों स्वयंभू और अनादि हैं। गुरू जंभेश्वर जी ने अपने स्वयं को स्वयंभू और अनादि कहा है। उन्होंने अनेक जगह सांख्य की मान्यताओं को स्वीकार किया है। जैसे सृष्टि सृजन के पश्चात प्रकृति का विकास लगातार होता रहता है। स्वयंभू के सहस्त्र नाम हैं। सुरपति, परमतत्त्व, सारंगधर, सुरराय, आदिमुरारी, विसमला, रहमान, रहीम, करीम, खुदाबंद, अगाह, ओ३म, गुरू, सतगुरू, राम, किसन, श्याम, परब्रह्म, लिछमी नारायण, मोहन गोपाल, परमेश्वर, नारायण, परसराम इत्यादि। इसके अतिरिक्त परमेश्वर के विशेषण के रूप में स्वयंभू, अलख, अपरंपर, निरह, अलील, निरालंब, अलाह, अलेख, अडाल, अजोनी इत्यादि निर्गुण विष्णु के स्वरूप है। गुरू जांभोजी ने निर्गुण विष्णु को उपास्य माना है। उनका विष्णु त्रिदेवों वाला विष्णु नहीं है। इन्हीं निर्गुण विष्णु से इन सगुण त्रिदेवों का आविर्भाव हुआ है। जंभवाणी में आया है- ब्रंभा विसन, महारूद्र, थरप्या, दीवी करामति केती वारी, स्वयंभू परमेश्वर ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश-त्रिदेवों की स्थापना की तथा कितनी ही बार(विभिन्न रूपों में अवतार लेकर) अद्भूत कार्य किये तथा **दया रूप म्हे आप वखांण सिंधार रूप म्हें आप हती**-दयालु होकर मैं स्वयं जीवनदान देता हूं, मैं स्वयं को ही मारता हूं।

योगदर्शन

चित्तवृति के निरोध को योग कहते हैं। निदिध्यासन को भी योग कहा गया है। मानव जीवन के चार उद्देश्य जिसे चार पुरूषार्थ भी कहते हैं जो इस प्रकार हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनकी प्राप्ति के लिए शरीर और इंद्रियों की एवं चित्त की शुद्धि एवं नियंत्रण आवश्यक है। जो परमतत्व की प्राप्ति के लिए आवश्यक है। बुद्धि का वास्तविक ज्ञान योग से होता है। योग के बिना सांख्य का ज्ञान भी नहीं होता। वेदांत के रहस्य को भी योग के बिना नहीं जाना जा सकता। संसार में दो प्रकार के तत्व हैं-एक बाह्य और दूसरा आंतरिक, एक जड़ और दूसरा चेतन। आभ्यन्तर तत्व चित है। प्रत्येक दर्शन में इन तत्वों की किसी न किसी रूप में सहायता आवश्यक है। साक्षात्कार करने से ही तत्वों का विशेष ज्ञान होता है। तत्व स्वयं या उसका कोई अंश जैसे न्याय का परमाणु, इतना सूक्ष्म है कि योग की प्रक्रिया के बिना उसका ज्ञान हो ही नहीं सकता। इसलिए योगशास्त्र की प्रक्रियाओं का ज्ञान सभी दर्शनों के लिए आवश्यक है।

वेदांत में योग का महत्वपूर्ण स्थान है। योग दर्शन से ही वेदांत को जाना जा सकता है। अंत:करण के पूर्व जन्मों के मलों को नाश कर उसे शुद्ध करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है। मल को दूर करने के उपाय योगदर्शन में हैं। इसलिए सांख्य और योग मिलकर ही तत्व ज्ञान के मार्ग को दिखाते हैं। इसके लिए योग के साधनों का प्रयोग आवश्यक है। योग के आठ साधन हैं 1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम 5. प्रत्याहार 6.धारणा 7.ध्यान 8.समाधि। यम में कायिक, वाचिक तथा मानसिक संयम को यम कहते हैं। जैसे अंहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। गुरू जंभेश्वर महाराज ने अपनी वाणी तथा 29 धर्म नियमों में इन पांचों तत्वों का वर्णन किया है। अहिंसा अर्थात् मन, वचन, कर्म से कहीं भी हिंसा न हो। गुरू जी ने अहिंसा को सर्वोपरि धर्म बताया है। उन्होंने जीव, जंतुओं, पेड़-पौधों तथा जैव विविधता की रक्षा करने का उपदेश अपनी वाणी में बार-बार दिया है। जैसे- **जीवां उपर जोर करीजै, अतिकाल हुयसी भारी।** इस प्रकार पेड़ों की रक्षा के लिए उन्होंने अनेक नियम व विधियां भी बताई हैं।

गुरू जंभेश्वर ने अपनी वाणी में सतपथ का रास्ता बताया है। सत्य का पालन करना, सत्य का आचरण करना और चोरी नहीं करना बिश्नोई धर्म का मूल सिद्धांत है। जैसे-**चोरी (अस्तेय), निंदा, झूठ वरजियो, वाद न करणो कोय।** ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के नियमों का पालन करना अनिवार्य बताया है।

ये नियम हैं-सोच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान। गुरू जंभेश्वर ने इन नियमों के पालन करने और जीवन व्यवहार में आचरण करने के लिए आवश्यक बताया है। 29 नियमों में यह बताया है कि शील और संतोष, जप और

तप को दैनिक नैमित्तक कार्य हैं। इसी प्रकार उन्होंने आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का वर्णन अपने उपदेशों में किया है। धारणा, ध्यान तथा समाधि इन तीनों के लिए उन्होंने संयम एक ही शब्द का प्रयोग किया है।

मीमांसा दर्शन

मीमांसा दर्शन के प्रवर्त्तक जैमिनी और उनका प्रमुख ग्रंथ जैमिनी सूत्र है। इसके विषय धर्म, जिज्ञासा, कर्मभेद इत्यादि हैं। इनके सिद्धांत न्याय-वैशेषिक के समान हैं। इसके नौ द्रव्य हैं-क्षिति, जल, वायु, अग्नि, आकाश, काल, आत्मा, मनस तथा दिक ये द्रव्य हैं। इन सभी द्रव्यों का गुरू जंभेश्वर जी ने अपनी वाणी तथा उन्नतीस धर्म-नियमों में किसी न किसी रूप में वर्णन किया है। इस दर्शन के अनुसार तीन प्रकार के शरीरों या जीव योनियों के विषय में बतलाया है-जरायुज, अण्डज और स्वेदज जो कि पंच भौतिक शरीर में आते हैं। वृक्ष और वनस्पति, भोग इत्यादि का नहीं होता। जरायुज जिनकी उत्पति जरायु से हो जैसे मनुष्य, सर्प आदि स्वदेज-जिसकी उत्पति पसीने तथा गर्मी से हो, जैसे यूका, खटमल आदि, उदभिज- इस मत में शरीर केवल पार्थिव होता है। मीमांसक वनस्पति को शरीर नहीं मानते हैं। ये अपार्थिव तथा अयोनिज शरीर नहीं मानते। प्रत्येक शरीर में मन तथा त्वक्, ये दोनों इंद्रियां रहती हैं। मीमांसक शरीर, इंद्रिय आदि से भिन्न आत्मा अर्थात जीवात्मा की सत्ता मानते हैं। गुरू जंभेश्वर जी ने रतनकाया को जीवात्मा और हंस कहा है। जैसे कि सबदवाणी में आया है-

रतन कया दे सूंप्या छलत भंडारा।।

++++++++++++++++++++++

पहलू जीवड़ो चेत्यों नांहि।।

++++++++++++++++++

रतनकया मुखि सूवर वरगो,
अभखल भंख्या पाइयै।।

++++++++++++++++++

आयो हकारो जीवड़ो बुलायो ?
कहि जीवड़ा, के करण कुमायो ?
थरहर कंपै जीवड़ो डोलै,

++++++++++++++++++++++

हंस उडाणौं पंथ विलंव्यो आसा सास निरास भईलो,

++++++++++++++++++++++

रतन कया सांचै की ढोली।
गुर प्रसादे केवल न्यांने।।

गुरू जंभेश्वर जी ने जीवड़ा शब्द का प्रयोग जीवात्मा के लिए बार-बार किया है। जैसे-

सूच सिनांन करी क्यूं नांही,
जीवड़ा काजै न्हाइये।।

लोक से परलोक जाने वाला आत्मा ही है। यह आत्मा या जीवड़ा अनंत शक्ति संपन्न हैं। आत्मा की सत्ता शाश्वत और नित्य है। आत्म शक्ति से कठिन से कठिन कार्य किया जा सकता है। आत्मा ज्ञान का भंडार है। यह जीवात्मा विभु है इसलिए इसका विनाश नहीं होता है। यही कर्ता और भोक्ता है। यह बोधस्वरूप हैं। स्वानुभवगम्य भी हैं। स्वयं प्रकाशित है और यह भोक्ता है, शरीर भोगायतन है। इंद्रिय भोग साधन है और सुख-दुख तथा पृथ्वी आदि भोग्य है। और समस्त जगत इन्हीं पांचों में समवेत हैं। जैमिनी में मीमांसा दर्शन का आधार धर्म माना है। उन्होंने धर्म के चौदह लक्षण बताए हैं। धर्म का ज्ञान वेद के द्वारा ही मान्य हैं। प्रत्यक्ष प्रमाणों से धर्म का ज्ञान नहीं हो सकता है। गुरू जंभेश्वर जी ने सद आचरण को धर्म माना है तथा सतगुरू की कृपा से ही धर्म तत्व की प्राप्ति होती है--

ध्रम आचारे सीले संजमे।
सतगुरू तूठै पाइयै।।

विश्व के सभी धर्मो, दर्शनों, विभिन्न मत-मतांतरों में पवित्र एवं शुद्ध आचरण को धर्म माना है और सदगुरू के उपदेशों और वाणी से धर्म का बखान होता है। जैसे गुरू जांभोजी अपनी वाणी में कहते हैं

गुरूमुखी ध्रम वखांणी

सदगुरू ही धर्म की स्थापना करते हैं। अवतार के समय धर्म शरीर धारण करके आता है

अद्वैत वेदांत दर्शन

वेदांत का अर्थ है वह शास्त्र जिसके लिए उपनिषद् ही प्रमाण हैं। वेदांत में जितनी भी बातें व सिद्धांत हैं उन सबका मूल उपनिषद् है। उपनिषदों में सभी दर्शनों के मूल तत्व हैं। वेदांत में एकमात्र परमसता को ही ब्रह्म कहा है। ब्रह्म को छोड़कर सभी पदार्थ असत है। ब्रह्म सर्वव्यापी, अनंत और असीम सता है। वह स्वयंसिद्ध तथा स्वप्रकाश है। अज्ञान हटने से चैतन्य का ज्ञान होता है। अज्ञान रहने से अविद्या और माया का प्रभाव हो जाता है। माया ब्रह्म के समान सत नहीं है। ब्रह्म पूर्ण है इसलिए अद्वैत वेदांत में तत्वमसि शब्द का प्रयोग ब्रह्म के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इसका तात्पर्य है अपने को ब्रह्म समझना अर्थात् सोऽहं ब्रह्म तथा अहं ब्रह्मासि का तात्पर्य है मैं ब्रह्म हूं। इस विषय में गुरू जंभेश्वर जी ने स्वयं की ब्रह्म संबंधी विभूतियों का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने स्वयं को परमसता, स्वयंभू का

अवतार मानते हुए अनेक प्रकार से अपनी शक्तियों का उल्लेख किया है। पहले के पूर्व पृष्ठों में विस्तार से उनका उल्लेख आया है। इनसे अद्वैत भावना स्वयंसिद्ध है। अपने लिए निराहारी, शून्यमंडल का राजा, कैवल्यज्ञानी, सतगुरू आदि शब्द कहे हैं। गुरू जांभोजी और विष्णु एक ही हैं। विष्णु के नौ अवतार उन्हीं के रूप हैं। नव अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थियूं। जिसमें नौ तो पहले हो चुके हैं और दसवें कल्कि अवतार के रूप में मैं स्वयं अवतार लूंगा। विष्णु सृष्टि का मूल तत्व और विष्णु जप भी मूल तत्व है। गुरू जंभेश्वर ने संध्या उपासना में विष्णु के सात उपमाओं द्वारा उसकी महता प्रतिपादित की है। विष्णु नाम से आत्म तत्व की उपलब्धि, जरा-मरण से छुटकारा और बैकुंठवास मिलता है। जप में अनंत गुण हैं इससे मृत्यु उपरांत क्षण मात्र में मोक्ष प्राप्ति होती है तथा अनंत पुण्य मिलता है। ऐसा निरंजन स्वयंभू अनादि है। तत्व ज्ञान होने से इस माया का नाश होता है। यह माया त्रिगुणात्मिका है अर्थात् सत्व, रजस् और तमस् इन तीनों गुणों का स्वरूप है। इसलिए यह ज्ञान विरोधी है।

गुरू जंभेश्वर जी की दार्शनिक मान्यताएं

निर्गुण ब्रह्म (विष्णु)

गुरू जंभेश्वर महाराज ने अध्यात्म की समन्यवादी विचारधारा को महत्वपूर्ण माना है। वे मरू प्रदेश के प्रथम धार्मिक आचार्य और लोक भाषा में आध्यात्मिक मान्यताओं को स्थापित करने वाले थे। जंभवाणी से विदित होता है कि गुरू जंभेश्वर अद्धैतपरक सिद्धांतों को मानते थे । मैं ब्रह्म हूं-मैं वही हूं अर्थात् मेरी मान्यताएं अद्वैतवादी होते हुए स्वानुभूति पर आधारित हैं। उनका कथन है कि जो कोई ब्रह्म के विषय कहता है कि मैं उसे सब कुछ जानता हूं वह कुछ भी नहीं जानता है। जो यह कहता है कि मैं उसे कुछ भी नहीं जानता वह उसे कुछ कुछ समझता है।

जां कुछि जां कुछि तां कुछि न जांणी,
नां कुछि नां कुछि तां कुछि जांणी।

दर्शन और अध्यात्मिकता के क्षेत्र में उनकी वाणी वेदों, उपनिषदों तथा भारतीय दर्शन की मान्यताओं से काफी सामंजस्य रखती है क्योंकि उन्होंने अपनी वाणी को वेदवाणी कहा है और उपदेशों को वेद का मूल आधार बताया है।

मोरा उपख्यान वेदूं, कण तंत भेदूं

अर्थात् यहां उपाख्यान से तात्पर्य उपदेश से लिया गया है और यह ईश्वरीय वाणी है जो पूर्ण रूप ज्ञानमयी है। गुरू जांभो जी ने परम सता के लिए स्वयंभू के अनेक नाम बताएं हैं और उनकी विभूतियों का विस्तार भी बताया है। इस प्रकार जो उत्पति के साथ पैदा नहीं होता और प्रलय के साथ जिनका विनाश नहीं होता। ऐसे स्वयंभू (निर्गुण विष्णु) के साथ-साथ सारंगधर, सुरराय, मुरारी, खुदा, राम, रहीम,

नारायण आदि नाम हैं। इसके अतिरिक्त परमसता को विशेषणरूप में अलख, अपरंपर, निरह, अलील, निरालंब, अगाह, अलेख, अडाल, अजोनि आदि शब्द कहे हैं। उन्होंने स्वयं को परमसता स्वयंभू मानते हुए अनेक प्रकार से अपनी विभूतियों और शक्तियों का उगेख किए हैं।

नव अवतार नमो नारायण,
तेपण रूप हमारा थीयूं।

भगवान जंभेश्वर जी ने स्वयं को विष्णु और वैदिक शक्ति संपन्न बतलाया है। विष्णु के जो नौ अवतार हुए थे वे स्वयं गुरू जंभेश्वर जी के ही थे। इसलिए बिश्नोई धर्म में नौ अवतारों की धारणा लोक विख्यात है। दसवें कल्कि अवतार की भविष्य में बारी है।

विष्णु अलग-अलग युगों में विभिन्न शक्तियों के रूप में अवतरित होते हैं। वे चारों युगों, सप्त पतालों, चौदह भुवनों, अनंत रूपों में विद्यमान हैं। गुरू जंभेश्वर जी ने कहा है मैं सृजनकर्ता, निरंजन, बाल ब्रह्मचारी हूं तथा घट-घट में मैं सूक्ष्म रूप में व्याप्त हूं। मेरे आदि मूल का भेद कोई नहीं जानता है-**को को जांणंत म्हारा आदि मूल का भेवूं।**

अपने शरीर का निर्माण मैनें स्वयं ही किया है। यदि मैं चाहूं तो एक शरीर से कोटि शरीरों की रचना कर सकता हूं। समस्त जीव योनियों की संभाल मैं क्षणमात्र में ही कर लेता हूं। मुझ पर माया की छाया नहीं पड़ती है। दृश्य और अदृश्य रूप में मैं त्रिलोक में व्याप्त हूं। प्रत्येक भवन में मैं सम रूप से व्याप्त हूं। मैं निराहारी हूं। केवल वायु भक्षण करता हूं और अपनी ही शक्ति पर सर्वत्र व्याप्त हूं अर्थात् मैं सर्वशक्तिमान हूं। सतयुग में सृष्टि का सृजन मैंने ही किया है। मैं विष्णु अपरंपर हूं। मैं किसी जाये जीव का जप नहीं करता हूं। निरालंब और स्वात्मरूप का जप करता हूं-**म्हे जपां न जाया जीयौं।**

गुरू जंभेश्वर जी कहते हैं मैंने चारों युगों में अवतार लेकर आसुरी वृति को समाप्त किया है और भक्तों का उद्धार किया है। जैसे कि उन्होंने अपनी वाणी में बताया है-

म्हां तो खड़ा विहायौ,
तेतीसां की वरग वहां म्है,
बारां काजै आयो,
बारां काजै घंणा न ठाहर,
मतां त डील्हे डील्हे कोड़ि रचायो,
म्हे उंजू मंडल का रायो।।

मैं विष्णु रूप में अमर, अजर, अनादि और अजन्मा हूं। मैं यहां केवल बारह करोड़ जीवों का उद्धार करने के लिए आया हूं। इन बारह करोड़ जीवों का

उद्धार करने के उपरांत मैं पृथ्वी लोक में ज्यादा दिन नहीं रूकूंगा।

आत्मा (जीव, जीवड़ा, हंस और रतनकाया)

गुरू जंभेश्वर ने आत्मा को अजर, अमर और शाश्वत बताया है। यह आत्मा न जन्म लेता है, न मरता है, न स्वयं किसी से हुआ है न इससे कोई हुआ है। यह अज, नित्य, शाश्वत और पुरातन है। शरीर के मरने पर भी यह नहीं मरता है। गुरू जंभेश्वर ने आत्मा के लिए जीवड़ा, हंस और रतनकाया कहा है। जिस प्रकार तिल में तेल और पुष्प में सुगंध है उसी प्रकार पांच तत्वों से निर्मित इस शरीर में आत्मा प्रकाशित होती है।

तिल मां तेल पोहप मां वास, पांच तत्व में लियौ परगास।

आत्मा शरीर बदलती रहती है इसलिए गुरू जंभेश्वर ने कहा है कि प्रत्येक जीव में आत्म ज्योति का दर्शन करना चाहिए।

जां जां जीव न जोती तां तां मोख न मुकती।

++++++++++++++++++++++++++++

ओं सबद गुरू सूरत चेला पांच तत्व में रहै अकेला।
सहजै जोगी सुंन मां वास पांच तत्त में लियौ परगास।।

आत्मा शाश्वत रूप से ही प्राकृतिक है और आत्मोपलब्धि सद्गुरू की अनुकंपा से ही प्राप्त होती है।

सृष्टि

सृष्टि के आदि में केवल धंधूकार या शून्य था। गुरू जांभो जी ने अनेक वस्तुओं के न होने का उल्लेख करके इसी स्थिति को दर्शाया है। शून्य अवस्था की स्थिति में 36 युग बीत गए तो निरंजन स्वयंभू ने मन में सृष्टि सृजन का संकल्प किया,

तदि हुंता एक निरंजण सिंभू, कै हुंता धंधूकारूं।
वात कदो की पूछै लोई, जुग छतीस विचारूं।
तहि परे र अवर छतीसां, पहला अंत न पारूं।
म्हे तदि पंणि हुंता, अब पंणि अछां, वलि वलि हुयस्यां, कहि कदि कदि का कहूं विचारूं।

++

संहस नांव सांई भला सिंभू उपनां आदि मुरारी।
तदि म्हे रह्या निरालंभ होय करि उतपति धंधूकारी।

जिससे आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी तत्व बनाए। इन तत्वों से सृष्टि का निर्माण हुआ। आदि में एक अंडा बना, फूटने पर वह धरती के रूप में स्थिर हुआ, उसमें जल की उत्पति हुई और जल में विष्णु और उनके नाभिकमल में ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए।

ओम् अकल रूप मनसा उपराजी। तामा पांच तत्व होय राजी। आकाश वायु तेज जल धरणी, तामा सकल सिष्ट की करणी। ता समरथ का सुणौ वखांण, सपत दीप नवखण्ड प्रमाण। पांच तत्त्व में मिल इंड उपायौ। विगस्यौ इंड धरणी ठहरायौ। इंडे मधेजल उपायौ। जलमां विसन रूप उपनो। ता विष्णु को नाभ कमल विगसानो, तामां ब्रह्म बीज ठहरायो। ता ब्रह्मा की उत्पति होई। (कलश मंत्र)

हरि की इच्छा और विष्णु की माया से सृष्टि की उत्पति हुई और शरीर भी उसी की कृपा से मिला है। अन्यत्र इसी बात को किंचित अंतर के साथ कहा है। सृष्टि के पूर्व केवल एक ओंकार था। जब चौदह भुवनों में केवल पानी ही पानी था तब केवल ओम शब्द ही गुंजायमान था।

ओं आदि सबद अनाहद वांणी, चवदै भुवंण रहा छलि पांणी।
तिंह पांणी मां इंड उपनां, उपनां ब्रभा अर तिपरारी।(1)

उस पाणी में अंडा उत्पन्न हुआ तथा ब्रह्मा और शिव उत्पन्न हुए। स्वयंभू ने सतयुग में समस्त सृष्टि का सृजन किया, ब्रह्म, विष्णु और महारूद्र की स्थापना की। चंद्रमा और सूर्य दोनों को साक्षी बनाया तथा आकाश, पवन और पाणी का निर्माण किया। वराह अवतार धारण करके दाढ पर चढा कर पृथ्वी का उद्धार किया। इसी भांति सृष्टि की स्थापना विष्णु भगवान ने की।

जुग छतीसां सून्य वरत्या, सतजुग मांड सिरजी सारी।
ब्रंभा विसन महारूद थरप्या, कीवी करामति केती वारी।(2)
जदि पवंण न हुं ता पांणी न हुंता, न हुंता धर गैणारूं।
चंद न हुंता सूर न हुंता, न हुंता गिगनदर तारूं।

माया और जगत

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक माया शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रकार से होता आया है। ऋ गवेद और यजुर्वेद में माया इंद्र की शक्तियों की प्रतीक और उपनिषद साहित्य में ब्रह्म की सहचरी शक्ति के रूप में वर्णित हुई है। अद्धैत वेदांत में यह त्रिगुणात्मिका नामरूपमय और संसार की बीज शक्ति के रूप मानी जाती है। माया जब ब्रह्म के साथ मिलकर सगुण रूप में प्रगट होती है, तब यह जगत का कारण बनती है। यह दृश्यमान जगत माया का ही परिणाम है।

इस प्रकार गुरू जांभो जी ने संसार को गोवलवास बताया है।

घर आगी अत गोवलवासो, कूड़ी आधोचारी। यहां का आधोचार झूठा है, असत्य है।

ये संसार नश्वर है। पवन के झोंको से जैसे धुंध बिखर जाती है वैसे ही यह मिथ्या जगत नाशवान और अस्थायी है। **पुवणां झोलै वीखरि जैला धुंवरि तणा ज लोरूं।**

जैसे बिना दानों के भूसी, बिना रस के गन्ना और बिना क्रिया कर्म

(सदाचरण) के परिवार व्यर्थ है, वैसे ही संसार की उलझनों में पड़ना व्यर्थ है।

कण विणि कूकस रस विणि बाकस विणि किरिया परवारूं।
हरि विणि देहड़ी जाण न लाभै अंबाराय दवारूं।।

यह संसार मिथ्या उलझनों व भ्रांतियों से भरा पड़ा है। यहां की सभी पार्थिव वस्तुएं मिथ्या और नाशवान है।

अरथूं गरथूं साहंण थाटूं।
कूड़ा दीहौ नां वाटू।
कूड़ी माया जाल न भूलि रे राजिंद्र
अलगी रही ओजू की वाटूं।

गुरू जांभो जी बताते हैं कि धन-दौलत, ऐश्वर्यपूर्वक जीवन, सैन्य समूह इत्यादि मायावी जगत के मिथ्या आकर्षण हैं। इनको असत्य, अस्थायी, नश्वर तथा नाशवान समझो। इस वैभव तथा भौतिक द्रव्य की शान-शौकत स्थायी नहीं है। इस भौतिकवादी युग में पूंजीवाद एवं मायावाद के परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार तथा अनैतिकता का प्रभाव समाज और राष्ट्र को अराजकता की ओर बढा रहा है। यह मायावी जगत सभी को भ्रमित कर रहा है। यहां का बाह्य लोकाचार तथा प्रपंच है। दुनियां गाजे-बाजे में रत है किंतु यह बाजरे की भूसी के समान थोथी है। दुनियां के रंग में न रंग कर, स्वयं को धर्म के रंग में रंगना चाहिए। कांच के समान दिखाई देने वाली सांसारिक वस्तुओं में नहीं रमना चाहिए।

माता-पिता, भाई-बहन जीव के वास्तविक साथी नहीं हैं। लोग भ्रम में इनको अपना समझते हैं। संसार का मीठा, झूठा मोह मायाजाल है। जो नष्ट हो जाएगा। इसलिए पार्थिव वस्तुओं की प्राप्ति का अंहकार नहीं करना चाहिए। संसार मायाजाल की शृंखला में बंधा हुआ है।

मुक्ति

जन्म और मृत्यु से सदा-सर्वदा के लिए आवागमन से छुटकारा पाना। इसको जांभो जी ने स्वर्ग पाना, सुरों की पनाह पाना अर्थात् सूरां पन्हां तेतीसां मेलो, जे जीवंतां मरणां, सुर की सभा में समाना अर्थात जोग मारग सह डायो, देवों से मिलाप होना, पार पहुंचना, बैंकुठ पाना, उद्धार होना अर्थात तेऊ पारि पहूंता नांही, भिस्त पाना आदि शब्दो से संबोधित किया है। मनुष्य का चरम लक्ष्य मुक्ति प्राप्त करना है। विष्णु नाम जप, सदगुरू की प्राप्ति, निष्काम कर्म, अंहकार त्याग, सदाचरण इसके प्रधान उपाय हैं।

एते मसले चालौ मीयां, तौ पावौ भिस्त ईमांनू।
पाहणं प्रीति फिटाकर प्रांणी, गुरू विणि मुकति न जाई।
आयो हकारो जीवड़ो बुलायो, कहि जीवड़ा, के करण कुमायो ?

से पार गिरांयै कतौ उतरे ?

तउवा मांण दरजोधंन मांण्यां, अवर भी मांणंत मांणौ।

यह आवश्यक नहीं है कि मरने के बाद मुक्ति हो। जीते जी जीवन मुक्ति प्राप्त करना श्रेयस्कर है और यह संभव भी है।

सिधं साधां को एक मतो है जीवन मुगति दिढाई।

इसी प्रकार एक बार की मुक्ति सदा की मुक्ति है। जो हक और हलाल की कमाई खाता है, सत्य को प्रमाण मानता है और जीने की विधि जानता है वही जीवन मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

जीवत मरो रे जीवत मरो जिण जीवंण की विधि जांणी।

सुकृत के अंतर्गत सभी शुभ कार्यो की गणना है जो किसी न किसी प्रकार से आत्म दर्शन और मोक्ष प्राप्ति में सहायक होते हैं। सुकृत व्यर्थ नहीं जाते हैं- **सुकरत अहल्यौ न जाई।** किंतु सदैव निष्काम भाव से ही कर्म करते रहना चाहिए। सकाम कर्मो से आवागमन का चक्र जारी रहता है। जांभो जी ने कर्ण और विदुर के दृष्टांतो से इसको स्पष्ट किया है-**किंह गुण विदरौ पारि पहूंतौ, करणों फेरि बसाइयै ? मन मुखि दांन ज दीन्हौं करणैं, आवागवण ज आइयैं। गुर मुखि दांन ज दीन्हौ विदरै, सुर की सभा समाइयै।**

साधना, योग और दिव्य दृष्टि

आत्म तत्व की प्राप्ति के लिए सबदवाणी में मंत्र-योग या जप-योग पर सर्वाधिक बल दिया। विष्णु नाम जप आत्मोपलब्धि का सर्वश्रेष्ठ साधन है। प्राण वायु निरोध से परमात्मा पिंड में ही प्राप्त किया जा सकता है। इससे गगन मंडल में झरता हुआ अमृत पान संभव है जिससे भूख प्यास मिट जाती है-**सपत पयाले भुयं अंतरि, अंतरि राखीलो अटला टलूं। अलाह अलेख अडाल अजूंनी सिंभू। पवण अधारी पिंड ज लूं। काया भीतर माया आछै। माया भीतर दया आछै। दया भीतर छाया आछै। छाया भीतर बिंब फलूं। पूरक पूरि पूरिले पवंण, भूख नहीं भात जीमंत कूंण ? शरीर में प्राणायाम से सूर्य और चंद्रमा का संयोग कराना चाहिए-सुंणि गुंणवंता सुंणि बुधिवंता, मेरी ओपति आदि लुहारूं। आसंण छोड़ि सिधासण बैठो, जुगि जुगि जीवै जंभ लुहारूं।।**

सूर्य चंद्रमा घट में हैं और अनाहद नाद हो रहा है। इसको समझना चाहिए-**अरधक चंदा निरधक सुरूं। छै लख तारा नैड़ा न दूरूं। नव लख चंदा नव लख सूरूं। नव लख धंधू कांरू। ताहं पैरै रै जो परि हुंति, तिहंका कहू विचारूं।** पवन, पानी, दस इंद्रिया, नव द्वार वश में करने चाहिए। बंकनाल साध कर त्रिकुटि पर ध्यान लगाना। माया के बंधन तोड़कर सत्य की साधना करने वाला ही पूर्ण योगी है। वही शून्य मंडल में खेलता है-वसि करि

पवंणा वसि करि पांणी वसि करि हाट पटंण दरवाजूं।

जिंह गुर के झरै न झरंणां, खिरै न खिरंणां, वंक त्रिवंके नाळ पनाळे, नैंणे नीर न झुरिबा। रिद्धि सिद्धि पिंड(शरीर) में ही प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए विषय वासना को खत्म करना आवश्यक है। जांभोजी ने सहज मार्ग पर चलने का आदेश दिया है। इसके लिए उन्होंने बौद्ध सिद्धों द्वारा प्रयुक्त ओजू की वाटूं का उल्लेख किया है। तत्व प्राप्ति के मार्ग पर बिरला ही चलते हैं क्योंकि इसके लिए अपने आपको मारना पड़ता है। अत: निगुरे व्यक्ति यह झुझ नहीं रचाते। इसके लिए बाह्य वेश व्यर्थ है। परमतत्व का ज्ञान सदगुरू बता सकते हैं और साधक उसको जानकर पूर्ण योगी बन सकता है-**सतगुरू ऐसा तत्व बतावै, जुगि जुगि जीवै जळंमि न आवै। लेकिन दूसरी पंक्ति में यह भी बताते हैं कि-तै हतंते जीयौं, ताथै निगुरे झूझ न कीयौ।**

अवतारवाद

भगवान विष्णु अलग-अलग युगों में विभिन्न शक्तियों के रूप में अवतरित होते हैं। वह चारों युगों, अनंत रूपों, सात पताल, चौदह भुवन सभी जगह विद्यमान हैं। परमसता विष्णु शुभकर्म करने वालों का निस्तार और धर्म-रक्षार्थ अवतार धारण करता है। गुरू जंभेश्वर स्वयं विष्णु हैं। उन्होंने कहा कि मैं स्वयंभू, सृजनकर्ता, निरंजन, बाल ब्रह्मचारी हूं। घट-घट में मैं सूक्ष्म रूप से व्याप्त हूं। मेरे आदि मूल का भेद कोई नहीं जानता है। अपने शरीर का निर्माण मैनें स्वयं ही किया है। यदि मैं चाहूं तो एक शरीर से कोटि शरीरों की रचना कर सकता हूं। समस्त जीव योनियों की संभाल क्षणमात्र में कर लेता हूं। मुझ पर माया की छाया नहीं पड़ती है। दृश्य और अदृश्य रूप से मैं त्रिलोक में व्याप्त हूं। प्रत्येक भवन में मैं समरूप में व्याप्त हूं। मैं निराहारी हूं। केवल वायु भक्षण करता हूं और अपनी ही शक्ति पर सर्वत्र व्याप्त हूं। सतयुग में सृष्टि का सृजन मैंने ही किया है। मैं विष्णु अपरंपार हूं। इससे पूर्व मैंने नौ अवतार धारण करके दानवों को नष्ट किया है-

नव अवतार न्यंमो नारायण।
तें पणि रूप हमारा थीयो।।

भविष्य में दसवें अवतार कल्कि की बारी है। मैं किसी जाये जीव का जप नहीं करता। केवल निरालंब, स्वयंभू व स्वात्मरूप का जप करता हूं। गुरू जांभो जी ने कहा है कि कैवल्यज्ञानी स्वयं विष्णु का अवतार धारण करके समराथल पर आया है। तैंतीस कोटि जीवों में से 12 करोड़ जीवों को मुक्ति दिलवाने के लिए समराथल पर आसन लगाया है-

केवल न्यांनी थलसिरि आयौ।
परगट खेल पसारी

कोड़ि तैंतीस पहुंचण हारी
क्यों छकि आई सारी।।

गुरू जांभो जी ने आध्यात्मिक मान्यताओं की मीमांसा के साथ-साथ जंभवाणी के दर्शन संबंधी तत्वों का विस्तार से वर्णन किया है। उनकी वाणी में दर्शन शब्द का उल्लेख छह दरसण के संदर्भ में प्रयोग हुआ है। यहां दर्शन शब्द का उल्लेख परम तत्व को देखने, विचारने, श्रद्धा रखने आदि के संदर्भ में किया गया है। ब्रह्म, आत्मा, जगत, मुक्ति इत्यादि विषयक बातों की समुचित व्याख्या करना हमारा मुख्य ध्येय है। ब्रह्माण्ड की सता ब्रह्म या परमात्मा है और पिंड(शरीर) की सता का नाम आत्मा है। प्राचीन दार्शनिकों ने आत्मा और परमात्मा की एकता बताई है। प्रत्येक प्राणी आत्मा के रूप में परमात्मा का अनुभव करता है। इसलिए आत्मा को जानना परमात्मा को जानना है। भारतीय दर्शनों का लक्ष्य आत्म दर्शन है। जगत में श्रेष्ठ और प्रिय पदार्थ आत्मा है। उपनिषदो का मुख्य प्रतिपाद्य आत्मा ही है। इसलिए सभी दर्शनों ने आत्म ज्ञान को श्रेष्ठ माना है।

गुरू जांभो जी ने छह दर्शन का तात्पर्य सुप्रसिद्ध छह आस्तिक दर्शनों से हैं। क्योंकि ये ही परमसता परमात्मा के रूप की स्थापना या व्याख्या करते हैं। मोटे रूप में छह दर्शनों के दो समूह हैं। एक आस्तिक हैं और एक नास्तिक हैं। हिंदू धर्म के अनुसार वेद को न मानने वाले को नास्तिक और मानने वाले को आस्तिक कहते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार गुरू जंभेश्वर महाराज ने अपने आध्यात्मिक विचारों में भारतीय धर्म परंपरा और दार्शनिक परंपरा के सभी आयामों का विस्तार से वर्णन किया है। उनकी दार्शनिक मान्यताओं में धर्म और दर्शन का समन्वयवादी और वैदिक पद्वति का पुनरूत्थानवादी दृष्टिकोण झलकता है। जिसमें जीव, ईश्वर, ब्रह्म, जगत, मोक्ष, साधना, जप-तप, हवन इत्यादि आध्यात्मिक मूल्यों का विस्तार से वर्णन किया है। जिसमें हिंदू धर्म की अवतारवादी परंपरा, आत्मा-परमात्मा का सामंजस्य, जीवन और जगत का तारतम्य, सहज जीवन पद्वति के साथ-साथ भारतीय दर्शन परंपरा के मूल सिद्धांतों का भी वर्णन किया है। गुरू जंभेश्वर की वाणी वेद वाणी है जिसमें वैदिक मान्यताओं के साथ-साथ सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, अद्वैत दर्शन, जैन, बौद्ध दर्शन इत्यादि के साथ उनकी मान्यताओं का सार ग्रहण और समन्वयवादी रूप उजागर होता है। जिसकी वर्तमान युग में प्रासंगिकता, उपादेयता और सार्थकता है।

❍ मनबीर गोदारा
शोध छात्र, जनसंचार विभाग

❍ डॉ. किशनाराम बिश्नोई
प्रभारी, गुरु जंभेश्वर धार्मिक अध्ययन संस्थान
गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं तकनीकी विश्वविद्यालय , हिसार

गुरू जम्भेश्वर का उद्देश्य एंव शिक्षण पद्धति

गुरू जम्भेश्वर जी आध्यात्मिक शिक्षा को मानव के विकास का आधार मानते थे। उनका विश्वास था कि इसी शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य को वास्तविकता *(altimate Reality)* का ज्ञान होता है।

व्यक्ति का सच्चे ज्ञान की प्राप्ति वास्तविक शिक्षा ही करा सकती है। इस सिद्धान्त को गुरू जम्भेश्वर ने लोगों के सामने रखा। उन्होंने समाज में फैले हुए पाखण्ड, कुरीतियों, कुप्रभावों की अलोचना की और बताया की मानव का कल्याण केवल माया द्वारा उत्पन्न अज्ञान को दूर करने पर ही हो सकता है। क्योंकि कोई भी मनुष्य अपने आप गलती नहीं करता बल्कि अपने पूर्व संचित कर्मो के कारण गलती करता है, यही इनके दर्शन की विशेषता है। इस प्रकार अज्ञान ही गलत कार्यो का मूल है अर्थात् सही कर्म ही ज्ञान है।

गुरू जम्भेश्वर जी ज्ञान को महत्वपूर्ण तथा सर्वोपरि दर्शाते हुये कहते हैं कि व्यक्ति के अंदर विचार करने की शक्ति उत्पन्न करने से ही ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र में विकास हो सकेगा। विचारों के आदान-प्रदान से ही जम्भवाणी भरी पड़ी है। ज्ञान की उपलब्धि आत्मानुशीलन एवं आत्मपरीक्षण से ही सम्भव है (वार्ता गुरू जम्भेश्वर एंव सिकन्दर लोधी, साहुकार, लोहपांगल में देखें) वे व्यक्ति में चिंतन शक्ति *(Power of Thinking)* उत्पन्न करना चाहते थे, जिसके द्वारा उनमें सदाचार सच्चाई, बुद्धि, विवेक, मैत्री, बन्धुत्व का विकास हो, जो कि ज्ञान पर ही आधारित है। जिस तरह महात्मा बुद्ध ने अपने परम शिष्य आनन्द को कहा था कि ''आत्मदीपोभव'' उसी तरह गुरू जम्भेश्वर भी व्यक्ति को 'स्व' *(Self)* का ज्ञान कराना चाहते थे अर्थात् ''अपने को पहचानों या जानो यही इनके दर्शन का प्रमुख सिद्धांत है।''

व्यक्ति का उद्देश्य हमेशा ही अपने को जानना या पहचानना होना चाहिए अर्थात् मैं क्या हूं, मुझे क्या करना चाहिये? आदि आदि शिक्षा के सारे कार्यकलाप उसी उद्देश्य की पूर्ति हेतू होते हैं। गुरू जम्भेश्वर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिये कि मनुष्य में इतनी योग्यता और क्षमता प्रदान करें कि हम अपने आपको जानने और समझने में समर्थवान हो। उन्होंने शिक्षा का आधार बताते हुये कहा कि मनुष्य के जीवन का वास्तविक पारखी बनना चाहिये, इसी से ही वह अपने ''स्व'' *(Self)* को जान सकता है। जीवन का वास्तविक पारखी वही व्यक्ति हो सकता है जो मनुष्यों के संबंध के सूक्ष्म से सूक्ष्म भेदों को समझने की शक्ति रखता है तथा सुख-शांति के साथ सामाजिक जीवन व्यतीत करता हुआ अज्ञान की बातें न करें अर्थात् व्यक्ति समझ बूझ कर शीलपूर्ण व्यवहार करता हुआ संसार से

पलायन न करें, यह सच्ची शिक्षा से ही सम्भव है। मध्यकाल में ब्राह्मणों, मुसलमानों के कुप्रभाव से नैतिकता का ह्रास हो रहा था। गुरू जम्भेश्वर जी ने अपने तर्क एवं अनुभव से यह निश्चय किया कि आध्यात्मिक तथा सामाजिक शिक्षा से ही नैतिकता की पुनस्थापना की जा सकती है। उत्तरी भारत खास कर राजस्थान में नैतिकता की स्थापना का श्रेय उन्हें दिया जाये तो अतिश्योक्ति न होगी।

गुरू जम्भेश्वर जी की शिक्षा का प्रथम उद्देश्य ''अपने को जानो'' है। वैसे तो सभी लोग अपने को जानते ही है'' परन्तु वास्तविक रुप में बहुत कम लोग जानते हैं कि हम क्या हैं। जो लोग अपने को जानते हैं उन्हें अपनी क्षमताओं, शक्तियों और कमजोरियों के बारे में कोई संदेह नहीं होता। वे अपनी आकांक्षायें, इच्छायें और विचारों का विश्लेषण भली-भांति कर लेते हैं। वे यह नहीं जानते थे कि लोग बिना समझे विचारे किसी सिद्धांत को अपना लें, जब ऐसा हो जाता है तो समाज में पाखण्ड, कुरीतियों या अन्य प्रकार के अन्याय का होना स्वाभाविक हो जाता है। अत: गुरू जम्भेश्वर जी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिये व्यक्ति में तर्क और विचार करने की शक्ति तथा अपने जानने पहचानने की योग्यता उत्पन्न करना चाहते थे। उनका विचार था कि तर्क के द्वारा हम सच्चे ज्ञान की प्राप्ति कर सकते हैं। उन्होंने जो ज्ञानार्जन के लिए जिस ''तार्किक-विधि'' को अपनाया यही विधि संसार के महान दार्शनिक सुकरात ने भी अपनाई थी वह आज सारे समाज में दार्शनिकों को मान्य है। उन्होंने अपनी वाणी में जगह-जगह यही दर्शाया है कि व्यक्ति जब भी तार्किक-विधि को अपनाता है तो उसे कुशलतापूर्वक प्रश्न करना चाहिये ताकि वह अपने प्रश्न का उत्तर वैज्ञानिक ढ़ंग से प्राप्त कर सके अन्यथा उसे उत्तर प्राप्ति में बाधा आ सकती है।

गुरू जम्भेश्वर ने ज्ञान के उपर्युक्त वर्णित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये एक विशेष प्रकार की पद्धति का प्रचलन किया, जहां पर प्रश्नोत्तर की सहायता से सत्य के अंतिम छोर तक पहुंचना था। लोग उनके पास आकर प्रश्न करते थे और वे इनका जवाब देश-काल की परिस्थिति के अनुसार दिया करते थे। अर्थात् प्रश्न-उत्तर के माध्यम से विचार एंव तर्क के आधार पर वस्तु स्थिति का पता लगाया जाता था। यहां पर हम सुकरात तथा गुरू जम्भेश्वर की शिक्षण पद्धति में थोड़ा सा अंतर पाते हैं कि गुरू जम्भेश्वर लोगों द्वारा प्रस्तुत प्रश्नों का उत्तर देते थे तथा बीच-बीच में प्रश्न भी करते थे, जबकि सुकरात लोगों के सामने प्रश्न उत्पन्न करते और उन्हीं से ही हल ढूंढ़ने को कहते थे जब वे उस प्रश्न का हल न निकाल पाते तो सुकरात उस प्रश्न का उत्तर स्वंय ही देते थे। उन्होनें अपने शिष्यों को सच्चे ज्ञान की प्राप्ति की शिक्षा दी। उन्होंने समाज में फैली हुई अनेक प्रकार की धारणाओं को दोषपूर्ण बतला कर सत्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी। गहराई से चिंतन करने पर पता चलता

है कि इनकी शिक्षण विधि आत्मचिन्तन को दर्शाती हैं। उन्होंने अपने आपको विष्णु अवतार बताते हुये कहा कि इस संसार में पहले था, अब भी हूं, आगे भी रहूंगा, मैं भूत, वर्तमान, भविष्य के बारे में जानता हूं। मनुष्य की आत्मा पर माया का आवरण होने के कारण सत्य को नहीं जान पाता। इसलिये मनुष्य को चाहिये कि वे सत्य को जानने का प्रयत्न करें और यह प्रयत्न व्यर्थ के प्रश्नों से नहीं बल्कि सही प्रश्नों के उत्तर ढुढ़ने से मिल सकता है। सही मायने में देखा जाये तो उनकी शिक्षण विधि, अनुसन्धान की विधि या सत्य की खोज की विधि थी। उनकी खोज का साधन था 'आत्मचिन्तन', अपने अनुभवों को विश्लेषण और परीक्षण। वे प्रश्नोत्तरों द्वारा ही जीवित समस्याओं अर्थात् समाज में समकालीन परिस्थितियां की तह में जा कर उनकी आत्मा को पहचानने का मार्ग प्रदर्शित करना चाहते थे। उनकी 'शिक्षण विधि' का बाह्यात्मक स्वरूप 'बातचीत' *(diabities)* थी। इसी के द्वारा वे ज्ञानार्जन का मार्ग इतना सरल और प्रशस्त बना देते थे कि लोग इस मार्ग का अनुसरण करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हो जाते थे। उपर्युक्त अवलोकन से यही ज्ञात होता है कि उनका इस संसार में रहना तथा लोगों के दिलों में छाप उनके प्रश्नोत्तर की सरल विधि पर आधारित है। अगर वे भारतीय संस्कृति के महान (संस्कृत के महान ज्ञाताज्ञों) दार्शनिकों की तरह दुरूह प्रश्नों का उत्तर दुरूहता से देते तो वे जो कार्य करना चाहते थे, न कर पाते अर्थात् जनभाषा में प्रश्नों के उत्तर दिये जायें तो लोग आसानी से समझ सकते हैं, यही उन्होंने किया। अगर हम आज के संसार में नजर दौड़ा कर देखे तो सभी शिक्षा-दार्शनिक यही बतलाते हैं कि शिक्षा का आधार जनभाषा हो, अन्य भाषाओं का लोगों पर थोंपना गलत मार्ग पर पहुंचना है।

गुरू जम्भेश्वर से जब भी कोई व्यक्ति मिलता और प्रश्न का उत्तर चाहता तो उसे वे यह संसार क्या है? मैं क्या हूं? तुम कौन हो? नैतिकता क्या है? आदि को अनेक प्रंसगों द्वारा समझाते थे। वे आकांक्षी को उपर्युक्त प्रश्नों का तर्कपूर्ण ढंग से उत्तर देने के साथ वह भी बतलाते थे कि लोगों की धारणायें एक वस्तु के प्रति कितनी भ्रामक है जिसके कारण वे उसका वास्तविक रूप नहीं जान पाते। इस प्रकार गुरु जम्भेश्वर जी अपनी प्रश्नोत्तर पद्धति से सर्वप्रथम लोगों में फैले हुये भ्रम को दूर करते और अन्य में सार निकाल कर प्रमाणों सहित प्रस्तुत करते।

गुरु जम्भेश्वर जी की शिक्षण पद्धति आजकल वर्तमान लैक्चर पद्धति से सर्वथा भिन्न थी अर्थात् उनकी शिक्षण पद्धति में भाषण करना नहीं था, प्रश्नोत्तर शैली में शिष्य अन्यान्य विषयों का ज्ञान प्राप्त करते थे। इसका लाभ यह होता था कि शिष्य का भ्रम किसी भी विषय के संबंध में नहीं रहता था। वे अपने अनुभव, विचार और तर्क की सहायता से सुलझा हुआ स्थाई तथा वास्तविक ज्ञान अपने शिष्यों के सामने रखते थे। अब प्रश्न उठता है कि इतने जटिल समाज में इतनी द्वन्द्व

पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान है। आज इसका विकास प्रश्नों द्वारा होता है। प्रश्नों की सहायता से ही सिद्धांत निकाले जाते हैं। विद्यार्थियों ने कितना समझा, धारण किया, इसके लिये बोधात्मक और धारण के प्रश्न किये जाते हैं तथा उत्तर भी दिये जाते हैं। प्रश्न उत्तर करने से बालक तथा प्राध्यापक सजग रहते हैं। इसलिये बौद्धिक विकास के लिये द्वन्द्व शिक्षण पद्धति महत्वपूर्ण है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में तर्क के आधार पर बालकों के मानसिक वर्धन की चेष्टा की जाती थी।

गुरु जम्भेश्वर जी की उपर्युक्त शिक्षण पद्धति को 'द्वन्द्व शिक्षण पद्धति' कहा जाता है। यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा धारणाओं से प्रयत्नों का निर्धारण होता है। यह चिंतन की वह पद्धति है जिसके द्वारा ज्ञान अथवा सत्य की प्राप्ति होती है। इस पद्धति है जिसके द्वारा अथवा सत्य की प्राप्ति होती है। इस पद्धति का बाह्यात्मक रूप बातचीत होता है, परन्तु यह बातचीत एक निश्चित उद्देश्य से एक निश्चित दिशा की ओर संचालित रहती है। इस प्रकार यह बातचीत वस्तुतः एक विवेचनापूर्ण तार्किक सम्भाषण थी, जो आगमन शैली *(Inductive method)* पर संयोजित हो कर जीवन से संबंधित सत्य को जानने की ओर अग्रसर होती थी। अन्त में हम कह सकते हैं कि यह द्वन्द्व शिक्षण पद्धति वह पद्धति है जिसके द्वारा अनुभवों रोजमर्रे की स्थितियों के परीक्षणों से सामान्य सिद्वान्तों का निर्धारण होता है जिसके प्रकाश में व्यक्ति अपने कार्यो को नैतिक आधार प्रदान करता है। दार्शनिक अन्तर्दृष्टि की गहराई में एवं स्थान-स्थान पर स्वीकृत गुरू जम्भेश्वर जी की 'प्रश्नात्मक विधि' में व्यापक सदिच्छा एंव उच्च भावना में और मध्यकाल के अत्याधिक सुस्कृत विचारों की साक्षी उपस्थित करने में गुरू जम्भेश्वर के सम्वाद बराबर पाठकों को अति प्राचीन (वैदिककालीन) सम्वादों की याद दिलाते हैं। यह निश्चित है कि ज्यों ही इनकी वाणी को भली भांति समझ कर और दार्शनिक दृष्टि से विचार करके लोगों के सामने प्रस्तुत किया जायेगा तब यह वाणी अन्य सम्प्रदायों (जैसे बौद्ध, जैन, सिक्ख) के समान स्तर पर ही रखा जा सकेगा। इनकी वाणी केवल साहित्यिक एंव दार्शनिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

गुरू जम्भेश्वर जी व्यक्ति मे उन नैतिक गुणों का विकास करना चाहते थे जो जीवन को अंतिम लक्ष्य (मोक्ष) को प्राप्त कराने में सहायता प्रदान करते थे। उन्होनें महसूस किया कि भारतवासियों के जीवन में अनेकानेक कुरीतियों, पाखण्डों ने घर कर लिया है जिससे वे विलासिता, अकर्मण्यता का जीवन बीताने में अपना गौरव समझते हैं। ऐसे लोगों के लिये नैतिक शिक्षा की जरूरत है, जिससे वे ऐसा जीवन न बीता कर नैतिक, कर्मनिष्ठ जीवन यापन में संलग्न रहें और अन्तिम सत्य को जानें। यदि उनमें ज्ञान-ज्योति का प्रकाश हो जाये तो उनके सभी दुःख दूर हो

जायेगें। अत: वे लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा शिक्षित करना चाहते थे। जो दैनिक जीवन में उपयोगी हो, जिसके माध्यम से लोग संसार से पलायन न करके जीवन की एक सुदृढ़ इमारत खड़ी कर सकें अर्थात् वे व्यक्ति का बौद्धिक विकास चाहते थे तथा इसके लिये मनुष्य में विवेक, संयम का होना आवश्यक समझते थे। इसलिये हम कह सकते हैं कि गुरु जम्भेश्वर को व्यवहारिक जीवन का पूरा ज्ञान था, इसलिये इनकी वाणी में दर्शन शास्त्र, समाज शास्त्र तथा मान्यताओं में संशोधन करके नयी अवधारणायें जोड़ी और अपने मौलिक योगदान के द्वारा भारतीय आदर्शवादी दर्शन को समृद्ध किया।

❍ **बलविन्द्र कुमार (सहायक प्रोफेसर)**
मीरा शिक्षण महाविद्यालय, सरदुलैवाला, पंजाब
❍ **डॉ. रोहतास कुमार (एसो. प्रोफेसर)**
राजकीय महाविद्यालय, आदमपुर (हिसार) हरियाणा

श्री गुरु जाम्भोजी का वैश्विक चिन्तन एवं पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरणीय क्षरण वर्तमान की एक चुनौतीपूर्ण एवं वैश्विक समस्या बन गई है, एवं सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण संरक्षण के उपाय सोचने पर मजबूर हैं। ऐसे समय में श्री गुरु जाम्भोजी का चिन्तन और उनके द्वारा प्रतिपादित नियम जो आज से 500 वर्ष पूर्व मानव जाति को सम्बोधित किये थे, वे आधुनिक, आर्थिक व औद्योगिक युग में अत्यधिक प्रासंगिक सिद्ध हो रहे हैं।

विक्रम सम्वत् 1508 में श्री गुरु जम्भेश्वर का अवतार हुआ, उस समय सामाजिक कुरीतियां और धार्मिक आडम्बर चरम सीमा पर पहुंच चुके थे। धर्म के प्रति श्रद्धा का नितान्त अभाव था। मन्त्र-तन्त्रों द्वारा सिद्ध कर लोगों के सामने चमत्कार दिखाना ही सन्तों का उच्च कार्य माना जाने लगा था। अधिकांश व्यक्ति धर्म का उपयोग भौतिक स्वार्थ के लिये ही करने लग गये थे और कई देवी (चामुण्डा जी) और देवताओं (भैरूजी) के नाम पर पशुबली देना आरम्भ कर दिया था। व्यक्ति के हृदय से धर्म का वास्तविक रूप प्रायः लुप्त हो रहा था। ऐसे विकट समय में श्री जम्भेश्वर महाराज के अवतार ने मानव हृदय में दया, अहिंसा, सत्य और पवित्रता से युक्त धर्म की स्थापना की। उन्हें किसी प्रकार की शिक्षा-दीक्षा की आवश्यकता नहीं थीं, फिर भी गुरु के महत्व को देखते हुए, गोरख नाथ को अपना गुरु स्वीकार किया और संवत् 1542 में बिश्नोई मत की स्थापना की।

श्री गुरु जाम्भोजी ने एक सच्चे संत के रूप में अपनी सबद वाणी द्वारा आमजन को उपदेश दिये। उनका मुख्य उपदेश 'जीयो और जीने दो' का था। उनकी मान्यता थी कि किसी भी प्राणी को बिना अपराध, मनसा-बाचा एवं कर्मणा से दुःख देना पाप है। उन्होंने कहा व्यक्ति जन्म से सब समान होते हैं। कर्मों के अनुसार ऊंच व नीच कुल के समझे जाते हैं। उनके उपदेश कर्म प्रधान हैं। शब्द नं. 26 में कहा है 'उत्तम कुली का उत्तम न होयबा कारण क्रिया सारूं'। अर्थात् यदि कोई मनुष्य ऊँचे कुल में जन्म लेता है, तो उत्तम नहीं कहलाया जा सकता। नीचे कुल का हो या उत्तम कुल का हो, जिसके आचार, विचार, क्रिया शुद्ध व उत्तम है बस वही मानव श्रेष्ठ है।

तत्कालीन संत व योगी अपने शरीर पर भस्म लगा कर तुच्छ मन्त्रों को सिद्ध कर समाज को भ्रमित कर रहे थे। श्री गुरु जाम्भोजी एक जन-जन के संत के रूप में अपनी सबदवाणी नं. 42 में उपदेश के रूप में कहते हैं, **'आयसां काहै काजै खेह भकरूड़ो। सेवो भूत मसांणी'** अर्थात् लोग अपने शरीर पर राख लगा कर उसे मलीन क्यों कर रहे हैं ? लोग परमात्मा का स्मरण छोड़, भूत प्रेतों का ध्यान क्यों कर

रहे हैं ? **'घड़े ऊंधे बरसत बहु मेहा। तिहिंमा कृष्ण चरित बिन।। पड़यो न पड़सी पांणी'।** अर्थात् जिस प्रकार उल्टे घड़े पर कितनी ही वर्षा होने पर भी वह खाली ही रहता है, उसी प्रकार परमात्मा के स्मरण एवं ध्यान बिना कल्याण सम्भव नहीं है। ऐसे समय में जाम्भोजी ने मानव जाति के सुधार एवं उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया। संत साहित्य की परम्परा में जाम्भोजी का आगमन प्रेरणादायी था। उनका चिन्तन न केवल सामयिक था, बल्कि शाश्वत है।

श्री गुरु जाम्भोजी ने सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं मानवतावादी उपदेश तो दिये ही, वैश्विक परिवेश में पर्यावरण संरक्षण के मूल मंत्र भी उनकी सबदवाणी में निहित थे। उनका धर्म को पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़ने की सोच, उल्लेखनीय व अद्वितीय है। उनके विचार केवल समाज सुधार हेतु ही नही बल्कि युगान्तकारी एवं क्रांतिकारी है। आज पर्यावरणीय क्षरण पूरे विश्व की ज्वलंत समस्या है वहीं जाम्भोजी जैसे सन्तों के सदुपदेशों का अनुसरण आवश्यक है। गुरुजी के उन्नतीस धर्मों की व्याख्यान माला में हरे वृक्षों को काटना व जीव हत्या का पूर्ण निषेध कहा है। 'जीवेषु दया कुर्यात्' अर्थात् जीवों पर दया करनी चाहिए। जिस प्रकार मनुष्य को अपने प्राण प्यारे हैं, उसी प्रकार पशु, पक्षी, कीड़े आदि जीवों को भी अपने प्राण प्रिय हैं। 'हरित वृक्षा: नोछेद्या:'। हरे वृक्ष नहीं काटने चाहिये, क्योंकि इनमें भी जीवात्मा विराजमान है। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस ने आधुनिक विज्ञान द्वारा सिद्ध कर दिया कि वृक्षों में भी चेतना होती है। आज धरती पर जंगलों का विनाश किया जा रहा है, जिसका दुष्परिणाम बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण सर्वविदित है। श्री गुरु जाम्भोजी ने अपने उपदेशों में कहा है, 'जीव दया पालणी रूंख लीलो नहीं घावे' अर्थात् जीवों पर दया करना और हरे वृक्षों को नहीं काटना प्रकृति में पर्यावरण सन्तुलन को बनाये रखने के लिए जैविक घटकों (प्राणी व वनस्पति) का अहम् महत्व है। जब भी मनुष्य प्रगति व विकास के नाम पर जीवों व जंगलों का अतिशोषण करता है, इसके परिणाम विनाशकारी होते हैं। हमें संपोषित विकास का सिद्धान्त अपनाना चाहिये, लेकिन मानव स्वार्थ हित के लिए पर्यावरण सन्तुलन की कभी नहीं सोचता है, जिसके परिणाम प्राकृतिक आपदाएं – भूस्खलन, नदियों में बाढ़, समुद्रों में सुनामी, भूकम्प, ज्वालामुखी का फटना, ओजोन परत का क्षय इत्यादी हमारे सामने हैं।

खेजड़ली का बलिदान एक विश्व विख्यात घटना है, जहां बिश्नोई समाज के नर, नारी, बूढ़े, जवान, 363 लोगों ने पेड़ों को बचाने के लिए अपने प्राणों की बलि दी। ऐसा अनूठा एवं प्राचीन उदाहरण विश्व के इतिहास में और कही नहीं मिलता। 'सिर साठै रूंख रहे तो भी सस्तो जाण' अर्थात् अपने सिर के बदले अगर वृक्ष की रक्षा होती है, तो वह इतना मूल्यवान नहीं जितना पेड़। अत: पर्यावरण के

प्रति श्री गुरु जाम्भोजी का चिन्तन वर्तमन में इसके बढ़ते क्षरण की रोकथाम के लिए विचारणीय व सीख देने वाला है।

1. अगर हमें विश्व की वन संस्कृति का संरक्षण करना है तो गुरुजी के सिद्धान्तों को अपनाना होगा। वन, प्राणी व वनस्पति का पारस्परिक सम्बन्ध अटूट खाद्य श्रृंखला के रूप में सर्वविदित है, क्योंकि कोई भी जीव परोक्ष या अपरोक्ष रूप से वनस्पति द्वारा जीवित है।

2. जलवायु की शुद्धता हेतु जाम्भोजी ने अपनी सबदवाणी द्वारा नित्य हवन करने का उपदेश दिया। गुरुजी ने अपनी वाणी में कहा, 'बासंदर नाही नख हीरूं' अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के लिए अग्निहोत्र अन्य सब कर्मों में उत्तम हीरे के नग के समान है। बीस मिनट का शुद्ध घृत व सामग्री द्वारा हवन करने से 24 घंटे तक स्थानीय वातावरण शुद्ध रहता है'। अत: बिश्नोई समाज आज भी गुरु जाम्भोजी की शब्दवाणी के अनुसार हवन को सर्वोपरी मानते हैं और हर शुभ कार्य में व नित्य प्रतिदिन हवन करते हैं।

3. श्री गुरु जाम्भोजी ने पूरी जाति की शारीरिक शुद्धता हेतु प्रात:काल स्नान करने का उपदेश दिया था, ''प्रात: स्नानं समाचरेत्'' अर्थात् प्रात: काल स्नान करने से मनुष्य के रात्रि के पाप और स्वप्न के दोष नष्ट हो जाते हैं। मुनी लोग भी प्रात:काल स्नान को अधिक महत्व देते हैं, जिससे शरीर का तेजस्व, निखार, सक्रियता व रक्त का संचार बढ़ जाता है। जाम्भोजी कहते हैं शरीर जल से, मन सत्य से, जीवात्मा विद्या और तप से और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

4. श्री गुरु जाम्भो जी द्वारा मुखरित उपदेशों की महत्ता इस कारण है कि उन्होंने दिमाग एवं दिल दोनों से सोचा और बिना किसी भेदभाव के जन-जन के हृदय तक पहुंचे। उन्होंने दर्शन एवं ज्ञान का कोई अहंकार नहीं किया, अपितु सामान्य जन की भाषा में सोचा एवं कहा और अपने जीवन में लागू किया। इस प्रकार उन्होंने अपने उपदेशों को चाहे वे उन्नतीस नियम हो या सबदवाणी, व्यावहारिकता के साथ जोड़ा। उनका चिन्तन जीवन का दर्शन है। उनके नियम सरल, सैद्धान्तिक व वैज्ञानिक है। अगर हम इसकी उपमा 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' से करें तो अतिश्योक्ति नहीं है 'जाम्भोजी के उपदेश सत्य हैं, किसी प्रकार का आडम्बर नहीं है, सरल, सहज, प्रत्येक मानव जाति के लिए कल्याणकारी है। शिव शक्तिशाली है व अति सुन्दर है। पूरे विश्व का पर्यावरण स्वच्छ, सन्तुलित व सुन्दर रखने के लिए उनके सिद्धान्त अपनाने योग्य हैं।

❍ **डॉ. (श्रीमती) सरस्वती बिश्नोई**
पूर्व प्राचार्या, राजकीय डूंगर महाविद्यालय
बीकानेर (राज.)

गुरु जाम्भो जी का वैश्विक चिन्तन एवं श्रीमद्भगवद् गीता

भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर्नाम वपु एक।
इनके पद वंदन किए, नाशत विघ्न अनेक॥
मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड़ ध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

हम पहले कालजयी सनातन धर्म के काल-चक्र को समझें-तभी हम श्री कृष्णोपदिष्ट-पुरातन व जाम्भोजी द्वारा अनादि व छत्तीस युगों के उल्लिखित काल क्रम को समझ सकेंगे। भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं कि मैंने यह योग प्राचीन काल में विवस्वान् अर्थात् सूर्य को कहा था।

सो हमारा यह सोलर सिस्टम हमारी गेलेक्सी में स्थित एक केन्द्र के चारों और घूम रहा है। एक चक्र पूरा करने में यह जितना समय लेता है - उसको एक मन्वन्तर कहते हैं। एक मन्वन्तर में 30 करोड़, 67 लाख, 20 हजार वर्ष होते हैं। एक मन्वन्तर में 71 चतुर्युग होते हैं। एक चतुर्युगी होती है 43 लाख, 20 हजार वर्ष की। इसमें 4 लाख 32 हजार वर्ष का कलियुग, 8 लाख 64 हजार वर्ष का द्वापर युग, 12 लाख, 96 हजार वर्ष का त्रेता और 17 लाख 28 हजार वर्ष का सतयुग होता है। जाम्भोजी द्वारा उपदिष्ट पाहल मंत्र में हू-ब-हू यही कालक्रम वर्णित है। कलियुग का दुगुना द्वापर, तिगुना त्रेता और चौगुना सतयुग होता है। ब्रह्माजी के एक दिन को कल्प कहते हैं। एक कल्प में 14 मन्वन्तर होते हैं। प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में एक जल प्रलय अर्थात् सन्धि होती हैं। एक सन्धि सतयुग मान (17 लाख 28 हजार वर्ष) की होती है। 14 मन्वन्तरों में 15 सन्धियां होती है। इस प्रकार कल्प मान 4 अरब 32 करोड़ वर्ष का हुआ। यह ब्रह्माजी का एक दिन है। उतनी ही उनकी रात होती है। इस प्रकार से महीने व वर्ष बीतते जाते हैं तो सौ वर्ष बीतने पर ब्रह्माजी की आयु पूर्ण हो जाती है।

अभी ब्रह्माजी के 51वें वर्ष का पहला दिन चल रहा है। इसमें भी 7वें मन्वन्तर के अन्तर्गत 28वीं चतुर्युगी का कलियुग चल रहा है। निर्मल गंगा जल की भांति अविरत काल प्रवाह भी गतिमान है। विष्णु की दसावतार शृंखला में अवतरित गुरु जाम्भोजी का शाश्वत कथन कितना समीचीन् है -

बात कदौ की पूछै लोई। जुग छत्तीसूं विचारुं। ताह परैरे अवर छत्तीसूं।
पहला अन्त न पारुँ। म्हे तद पण होता अब पण आछै, बल-बल होयसाँ।
कह कद-कद का करूँ विचारूँ।। (शब्द 4)

अर्थात् हे जिज्ञासु भक्त! तुम कब की बात पूछ रहे हो ? मैं छत्तीस युगों को जानता हूं। उससे पहले के छतीस युगों-जिसके पहले व अन्तिम का कोई पार

नहीं है। मैं तब भी था, अब भी हूं और फिर-फिर (पुनः पुनः) अवतरित होऊंगा। तू बता मैं कब-कब की बात का विचार बताऊँ।

आदि विष्णु के अवतार जाम्भोजी ने चौथे शब्द में स्वयं की अनन्त युगीन शाश्वतता का जो उपदेश दिया है, वहीं भगवान् श्रीकृष्ण भी चौथे अध्याय में अर्जुन से ठीक वही बात कहते प्रतीत होते हैं।

बहूनि में व्यतितानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप॥ (गीता 4:5)

अर्थात् हे अर्जुन ! मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, परन्तु हे पार्थ। उन सबको तू नहीं जानता है और मैं जानता हूं।

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्रोऽपि सन्।
प्रकृतिंस्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्मायया॥ (गीता 4:6)

मेरा जन्म प्राकृत मनुष्यों के सदृश नहीं है। मैं विनाशी स्वरूप, अजन्मा होने पर भी तथा सब भूत प्राणियों का ईश्वर होने पर भी अपनी प्रकृति को अधीन करके योगमाया से प्रकट होता हूं।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (गीता 4:7)

हे भारत ! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब ही मैं अपनो स्वरूप को रचना हूं अर्थात् प्रकट करता हूं।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे। (गीता 4:8)

क्योंकि साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्म स्थापना करने के लिए युग-युग में प्रकट होता है।

सनातन धर्म सम्पूर्ण वैश्विक समष्टि की कल्याण भावना से ओत-प्रोत है। इसका मूल आधार है वेद और वेद अपौरुषेय हैं। वेदों की तमाम ऋचाओं में - ब्रह्म व धर्म-मात्र इन दो तत्वों का ही निरूपण हुआ है। निराकार ब्रह्म अनाहद नाद "**ओंकार**" रूप में ध्वनित होता है। ओंकार से गायत्री और आदि नारायण (क्षीरशायी आदि विष्णु) का प्रस्फुटन हुआ। विष्णु "विष्लृ" धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ सर्वत्र फैलना अथवा व्यापक होना है। महाभारत में विष्णु का सर्वत्र व्याप्त होना उल्लेखित है। इन्हें यज्ञ का स्वरूप मानते हैं। जाम्भोजी ने देहत्याग करते समय अपना दर्शन ज्योति में करने का उपदेश दिया था। यज्ञो वै विष्णुः (शत. ब्राह्मण 1:1:2:13।। इन्हीं विष्णु की दसावतार शृंखला में आठवां अवतरण श्रीकृष्ण के रूप में हुआ। इन्हीं विष्णु के सतयुग के अन्तिम व चौथे अवतरण 'नृसिंह' द्वारा अपने भक्त प्रह्लाद को तेतीस करोड़ अनुयायियों में अवशिष्ट 12 करोड़ के उद्धार

हेतु भगवान् विष्णु जाम्भोजी के रूप में ही अवतरित हुए। अस्तु ! स्वयं सिद्ध श्री जाम्भोजी का अवतरण सत्य युग में ही पूर्ण निश्चित अवतार शृंखला का अंग है। श्रीकृष्ण के विष्णवतार प्रमाण श्रीमद् भगवद् गीता में सन्निहित हैं - ब्टव्य है -

नभः स्पर्श दीप्तमनेक वर्णं व्यात्ताननं दीप्त विशाल नेत्रम्।
दृष्ट्वा हित्वांप्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शम च विष्णो। (गीता 11:24)

क्योंकि हे विष्णो ! आकाश के साथ स्पर्श किये हुए दैदीप्यमान अनेक रूपों से युक्त आपको देखकर भयभीत अन्तःकरण वाला मैं धीरज और शान्ति को प्राप्त नहीं होता हूं।

पुनश्चः लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकानसमग्रान्वदनेर्ज्वलद्भिः।
तेजोराभिपूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो।। (गीता 11:30)

और ताप उन सम्पूर्ण लोकों को प्रज्जवलित मुखों द्वारा ग्रसन करते हुए सब ओर से चाट रहे हैं। हे विष्णो ! आपका उग्र प्रकाश सम्पूर्ण जगत को तेज के द्वारा परिपूर्ण करके तपायमान करता है।

विष्णु की दसावतार शृंखला के आठवें अवतार वही श्रीकृष्ण कलयुग में जाम्भोजी के रूप में अवतरित हुए। सात वर्ष तक मौन रखने के बाद, जब पुरोहित को वे पहला शब्दोपदेश करते हैं - उसी में कहते हैं -

कृष्ण चरित्र बिन काचे करवे, रह्योन रहसी पाणी।। (सबद 1)

हे पुरोहित ! तू निश्चित जान कि कृष्णावतार के बिना कच्चे घड़े में न पानी रहा है और न रहेगा। जगत के मूल आधार बाबत उनका कथन देखिये -

आद अनाद तो हम रचिलो। हमें सिरजीलों सै कौण ।। (सबद 2)

अर्थात् आदि - अनादि की सर्जना तो हमने की है। हमारा सृजन करने वाला दूसरा कौन है - अर्थात् कोई नहीं। हम स्वयं भू हैं।

जाम्भोजी अपने पूर्व अवतरित नौ अवतारों (1 मत्स्य, 2 कूर्म, 3 वराह, 4 नृसिंह, 5 वामन, 6 परशुराम, 7 राम, 8 कृष्ण, 9 बुद्ध) को अपना ही (विष्णु) स्वरूप बताते हुए फरमाते हैं -

नव अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थीयूँ।

अर्थात् आदि विष्णु नारायण के पूर्व में जो नौ अवतार हुए हैं, वे मेरे ही स्वरूप हैं। स्वयं को कृष्णावतार होने के प्रमाण स्वरूप गुरु जाम्भो जी कहते हैं।

जाटा हूंता पात करीलूं, यह कृष्ण चरित्र परिवाणों।। (सबद 16)

अर्थात् मैंने जाट जैसे अशिक्षित मानवों को शब्दोपदेश कर, विष्णु जप में लगाया है यह मेरे कृष्णावतार का प्रमाण है।

श्रीमद्भागवत में दशम स्कन्ध के चालीसवें अध्याय में अक्रूरजी श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए उन्हें अविनाशी (श्रीकृष्ण को) पुरुषोत्तम नारायण कहते हुए

दसावतार स्वरूपों में उनको नमस्कार करते हुए रक्षा की याचना करते हैं।

विष्णु सर्वव्यापी हैं – आदि विष्णु (नारायण) सृष्टि के मूल हैं। उनकी चिन्तन समष्टिगत हैं। श्रीकृष्ण या जाम्भोजी का चिन्तन, उन्हीं नारायण का चिन्तन है। आत्म स्वरूप में वे जीवमात्र में समाहित हैं। अमूर्त रूपेण–यज्ञ में वे ही निहित हैं। अस्तु श्रीमद्भगवत् गीता और जम्भवाणी दोनों में हवन व यज्ञ का निरूपण हुआ है।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्म बन्धनः।
तदर्थं कर्मकौन्तेय मुक्तसङ्ग समाचार।। (3:7)

अर्थात् हे अर्जुन ! बन्धन के भय से भी कर्मों का त्याग करना योग्य नहीं है क्योंकि यज्ञ अर्थात् विष्णु के निमित किये हुए कर्म के सिवा अन्य कर्म में लगा हुआ ही यह मनुष्य कर्मों द्वारा बंधता है। इसलिये हे अर्जुन ! आसक्ति से रहित हुआ, उस परमेश्वर के निमित्त कर्म का भली प्रकार आचरण कर।

श्रीकृष्ण यज्ञ को सृष्टि का मूल आधार निरूपित करते हुए पुनः कहते हैं –

यदा यज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष कोऽस्त्विष्ट कामधुक्।। (3:10)

अर्थात् हे अर्जुन ! कर्म न करने से तू पाप को भी प्राप्त होगा क्योंकि प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजा को रचकर कहा कि इस यज्ञ द्वारा तुम लोग वृद्धि को प्राप्त होओ और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित कामनाओं को देने वाला हो।

तीसरे अध्याय के श्लोक नौ से पन्द्रह तक निरन्तर यज्ञ की महत्ता प्रतिपादित की गई है। वार्ता विस्तार से बचने के लिए ग्यारह से तेरह तक तीन श्लोकों की व्याख्या को छोड़ते हुए अन्तिम दो श्लोकों की व्याख्या पर आते हैं।

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्यन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद् भवति पर्यजन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः।।

अर्थात् सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं और अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है तथा वृष्टि यज्ञ से होती है और यह यज्ञ कर्मों से उत्पन्न होने वाला है।

कर्म ब्रह्मोद् भवं विद्धि ब्रह्माक्षर समुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।।

उस कर्म को तू वेद से उत्पन्न हुआ जान और वेद अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ है। इससे सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है।

जम्भवाणी में जाम्भोजी अपने तेरहवें सबद में उपदिष्ट करते हैं –

जा दिन तेरे होम न जाप न तप न क्रिया।
गुरु न चीन्हो पंथ न पायो अहल गई जमवारूँ।। (सबद 131)

अर्थात् हे भक्त ! जिस दिन तेरे घर में यज्ञ, भगवान् के 'ओ३म विष्णु' इस मंत्र का जप व तप तथा सात्विक कर्म न हुआ। गुरु को पहचान कर जब तक तूने सत्य मार्ग

की प्राप्ति नहीं की, तब तक तुम निश्चित जानो कि तुम्हारा मानव जन्म व्यर्थ गया।

इतना ही नहीं भगवान् जम्भेश्वर ने अपने उनतीस नियमों में नित्य-प्रति हवन की अनिवार्यता निश्चित करते हुए अपने अनुयायी बिश्नोई सद्गृहस्थों के घरों में नित्य हवन (होम) करने की क्रिया का निर्धारण कर समष्टि गत समस्त जीवों का अनन्त उपकार किया है। जाम्भोजी के मन्दिरों में व साधू सन्तों द्वारा भी नित्य हवन करने का विधान है।

चिन्तनीय बिन्दु यह है कि आखिर यज्ञ की इतनी महत्ता का कारण क्या है ? यज्ञ में ऐसी क्या विलक्षणता है, जो श्रीकृष्ण और जाम्भोजी इस पर इतना जोर देते हैं। इस वैज्ञानिक युग में जहां सभी बातों को प्रयोग की कसौटी पर कसकर ही उसकी उपादेयता स्वीकार की जाती है, वहां पर यह तथ्य उभरकर सामने आया है कि मात्र दस ग्राम गौ घृत की अग्नि में आहुति देने पर एक टन प्राणवायु (ऑक्सीजन) बनती है। अस्तु ! सृष्टि नियन्ता का यज्ञ - कर्म को प्रधानता देना-समष्टि-कल्याण की चिन्तना की चरम व परम पराकाष्ठा है। तभी तो जाम्भोजी बिश्नोइयों को उपदिष्ट करते हैं -

गउ घृत लेवे छाण, हवन नित ही करे।

जाम्भोजी की 'सबदवाणी' एवं श्रीकृष्णोपदिष्ट 'श्रीमद्भगवद् गीता' का तुलनात्मक एवं सादृश्यता मूलक आलेख तैयार करने के लिए इन पंक्तियों का लेखक जब गीता एवं सबदवाणी के अंशों को रेखांकित कर रहा था, तो पाया कि दोनों ग्रन्थों की सबसे बड़ी साम्यता यह है कि अध्येता विष्णु में तल्लीन हो जाये। उसे दृष्टिगोचर चराचर पदार्थों में सर्वत्र विष्णु ही नजर आये। ब्राह्मण-गो चाण्डाल-श्वान-सब में विष्णु ही दिखाई पड़े।

मानव के तमाम कर्म विष्णु के निमित्त ही हों और तब श्री कृष्ण व जाम्भोजी का यह ध्रुव वचन है कि वह विष्णु मय हो जायेगा। दोनों ग्रन्थों में यह तथ्य सर्वत्र सुगुंफित है। श्रीमद् भगवद् गीता तभी तो विश्व की तमाम भाषाओं में अनुदित होकर, विश्ववन्द्य ग्रन्थ बन चुका है। जर्मन दार्शनिक शोपेन हावर तो इस ग्रन्थ को पढ़ने के बाद भाव-विह्वलता के अतिरेक में इसे सिर पर रखकर एक घण्टा नाचता रहा। आइये ! दोनों ग्रन्थों का साम्यभावी अवगाहन करें।

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यन्ति स च मे न प्रणश्यति।। (गीता 6:30)

अर्थात् जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सबके आत्म रूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है, उसके लिये मैं अदृश्य नहीं होता हूं और वह मेरे लिये अदृश्य नहीं होता, क्योंकि वह मेरे में एकीभाव से स्थित है।

तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।

मय्यर्पित मनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्य संशयम् (गीता 8:7)

इसलिए हे अर्जुन ! तू सब समय में निरन्तर मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर, इस प्रकार मेरे में अर्पण किये हुए मन-बुद्धि से युक्त हुआ, निःसंदेह मेरे को ही प्राप्त होगा-

अनन्य चेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।

तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः (गीता 8:14)

हे अर्जुन ! जो पुरुष मेरे में अनन्य चित्त से स्थित हुआ, सदां ही निरन्तर मेरे को स्मरण करता है, उस निरन्तर मेरे में युक्त हुए योगी के लिये मैं सुलभ हूं अर्थात् सहज ही प्राप्त हो जाता हूं।

अन्यन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। (9:12)

जो अनन्यभाव से मेरे में स्थिर हुए भक्तजन मुझ परमेश्वर को निरन्तर चिन्तन करते हुए निष्काम भाव से भजते हैं, उन नित्य एकी भाव से मेरे में स्थिति वाले पुरुषों का योगक्षेम मैं स्वयं प्राप्त करता हूं।

सोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।

ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्।। (9:27)

यद्यपि मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूं, न कोई मेरा अप्रिय है और न ही प्रिय, परन्तु जो भक्त मेरे को प्रेम से भजते हैं वे मेरे में और मैं भी उनमें प्रत्यक्ष प्रकट हूं। अगर हमारी भगवान श्रीकृष्ण में अर्थात् विष्णु जम्भेश्वर में पूर्ण श्रद्धा है, तो भगवान् का अपने भक्त के लिए कितना चरम आश्वासन है -

कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।।

हे अर्जुन ! तू निश्चय पूर्वक सत्य जान कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता।

हमारे समक्ष अतीत कालीन निष्ठावान श्रद्धालु भक्तों प्रह्लाद राजा हरिश्चन्द्र, द्रौपदी, युधिष्ठिर, झबरी, मीरा आदि असंख्य उदाहरण इस वचन के साक्ष्य (प्रमाण) है।

गीता का बारहवाँ अध्याय तो पूर्ण रूपेण भक्ति भाव से आप्लावित है। दसवें अध्याय के तीसवें श्लोक में तो भगवान् श्रीकृष्ण ''दैत्यों में मैं प्रहलाद हूं'' कहकर भक्त को अपनी सारूप्य गति प्रदान कर देते हैं।

मां च योऽव्यभिचारेण भक्ति योगेन सेवते।

स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते।। 14:26।।

और जो पुरुष अव्यभिचारी भक्ति रूप योग के द्वारा मेरे को निरन्तर भजता है, वह इन तीन गुणों (सत्व, रज, तम) को अच्छी प्रकार उल्लंघन करके सच्चिदानन्द धन ब्रह्म में एकीभाव होने के लिए योग्य होता है।

गीता के अठारहवें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण शरणागत भक्त अर्जुन को अमोघ कर देते हुए कहते हैं -

मन्मनाभव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।

मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रति जाने प्रियोऽसि मे।।18:65।।

तू मुझ वासुदेव परमात्मा में प्रेम में नित्य निरन्तर अचल मन वाला हो। मुझे भजने वाला हो। मेरा (विष्णु का) पूजन करने वाला हो। मुझ विष्णु को भक्ति सहित साष्टांग दण्डवत प्रणाम कर। मैं तेरे लिये यह सत्य प्रतिज्ञा करता हूं कि तब तू मुझे ही प्राप्त होगा, क्योंकि तू मेरा अत्यन्त प्रिय सखा है।

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं वज्र।

अहं त्वा सर्व पापेम्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। 18:66।।

इसलिए सर्व धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों के आश्रय को त्यागकर केवल एक मुझ सच्चिदानन्द घन वासुदेव परमात्मा की अनन्य शरण को प्राप्त हो, मैं तेरे को सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा, तू शोक मत कर।

अब आईये – जम्भवाणी का अवगाहन करते हैं। जाम्भोजी ने प्रथम सबद में ही अपना सप्तवर्षीय मौनव्रत तोड़ते हुए पुरोहित को अपने कृष्ण (विष्णु) अवतरण बाबत कहा था –

सतगुरु है तो सहज पिछाणी।

कृष्ण चरित्र बिन काँचे करवे रह्यो न रहसी पाणी।। (सबद 15)

हे पुरोहित ! सद्गुरु को सम्यक्तया सहज रूप में पहचानो। मैंने कच्चे धागे से कुएं से खींचकर कच्चे घट में जो कूप जल निकाला है – सो स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण अवतरण के बिना कच्चे घट में न तो जल रहा है और न रह ही पायेगा।

विष्णु विष्णु भण अजर जरीजे, यह जीवन का मूलूं। (सबद 15)

ओ३म् विष्णु का अहर्निश जप करते हुए, अजर (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर) के वश में नहीं होना चाहिए – यही मानव जीवन का मूल लक्ष्य है।

अनन्त जुगाँ में अमर भणीजूं न मेरे पिता न मायों।। (सबद 18)

मैं विष्णु अनन्त युगों से साँसारिक प्राणियों द्वारा भजनीय हूं। मेरे कोई माता-पिता नहीं है। मैं स्वयं प्रकट हूं।

(विष्णु सहस्रनाम के 18वें श्लोक में विष्णु भगवान् के ''स्वयं भूः व अनादि निधन'' नाम भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को बताये हैं।)

भूला प्राणी विष्णु न जंप्यो, मरण बिसारो केहूं।। (सबद 2)

हे संसार के मोह युक्त माया जाल में भूली-भटकी जीवात्मा ! तूने विष्णु भगवान का जप क्यों नहीं किया ? तुमने मृत्यु को क्यों भुला दिया ? अर्थात् जन्म-मरण से छुटकारा केवल मात्र विष्णु जप से ही मिल सकता है।

विष्णु अजंप्या जन्म अकारथ आके डोडा खींपे फलियों। (सबद 26)

जाम्भोजी का विष्णवतार राजस्थान के मरु प्रदेश में हुआ था। धोरा धरती

में आक (अकोड़ा या मदार) पर डोडे व खींप के पौधे पर फलियां लगती हैं - जो अनुपयोगी होते हैं। जाम्भोजी फरमाते हैं कि भगवान् विष्णु के जप के बिना उन आक डोडों व खींप की फलियों की नाँईं मानव जीवन निस्सार है। स्पष्ट है कि विष्णु स्मरण बिना मानव जीवन व्यर्थ है।

विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी, बल-बल बारम्बारुँ॥ (सबद 33)

हे मानव ! तू बारम्बार भगवान् विष्णु का जप कर।

विष्णु जपन्ता जीभ जु थाके, तो जीभड़ियां बिन सरियो॥ (सबद 34)

अगर विष्णु भगवान् का जप करने से तेरी जीभ थकती है तो ऐसी जीभ का न होना ही अच्छा है अर्थात् जिह्वा की सार्थकता केवल मात्र विष्णु स्मरण में सन्निहित है।

दौरे भिस्त बिचाले ऊभा, मिलियां काम संवारुं।। (सबद 46)

हे प्राणी ! मैं मृत्युपरान्त स्वर्ग और नरक के बीच तुम्हें खड़ा मिलूंगा और अगर तुमने विष्णु का जप किया है तो मैं शर्तिया तुम्हें सद्गति दूंगा - यह मेरा वचन है।

जोय जोय नाम विष्णु के बीजे, अनन्त गुणा लिख लीजे। (सबद 56)

हे जीवात्मा ! तुम जितने नाम विष्णु जप के निमित्त बीजारोपण करोगे, उसके अनन्त गुने तुम्हें पुनर्प्राप्त होंगे अर्थात् बीज बोने पर वृक्ष जिस प्रकार अनन्त गुने फल देता है, उसी प्रकार विष्णु जप भी अनन्त गुणा फलदायी होगा। शुक्ल हंस शब्द में पुनः इसी प्रकार का उल्लेख है -

विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी । विष्णु भणन्ता अनन्त गुणूं। (सबद 67)

द्वापर कालीन युग का दृष्टान्त देते हुए -

जो आराध्यो राव युधिष्ठिर । सो आराधो रे भाई।। (सबद 80)

हे भाई ! जिस विष्णु (कृष्ण) की आराधना द्वापर युग में सत्यवादी राजा युधिष्ठिर ने की थी। तुम उसी श्रीकृष्ण की आराधना करो।

श्रीराम में मती थोड़ी जोय जोय कण बिन कूकस कायों लेणो।। (सबद 78)

तुम्हारी बुद्धि श्रीराम का स्मरण, जप व ध्यान में कम है तो समझो बिना अन्न या धान के कण रहित भूसे के समान व्यर्थ है।

सत्तर लाख असी पर जपां, भले न आवे तारूँ।। (सबद 80)

अगर कोई अस्सी बार सत्तर लाख अर्थात् छप्पन करोड़ ''ओ३म'' विष्णु इस महामंत्र का जप कर लेता है, तो मैं उसे जन्म-मरण के चक्कर के बन्धन से मुक्त कर देता हूं। वह जीवात्मा विष्णु के परम धाम को प्राप्त करके मोक्ष की प्राप्ति कर लेती है।

हिदै नाम विष्णु को जंपो, हाथे करो टबाई॥ (सबद 97)

अन्तरात्मा में विष्णु भगवान का जप करते हुए-दैनिक नित्य कर्म करते रहो। इसमें फूली बाई जाटनी का दृष्टान्त समीचीन प्रतीत होता है, जिसके द्वारा थेपे गये गोबर के उपलों से विट्ठल (श्रीकृष्ण) की ध्वनि ध्वनित हुई थी।

जगत में जो भी चर्म-चक्षुओं से दृष्टि गोचर होता है - यह सब मिथ्या (मायाजाल) है। एक विष्णु परमात्मा ही सत्य हैं। यहां तक कि हम शरीर नहीं हैं और न शरीर ही हमारा है। हम शुद्ध बुद्ध आत्मा हैं। आत्मा परमात्मा का अंश है। नश्वर काया का अन्त होने पर अजर-अमर आत्मा शाश्वत रहती है। अस्तु! भगवान का निरन्तर जप करने वाला परमात्मा को ही प्राप्त होता है। वे उस जीवात्मा को जन्म-मरण के अन्तहीन चक्र से छुड़ाकर-मोक्ष गति प्रदान करते हैं।

प्रारब्ध वश पूर्ण कृत कर्मों का फल अवश्यम्भावी होता है, परन्तु विष्णु भगवान् के जप से संचित पाप कर्मों का क्षय होता है - ऐसा सभी सन्त व शास्त्र कहते हैं। इसी नाम जप के बल पर इष्टदेव गुरु जाम्भोजी तेतीस करोड़ जीवों के उद्धार को प्रामाणिक ठहराते हैं।

महाभारत युद्धोपरान्त भगवान् श्रीकृष्ण पाण्डवों को इच्छा मृत्यु वर प्राप्त भीष्म पितामह के पास लेकर गये थे। युधिष्ठिर ने भीष्म से प्राणी को जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होने के लिए जप विषयक जिज्ञासा की थी - तब भीष्म ने इन्हीं देवों के देव, अनन्त, पुरुषोत्तम के सहस्र नाम स्तुति हेतु निर्दिष्ट किया था। इन्हीं विष्णु को अनादि निधन व सभी लोकों का महेश्वर कहा है। सभी लोकों के अध्यक्ष उन विष्णु की नित्य स्तुति से सभी दुखों का नाश होता है। पाप के भय का नाशक विष्णु जप ही है। ऋषि-मुनि व सिद्धों द्वारा इन्हीं विष्णु का गुणगान किया गया है। यही विष्णु जप पाप नाशक है - ऐसा अन्त में उल्लेखित है।

यहाँ यह धातव्य है कि श्रीकृष्ण और जाम्भोजी विष्णवतार है। दोनों स्वयं भू हैं। श्रीकृष्ण द्वारा श्रीमद्भगवद् गीता का उपदेश धर्म क्षेत्र कुरूक्षेत्र में अर्जुन को दिया गया और जाम्भोजी ने 51 वर्षों तक देशाटनरत रहकर जो उपदेश दिया, वह सबदवाणी है। परन्तु श्रीमद्भगवद् गीता से इतर विष्णु सहस्रनाम और श्रीमद्भागवत महापुराण में श्रीकृष्णोपाख्यान वर्णित हैं। जाम्भोजी की सबदवाणी से इतर उनके हुजूरी भक्तों द्वारा रचित साखियों में भी जम्भेश्वरोपाख्यान सांगोपांग रूप से गुम्फित हैं। लेकिन वार्ता विस्तार को देखते हुए - हम इनके साम्य को नामोल्लेख मात्र-शीर्ष रूप में देखेंगे। श्रीकृष्ण और जाम्भोजी के जन्म के तमाम ग्रह नक्षत्र-तिथ्यादि समान हैं। ग्यारहवें गीताध्याय में जहां श्रीकृष्ण अर्जुन को विश्व रूप के दर्शन कराते हैं, वहीं जाम्भोजी शुक्ल हंस नाम से ज्ञेय सड़सठवें सबद में द्रोणपुर राव बीदा जोधावत को एक ही दिन विभिन्न स्थानों पर एक ही समय हवन करने का उल्लेख करते हैं। जाम्भाणी पंथ में इस सबद के पाठ का माहात्म्य विष्णु सहस्रनाम की साम्यता रूप में प्रसिद्ध है। श्रीकृष्ण जिस प्रकार श्रीमद्भागवत के द्वादश स्कन्ध में उद्धव को अन्तिम उपदेश देते हैं - उसी तरह भगवान् जाम्भोजी भी ऊदोजी नेण पर कृपा वृष्टि कर - उन्हें हुजूरी भक्तों में सर्वोपरि स्थान देते हैं।

जाम्भोजी के ऊदोजी नाम के दो और हुजूरी भक्त हुए हैं।

विष्णु सहस्रनाम के हृदयादि न्यास प्रकरण में एक श्लोक है –

वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद् गुरुम्॥

अर्थात् वसुदेव के पुत्र, देवाधिदेव, कंस और चाणूर का मर्दन करने वाले, माता देवकी को परम आनन्द देने वाले जगद्गुरु श्रीकृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ।

गुरु इस सृष्टि में मानव रूप धारी साक्षात् परमात्मा ही होते हैं – अस्तु ! गुरु की इतनी महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए – जाम्भोजी ने दीर्घकालिक मौनव्रत तोड़ते हुए प्रथमतया गुरु शब्द का ही उच्चारण किया था। 'गुरु चीन्हो गुरु चीन्ह पुरोहित' अर्थात् हे पुरोहित ! सद्गुरु को पहचानो और गुरु की महत्ता को सर्वोपरि स्थान देते हुए जाम्भोजी की सबदवाणी में 61 बार गुरु व 14 बार सद्गुरु कुल 79 बार सर्वाधिक गुरु शब्द की आवृत्ति हुई है।

जाम्भोजी के समकालीन, बीकानेर के राव लूणकरण ने पांच छन्दों में गुरु रूप में जाम्भोजी की जो स्तुति की है – वह भाव – भक्ति, श्रद्धा की चरम पराकाष्ठा से ओत प्रोत है। एक छन्द प्रस्तुत है –

जम्भ गुरु सो देव, न कोई सुण्यो न देख्यौ।
धूप धृत मिष्ठान, होम कृत नित प्रति पेख्यो।
करे विष्णु उपदेश, लेश जिव पाप न राखै।
सब दुनियां सूं हेत, खेत मुक्ति मुख भाखे।
आन देव किये दूर सब, कहे मुखां हरि सेव।
लूणकरण राजा कहे, नमो नमो गुरुदेव।

अर्थात् जाम्भोजी जैसा गुरु रूपी देव न तो सुना और न देखा ही । उन्हें नित्य प्रति धूप, गोधृत व मिष्ठान से हवन (यज्ञ) करते ही देखा है। हे भगवान् विष्णु के जप का उपदेश करते हैं और जीव मात्र से रंच मात्र भी पाप नहीं रखते हैं। विष्णु जप से पाप स्वत: ही क्षय हो जाते हैं। सारी दुनिया से ये प्रेम करते हैं और मुक्ति के मार्ग का विष्णु जप उपदेश देते हैं। सभी इतर देवों की उपासना से छुटकारा दिलाकर मुख से श्री हरि (विष्णु) की सेवा का उपदेश करते हैं। राजा लूणकरण कहते हैं – हे गुरुदेव जम्भेश्वर – मैं बारम्बार आपकी वन्दना करता हूं।

बिश्नोई सन्तों की साखियों में बारम्बार इन्हीं देव की वन्दना की गई है – लेकिन गुरु जाम्भोजी का वैश्विक चिन्तन राव लूणकरण की स्तुति में समाविष्ट है। इत्योम्।

❍ **श्री मांगीलाल बिश्नोई ''अज्ञात''**
से.नि. व्याख्याता (संस्कृत)
मु.पो. खेतोलई, वाया लाठी, जिला जैसलमेर (राज.)

गुरु जाम्भोजी के ब्रह्म सम्बन्धी विचारों का वेद, उपनिषद्, गीता से तुलनात्मक अध्ययन

धर्म का मूल स्वरूप रहस्य से आच्छादित है, किन्तु हम स्वीकार कर सकते हैं कि उसका प्राचीनतम रूप प्राकृतिक शक्तियों और उपादानों की उपासना का था। इस धर्म के साथ मिलकर पुराकथा परम सत्ता के बारे में प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत करती है। धीरे-धीरे तर्क कल्पना का स्थान लेता है और पुराकथा के स्थान पर विश्व-विज्ञान और दार्शनिक कारण मीमांसा का आरम्भ होता है। पश्चिमी विद्वानों ने धर्म और दर्शन की विचार-सन्तति के विकास के कई सोपान या स्तर माने हैं, जिनमें धर्म, पुराकथा और विश्व-विज्ञान परस्पर मिश्रित हैं। ये सोपान हैं- बहुदेववाद, एकेश्वरवाद, अद्वैतवाद या एकवाद।

ब्रह्म-विचार :-

भारतीय सभ्यता और संस्कृति के इतिहास का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक धर्म से लेकर आज तक निरन्तर परम तत्त्व को अनेकानेक नामों से सम्बोधित किया जाता है। इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए बिश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री जाम्भोजी ने मुख्यतया परम तत्त्व को ''ब्रह्म'' नाम से अभिहित किया है। उनकी ब्रह्म सम्बन्धी अवधारणा मुख्यता वैदिक धर्म पर (उपनिषदों) पर आधारित है।

श्री जाम्भोजी ने स्पष्टत: अभिव्यक्त किया है कि ब्रह्म सम्पूर्ण जगत् का नियन्ता सृष्टा, संहारकर्ता और कारण है। इसी तत्त्व को ''विष्णु'' नाम से कहकर बार-बार यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि परम स त्ता एक ही है, जो सम्पूर्ण विश्व में परिव्याप्त है।

गुरुमुखी प्रवृत्ति के फलस्वरूप जीव जैसे अपने मूल की ओर उन्मुख होता है, वैसे ही परम तत्त्व अथवा ब्रह्म की ओर भी उन्मुख होता है तथा मूल की प्राप्ति के साथ उसे परम तत्त्व की भी प्राप्ति हो जाती है। यही उसके लिए ब्रह्म का साक्षात्कार है। इसी को लक्ष्य करके ''सबदवाणी'' में कहा गया है -

गुरु चीन्हूं गुरु चिन्ह पुरोहित ..... सो गुरु परतकि जांणी।

(1 : 1-7)

अर्थात् गुरु या विष्णु के दो अर्थ हैं - प्रथमत: लौकिक गुरु तथा द्वितीय परम सत्ता या विष्णु। लौकिक गुरु के गुण है - सहज, शील, नाद और बिन्दु। संक्षेप में जो सहज जीवन पद्धति अपनाता है (सहज) जिसकी कथनी और करनी में पूर्ण सामंजस्य है और जो जितेन्द्रीय है (शील) तथा जो ब्रह्म और आत्मका को (नाद-बिन्दु) जानता है, वही गुरु कहलाने का अधिकारी है।

गुरु को परम् तत्त्व या विष्णु मानकर उसके स्वरूप का वर्णन करते हुए जाम्भोजी कहते हैं कि षट् दर्शन जिसके स्वरूप का प्रतिपादन करते हैं, जिसने स्वेच्छा से संसार बर्तन की स्थापना की है, उस गुरु को या परब्रह्मा आदि प्रमाणों से जानो, जिसको प्राप्त करना अति कठिन है, वाणी जिसके विषय में निरन्तर है, जिसमें रूद्र समाया हुआ है, जो काल से परे हैं, वह गुरु स्वयं तो सन्तोषी है, किन्तु अन्य सभी का पोषण करता है, वह तत्त्व स्वरूप परमानन्द है।

श्री जाम्भोजी ने अद्वैत दर्शन के प्रतिपादक शंकराचार्य के समान परम् तत्त्व को अनिवर्चनीय कहा है, क्योंकि परम् तत्त्व को न तो सत् कहा जा सकता है और न असत् वह सत्-असत् से विलक्षण अनिवर्चनीय है।

ब्रह्म को उपनिषदों में ''नेति-नेति'' कहा गया है, जो कि जाम्भोजी को भी स्वीकार्य है। नेति-नेति अर्थात् ब्रह्म में यह गुण नहीं है, वह गुण नहीं है। तात्पर्य यह है कि ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन हम शब्दों के द्वारा नहीं कर सकते तथा उस तत्त्व को हम गुणों से विभूषित नहीं कर सकते है। इस सम्बन्ध में जाम्भोजी ने सबदवाणी में कहा भी है कि -

जां कुछि जां कुछि तां कुछि न जांणी।
नां कुछि नां कुछि तां कुछि जांणी।
नां कुछि नां कुछि अकथ कहांणी।
नां कुछि नां कुछि इम्रत वांणी॥ **(16:1-4)**

अर्थात् जो यह कहते हैं कि हम ब्रह्म के विषय में कुछ-कुछ जानते हैं, वे वास्तव में कुछ भी नहीं जानते और जो यह कहते हैं कि हम ब्रह्म के विषय में कुछ भी नहीं जानते, वे कुछ-कुछ जानते हैं। वस्तुतः ब्रह्म के विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है, उसका स्वरूप वर्णन अकथनीय है। उसके विषय में नेति-नेति ही कहा जा सकता है, जैसे अमृत का स्वाद वाणी का विषय न होकर अनुभव का विषय है। वैसे ही ब्रह्मानन्द अनुभव का विषय है, वाणी से उसका बखान नहीं किया जा सकता।

जाम्भोजी ने ब्रह्म की अंनतता एवं सर्वव्यापकता के विषय में कहा है कि -

जदि पवंण न हुंता पाणी न हुंता.... तदि हुंता एक निरंजंण सिंभू।
(3:1-21)

अर्थात् सृष्टि की आदि से पूर्व यानि कि जिस समय कुछ भी नहीं था, उस समय एक निरंजन स्वयंभू था और धुंधलेपन की स्थिति थी। ''अह ब्रह्मास्मि'' के रूप में जाम्भोजी का कथन है कि मैं तब भी था, अब हूँ और भविष्य में भी रहूंगा।

जाम्भोजी ने ब्रह्म की अपारता और असीमता का वर्णन करते हुए कहा है

कि –

मछी मछ फिरै जल भीतरि तिहंका माघ न जोयबा
परम तंत है अैसा आछे उरवार न तायै पारूं
ओवड़ छेवड़ कोइय न थीयो तिंहका अन्त लहीबा कैसा

(26:1-6)

अर्थात् जल में मछली और मच्छ मिलते हैं, किन्तु उनका मार्ग नहीं जाना जा सकता है, परमतत्त्व इसी प्रकार अगम्य हैं, उसका आर-पार नहीं, न ही उसका कोई ओर, छोर, वह अपार और असीम है। अत: उसको पूर्णरूपेण कैसे जाना जा सकता है। वह अनन्त है, उसका अन्त कैसे किया जा सकता है?

जाम्भोजी ने परमतत्त्व या ब्रह्म को सर्वव्यापी एवं रहस्यमयी बताते हुए कहा है कि –

सपत पयाले त्यौंह तिरलोके ..... अवर न बूझिबा कोई।

(43:1-6)

अर्थात् परमतत्त्व सातों पातालों में, तीनों लोकों में बाहर और भीतर सर्वत्र सर्वदा एकरूप वर्तमान है, जहां भी देखा जाए वहां वही है। इस परमतत्त्व को गुरु ज्ञान से जाना जा सकता है। सतगुरु इस संसार में वर्तमान है, उसने सतपथ बताया है और भ्रान्तियों को दूर किया है, जो उससे मिलता है ज्ञान ग्रहण करता है, वह परम तत्त्व के रहस्य को जान सकता है और कोई भी उसके रहस्य को नहीं जान सकते ।

इसी क्रम में गुरु जाम्भोजी द्वारा ब्रह्म के सगुण रूप की स्वीकार्यता का उल्लेख भी आवश्यक समझती है। जाम्भोजी की सबदवाणी में कहीं-कहीं ब्रह्म के सगुण रूप का भी वर्णन मिलता है और वे उसमें दया, करुणा आदि श्रेष्ठ गुणों को भी स्वीकार कर लेते है।

दया रूपी म्हे आप बखांणां, सिंघार रूपी म्हे आप हती।

(63:65-66)

अर्थात् दयालु होकर मैं स्वयं ही जीवन दान देता हूं और संहारक रूप में स्वयं ही मारता हूँ अर्थात् जगत् और जीव की उत्पत्ति लय का आश्रय स्थल मैं हूँ और स्वयं इनसे परे हूँ।

ईश्वर का यह रूप भक्ति का विषय है। भक्ति एवं ज्ञान में अन्तर अवश्य है, परन्तु विरोध नहीं। भक्ति में आधार के रूप में ज्ञान की सत्ता रहती ही है, परन्तु अन्तर यह है कि यहां भाव की प्रधानता होने से ईश्वर का सगुण रूप भक्त की भक्ति का विषय बनता है।

गुरु जाम्भोजी द्वारा बताये गये परम तत्त्व स्वरूप वर्णन से यह स्पष्ट हो

जाता है कि जाम्भोजी अद्वैतवाद और सर्वेश्वरवाद के समर्थक थे। जाम्भोजी का अद्वैतवाद बहुत कुछ शंकराचार्य के अद्वैतवाद से समानता रखता है। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर या ब्रह्म अवैयक्तिक है और जगत् में पूर्णतया व्याप्त है। दूसरे शब्दों में कहें तो जगत् की रचना ईश्वर की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

भारतीय दर्शन में उपनिषदों तथा गीता के विश्व रूप दर्शन में सर्वेश्वरवाद का उदाहरण मिलता है। ईशावास्योपनिषद् में यह उक्ति मिलती है कि जो कुछ जगत् में है वह ईश्वर से है। ''ईशावास्यमिदं सर्व यत्किचिज्जगत्यां जगत'' इसी तरह सर्वेश्वरवाद का उदाहरण गीता में भी मिलता है।

अर्थात् जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सबके आत्मस्वरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं हूँ और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता, क्योंकि वह मेरे से एकीभाव से स्थित है।

भारतीय दर्शन में विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्तों में छह प्रमाणों को माना जाता है यथा प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापति एवं अनुपलब्धि। यद्यपि जाम्भोजी ने ब्रह्म नामक तत्त्व को साक्षात् ही माना है, लेकिन प्रमाणों के आधार पर वे शंकराचार्य के समान केवल अनुभव प्रमाण से ही ब्रह्म की सत्ता स्वीकार करते हैं। उन्होंने एक शब्द में कहा है कि –

मोरा उपख्यांन वेदू कणं तंत भेदूं
सासत्रे पुस्तके लिखणां न जाई।
मोरा सबद खोजो ज्यूं सबदे सबद समाई।। **(12:1-3)**

अर्थात् मेरा कथन मेरे वेद ज्ञान है, सार रूप में परम तत्त्व का भेद बताने वाला है, परम तत्त्व अथवा तत्त्वाज्ञान अनुभव का विषय है। शास्त्रों और पुस्तकों में उसका स्वरूप लिखा नहीं जा सकता है। जैसे शब्द, शब्द ब्रह्म में समाया हुआ है, उसी प्रकार मेरी वाणी में (सबदों में) परम तत्त्व का रहस्य वर्णित है, उसे खोजो। अत: परम तत्त्व का ज्ञान अनुभव का विषय है, यह प्रत्यक्षादि अन्य प्रमाणों के द्वारा ज्ञान नहीं किया जा सकता।

❍ **श्रीमती इन्द्रा बिश्नोई**
दर्शन शास्त्र विभाग
डूंगर राजकीय महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

जम्भवाणी व अल्पाहार

गुरु जाम्भो जी ने अपने शाश्वत वचनों द्वारा प्राणी मात्र को जीने की सहज विधि बताई। जिसका 29 नियमों तथा जम्भवाणी में दिये ज्ञान का श्रवण करने, पालन करने मात्र से प्राणी मात्र का उद्धार संभव है। गुरु जाम्भो जी ने अपने भक्तों को आम बोलचाल की भाषा में ज्ञान दिया ताकि वे उसे सहजता से समझ सके तथा अपने जीवन में उसे उतार सकें। गुरु जी ने अपने शब्दों में दृष्टांतों का अधिकतम उपयोग किया है ताकि भक्तों को उनकी कही बात तुरंत समझ में आ जावे और उनकी स्मृति में उनकी बात चिर स्थाई बनी रहे।

गुरु जी दुनिया तथा इतिहास के पहले सत्पुरुष हैं, जिन्होंने मनुष्य को न केवल उपनिषदों, पुराणों तथा गीता का सार समझाया है बल्कि मनुष्य के तन, मन, आत्मा, घर, आसपास का वातावरण, पर्यावरण इत्यादि को शुद्ध करने व रखने की विधि बतलाई है। उन्होंने मानव जीवन के पहले पहलु को छुआ है। मनुष्य के खानपान, रहन-सहन, वस्त्र वेशभूषा इत्यादि पर विस्तार से जितना गुरुजी ने ज्ञान की गंगा बहाई है, उतनी किसी अन्य धर्म गुरु ने चर्चा नहीं की है।

मनुष्य जीवन यहां तक कि समस्त जीव जगत का आधार आहार है। जिस पर सम्पूर्ण सृष्टि टिकी हुई है तथा गतिशील है। सजीव तथा निर्जीव का मुख्य भेद आहार पर टिका हुआ है। आहार के आधार पर प्राणी जगत को हम अलग-अलग श्रेणियों तथा प्रजातियों में विभक्त करते हैं। मनुष्य प्राणियों में श्रेष्ठ है, क्योंकि उसके पास विवेक की शक्ति है। अत: उसका भोजन कैसा हो और कितना हो इस पर शायद जाम्भोजी पहले महापुरुष हैं, जिन्होंने सर्वप्रथम इस पर विचार किया है और अपने भक्तों को अपने ज्ञान में समझाया है तथा उसे 29 नियमों में मुख्य अंश के तौर पर स्थापित किया है।

सांख्य योग के अष्टांग योग में आठ चरण के प्रथम चरण 'यम' के दस सूत्रों में अल्पाहार (मिताहार) आवश्यक सूत्र है। मिताहार के अंतर्गत न अधिक भोजन न कम भोजन, मीट, मछली, पक्षी, मांस व अण्डा वर्जित है। यह तो काफी महापुरुषों ने बताया है कि क्या खाना चाहिए और क्या नहीं। ज्यादातर ने शाकाहार पर बल दिया है। पुरानी कहावत इसको चरितार्थ करती है।

जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन।

आहार कैसा हो, यह तो सब व्याख्या करते हैं लेकिन कितना हो इसकी व्याख्या सबसे पहले शायद गुरु जाम्भो जी ने अपनी सबदवाणी में की है। इसे आज

विज्ञान तथा भारतीय आयुर्वेद तथा यूरोपीय होम्योपैथी भी मान चुकी है।

जम्भ वाणी में आहार का वर्णन निम्न शब्दों में आया है :-

1. सबद -2 :- ''हे जोगी के भोगी के अल्पाहारी''

2. सबद-3 :-''जां जन मन्त्र विष्णु न जप्यौ, ते घण तण करै अहारू''

3. सबद-18 :-''मुरिखा रोवत थाही''सब मृत्यु कार्य पर चले रहे। लोकोक्ति है -

बावको, कां तो ज्यादा खा अर मरे नहीं तो ज्यादा ऊंचाय अर मरें ।

मूर्ख व्यक्ति ज्यादा खाकर पछताता है।

4. शब्द-32 :-''जां-जां वाद विवादी, अति अंहकारी, लब्ध सवादी''

5. (शुक्ल हंस सबद) 67:- कुण जाणे अल्प अहारी (48) कुण जाणे म्हे लुब्ध खादी (5)

सबसे ज्यादा तथा सटीक उन्होंने अपने सबद 26 में इसको विस्तार से बताया है।

''घण तण जीम्या को गुण नांही, मल भरिया भंडारू''

''आगे पीछे माटी झूले, भूला बहेज भारू''

भर पेट भोजन करने से कोई गुण नहीं होता, केवल मल के भंडार ही भरते है। आगे पीछे यानि पेट और कुल्हों पर मोटापा चढ़ता है, चर्बी बढ़ती है, जो शरीर के कोई काम नहीं आती, उसे केवल माटी की संज्ञा दी जा सकती है। मनुष्य केवल भार मरता है। इस पर जो विचार मन में आता है, वो यह है कि हम खाने के लिए जीते है या जीने के लिए खाते है? यदि जीने के लिए खाना जरूरी है तो इसकी मात्रा कितनी होनी चाहिए और कैसी होनी चाहिये। दिन में आहार कितनी बार होना चाहिये।

आयुर्वेद में वात, पित और कफ के आधार पर आहार को वर्णित किया है। हिप्पोक्रेट ने सबसे पहले वैज्ञानिक तरीके से बतलाया था कि गलत आहार और असंतुलित आहार बीमारी का प्रमुख कारण है।

डॉ. सैम्युअल हनीमेन होम्योपैथिक के जनक ने आहर का स्वस्थ शरीर तथा बीमारों पर होने वाले प्रभावों का आंकलन किया था।

हमारी आहार नली विस्तार व संकुचन के द्वारा भोजन को पचाती है तथा भोजन को नली में आगे बढ़ाती है। भरपेट भोजन करने पर हमारे अमाश्य में कोई जगह नहीं बचती, जिससे उसमें पैदा होने वाली अमल, पाचक द्रव्य तथा एन्जाईम्स, भोजन को सही तरह से नहीं पचा पाते, जिससे अपच की शिकायत हो जाती है।

इससे बाद में पेट दर्द, आफरा आना, एसीडिटि होना, दस्त लगना या उल्टी होने की सम्भावना बढ़ जाती है और कब्ज की शिकायत रहने लगती है। आहार नली में बना पचा भोजन पड़ा रहता है, सड़ता है और बीमारी उत्पन्न करता है।

ज्यादा भोजन से शरीर में चर्बी जमा होने लगती है और मोटापा बढ़ता है। जिससे शरीर का वजन बढ़ जाता है। अत: शरीर के विभिन्न जोड़ों पर अत्यधिक भार बढ़ जाता है, जिससे उनमें टूटफूट ज्यादा होती है। तनाव बढ़ जाता है और जोड़ समय से पहले खराब होकर शरीर का साथ छोड़ देते हैं। मनुष्य का घूमना फिरना कम हो जाता है या बिल्कुल बंद हो जाता है। शरीर की उर्जा का उपयोग नहीं हो पाता और मनुष्य बीमार होता चला जाता है। अपच और मोटापे से अन्य बीमारियों का जन्म होता है। जैसे मधुमेह रोग, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मानसिक आघात, पक्षाघात इत्यादि। ये बीमारियां प्राणघातक होती है।

आंकड़े बताते हैं कि विश्व में दीर्घ आयु पुरूषों तथा महिलाओं की संख्या सबसे अधिक जापानियों की है। आज 100 वर्ष से अधिक जापानियों की संख्या 20,000 से अधिक है जल्द ही 30,000 का आंकड़ा पार करने को है। इसका एक मात्र मुख्य कारण केवल संतुलित आहार और अल्पाहार है। उनका मानना है कि यदि कैलोरी व कोलेस्ट्रोल संतुलित तथा कम मात्रा में लिया जावे तो इससे रक्त धमनियां सख्त नहीं होती, रक्त धमनियों का सख्त होना ही बीमारी का मुख्य कारण बनता है। जापान के एक विद्वान कईबारा एकीकेत (1630-1714) के मध्य हुए थे, ने एक पुस्तक लिखी थी। कईबारा के अनुसार स्वस्थ रहने का एक तरीका यह है कि जब आपका पेट 80 प्रतिशत भर जाये तो खाना बंद कर दें। दूसरे शब्दों में अल्पाहार स्वस्थ रहने का मुख्य कारण है।

संयुक्त राष्ट्र के विश्व जनसंख्या आंकड़ों के अनुसार जापानियों की जीवन प्रत्याशा औसतन 81.5 वर्ष है, पुरूषों के लिए 77.9 वर्ष तथा महिलाओं की 85.1 वर्ष है, जो कि विश्व की सर्वाधिक आयु औसत है।

प्रत्येक शरीर में एक अविवेचित प्रक्रिया अन्तर्निहित होती है जो शरीर को पुनर्जीवित करती है तथा दुरूस्त (मरम्मत) करती है अधिक भोजन करने से शरीर की अधिकतम ताकत भोजन को पचाने में लग जाती है। अल्पाहार करने से शरीर की अधिकतम शक्ति शरीर के कायाकल्प के लिए उपलब्ध हो जाती है। जिससे हम स्वस्थ तथा युवा बने रहते है। साथ ही शरीर की क्रियाएं तेजी से काम करते हुए उन तत्वों से लड़ सकती है, जिनकी वजह से हम वृद्धावस्था की ओर जाते हैं। आंकड़े दर्शाते हैं कि अधेड़ तथा वृद्धावस्था में जीवन घातक बीमारियों का जन्म

आंतरिक कमजोरियों की वजह से होता है न कि बाह्य प्रभाव के कारण। अत्यधिक भोजन से शरीर पर भोजन को तीव्रता से पचाने का दबाव बना रहता है, पाचन क्रिया की गुणवता प्रभावित होती है, जिससे पाचन क्रिया के दौरान विष जीव उत्पन्न होते है, जो शरीर के लिए घातक होते हैं। सही तरीके से शरीर से निकलते नहीं है और शरीर के आंतरिक हिस्सों से सूजन पैदा करते है, जो भिन्न-भिन्न बीमारियों को जन्म देते है।

अल्पाहार से शरीर का चयापचय धीमा हो जाता है और आंकड़े बताते है कि धीमे चयापचय के व्यक्ति लम्बे जीते है। दीर्घायु प्राप्त करते है। एक सिद्वांत के अनुसार अल्पाहार से शरीर में एक सूक्ष्म व स्थिर तनाव उत्पन्न होता है, जो जीव को मजबूत बनाता है तथा वृद्धावस्था व बीमारियों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। अनुसंधान से यह साबित हो चुका है कि प्रत्येक कैलौरी छोड़ने पर आयु 30 सैकेण्ड बढ़ जाती है।

महात्मा गांधी ने कहा था ''अल्पाहार से साथ यदि हम उपवास भी रखे तो इससे हमें और भी अच्छे नतीजे प्राप्त होते है। मेरे शरीर में जो भी स्फूर्ति तथा उर्जा है वह मुझे उपवास से प्राप्त होती है क्योंकि मैं अपने शरीर को उपवास से पवित्र करता हूँ।

डॉ. गैबरियल कूजनस एम.डी. के अनुसार ''अल्पाहार तथा उपवास करने वालों की एकाग्रता बढ़ जाती है, सृजनात्मकता की सोच विकसित होती है, अवसाद दूर हो जाते हैं, अनिद्रा समाप्त हो जाती है, व्याकुलता गायब हो जाती है, मन शांत स्थिर हो जाता है तथा एक खुशी मिलती है या फिर दूसरे शब्दों में शरीर आनन्द मय हो जाता है। शरीर का बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास तब संभव हो पाता है।''

उपवास के लिए हमें पूरे दिन भूखा रहना आवश्यक नहीं है। एक समय का भोजन छोड़ देने से भी उपवास की भांति हमें अच्छे नतीजे मिलते है।

सप्ताह में एक दिन उपवास के जरिये शरीर को अवश्य आराम देना चाहिए। अल्पाहार के साथ यह भी आवश्यक है कि दो भोजन काल के मध्य किसी भी प्रकार का खाद्य पदार्थ नहीं लेना चाहिए, जिसे हम स्नैकिंग कहते है, उससे पूर्णतया मुक्त रहना चाहिए। अल्पाहार का अर्थ यह नहीं है कि हम ज्यादा उपवास रखें और भूखे रहें इसका आशय केवल इतना ही है कि हमें संतुलित आहार लेना चाहिए और इसकी मात्रा अमाशय का तीन चौथाई होनी चाहिए।

अल्पाहार का विद्यार्थी जीवन में भी अति महत्व है, जिसे एक श्लोक के द्वारा वर्णित किया गया है।

''काक चेष्टा बकों ध्यानम, श्वान निद्रा तथैव चः,

अल्पहारी, गृह त्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणम्।

अतः बचपन में पढ़े पाठ की यह पंक्ति मेरे जीवन का आधार बन चुकी है:

''भोजन के लिए स्वाद होना चाहिए

न कि स्वाद के लिए भोजन''

''अल्पाहार का ध्येय मनुष्य के आयु काल को बढ़ाना नहीं है अपितु मनुष्य के स्वस्थ जीवन काल को बढ़ाना है।''

मुख्य ध्येय जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाना होना चाहिए।

❍ **देवेन्द्र कुमार बिश्नोई**

आर.पी.एस

अति. पुलिस अधीक्षक, रायसिंहनगर

जिला श्रीगंगानगर (राज.)।

गुरु जाम्भोजी का पर्यावरण विषयक वैश्विक चिन्तन

आज से इस वैज्ञानिक युग में आवागमन और दूर संचार के साधनों से सारा विश्व एक हो गया है। इसी कारण आज विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या, मनुष्य का स्वार्थी, विलासी, भौतिकवादी दृष्टिकोण, औद्योगिकरण एवं बढ़ती हुई पूँजीवादी व्यवस्था ने विश्व के सामने पर्यावरण प्रदूषण की एक भयंकर समस्या खड़ी कर दी है। इस समस्या ने मनुष्य के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है और उसके भौतिक विकास पर एक प्रश्नचिन्ह लग गया है। इसी कारण आज विश्व के सभी देश यदि किसी एक समस्या पर चिन्तित हैं, तो वह है पर्यावरण प्रदूषण की समस्या।

भारतवर्ष में सनातन काल से ही पर्यावरण के साथ मित्रता का भाव रहा है। इसी कारण हमारे यहाँ पर्यावरण को बहुत व्यापक अर्थ में ग्रहण किया है, जिसमें मानसिक पर्यावरण से लेकर घर, समाज, देश एवं विश्व तक की शुद्धि मनुष्य के विचारों पर निर्भर करती है। इसलिए सभी प्रकार के पर्यावरण संरक्षण के लिए वैचारिक शुद्धि आवश्यक है। मानसिक पर्यावरण की शुद्धि मनुष्य के विचारों पर निर्भर करती है। इसलिए सभी प्रकार के पर्यावरण संरक्षण के लिए वैचारिक शुद्धि आवश्यक है। जाम्भोजी ने पर्यावरण को इसी व्यापक अर्थ में ग्रहण किया है। गुरु जाम्भोजी को अवतारी पुरूष माना जाता है। श्री जाम्भोजी भादव बदी अष्टमी को अवतरित हुए एवं उनका निर्वाण संवत् 1593 मिगसर बदीनवमी को हुआ। वे 12 वर्ष तक बालक्रीड़ा में रहे। 27 वर्ष तक गौसेवा, गौसंवर्द्धन तथा गौरक्षा में सक्रियरूप से कार्यरत रहे। अनेक मुगल बादशाहों एवं मुस्लिम समाज के बन्धुओं को भी गौ वध न करने का संकल्प कराया। शेष जीवनपर्यन्त धर्मोपदेश, वृक्षों की रक्षा व जीवरक्षा के लिए सक्रिय रूप से कार्य किया। जीव रक्षा व हरे वृक्षों की रक्षा उनके जीवन का मुख्य कार्य रहा, जो बिश्नोई समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत व धर्म का एक अनिवार्य अंग बन गया।

संवत् 1542 में कार्तिक मास में उन्होंने विधिवत् रूप से बिश्नोई समाज की स्थापना की और अपने विचारों को उन्नतीस नियमों में सजाकर एक आचार संहिता बनाई जिसमें 10वां नियम, जीव दया पालनी व 17 वाँ नियम 'रुंख लीला न घावे, [1] बिश्नोई कहलाये। जाम्भोजी द्वारा बताये गये उन्नतीस नियमों का यदि सूक्ष्मता से अवलोकन किया जाये तो यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जायेगी कि उन्होंने पर्यावरण को कितने व्यापक रूप में ग्रहण किया था और उसी को ध्यान में रखकर उन्होंने इन उन्नतीस नियमों का पालन की बात कही थी। इन नियमों में कई

नियम शरीरिक शुद्धि से सम्बन्धित है। उन्नतीस नियमों में दोनों समय संध्या वंदना करना, संध्या को आरती गाना, अमावस्या को व्रत रखना और विष्णु का भजन करना आदि नियम आत्मिक पर्यावरण को शुद्ध रखने के उद्देश्य से ही बताये हैं।

द्विकाल संध्या करो, सांझ आरती गुण गावौ।

जाम्भोजी ने सबदवाणी में इस बाह्य पर्यावरण के महत्व को प्रतिपादित किया है और उन्नतीस नियमों में 'होम हित चित प्रीत सूं होय' की बात कहकर बाह्य पर्यावरण को शुद्ध रखने के उपाय की ओर संकेत किया है। सर्म्पूण विश्व में सृजन निर्माण और विकास की जो अविरल धारा बह रही है तथा मन प्राण और भूत का जो निरन्तर संयोग-वियोग हो रहा है यही यज्ञ है। यज्ञ मानव शरीर में जीवित रहने और श्वांस लेने की क्रिया भी है। ये यज्ञ मनुष्य और प्रकृति के बीच सेतु बनाते हैं। इनके माध्यम से मनुष्य प्रकृति से सम्बन्ध जोड़ता है और उसकी शक्तियों का उपयोग करने की क्षमता प्राप्त करता है। ऐसी मान्यता है कि अग्नि, इन्द्र और सूर्य के आह्वान द्वारा मनुष्य इन तीनों लोकों को जीत लेता है। भौतिक यज्ञ करने से मनुष्य विश्व की शक्तियों का आह्वान कर उन्हें अपने में धारण करता है। प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन पंचमहायज्ञ - देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ और अतिथियज्ञ करने अनिवार्य बताये गये है। इन पाँचों यज्ञों में से देवयज्ञ के विषय में मनुस्मृति में कहा गया है कि प्रकृति को नियन्त्रित करने वाले देवताओं, जो अपनी शक्तियों द्वारा विभिन्न रूपों सूर्य चन्द्र अग्नि जल, इन्द्र वरूण आदि में जगत का कल्याण कर रहे हैं, उन्हें होम द्वारा प्रसन्न करना चाहिए। इसके अतिरिक्त गुरु महाराज ने अपने शिष्यों का होम की जोत में अपने नित्य दर्शन देने का भी वचन दिया है -

हित चित्त प्रीत सूं होय, बास बैकुण्ठे पावो।

यज्ञ का देवता अग्नि शक्ति का प्रतीक है, शक्ति रहित संसार जड़ है। श्री जम्भेश्वर भगवान द्वारा होम के साथ हित चित्त और प्रीत शब्दों का जुड़ाव अति सार्थक और सारगर्भित है। होम के साथ हित यानी लोक कल्याण की भावना प्रमुख है। चित्त यानी यज्ञ की आहुति मनोयोगपूर्वक देना ही सार्थक है। प्रीत शरद प्रकृति एवं शेष जगत् के साथ गहरे लगाव का प्रतिपादक है। अच्छी संगति के लाभ एवं बुरी संगति के दुष्परिणामों के वर्णन के द्वारा भी जाम्भोजी ने बाह्य पर्यावरण के महत्व को प्रकट किया है जैसे - **लौहे हुंता कंचण घड़िया, घड़िया ठांव सुठांउ।**[4]

बिश्नोई अपने गुरु जाम्भोजी महाराज के उन्नतीस उपदेशों को सच्चे मन से मानने वाला भक्त है। वह सर्वधर्म समन्वय का प्रतीक, प्रकृति का उपासक और शुद्ध शाकाहारी है। वह मानता है कि उन्नतीस गुरु आदेशों का योग सनातन धर्म के बीस एवं अन्य धर्मो के नौ उच्च आदर्शों के होने से यह बिश्नोई (बीस नौ) हैं। स्वास्थ्य रक्षा, सच्चरित्र, पवित्रता, श्रद्धा विश्वास, वृक्षों तथा वन्य जीवों की सुरक्षा

वाणी में कोमलता, दयालुता, नम्रता, सत्य का अनुसरण तथा सभी प्रकार के नशीले पदार्थों का त्याग गुरु आदेशों का सार है। बिश्नोई धर्म सभी धर्मावलम्बियों का अपने धर्मनिरपेक्ष पंथ में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रण देता है। बिश्नोई मानते है कि जो व्यक्ति प्राणियों से प्यार करता है केवल वही स्वयं से प्यार करता है इसलिए वह अतीत से ही वन्य जीवों की रक्षा करता आ रहा है।

श्री जाम्भोजी का भविष्यदृष्टा ज्ञान बोध पर्यावरण प्रदूषण के खतरों के लिए सचेष्ट था इसलिए उन्होंने अपने जीवनकाल में मुख्य लक्ष्य के रूप में रक्षा और हरे वृक्षों की सुरक्षा के लिए अनिवार्यता को प्रतिपादित करते हुए पर्यावरण के महत्व को उजागर किया। प्रकृति के प्रमुख तीन घटक हैं – मानव, वनस्पति एवं मानवेत्तर प्राणी। इनमें मानव अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थवान है और शेष दोनों रक्षा भी मानव इच्छा पर निर्भर है। मानव का हित दोनों को सुरक्षित रखने में है। इसी से प्रकृति के विभिन्न आयामों में सन्तुलन रह सकता है और पर्यावरण भी शुद्ध रह सकता है। जाम्भो जी की मान्यता थी कि जीव-जन्तु प्रकृति प्रदत्त उपादान, प्राकृतिक सौन्दर्य हैं और ये उपादान मानव जीवन का सौरभ हैं। प्रकृति परिधान हमारा वैभव है, प्रकृति जीवन है, जीवन औषधि है, प्राणवायु है, मानव मात्र का आर्थिक स्रोत है, जीवन की रीढ़ है। हरे वृक्षों के संहार को उन्होंने हत्यातुल्य अपराध की संज्ञा दी है।

चिपको आन्दोलन का मूल स्रोत, प्रेरणा का उद्‌गम श्री जाम्भोजी का जीवन दर्शन है। वन सम्पदा व वन्य प्राणियों के सामाजिक महत्व का आंकलन इस प्रकार किया गया है –

जीवन मारो, रिधी रहे हैं।
सब जीवन कूँ, ईश्वर रहे निहारों॥
लीलो रुंख न काटो कोई।
अष्ट सिद्धि नौ निधि खड़े रहे घर मांहि॥

श्री जाम्भो जी का उपर्युक्त सिद्धान्त बुद्धिजीवियों और पर्यावरण वैज्ञानिकों के लिए अमृतमय अनुकरणीय दिग्दर्शन है। यदि उन्हें व्यवहारिक जीवन में आत्मसात कर सकें तो जाम्भोजी का जीव वैज्ञानिकों, पर्यावरण वैज्ञानिकों, प्रबुद्ध नागरिकों व समाज में नेताओं के लिए यह अमर सन्देश है।

पहले अपने पुत्र पौत्र को मारो सौं पीछे जाय रुंख जीव संघारो।'

पर्यावरण संरक्षण पर गुरु महाराज एवं उनके अनुयायियों की अमृत वाणी –

- जीव दया नित राख पाप नहीं कीजिए।
- जांटी हिरण, संहार देख सिर दीजिए।
- बधिया करे बैल तो देख छुड़ाइये।

- बरजत मारे जीव तांह मर जाईये।
- जीवन मरे जैहि काम कदै न कराईये।
- गउ घृत लैवे छान, होम नित ही करो।
- जीवां उपरि जोर करीजै अन्तिकाल हुयसी भारी।
- रे! बिन ही गुन्हैं जीव क्यूँ मारौ।
- जांह जांह दया न धरमू, तां तां विक्रम करमू।
- दान सुपातॉ बीज सुखेतां इम्रत फूल फलीजै।
- सुकरत करतां हरकति आवै तो ना पछतावो करियो।
- संसार में उपगार अेसा ज्यो घण बरसतां नीरूं।
- जैह ठुंठडियै पान न होई, तै क्यों चाहत फूलूं।

अतीत से ही जंगल और उसकी वनस्पतियों के साथ रहने वाला बिश्नोई वृक्षों का उपयोग घर बनाने, खेत की बाड़ बनाने, रस्सी तथा टोकरियां बनाने के लिए करता है, किन्तु इसके लिए वह हरे पेड़ों को नहीं काटता। हरे वृक्षों के प्रति इनकी अटूट श्रद्धा के अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिसमें खेजड़ली ग्राम का उदाहरण अविस्मरणीय है। करीब ढाई सौ वर्ष पहले औरंगजेब के शासन काल में जोधपुर के महाराजा अभयसिंह ने एक नजदीकी ग्राम खेजड़ली से अपने महल के निर्माण के लिए हजारों कारिन्दों को कुल्हाड़ियां देकर वृक्ष काटकर लाने के लिए भेजा। इस पर ग्राम के बिश्नोई पुरूष ही नहीं, बल्कि महिलाएं भी वृक्षों को बचाने के लिए उनसे लिपट गई। कारिन्दों ने पेड़ों से लिपटे 363 पुरूषों व महिलाओं के सिर धड़ों से अलग कर दिए। हादसे में 69 महिलाएं और 294 पुरूषों ने अपने गुरु जाम्भेश्वर महाराज की जय बोलते हुए अपना जीवन वृक्षों के लिए समर्पित कर दिया। महाराजा को जब इस घटना की सूचना मिली तो तत्काल पेड़ों की कटाई को रुकवाया और बिश्नोई समुदाय को ताम्रपत्र भेंट दे शपथपूर्वक कहा कि तत्काल जिन स्थानों पर बिश्नोई रहते हैं, हरे वृक्षों की कटाई पर और वन्य-प्राणियों के शिकार पर प्रतिबन्ध लगाया जाता है। ऐसा वृक्षों के लिए बलिदान का अनूठा, बेजोड़ उदाहरण संसार के इतिहास के पन्नों में नहीं मिलेगा। आज बिश्नोई के ग्राम में वनस्पति तथा वन्य जीवों को सुरक्षा मिलने से केवल उनका संरक्षण ही नहीं होता बल्कि पशुओं को तपते रेगिस्तान में ठंडी छाया मिलती है तथा रेतीली जमीन का कटाव भी रुकता है। उन शहीदों की याद में वहाँ 363 वृक्ष लगाये गये।

श्री जाम्भोजी ने पाँच सौ वर्ष पहले ही हरे वृक्षों के महत्व को समझाते हुए उनकी रक्षा का भार वहन करने हेतु अपने अनुयायियों को प्रेरित कर दिया था। खेजड़ली को चिपको आन्दोलन का उद्‌भव माना जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी, जहाँ हरे-भरे पेड़ों की रक्षा हेतु मनुष्य स्वयं कट गये। आज 250 वर्ष बाद भी

बिश्नोई समाज में वृक्ष संरक्षण एक स्वस्थ परम्परा के रूप में जीवित है। यह समाज आज भी वृक्षों तथा जीव-जन्तुओं की रक्षा उसी साहस से करता है, जैसा कि उन्होंने उस समय किया था। इसका उदाहरण काले हिरण का शिकार करने पर बिश्नोई समाज द्वारा सलमान खान के विरुद्ध की गई कानूनी कार्यवाही है।

यही कारण है कि आज बिश्नोई समाज के गाँव हरे भरे हैं और वहाँ स्वच्छन्दता से विचरण करते जानवरों को देखकर उनके गांवों की सहज में ही पहचान हो जाती है। काले हिरण बिश्नोई गांवों के आसपास बड़ी संख्या में मिलते हैं।

❍ **डॉ० वीना बिश्नोई**
सी० असि० प्रो० - संस्कृत विभाग
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर,
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

जंभवाणी : वैदिक परिप्रेक्ष्य में

आदि सृष्टि में ईश्वर ने ऋषियों के माध्यम से वेद का ज्ञान दिया जिससे मनुष्य श्रेष्ठ जीवन पद्धति अपनाए। उन्हीं वेदों की व्याख्या बाद में ऋषियों ने ब्राह्मण ग्रंथों, दर्शनों उपनिषदों के रूप में की। कालान्तर में श्री राम और श्री कृष्ण जी ने समाज के सामने जीवन के आदर्श रखे। उसी क्रम में समाज के बिगड़ते ढांचे को सुधारने के लिए, मनुष्य को श्रेष्ठ जीवन पद्धति देने के लिए, धर्म की श्रेष्ठ संस्थापना के लिए भगवान जम्भेश्वर का अवतरण आज से लगभग 550 वर्ष पूर्व हुआ।

भारतीय युगपुरुष गुरु जम्भेश्वर जी महाराज का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। बिश्नोई धर्म के संस्थापक गुरुवर जम्भेश्वर एक महान् योगी, त्रिकालदर्शी, समाज सुधारक और वैज्ञानिक थे। वैज्ञानिक इसलिए कि भविष्य में होने वाली वैश्विक उथल पुथल, प्राकृतिक सामाजिक अव्यवस्था को आज से 500 वर्ष पूर्व ही जान लिया था। गुरु जी की वाणी में, धर्म नियमों में - स्वस्थ, स्वच्छ शान्त पर्यावरण के साथ-साथ मानवीय मूल्यों के लिए आवश्यक नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक चेतना का नव जागरण हुआ। गुरु जी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को धर्म से जोड़ा क्योंकि धर्म एक ऐसी ईश्वरीय सत्ता है जो ईश्वर जीव और प्रकृति में संतुलन बनाती है। धर्म काल निरपेक्ष है प्रत्येक युग में व्यक्ति के लिए ग्राहय है। गुरु जी ने तत्कालीन लोकानुकूल शैली में भौतिक और आध्यात्मिक जगत का ज्ञान दिया है। गुरु जी कहते हैं -

'जिया जुगति मुआ मुक्ति'

अर्थात् युक्तिपूर्वक जीने से व्यक्ति को इस लोक में समृद्धि और उस लोक में मुक्ति मार्ग प्रशस्त होता है। महर्षि कणाद भी अपने वैशेषिक दर्शन में कहते हैं - ''यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्मः अर्थात् जिससे संसार में सुख और मोक्षानन्द मिले वही धर्म है। मनु जी ने भी कहा है धर्म के दश लक्षणों से जो आचरण किया जाये वही धर्म है, वही श्रुति तथा स्मृति ने कहा है -

''आचारः परमो धर्माः श्रुत्युक्त स्मृति एव च'' (मनु-1-108)

गुरु जाम्भोजी कहते हैं - जो गुण उसे श्रेष्ठ बनाये उन्हीं को आचरण में ढाले यही मोक्ष (कल्याण) का मार्ग है -

को आचारी अचारे लेणा, संजमे शीले सहज पतीना
तिहिं आचारी न चीन्हत कोण, जाकी सहजे चूके आवागौण - (शब्द - 54)

गुरुजी द्वारा बताये गये धर्म-नियम और शब्द शाश्वत हैं। विश्व मात्र के लिए पालनीय हैं। उन्होंने व्यष्टि और समष्टि के कल्याण की बातों को बड़े सामान्य ढंग से जनभाषा में पिरोया है तथा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने का

आह्वान किया है। मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन का मूल्यांकन करने वाले विद्वानों का ध्यान बिश्नोई पंथ और पंथ संस्थापक गुरु जम्भेश्वर जैसी महान् विभूति की ओर गया ही नहीं। जबकि विभिन्न भारतीय मत पंथों में बिश्नोई पंथ अपना विशेष स्थान रखता है। बिश्नोई पंथ के जागरूक, कर्मठ हित-चिन्तकों द्वारा इन मुद्दों को लेकर आयोजन करना प्रशंसनीय है। आइये इन प्रासंगिक सर्व जन सुखाय सर्व जन हिताय प्रमुख मुद्दों पर विचार करते हैं।

गुरु जी के धर्म-दर्शन का आधार शाश्वत वेद और ऋषि प्रणीत आर्ष ग्रंथ हैं। गुरु जी ने वेद और नाद को परमेश्वर की निज वाणी कहा -

''गुरु मुख धर्म बखाणी, जिहिं कै शब्दे नादे वेदे'' (सबद -1)

अर्थात् मानवधर्म का उपदेश जगत गुरु परमेश्वर ने सृष्टि के आदि में अनाहद नाद रूपी अव्यक्त वाणी में ऋषियों को वेद रूप में दिया वही अव्यक्त वाणी भगवान जम्भेश्वर जी के श्रीमुख से गुरुवाणी के रूप में व्यक्त हुई। उन्होंने अपनी वाणी को वेद कहा -

'मोरा उपाख्यान वेदूं, कण तत भेदूं' (सबद - 14)

इस शब्दवाणी को कल्याणकारी ज्ञान, कर्म और उपासना से पूर्ण होने के कारण बिश्नोई जन इसे पांचवा वेद कहते हैं।

सबदवाणी में वैदिक चिन्तन

जिस प्रकार वेदों का विषय ज्ञान, कर्म और उपासना है तथा मंत्र भी तीन ही प्रकार के हैं - ज्ञान परक, कर्म परक और उपासना परक। उसी प्रकार सबदवाणी में भी तीन ही प्रकार का निर्देश है - ज्ञान प्राप्ति, कर्म करना और ईश्वरोपासना करना। धर्म के उन्नतीस नियमों में भी तीन प्रकार के नियम हैं, जिनमें सात नियम पर्यावरण और जीव रक्षा से संबंधित, जैसे - पानी छानकर पीना (जिसे लोगों ने अब समझा है), ईंधन को झाड़ना, जीव दया पालनी, हरे वृक्ष न काटना, थाट अमर रखना, बैल बधिया न कराना तथा मांस न खाना इसके अतिरिक्त आचरण-शारीरिक व मानसिक शुद्धता के सत्रह नियम और धर्म उपासना से संबंधित पांच नियम हैं। इन सबका पालन ही आज ही अनेक ज्वलंत समस्याओं का हल है। संक्षेप में गुरु जी द्वारा निर्देशित कतिपय संदर्भों पर विचार करते हैं -

सबदवाणी में पंच महायज्ञों का विधान

प्रतिदिन संध्या और हवन करना -

गुरु जी निर्गुण भक्ति के समर्थक हैं जिसमें मूर्तिपूजा व बाह्याडम्बरों की किंचित भी जगह नहीं है। इसी मूल संकल्पना को ध्यान में रखते हुए, शुद्ध चित्त भाव से प्रतिदिन दोनों काल-प्राणायाम, सन्ध्या व ध्यान आदि का सबदवाणी में निर्देश है। गुरु जी कहते हैं जो ज्ञान मैंने तुम्हें दिया है वह मंदिर में नहीं मिलेगा।

ईश्वर सर्वव्यापक है पर पहले तुम्हारे अन्तःकरण में ही है।

गुरु जी कहते हैं- **1. अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर बाहर लोकाचारुं - (सबद - 3)**

2. अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर कोई-कोई गुरुमुख विरला न्हयो (सबद - 19-20)

3. हिव की बेला हिव न जाग्यो -

यजुर्वेद भी यही कहता है -

1. स अकायम् छुक्रं अव्रणंस्नाविरं शुद्ध पापविद्धम् (40-8)

2. न तस्य प्रतिमास्ति यस्य नाम महदयशः (32-3)

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं - ''ईश्वरः सर्वभूतानां हृदेशे अर्जुनः तिष्ठति।''

हवन - हवन से जगत के पांचों तत्वों-अग्नि, जल, वायु, आकाश और पृथ्वी की शुद्धि होती है। प्रतिदिन हवन करना एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो क्षय आदि बीमारियों को दूर रखने के साथ-साथ वर्षा का संतुलन बनाने, कृषि उत्पादन बढ़ाने, हानिकारक कीटाणुओं का संक्रमण रोकने आदि में आधुनिक वैज्ञानिक उपायों से अधिक कारगर है। गुरु महाराज ने स्वयं कहा है - हे मूर्ख ! जिस दिन तेरे घर में हवन नहीं हुआ तेरा जप-तप-क्रिया नहीं हुआ न तुझे रास्ता मिलेगा न तुझे गुरु मिलेगा।

उन्हीं के शब्दों में -

जा दिन तेरे होम न जाप न किरिया (सबद 7 और 13)

वैदिक ऋषियों ने भी पंच महायज्ञों में ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ करने का सर्व प्रथम विधान बताया है। महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं -

'यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्मः ''अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः'' यज्ञो वै विष्णुः''

यजुर्वेद कहता है -

''ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिम्।'' (य. 11-7)

अर्थात् हे सविता देव यज्ञों को बढ़ाइये, यजमानों को बढ़ाइये।

वेदानुसार यज्ञ के तीन अर्थ हैं - जो सभी उत्तम कर्म हैं वे यज्ञ हैं।

ये हैं 1. देवपूजा - अर्थात् प्राकृतिक शक्तियां बढ़ाना अर्थात् आधिदैविक-शान्ति।

2. संगतिकरण - अर्थात् स्वस्थ समाज निर्माण जो आध्यात्मिक शान्ति का आधार है।

3. दान - अर्थात् अपना कुछ समय, विद्या, प्रेम, धन आदि समाज में देना, समृद्ध करना जिससे भौतिक जगत उन्नत हो गुरु जम्भेश्वर दान को सुपात्र को देने का उपदेश करते हैं - पर दो अवश्य

''थोड़े मांहि थोड़े रो दीजे, होते नाँह न कीजे'' (सबद - 103)

पितृयज्ञ -

गुरुजी ने परिवार में बड़े बूढ़ों, माता-पिता का सम्मान सेवा करने का निर्देश किया है, जो आचरण में नहीं लाता उसको खरी-खरी सुनाई है -

''यह कलयुग में दोय जन भूला, एक पिता एक माई'' (सबद - 85)

''अभिवादन शीलस्य, नित्य वृद्धोपसेविनं
चत्वारि तस्य वद्धन्ते, आयुः विद्यायशोबलम्।''

चौथा महायज्ञ बलिवैश्वदेव यज्ञ और पांचवा अतिथि यज्ञ है जिसका उद्देश्य है अपने आश्रितों, जीव जंतुओं, विश्वभर के कल्याण की कामना और सबकी सेवा करना। यदि देखा जाये तो गुरु जाम्भो जी का पूरा जीवन और सबद वाणी इसी यज्ञ को समर्पित हैं। समस्त पर्यावरण की रक्षा पंच भूतों की सुरक्षा, पृथ्वी का संवर्धन ही वलिवैश्वदेव यज्ञ है।

गुरु जी कहते हैं -

जां जां जीव न जोती तां तां मोक्ष न मुक्ति
जां जां दया न धर्मू तां तां विकर्म कर्मू (सबद - 20)

निराकार निर्गुण ब्रह्म और विष्णु उपासना -

गुरु जी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त धार्मिक पाखण्डों, आडम्बरों तथा मूर्ति पूजा का घोर विरोध किया। वे कहते हैं -

''पाहन प्रीत फिटाकर प्राणी, गुरु बिन मुक्त न जाई'' (शब्द-97)

उनका ब्रह्म-निर्गुण, निराकार, सर्वव्यापक, अजर, अमर, अनादि है। उसका नाम ओ३म् है और तुम्हारे हृदय में विराजमान है। उसके लिए अपने हृदय में ही तीर्थ मानकर दर्शन करो -

''ओ३म् शब्द सोऽहं आप, अन्तर जपै अजप्या जाप'' (95)

वह ईश्वर सृष्टि के कण-कण में विष्णु रूप से व्याप्त है। गुरु जी ने बताया कि यह विष्णु जाप वैदिक मंत्रों के समान प्रभावी पुण्यकारक तथा प्रमाण भूत हैं -

''विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी इस जीवन कै हावै।''

(सबद - 33, 67, 119-120)

वेद भी यही कहता है कि ईश्वर विष्णु नाम से व्याप्त है, उसका यज्ञ रूप विष्णु है - ''यज्ञो वै विष्णु''।

यजुर्वेद के मंत्र हैं - 1. स पर्यगाच्छुकमकायम् शुद्धंपाप विद्धम् (40-8)

2. ओ३म् क्रतो स्मर... (40-15)

3. ओ३म् रवं ब्रह्मः..... (40-17)

गुरु जी का उपदेश सभी वर्णों और जातियों के लिए

गुरु जी ने समाज के सभी वर्गों को जोड़ा, जाति बंधन से ऊपर उठकर सभी जातियों को बिश्नोई मत में दीक्षित किया। वे कहते थे पाप से घृणा करो पापियों से

नहीं। उनके उपदेशों ने मुस्लिम बंधुओं को भी प्रभावित किया। कहते हैं 36 प्रकार की जातियों को दीक्षा मंत्र दिया। यहां तक कि तत्कालीन राजा-महाराजाओं को भी जनता के लिए उनके कर्तव्य बताये। वे आज के युग की शब्दावली में जाति निरपेक्ष थे। उन्होंने भारत के अनेक स्थानों पर निर्भय यात्राएं की, उपदेश दिये। जैसे ईश्वर यजुर्वेद में कहता है कि ''मेरी कल्याणी वाणी मनुष्य मात्र के लिए है चाहे वह ब्राह्मण हो, राजा हो, वैश्य, शूद्र या अतिशूद्र हो।''।

''यथेमां वाचं कल्याणीं आवदानि जनेभ्यः'' - (य. - 26-2)

ऋग्वेद का मंत्र है - (5-60-5)

''अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधु सौभगाय।''

वेद की दृष्टि में न कोई छोटा है न बड़ा, सौभाग्य के लिए सब परस्पर मिलकर उन्नति करें। महर्षि दयानन्द भी सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में आचरण संबंधी नियम बताकर सभी सभासदों, राजा, राज्यकर्मियों को धर्म में वर्तने की सलाह देते हैं।

सबदवाणी में सृष्टि और प्रलय का ज्ञान वर्णन

श्री गुरु जी का सृष्टि और प्रलय संबंधी ज्ञान वैदिक सम्मत हैं। यह ईश्वरीय ज्ञान गुरु जी जैसे त्रिकालज्ञ के अतिरिक्त साधारण संतों के संज्ञान में आना दुर्लभ हैं। गुरु कहते हैं -

जद पवन न होता पाणी न होता .... तद होता एक निरंजन शंभू, कै होता धंधुकारुं। (सबद - 4)

आद शब्द अनाहद वाणी, जिहिं पाणी से अंड उपना, अपना ब्रह्मा-इन्द्र मुरारी - (सबद 93)

वेद कहता है इस ब्रह्माण्ड में अगणित लोक, अगणित सूर्य और अगणित चन्द्र और तारामंडल है। अनेक सृष्टियाँ हैं। (पुरुष सूक्त य.ऋ.)

गुरु जी कहते हैं -

''नव लख तारा नेड़ा न दूरुँ, नव लख चन्दा नव लख सूरुँ नव लख धूंधकारुँ'' (सबद - 89)

जीवन का आधार पर्यावरण संतुलन और सुरक्षा

ऋग्वेद, यजुर्वेद का पुरुष सूक्त-सृष्टि रचना, सुरक्षा का प्रथम दस्तावेज है। भारतीय मनीषा ने पांचों महाभूतों - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को देव माना क्योंकि यही जीवन का आधार है। विज्ञान ने जिसे आज देखा, गुरु जाम्भो जी ने इसे सैंकड़ों वर्ष पूर्व देख लिया था। वे आज की प्राकृतिक आपदाएं, ग्लोबल वार्मिंग, ग्लेशियरों का पिघलना-विनाश और प्रलय की प्रथम सूचना है। गुरु महाराज ने 29 नियमों की आचार संहिता बनाकर आज से लगभग 525 वर्ष पूर्व ही

पर्यावरण सुरक्षा की व्यवस्था दी है। **''रूंख लीलो नहीं घावै''** - अर्थात् हरा वृक्ष न काटे न ही काटने दें। इस नियम का पालन बिश्नोई समाज कर रहा है, इसका प्रमाण हमारी जाम्भाणी साखियां हैं। खेजड़ी की रक्षा हेतु अनेक बलिदान हुए हैं जिनमें -

1. कर्मा और गौरा, 2. पोलावास में वि.स. 1700 में बूचो जी

3. तिलासड़ी (जोधपुर) में तीन वृक्ष भक्तों 4. खेजडली गांव जोधपुर में वीरांगना अमृता देवी के नेतृत्व में 1730 सन् में 363 भक्तों का बलिदान हुआ। इसके अतिरिक्त जीवरक्षा हित समय-समय पर शिकारियों का विरोध और बलिदान, माताओं द्वारा हिरनों आदि के बच्चों को अपने दूध पर पालन यह ऐसे अनूठे उदाहरण हैं जो विश्व के इतिहास में कहीं नहीं मिलते। चिपको आंदोलन भी इन्हीं बलिदानों से प्रेरित हैं। वृक्षों की रक्षार्थ नारा ''सिर साठे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण'' आज के संदर्भ में कितना उपयोगी है यह विश्व आज महसूस कर रहा है। प्रकृति के तीन घटक-मनुष्य, वनस्पति एवं वन्य प्राणी के प्राकृतिक चक्र को चलाने के लिए भी प्रकृति के मुख्य घटक मनुष्य को ही जागृत रहना है।

ऋग्वेद का मंत्र है - (6-68-42) कि यह द्युलोक, पृथ्वी, अन्तरिक्ष वनस्पतियाँ तथा जल एक ही बार उत्पन्न होता है, पुनः पुनः नहीं आता, इसका संरक्षण आवश्यक है।

गुरु जी कहते हैं - **सोम अमावस आदितवारी कांई काटी बन रायो** (सबद-7) अर्थात् हे मानव चाहे अंधकार हो या सूर्य, चन्द्रमा का प्रकाश हो तू कभी भी हरे वृक्ष को मत काटना।

''जां जां जीव न जोती तां तां मोक्ष न मुक्ति'' (सबद - 20)

पर्यावरण सुरक्षा में वेद की कामना है कि हम महामानवों, आचार्यों, धर्म गुरुओं, कैवल्य ज्ञानियों के व्यक्तित्व और कर्तृत्व से प्रेरणा लेकर पृथ्वी पर व्याप्त अन्याय, अभाव को हटाकर इस पर्यावरण को चमका दें। वेद में तो यहां तक कहा है -

द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिंसी, पृथिव्या संभव (य. 5-43)

अर्थात् द्यौ पर मत लिख, अन्तरिक्ष में उथलपुथल मत कर पृथ्वी में जुड़, शान्ति करणम् के मंत्र भी शुद्ध स्वच्छ शान्त पर्यावरण की कामना है।

''ओं द्यौ शान्तिः पृथिवी शान्तिः आपः शान्ति....।''

अथर्ववेद का द्वादश काण्ड का भूमि सूक्त भी पृथ्वी का संवर्धन करने की व्याख्या है - ''माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः.....।'' (अथर्व. 12-1-12)

अर्थात् भूमि मेरी माता है और मैं पृथिवी पुत्र उसे सब संकटों से बचाने वाला रहूं।

बिश्नोई बन्धुओं के ये बलिदान वैदिक चिन्तन से भी आगे आकर कार्य रूप

में परिणत हुए हैं। सच तो यह है कि वैदिक चिन्तन भी बलिदानों अर्थात् पर्यावरण के लिए बलिदानों तक अभी नहीं पहुंच पाया है। बिश्नोई धर्म के ये नियम, पर्यावरण, रक्षा, त्याग और बलिदान भारत की मरुभूमि ही नहीं बल्कि विश्व के इतिहास का एक अनूठा और स्वर्णिम अध्याय है, जिसकी गाथा मकराने के श्वेत पत्थरों पर हीरों से जड़ी जाए तो भी कम है।

इस बाह्य पर्यावरणीय व्यवस्था के साथ-साथ गुरु जी ने अपने धर्म नियमों व शब्दों में शुद्ध आचार संहिता भी दी है जो परिवार समाज राष्ट्र और विश्व में व्याप्त मानसिक, सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक तथा धार्मिक प्रदूषण को दूर करने में सक्षम है। यदि उन नियमों पर चलकर सब अपना आचरण सुधार लें तो बहुत कुछ हल संभव है।

बिश्नोई मत के बारे में स्वामी दयानन्द के विचार

डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई के शोध प्रबंध के अनुसार - आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने भ्रमण काल के दौरान काँठ गये थे और चौधरी ध्यानचन्द की छतरी पर विश्राम किया था। लाला तुलसीराम उन्हें काँठ के बिश्नोई मन्दिर में ले गये। स्वामी जी की वहां के बिश्नोई साधु से भेंट हुई। साधु ने जब उन्हें बिश्नोई पंथ में वर्णित 29 नियम बताये तो वे बहुत प्रभावित हुए। कहा - ''धन्य है तुम्हारे गुरु जिन्होंने प्राचीन वैदिक धर्म को पुनर्जीवित किया है।'' दृष्टव्य - ''स्वामी दयानन्द कांठ में, ''अमर ज्योति 1951) इसी कारण स्वामी जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में बिश्नोई पंथ के प्रति कोई टिप्पणी नहीं की थी। आर्य समाज के इतिहास से पता चलता है कि स्वामी दयानन्द जी सन् 1858, 1876 एवं जुलाई 1879 में मुरादाबाद गये थे इसी समय कभी वे कांठ भी गये थे।

(दृष्टव्य डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार, आर्य समाज का इतिहास, पृष्ठ सं. 566-569)

पर्यावरण सुधारने में हमारा कर्तव्य

गुरु महाराज ने एक युक्ति बताई है - ''**पहले किरया आप कमाइये फिर औरां न फरमाइये**''

हवन की पहली समिधा यजमान को ही बनना है। विश्व में यद्यपि समय-समय पर अनेक पर्यावरण सम्मेलन हुए पर अब तक सभी व्यर्थ रहे। हम अपनी संस्कृति को संभाले, अप संस्कृति जो आयातित है उससे बचें। बाजारवाद, उपभोक्तावाद, दिखावा, आडम्बर, विलासिता पूर्ण जीवन पर अंकुश लगायें, वस्तुओं का सीमित संचय व प्रयोग, जल संरक्षण, वायु, नदियों, जलाशयों को प्रदूषित न करना, बालकों को फैशन की होड़ से होने वाले नुकसान को समझाना, ऊर्जा की बचत करना आदि इसका उपाय है। अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

''स्वसुधार के बिना राष्ट्र सुधार असम्भव है।
आत्मोन्नति के बिना सर्वोन्नति हो ही नहीं सकती।''

नि:सन्देह बिश्नोई धर्म विश्व का सर्वोत्तम धर्म है। इसकी आचार संहिता पालनीय है। अनेक बंधु इससे संतुष्ट न होकर अन्य आस्थाओं, मतों, देवी देवताओं और गुरुओं की ओर भागते हैं। क्यों ? अपने को जाना नहीं, पहचाना नहीं और चल पड़े भीड़ की देखा देखी भेड़ की तरह एक और अनजान रास्ते पर। सोचते हैं कि अमुक गुरु की शरण में जाने पर रातोरात काया पलट हो जायेगी, लक्ष्मी बरसेगी। बिना सोचे समझे अपना अमूल्य समय और धन लुटाते हैं। गुरु जी द्वारा बताये नियम और शब्द वाणी ही सच्चा धर्म है, सच्चा गुरु है। यदि गुरु का मार्गदर्शन चाहिये तो अपने बिश्नोई समाज में अनेक योग्य गुरु हैं उनसे दीक्षा लें।

मूरख मानव तू क्यों न चेते ?
गुरु के शब्द हैं नादे वेदे।

ओ३म शम्

❍ **श्रीमती आदर्श बिश्नोई**
एन-179, सैक्टर 25, नोएडा (यू.पी.)

जाम्भोजी का अहिंसा विषयक वैश्विक चिंतन

पर्यावरण प्रदूषण, आज विश्व की एक विकट समस्या है। इस समस्या की जो भयंकरता है, उसे देखते हुए यदि इस का समाधान नहीं किया, तो यह मानव जाति एवं उसके विकास को ही निगल जायेगी। पर्यावरण प्रदूषण का सीधा संबंध आज के विश्व में बढ़ती हुई हिंसा से है। हिंसा के रास्ते पर चलता हुआ आज का मानव जब तक अहिंसा के रास्ते को नहीं अपनायेगा, तब तक पर्यावरण प्रदूषण की समस्या का अन्त होना असम्भव है। मानव के लिए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को समझकर ही बिश्नोई पंथ के प्रवर्त्तक श्री जाम्भोजी ने सबदवाणी में हिंसा का विरोध किया है। जाम्भोजी साक्षात् विष्णु थे और इसी रूप में उन्होंने सबदवाणी में अपना परिचय दिया है। भक्त प्रहलाद को दिये गये वचन के अनुसार वे बारह कोटि जीवों के उद्धार हेतु इस धरती पर अवतरित हुए थे। इसी कारण वे लोगों को जीवन यापन करने की युक्ति एवं मोक्ष प्राप्ति का उपाय बताते रहे हैं, जिसके लिए उन्होंने लोगों के आचरण पर सर्वाधिक बल दिया है। जाम्भोजी न केवल प्राणी मात्र के हितैषी थे अपितु वे वृक्षों के भी रक्षक थे। मानवेत्तर प्राणियों एवं वृक्षों की रक्षा तभी हो सकती है, जब लोगों के मन में दया की भावना हो तथा लोग अहिंसा के रास्ते पर चले। मानव समाज को दया व अहिंसा के रास्ते पर चलाने हेतु तथा पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से ही जाम्भोजी ने जीव दया पालणी अर् रूंख लीलौ नहिं घावै का मूल मंत्र मानव समाज को दिया था, जो आज भी अत्यन्त प्रासंगिक है और आगे भी रहेगा।

जाम्भोजी का जब इस मरूधरा पर अवतार हुआ था, उस समय दिल्ली पर सिकन्दर लोदी का अधिकार था। वह बड़ा निर्दयी था तथा हिंसा के रास्ते पर चलने वाला था। अजमेर एंव नागौर भी मुसलमान शासकों के अधिकार में थे।[1] इन शासकों का उल्लेख सबदवाणी[2] एवं जाम्भाणी साहित्य में हुआ है।[3] जाम्भोजी के समय समाज की स्थिति डांवाडोल थी। समाज में जादू-टोने, जंत्र-मंत्र, मूर्ति पूजा का बोलबाला था। लोग निर्बाध रूप से भांग, मदिरा एवं मांस का प्रयोग करते थे तथा मदिरों तक में जीव-हत्या करते थे। मुसलमानों के राज्यों में गो-हत्या एवं जीव हत्या अबाध रूप से होती थी। अन्य देशी राजा भी शिकार के शौकीन थे। इसलिए उनके यहां भी जीव हत्या पर कोई पाबंदी नहीं थी। हिंसा के ऐसे वातावरण को देखकर जाम्भोजी ने लोगों के आचरण को पवित्र बनाने के उद्देश्य से हिंसा के विरूद्ध आवाज उठायी और समाज में एक अहिंसा का वातावरण स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

जाम्भोजी ने हिंसा को समाप्त करने के लिए विभिन्न तर्कों द्वारा लोगों को

समझाने का प्रयास किया है। गाय का हिन्दू समाज में बहुत महत्व रहा है। उसमें तेंतीस करोड़ देवी-देवताओं का निवास माना गया है। इसी कारण उसकी पूजा-अर्चना की जाती है। ऐसे पवित्र एंव उपयोगी पशु के वध को देखकर जाम्भोजी ने कहा है कि जो पशु हमें सहज रूप में दूध देता है, उसका दूध पीना तो उचित है पर उसके गले पर छुरी चलाना अनुचित है। ऐसे निर्दोष पशुओं पर छुरी चलाने वाले ज्ञानी व्यक्ति को भी अज्ञानी माना गया है।[4] जाम्भोजी के अनुसार निर्दोष पशुओं का वध करने वाले निर्दयी लोग केवल जीवों को मारना जानते हैं पर उससे होने वाली पीड़ा को नहीं जानते।[5] गो सेवा के महत्व को ध्यान में रखकर ही जाम्भोजी ने गो हत्या का विरोध करते हुए कहा है कि गो हत्या करना यदि अच्छा होता तो क्यों भगवान राम गायों को दान में देते और क्यों कृष्ण तथा करीम उन्हें जंगल में चराते।[6]

कृषि एवं पशुपालन हमारे देश के मुख्य व्यवसाय रहे हैं। कृषि का कार्य भी पशुओं की सहायता से होता रहा है। बैल भारतीय किसान का अभिन्न साथी रहा है। ऐसे उपयोगी पशु का वध करने वालों को भी जाम्भोजी ने बहुत फटकारा है।

भाई नाऊं बलद पियारो,
तिंहकै गलै करद क्यों सा रो? 8-3, 4

जाम्भोजी मानव समाज में फैली हुई हिंसा को पूर्णतया समाप्त करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने सबदवाणी में हिंसा के विरूद्ध अनेक तर्क प्रस्तुत करके, जीव हत्या करने वालों को चेतावनी देते हुए कहा है कि जीव हत्या करने वाले का अंतिम समय बड़ा दुख:दायी होगा।[7]

इस संसार के सभी प्राणियों को अपने अपने शरीर से एक जैसा लगाव है और सभी को सुख दु:ख की एक जैसी अनुभूति होती है। ऐसे में जब मनुष्य अपने शरीर के पोषण के लिए दूसरे प्राणियों का वध करता है तो इससे बुरा कर्म कोई नहीं हो सकता और ऐसे बुरे कर्म करने वालों को ईश्वर द्वारा अन्धेरे नरक में कष्ट दिया जायेगा।[8]

सृष्टि के सभी प्राणियों में परमात्मा के अंश आत्मा का निवास है। ऐसे में जब मनुष्य किसी प्राणी को कष्ट देता है, तो वह एक तरह से ईश्वर को कष्ट पहुंचाने के समान है। ऐसे में मनुष्य द्वारा एक ओर जीवों का वध करना तथा दूसरी ओर ईश्वर का नाम स्मरण करना एक ढोंग ही माना जायेगा। जाम्भोजी के अनुसार ऐसे व्यक्ति यदि जीवों की हत्या करना बंद कर दें तो यही उनकी ईश्वर भक्ति है।[9]

जाम्भोजी प्राणी मात्र के हितैषी थे। इसीलिए उन्होंने प्राणी मात्र की हत्या का विरोध किया है। अहिंसा की इसी भावना के कारण ही उन्होंने वृक्षों को भी प्राण युक्त मानकर उनकी रक्षा पर बल दिया है। वृक्ष रक्षा की इस भावना के कारण ही आगे चलकर बिश्नोई समाज के लोग प्राण न्यौछावर करके भी वृक्षों की रक्षा करते

रहे हैं। खेजड़ली बलिदान इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। वृक्षों के लिए इतने बड़े पैमाने पर प्राण न्यौछावर करने की यह विश्व इतिहास की एक मात्र घटना है। जाम्भोजी ने जहां विभिन्न राजाओं से मिलकर उनके राज्य में होने वाली जीव हत्या बंद करवायी थी, वहीं उन्होंने स्थान-स्थान पर वृक्षारोपण करके मानव समाज में वृक्ष प्रेम, अहिंसा, परोपकार आदि की भावना का प्रचार-प्रसार किया था।

किसी को मानसिक कष्ट पहुंचाना भी हिंसा है। इसीलिए जाम्भोजी ने झूठ न बोलना, निंदा न करना एवं वाद-विवाद न करना आदि नियमों की व्यवस्था की थी। इन्हीं बुराइयों का सबदवाणी में स्थान-स्थान पर विरोध किया गया है[10] तथा इनसे होने वाले दुष्परिणामों को बताया गया है। 'पाणी, वाणी, ईंधन, दूध इतना लीजै छाण' के द्वारा कर्म एवं वचन से हिंसा न करने पर बल दिया गया है। अहिंसा का पालन एकांगी नहीं हो सकता। इसके लिए मनुष्य को अनेक अवगुणों को त्यागना पड़ता है और अनेक गुणों को धारण करना पड़ता है। एक तरह से मनुष्य को अपना समस्त आचार-विचार अहिंसामय करना पड़ता है, तभी सही अर्थों में अहिंसा का पालन हो सकता है। यही कारण है कि जाम्भोजी ने सबदवाणी में क्रोध एवं अहं आदि का विरोध किया है तथा दया, प्रेम एवं परोपकार आदि का समर्थन किया है।

अहिंसा भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता रही है। पर आज हम अपनी स्वार्थी एवं विलासिता की प्रवृत्ति के कारण भारतीय संस्कृति के मूल्यों को एक-एक करके छोड़ते जा रहे हैं, जिससे हमारा जीवन दु:खदायी होता जा रहा है। आज मानव समाज में अत्याचार, लूटपाट एवं हिंसा का जो वातावरण है, उससे किसी का भी जीवन सुरक्षित नहीं है। विश्व के ऐसे हिंसामय वातावरण में कोई भी सुख-शांति के साथ नहीं रह सकता। ऐसे वातावरण में आज अहिंसा का महत्व और अधिक बढ़ गया है। जाम्भोजी ने हिंसा का विरोध करके मानव समाज में जिस तरह से अहिंसा की स्थापना की थी, बाद में उसी को हथियार बनाकर महात्मा गांधी ने उसकी शक्ति से देश को दौ सौ वर्षों की गुलामी से आजाद करवाया था। आज भी अहिंसा का महत्व अक्षुण्ण है। पिछले दिनों लोकपाल के मुद्दे पर अन्ना हजारे के आन्दोलन ने अहिंसा को अपनाकर उसकी शक्ति को पुन: प्रमाणित कर दिया है। इससे यही प्रमाणित होता है कि जाम्भोजी द्वारा बताये गये अहिंसा के सिद्धान्त के द्वारा आज भी विश्व की बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान किया जा सकता है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि हम श्रद्धा एवं विश्वास के साथ जाम्भोजी द्वारा बताये गये इस अहिंसा के सिद्धांत को अपनाये, जिससे मानव समाज का भौतिक जीवन सुखमय हो सकता है और लोग मोक्ष प्राप्त में सफल हो सकते हैं।

संदर्भ :-

1. डॉ. विश्वम्भर नाथ - मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग - पृ. 15
2. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - जाम्भोजी कृत सबदवासणी (मूल और टीका)27-16, 17
3. ..... वही .....
4. ..... वही 7-5, 6
5. ..... वही 9-8, 9
6. ..... वही ..... 8-3 से 5, 15, 16
7. ..... वही 8-23, 24
8. ..... वही 113-7, 8
9. ..... वही 101-3
10. ..... वही 13-2, 6-10, 11, 21-9

❍ श्रीमती अनिता सहू

एम.ए., एम.फिल (हिन्दी)

डबवाली (हरियाणा)

जंभवाणी में लोकमंगल की भावना

लोकमंगल की भावना अर्थात् संसार के कल्याण की भावना। जंभवाणी का प्रत्येक शब्द लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत है। गुरु जम्भेश्वर जी को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। यह भी सर्वविदित है कि अवतार होते ही जनकल्याण के लिये हैं अत: गुरु जम्भेश्वर जी का अवतार भी जनकल्याण के लिये ही हुआ है। माता हंसा देवी व पिता लोहट जी की तपस्या के उपरांत ही जम्भेश्वर जी ने अवतार धारण किया। परोपकार करना सबसे ऊँचा काम है, इस बात को विष्णु भगवान जानते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में मत्स्यादि अनेक अवतार धारण कर समय-समय पर अपनी प्रजा की रक्षा करते हैं। श्री विष्णु भगवान ने कृष्णावतार में भी बहुत से कार्य किये, जो कुछ शुभ कार्य शेष रहे, उनको पूरा करने के निमित्त श्री विष्णु श्री जम्भेश्वर भगवान के रूप में अवतरित हुए। नृसिंहावतार में लोकमंगल को ध्यान में रखकर भगवान ने प्रहलाद को जो वचन दिया था, उसको पूरा करने के लिये, जीवहिंसादि पापकर्मो को रोकने, शुद्ध वैष्णव आचार-विचार के लिये और अनेक पापों को मिटाने के लिये श्री जम्भेश्वर भगवान प्रकट हुए। जैसा कि उनके जीवन वृत्त में कहा गया है कि बचपन से ही जंगलों में घूमे, पूर्व-पश्चिमी-उत्तर-दक्षिण के देशों को देखा और अपनी योगसिद्धि से अंधों को आँखे दी तथा रोगियों को ठीक किया। संवत् 1593 मार्गशीर्ष कृष्णा (वदि) नवमी को उत्तम शिक्षा से बारह कोटि जीवों का उद्धार कर, योगबल से परमपद को प्राप्त हो गये। इसी जीवन वृत्त से यह स्वत: ही स्पष्ट है कि गुरू जम्भेश्वर का अवतार लोकमंगल की भावना से ही हुआ था। गुरु जम्भेश्वर जी ने अपने उपदेशों में जो कहा उसे 120 शब्दों में जम्भवाणी के नाम से लिपिबद्ध किया गया है। गुरु जम्भेश्वर भगवान के प्रत्येक शब्द जो उनके मुख से उच्चरित हैं मंगलकारक हैं। उन्होंने शब्द संख्या 8 में कहा है''**किरणी थरपी छाली रोसो किणरी गाडर गाई। सूल चुभीजै करक दुहेली तो है है जायो जीव न घाई।**'' उपर्युक्त शब्द में गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है कि जीवों की हत्या उचित नहीं है, क्योंकि जिस समय कांटा मनुष्य की देह में लगता है तो असहनीय वेदना होती है फिर तुम तो उसके देह से सिर को काटते तो तब उसको कितना कष्ट होता होगा। इसी शब्द में आगे कहा है कि ''**चर फिर आवे सहज दुहावै तिसका क्षीर हलाली। जिसके गले करद क्यों सारो थे पढ़ सुण रहिया खाली।**'' तात्पर्य है गाय आदि पशु जंगलों में चरकर आती हैं इनका अमृत के समान दूध जो ये बड़े प्रेम से तुम्हें देती हैं, जो मानव के इहलोक तथा परलोक दोनों के ही सुख के लिये है। उसके गले पर छुरी रखते हो विचार क्यों नहीं करते। क्योंकि परोपकार करने वाले प्राणियों की हत्या करना महानदोष है।

आगे शब्द 9 में एक स्थान पर उन्होंने कहा है- **'हम दिल लिल्ला तुम दिल लिल्ला''** अर्थात् मानव को मानव से कभी द्वेष नहीं करना चाहिए क्योंकि जो व्यक्ति अपने और दूसरे सभी में परमात्मा को देखता है वह न तो आपस में द्वेष रखता है और न ही किसी को भार समझता है अत: हिन्दू हो या मुसलमान सभी को प्रेमपूर्वक रहना चाहिए। इसमें भी गुरू जम्भेश्वर जी की लोकमंगल कि भावना के दर्शन होते हैं क्योंकि वह सभी से प्रेमपूर्वक रहने का कहते हैं।

जम्भवाणी के शब्द सँख्या 16 में गुरु जम्भेश्वर भगवान ने सत्संगति का महत्त्व बताते हुए लोकमंगल के हितार्थ कहा है कि **''लोहा नीर किसी विध तरिबा, उत्तम संग सनेहूं।** ''लोहा जल पर कैसे तैर सकता है?, जिस प्रकार उत्तम काठ के संयोग से लोहा जल पर तैर सकता है उसी प्रकार उत्तम पुरुषों की संगति पाकर नीच पुरुष भी धार्मिक कार्य में लग जाता है और जन्म मृत्यु रूपी सागर से पार हो जाता है। लोकमंगल की भावना में निमित्त इस शब्द में भी गुरु जम्भेश्वर भगवान ने कहा है **''जां जां दया न माया तां तां बिकरम काया।** जिस मनुष्य में दूसरों के प्रति दया भाव तथा स्नेह भाव नहीं है वह व्यक्ति तमोगुणी स्वभाव वाला बनकर अपने शरीर का नाश कर देता है **(जां जां आव न वैसूं तां तां स्वर्ग न जैसूं)** जहाँ आपस में बन्धु-बान्धवों में आदर सत्कार तथा प्रीति आदि गुण नहीं है वहाँ स्वर्ग के समान सुख नहीं हो सकता है **(जां जां जीव न जोती तां तां मोक्ष न मुक्ति)** जिन मनुष्यों को ध्यान करते करते ज्योति स्वरूप आत्मा का अनुभव होता है उसकी मुक्ति होती है। जिनको ज्योति स्वरूप आत्मा का अनुभव नहीं होता उनकी मुक्ति नहीं होती है **(जांजां दया न धर्मू तां तां बिकरम कर्मू)** जिन मनुष्यों में छोटे प्राणियों के प्रति दया तथा अपने से पूज्यों के प्रति श्रद्धा नहीं होती है वह ऐसा करके धर्म विरूद्ध आचरण करता है। इस सबका कहने का गुरु जम्भेश्वर का यही तात्पर्य है कि प्राणियों पर दया करके और घर में आये अतिथि का सम्मान कर हम लोक कल्याण की भावना का निर्वाह करते हैं।

जम्भवाणी में लोकमंगल की भावना को इस शब्द के माध्यम से यही समझा जा सकता है - **''भल मूल सींचों रे प्राणी ज्यों तरवर मैलत डालूं''** अरे प्राणी! सुमूल को जल से सींचो जिससे तुम्हारा वास्तविक कल्याण हो, जैसे पेड़ों की जड़ में पानी देने से वह डाली व तनों को बढ़ाता है तथा पुन: बड़ा होकर सुफल देता है। वास्तव में इस संसार की जड़ (निर्माता) परम पिता परमात्मा ही है अत: उनके श्रद्धापूर्वक जप व ध्यान से व्यक्ति अपना व दूसरों का पूर्ण कल्याण कर सकता है। गुरु वाणी में ही आगे कहा गया है- ''जइया **मूल न सींच्यो तो जामण मरण विगोवो''** जिसने मूल तत्व परमात्मा का ध्यान व जप नहीं किया उसका जन्मना व्यर्थ हो गया क्योंकि मानव योनि में जन्म लेकर वह आत्म कल्याण नहीं कर

सका तथा उसका मरना भी व्यर्थ हो गया क्योंकि मरकर वह परमात्मा में नहीं मिल सका बल्कि यमदूत के हाथ चला गया। अर्थात् ऐसे व्यक्ति के लोक व परलोक दोनों बिगड़ गये। लोकमंगल की भावना को प्रतिपादित करते हुए गुरु महाराज आगे कहते हैं– '' **कोई कोई भल मूल सींचीलो भलतत्व बूझीलो**''। कोई व्यक्ति उत्तम संग पाकर सुमूल को सींचते है तथा परम तत्व के बारे में गुरु व संतों से पूछते हैं।'' **जा जीवन की विध जाणी**'' उन्हीं पुरुषों ने मनुष्य योनि में आकर विधिपूर्वक जीवन व्यतीत किया है तथा सफलता प्राप्त की है। ऐसे धार्मिक व साधनायुक्त मनुष्य को जीवन का वास्तविक लाभ मिलता है अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति होती है। शब्द 70 में एक स्थान पर गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है–''**जो अराध्यो राव युधिष्ठिर, सो आराधो रे भाई**'' जिस परम पिता परमात्मा की आराधना तथा सत्य और न्यायपूर्वक प्रजा का पालन राजा युधिष्ठिर ने किया था, उसी प्रकार धर्म व नीतिपूर्वक राज्यों का पालन करके लोकमंगल का काम राजा को करना चाहिए। शब्द 72 में एक स्थान पर बताया है कि मनुष्य के अन्त: करण में प्राय: स्वाभाविक रूप से तीन दोष होते हैं – मल, विक्षेप और आचरण। इनमें मल नाम के दोष का हवन आदि शुभ कर्म करने से नाश हो जाता है क्योंकि हवन से पर्यावरण भी शुद्ध होता है जिससे आज वातावरण में जो प्रदूषण फैला हुआ है हवन के धुएँ से वह शुद्ध कर्म करने से नाश जो जाता है क्योंकि हवन से पर्यावरण भी शुद्ध होता है जिससे आज वातावरण में जो प्रदूषण फैला हुआ है हवन के धुएँ से वह शुद्ध हो जाता है और मनुष्य को शुद्ध वायु ऑक्सीजन के रूप में मिलती है दूसरे मन की कलुषित भावनाएं भी ईश्वर नाम से दूर होती है अत: हवन लोकमंगल के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम है। आगे शब्द सँख्या 75 में गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है– ''**ध्याय रे मुंडिया पर दानी**'' परम पिता परमात्मा का ध्यान करो तथा परोपकार करो और हृदय में दया का भाव रखो। क्योंकि यदि हृदय में दया का भाव होगा तो एक जीव दूसरे जीव को दुखी देखकर उस पर दया करेगा, तब भी लोकमंगल का कार्य होगा। एक अन्य शब्द 85 में गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है–''**भोम भली कृषाण भी भला, खेवट करो कमाई। गुरु प्रसाद काया बढ़ खोजो**''जैसे उत्तम भूमि हो और किसान मन लगाकर काम करे तो कृषि की समयानुसार ठीक ढंग से रक्षा, बुवाई, कटाई आदि के द्वारा उसे अधिक उत्तम अन्न की प्राप्ति हो सकती है वैसे ही उत्तम कर्म करे तो वह अपना व सँसार दोनों का ही कल्याण कर सकता है।

इसी प्रकार शब्द 85 में ही गुरु जम्भेश्वर जी ने आगे कहा है कि – ''**जुगां जुगां को जोगी आयो, बैठो आसन धारी।** ''जब जब धर्म की हानि होती है और पाप की वृद्धि होती है तब तब मैं (श्री विष्णु भगवान) तपस्वी, योगी आदि दिव्य तेजोमय रूप धारण कर धर्म की रक्षा व पाप का नाश करता हूँ। मैं युगों से प्रकाश

स्वरूप था वहीं मैं अब समराथल पर संसार के कल्याणार्थ आसन लगाकर बैठा हूँ। लोग मेरे पास आते हैं और मैं सभी के मंगल के बारे में उन्हें बताता हूँ। जिससे सम्पूर्ण जगत का कल्याण हो।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गुरु वाणी में गुरु जम्भेश्वर भगवान ने जो शब्द कहे हैं उनमें लोकमंगल की भावना कूट कूट कर भरी हुयी है। हम किसी भी शब्द को लें उसमें लोकमंगल की ही बात कही गयी है और बिश्नोई समाज के 29 नियम तो लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत हैं जिनका पालन करने से प्रत्येक मनुष्य का कल्याण होगा न केवल बिश्नोई का। जैसा कि गुरु वाणी में शब्द 15 में कहा गया है- **''ओ३म् सुरमां लेणां झीणा शब्दूं''** अर्थात् जिस प्रकार उत्तम पिसा हुआ सूरमा आँखों के रोग को दूर कर आँखों को देखने योग्य बनाता है उसी प्रकार मेरे सत्य उपदेश जो अति सूक्ष्म बुद्धि से विचार करने के योग्य हैं, इन मेरे शब्दों का आशय अति गंभीर है। ये अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर हृदय में ज्ञानरूपी प्रकाश को फैलाते हैं जिससे मनुष्य आत्मकल्याण के साथ ही लोक कल्याण भी करता है।

❍ **डॉ० छाया रानी**
प्रवक्ता (हिन्दी)
दयानन्द आर्य कन्या (पी.जी.) कॉलेज, मुरादाबाद।
दूरभाष : 05912451400

जम्भवाणी में जीवन की क्षण भंगुरता

गुरु जम्भेश्वर भगवान का अवतरण मरूधरा की पावन स्थली नागौर जिले के पींपासर ग्राम में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन अर्थात् भादवा बदी अष्टमी वि.सं 1508 कृतिका नक्षत्र, सोमवार, अर्द्धरात्रि को हुआ था। गुरु जम्भेश्वर जी के पिता का नाम लोहटजी पंवार तथा माता का नाम हंसा देवी था।

गुरु जाम्भोजी के जीवन वृत्त से सम्बंधित कवि वील्होजी का एक छप्पय प्रसिद्ध है -

बरस सात संसार, बाल लीला निरहारी।
बरस पांच बाईस, पाल एता दिन चारी।।
ग्यारै और चालीस, सबद कथया अवनासी
बाल गुवाल गुरुग्यान, मास तीन व्रस पच्चासी।
पनरासर तिराणवे बदि मंगसर नुवी आगले।
पालटे रूप रहिया ध्रुव अडिग ज्योति समराथले।

इस छप्पय के अनुसार गुरु जाम्भोजी ने 7 वर्ष वि.सं. 1508-1515 तक बाललीला में, वि.सं. 1515.1542 तक 27 वर्ष पाल चारण तथा शेष 1542-1593 तक 51 वर्ष तक अपने पास आये लोगों को उपदेश देने, सबद द्वारा शंका निवारण में व्यतीत किये। इस प्रकार गुरु जाम्भोजी ने पिच्यासी वर्ष 3 माह तक संसार में रहकर तीनों अवस्थाओं में जीवों के कल्याणार्थ कार्य किया।

वि.सं. 1542 में कार्तिक बदी अष्टमी को समराथल धोरे पर गुरु जाम्भोजी ने बिश्नोई पंथ का प्रवर्तन किया तथा अमावस्या तक चारों वर्णों को विश्नोई पंथ में दीक्षा दी-

आदि अष्टमी अंत अमावस
चार वरण कू किया तपावस।

गुरु जाम्भोजी ने ठेठ मरू भाषा में अपने देश और अपने युग की जनता को जो अज्ञानान्धकार से आच्छन्न थी, उनके धार्मिक एवं आध्यात्मिक सिद्धान्तों को अत्यन्त स्पष्ट रूप में सामने रखकर उसे कल्याणकारी ज्योति का दर्शन कराया तथा अपने धर्म और कर्तव्य का पाठ पढ़ाया।

गुरु जाम्भोजी ने अपने सम्पर्क में आये गृहस्थों, नाथों, राजा, महाराजाओं, भक्तों सभी की शंकाओं का निवारण, शबदवाणी द्वारा विभिन्न मुहावरों, कहावतों, लोकोक्तियों, दृष्टान्तों, उदाहरण द्वारा किया। गुरु जाम्भोजी ने अनेकों शब्द कहें, लेकिन उनके हजूरी शिष्य रेड़ोजी को एक सौ बीस सबद जाम्भोजी की बीज रूप रचना होने के कारण प्रिय और कण्ठस्थ थे।

रेड़ाजी का इह नितनेमा, बीसा सौ शब्दनि सू प्रेमा

वील्होजी को भी रेड़ाजी से ही एक सौ बीस सबद उतराधिकार में प्राप्त हुए थे –

रेड़ेजी के कंठ जो, रहे शब्द सौ बीस
सुण वील्हो प्रसन्न भयो, सोला जोजन दीस।

गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी में परमात्मा के स्वरूप, अवतार भावना, कर्म मार्ग, योगमार्ग भक्ति मार्ग, सद्गुरु, नामजप आदि का विशद निरूपण प्राप्त होता है। सबदवाणी में लोक कल्याण की उद्भावना हुई है। संयम, आत्मसाधना, दया, दान, उपकार, विनयशीलता, शील धर्म का पालन, सदाचार के प्रति अनुराग, स्नान आदि नैतिक बातों का उपदेश दिया। गुरु जाम्भोजी ने जीव हिंसा, अनैतिक एवं अपराधिक कार्यों को न करने की चेतावनी दी थी।

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने विभिन्न उदाहरणों, दृष्टान्तों तथा ऐतिहासिक चरित्रों द्वारा पास में आये श्रद्धालुओं की शंका निवारण कर यह सिद्ध कर दिया कि यह संसार नाशवान और क्षणभंगुर है, इसमें किसी का भी अस्तित्व अखण्ड नहीं रहेगा।

''तो रूह चलंतै पिण्ड पड़ंतै, आवै भिस्त विमाणो।''

गुरु जाम्भोजी अपने पास आये काजी से कहते हैं कि यदि आप सच्चे मन से परमात्मा का स्मरण करो तो आत्मा के चलते शरीर के छूटते ही स्वर्ग से विमान आयेगा।

''अहनिश आव घटंती जावै, तेरे स्वास सबी कसवारूं।''

''जड़िया बूंटी जे जग जीवै, तो बेदां क्यूं मर जाही।

गुरु जाम्भोजी बिश्नोइयों की जमात व अजाराम को कहते हैं कि मृत्यु के मर्म को समझो वह इस संसार रूपी खेत में सबका संहार करता है तथा कई-कई अवतारी पुरूष इस मार्ग को न जानने वालों पर रोते हैं। इस संसार में आने वाले को मरना पड़ता है। अगर जड़ी बुटियों से जीवन बचता तो बड़े-बड़े वैद्य खुद क्यों मरते ?

''जे नवीये नवणीं, खवींये खवणी, जरिये जरणी, करिये करणीं, तो सीख हुवा घर जाइये।

जब गुणावती के तेली की हत्या सम्राट के कर्मचारियों ने कर दी, तो जाम्भोजी के पास में बैठे लोगों को बताया कि जो विनम्र है, क्षमाशील है, काम, क्रोध, लोभ जिसके वश में है जो सत् कार्य कर चुका है, वह जीवन संसार से विदाई मिलने पर अपने घर अर्थात् बैकुण्ठ जाता है।

''पवणा झोलै बीखर जैंला, धुंवर तणाजैं लोरूं। बोलस आभै तणा लहलोरू, आडा डम्बर केती बार विलम्बण यो संसार अनेहूं।

गुरु जाम्भोजी ने मुहम्मद खां नागौरी को बताया कि जैसे पवन के झोकों से धंवर के लोर बिखर जाते है। ऐसे ही आकाश में उमड़े हुए बादलों के लोर बिखर जाते हैं। अत: बादलों के समान यह नाशवान संसार स्नेह करने लायक नहीं है।

''भूला प्राणी विष्णु न जंप्यो, मरण विसारों केहूं।

गुरु जाम्भो जी कहते हैं कि हे मनुष्य तुमने विष्णु का स्मरण नहीं किया व मृत्यु को कैसे भूल गये।

''हंस उड़ाणों, पंथ बिलंब्यों, आसा सास निरास भईलों, ताछे होयसी रंड निरंडी देहूं। पावणा झोलै बिखर जैला, गैंण विलंबी खेहूं।

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि मृत्युपरान्त जीव आत्मा से निकलकर अपने राह लग जायेगी, तब सभी आशा रखने वाले निराश हो जायेंगे, तब यह देह विधवा हो जायेगी। आकाश में छाई धुंध पवन के झोंकों से नष्ट हो जाती है, वैसे ही यह शरीर नष्ट हो जायेगा। तब तुम्हारी इच्छा पूर्ण न होने के कारण तुम्हें निराश होना पड़ेगा।

''आयो हंकारों जीवड़ो बुलायो, कह जीवड़ा के करण कमायो।'' गुरु जाम्भोजी समराथल पर बैठे लोगों को बताते हैं कि जब कोई व्यक्ति मरणासन्न अवस्था में होता है, तो उसको कुंचीवाला शब्द सुनाया जाता है।

मृत्यु काल रूपी हंकारों जब आता है तो इस जीव को शरीर से बाहर बुला लेता है, वहां यमराज जीव से पूछता है कि तुने संसार में क्या-क्या कार्य किये।

''शील बिबरजित जीव दुहलों। यमपुरी ये संताइये।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि शील से रहित ये जीव इहलोक में दुखी होता हुआ यम पुरी नर्क में दु:ख रूप दण्ड से दण्डित किया जायेगा।

''जामण मरण भव काल जु चूकै, तो आवागवण न आवे।''

गुरु जाम्भोजी जमाती लोगों को कहते हैं कि शुभ कर्म करोगे तो संसार का भय मृत्यु का भय मिट जायेगा तथा जन्म मृत्यु के चक्कर से सदा के लिए छूट जायेंगे।

''घड़ी घंटतर पहर पटंतर, रात दिनंतर, मास पखंतर, क्षिण ओल्हखा कालूं। मीठा झूठा मोह बिटंबण, मकर समाया जालूं।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि यह समय घड़ी, पहर रात दिन, माह पक्ष, वर्ष उत्तरायन, दक्षिणायन करते हुए व्यतीत हो जाता है, किन्तु काल का कोई बंटवारा नहीं होगा, वह जब चाहे तब आपके जीवन का अन्त कर सकता है -

''जीवर पिंड बिछोड़ो होयसी, ता दिन थाक रहै सिर मारूं।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि वृद्ध अवस्था में शरीर रक्षा के अनेक उपाय करने पर भी इस जीव और शरीर का अलगाव तो निश्चित होगा। उन दिनों जब मृत्यु आयेगी तो सभी उपायों से थककर सिर कूट करके ही रह जायेगा।

''कवण न गइया कवण न जासी, कवण रहया संसारूं। अनेक अनेक चलंता दीठा, कलि का माणस कौन विचारूं।''

गुरु जाम्भोजी रामा बणिया को कहते हैं कि ऐसा कौन हुआ जो इस संसार से गया नहीं ? तथा ऐसा कौन है जो इस संसार से जायेगा नहीं। संसार में सदा स्थिर कौन रहा है ? सभी प्राणी मरते दिखाई देते हैं। फिर कलयुग के मनुष्यों का विचार

ही क्या हैं।

''भूली दुनिया मर मर जावै, न चीन्हों करतारूं।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि दुनिया भूल में बार-बार मरती है, फिर भी परमेश्वर को नहीं पहचानती।

''जामण मरण बिगोवो चूकै। रतन काया ले पार पहुंचै, तो आवागवण निवारूं।

गुरु जाम्भो जी कहते है कि सच्चे मन से प्रभु में लगन लग जाये तो जन्म मरण के भयंकर दु:ख से छूटकर रतन काया को लेकर संसार से पार हो जाता है। फिर आवागमन के चक्कर में नहीं आना पड़ता।

''सहज सुपंथू, मरतक मोक्ष दवारूँ।''

गुरु जाम्भोजी गोस्वामी साधु को कहते हैं कि सुपथगामी जीव संसार को छोड़कर मुक्त हो जायेगा।

''झूँठी काया उपजत विणसत, जां जां नुगरे थिती न जांणी।''

गुरु जाम्भोजी कन्नौज के राजा व पांचो सिद्धों को कहते हैं कि यह शरीर झूठा है, उत्पन्न होता है और नष्ट हो जाता है, जहां जहां नुगरे आदमी हैं, वहां-वहां ये बात नहीं समझी जाती -

''निश्चै कायूं वायों होयसैं, जे गुरु बिन खेल पसारी।''

गुरु जाम्भो जी लोहा पांगल को कहते हैं कि यदि बिना गुरु के खेल खेलते रहोगे तो इनकी काया क्षीण होगी, यह निश्चित है।

''जिहिं तुल भूला पाहण तोलै, तिहिं तुल तोलन हीरूं।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं संसार के लोग सत्यनिष्ठ न होने से कुजीव हैं और कुजीवता के कारण कर्म खोटे व कर्तव्य से हीन हैं। नासमझ के कारण वाद और अहंकार करने वाले मरने के पश्चात नरकों में जायेंगे।

''निरफल खोड़ भिरांति भूला, आंस किसी जा मरणो।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि परमात्म तत्व को न जानने के कारण यह शरीर रूपी जंगल निष्फल हो जायेगा। जिसके कारण तुम भ्रांति में पड़ जाओगे और तुम्हारे जीवन की आशा निराशा में बदल जायेगी तथा तुम्हें मरना पड़ेगा।

''निश्चै छेह पड़ेलो पालो, गोवल बास जूं करणो।
गोवल वास कमाय ले जिबड़ा, सो सुरगां पुर लहणा।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि यदि गोवलवास की तरह उदास होकर नहीं रहे तो वहां पर यमदूतों का पाला पड़ेगा और तेरी रक्षा कोई नहीं करेगा। संसार से पार होने की इच्छा हो तो गोवलवास की तरह निर्वासनिक होकर कमाई करो, जिससे सहज में ही स्वर्ग की प्राप्ति हो जायेगी।

''तिहिं अचारी नै चीन्हत कौण, जांकी सहजे चूकै आवागवण''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि नियमों को जीवन में अपनाकर मेरे पास आओ, मुझ आचारवान को पहचानों तो तुम्हारा आवागमन सहज में ही मिट जायेगा।

''जपिया तपिया पोह बिना खपिया, खप खप गया इवांणीं।''

गुरु जाम्भोजी सैंसा भक्त को कहते हैं कि बिना सुपथ पर चलने वाले, जप करने वाले और तपस्वी नष्ट हो गये। अनेक अज्ञानी लोग भी नष्ट हो गये।

''अई अमाणो, पार पहूंचन हारा।''

गुरु जाम्भोजी जमात के लोगों को कहते हैं कि अहंकार रहित थे वे परम तत्व में समा गये, संसार सागर से पार हो गये।

''अहनिश आव घटंती जावै, तेरा सांस सबी कसवारूं।
कइया चन्दा कइया सूरूं, कइया काल बजावत तूरूं।''

गुरु जाम्भोजी सैंसे भक्त से कहते हैं कि दिन-रात तेरी आयु घटती जाती है, तेरे सारे श्वास व्यर्थ ही बीत रहे हैं, मृत्यु से कोई भी नहीं बच सकता। कई बार तो चन्द्रमा और सूर्य देव के ऊपर भी काल की तुर्री बजी है।

''ओ३म्-मैं कर भूला मांड पिराणी, काचै कन्ध अगाजूं।
काचा कंध गले गल जायसैं, बीखर जैला राजों।''

गुरु जाम्भोजी जैतसिंह से कहते हैं कि हे प्राणियों अहंकार के कारण तुम भूले हुए हो, इस नाशवान शरीर से बुरे कार्य करते हो, यह नाशवान शरीर क्षीण होते-होते नष्ट हो जायेगा तथा राजपना बिखर जायेगा।

''जो अति काले ले जम काले तेपण खीणा,
जिहिं का लकां गढ़ था राजों।''

गुरु जाम्भोजी जैत सिंह को कहते हैं कि अन्त में भयंकर यमदूत उन्हें नरक में ले जायेंगे, साधारण मनुष्य तो क्या रावण भी नष्ट हो गया, जिसका लंका जैसा गढ़ में राज्य था।

''रावा रंका राजा रांवा, रावत राजा, खाना खोजां, मीरां मुलका, गंध फकीरां, गंधा, गुरवां, सुरनर देवां, तिमर जू लंगा, आयसां जोयसा, साह पुरोहितां, मिश्रही ब्यासा, रूंखां बिरखां, आव घंटती। अतरा माहे कूंण विशेषों, मरणत एको माघों।''

गुरु जाम्भोजी जैतसिंह को कहते हैं कि राव, रंक, रावों के राजा, रावत, राणा, सरदार, सेवक, जागीरदारी, मीर, गंगा के तट पर रहने वाले फकीर तथा इनके गुरु सुरनर देव, लोहे के लंगे लगाने वाले, नाथपंथी योगी, ज्योतिषी, शाह, पुरोहित, मिश्र, व्यास, रूंख, वृक्ष आदि सबकी आयु घट रही है। इन सबकी मृत्यु में कोई विशेषता नहीं है। मृत्यु का मार्ग तो सबका एक ही है।

''रिण छाणै ज्यूं बीखर जैला, तातैं मेरूं न तेरूं।''

गुरु जाम्भोजी कहते है कि जंगल में पड़े हुए छाणे (उपले) के समान तुम एक दिन बिखर कर नष्ट हो जाओगे, इसलिए यहां कोई भी वस्तु किसी की भी नहीं हैं, न मेरी है न तेरी।

''विसर गया ते माघूं, रक्तूं नातूँ सेतूं धातूं कुमलावै ज्यूं शागू।
जीवन पिंड बिछोवो होयसी, ता दिन दाम दुगाणी।
आडन पैंको रती बिसोवो सीझौ नाहीं, ओपिंड काम न काजूं।
आवत काया ले आयो थो, जातैं सूको जागो।
आवत खिण एक लाई थी पर जातैं खिणी न लागो।
भाग परापति कर्मा रेखो, दरबगै जबला जबला माघौं।
बिरखै पान झड़े झड़ जायला, तेपण तेई न लांगू।
सेतू दगधूं कवलज कलीयों, कुमलावै ज्यू शागूं।
ऋतुबसंती आई और भलेरा शांगू।
भूला तेण गयारे प्राणी, तिहिं का खोज न माघूं।
विष्णु विष्णु भण लेई न सांई, सुर नर ब्रहमा कोऊन गाई।
तातैं जंवर बिन डसीरे भाई, बास बसंतैं किवी न कमाई।
जंवर तणा जमदूत दुहैला, तातैं तेरी कहा न बसाई।''

गुरु जाम्भोजी जैतसिंह को कहते है कि तू परम् तत्व प्राप्ति का मार्ग भूल गया है। यह शरीर रक्त, श्वेत आदि धातुओं के नाते से बना हुआ हरी सब्जी की भांति कुम्हला जायेगा तथा जीवन शरीर से बिछुड़ेगा, उस दिन सांसारिक धन माया शरीर के लिए पराई हो जायेगी। यह शरीर कोई काम काज का नहीं रहेगा। संसार में आते समय जीव शरीर लेकर आया था किन्तु जाते समय तो वह अकेला ही जायेगा। आते समय तो क्षण मात्र लगा था परन्तु जाते समय वह भी नहीं लगेगा। कर्मों के अनुसार भाग्य की प्राप्ति होती है। तथा बैकुण्ठ जाने के लिए पृथक-पृथक मार्ग है। वृक्ष से पत्ते एक बार झड़ जाने पर वे वापस उस पर नहीं लगते। शीत से कमल कली साग सब जल जाते हैं किन्तु बसंत ऋतु आने पर अनेक प्रकार की अच्छी वनस्पति फलने फूलने लगती है। हे प्राणी ! जो लोग भूल में भटकते हुए संसार से चले गये उनकी खोज तक नहीं है। विष्णु नाम का जाप नहीं किया तो मरने पर देवता ब्रह्म आदि कोई भी तेरी गवाही नहीं देंगे। यमदूतों की जबरदस्ती से बचने के लिये भगवत् नाम की कमाई क्यों नहीं की ? भजन के बिना यमदूतों की जबरदस्ती के आगे तेरी एक भी नहीं चलेगा। अत: सावधान होकर परमात्मा से प्रेम करना चाहिये।

''अरथूं गरथूं साहण थाटूं, धूंवै का लहलोर जिसो।''

गुरु जाम्भोजी जमात के लोगों से कहते हैं कि धन सम्पत्ति और सैन्य

समूह आदि पवन के झोंकों से विनष्ट हो जाने वाले कुहरे या धुएं के लोर के समान क्षणिक है।

''चलण चलंतै, बास बसंतै, जीव जिवंतै, काया नवतै,
सास फुरंतै किवी न कमाई। तांतै जंवर बिन डसी रे भाई।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि जब तक तेरी चलन चलती है, वास में बसता है, सुख से जीवन यापन करता है, काया कहना मानती है, जब तक स्वास्थ्य चलता है, तब तक तू कमाई क्यों नहीं करता है, भाई अब मृत्यु तुझे विनष्ट कर देगी।

''जंवर तणा जमदूत दहैला। लेखो लेसी एक जणो।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि यमदूतों के भय से तु कांपेगा तथा प्रत्येक का यमदूत हिसाब पूछेगा।

''ओ३म्- जंवरारे तैं जग डांडीलों, देह न जीती जांणो।

गुरु जाम्भोजी ने संत मण्डली को बताया कि हे शक्तिमान पुरूषों तुमने जगत को जीता, परन्तु स्वयं की देह को नहीं जीत सके।

''काचै पिंडै किसी बड़ाई, भोलै भूल आयांणो।
म्हां देखंता देव दाणु, सुर नर खीणा, बीच गया बैराणो।
कुंभकरण महारावण होता, अबली जोध अयाणो।
कोट लंका गढ़ विषमा होता, कायंदा बस गया रावण राणो।
नौ गृह रावण पाए बन्ध्या, तिस बीह सुर नर शंक भयाणो।
ले जम कालें अति बुधवंतो, सीता काज लुंभाणो।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि कुम्भकरण और महा रावण बहुत ही बलशाली योद्धा थे, किन्तु अज्ञानी थे। अत: उनका विनाश हुआ, लंका जैसे दुर्गम गढ़ में राजा रावण भी कुछ समय तक ही बस सका, नवग्रह रावण के बस में थे, उसके भय से सुरनर सभी भयातुर थे। रावण बहुत बुद्धिमान था, किन्तु सीता पर मोहित होने के कारण उसको भी काल ले गया।

''भरमी बादी अति अहंकारी, करता गरब गुमानो।
तेऊ तो जम काले खींणा, थिर न लाधो थाणो।
काचै पिंड अकाज अफारूं, किसो पिराणी माणो।
साबण लाख मजीठ बिगूता, थोथा बाजर घाणो।
दुनियां राचै गाजै बाजै, तामें कणूं न दाणूं।
दुनिया के रंग सब कोई रांचै, दीन रचै सो जाणो।
लोही मांस बिकारों होयसी, मूरख फिरै आयाणो।
मागर मणियां काच कथीरन राचो, कूड़ा दुनी डफाणों।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि अनेक लोग इस प्रकार भ्रम में पड़े हुए

वाद-विवादी, बड़े अहंकारी तथा गर्व गुमान करने वाले, सभी मृत्यु के आगे नष्ट हो जाते हैं, उनका कहीं ठौर ठिकाना नहीं है। हे प्राणी नश्वर शरीर से अहंकार के वशीभूत होकर तू कुकर्म करता है, ये तेरा अभिमान कैसा, साबुन तथा रंग बिरंगे वस्त्र धारण करने वाली यह देह दबोच ली जायेगी, ये दिखावे बाजरे के डूरे के समान थोथे हैं। दुनिया तो गाजे-बाजे से प्रसन्न रहती है, किन्तु इसमें तत्व रूपी एक भी दाना नहीं है। दुनियां के रंग में तो सभी रंग जाते हैं, पर जो धर्म के रंग में रंगता है, उसे ही सच्चा जानना चाहिए। शरीर के रक्त और मांस में एक दिन विकार उत्पन्न होगा। फिर भी मूर्ख व्यक्ति अनजान बना फिरता है। चीड़ी मणियों और कांच कथीर में मत रमो, दुनिया का आडम्बर झूठा है।

''तिहिं ऊपर आवैला जंवर तणा दल। तास किसो सहनाणों।
ताकै शीष न ओढ़ण, पाय न पहरण। नैवाँ झूल झयाणौ।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि जब तेरी इस देह पर यम सेना आयेगी किन्तु तुझे उसकी कोई पहचान नहीं होगी, उसके सिर पर बांधने और देह पर ओढ़ने को वस्त्र नहीं होंगे, पावों में कुछ पहनने को नहीं होंगे और शरीर पर झूलने वाला झुग्गा नहीं होगा।

''जंवर तणां जमदूत दहैला। मल बैसेला माणो।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि पाप और अहंकार तूझे ले डूबेंगे, यमदूतों से तू डरेगा। इसलिये यमदूतों के सामने तेरा बल नहीं चलेगा।

''तातैं कलीयर कागा रोलो। सूना रह्या अयाणो।''

गुरु जाम्भोजी कहते है कि तेरी मृत्यु के पश्चात सम्बन्धी कौंवों की कांव कांव की भांति रोना पीटना शुरू कर देंगे। जीवात्मा के बिना देह सूना रह जाता है।

''जइया मूल न सीचों। तो जामण मरण बिगोवो।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि जिसने मूल को नहीं सींचा अर्थात् तत्व ग्रहण नहीं किया, उसने लोक और परलोक दोनों गंवा दिये।

''अहनिश करणी थीर न रहिबा। न बच्यों जम कालूं।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि इस संसार में तो निश्चय ही तेरा जीवन स्थिर नहीं रहेगा, तू मृत्यु से बच नहीं सकेगा।

''जा जीवन की बिध जाणीं। जींव तड़ा कछु लाहो होसीं।
मुवा न आवत हांणी।।''

गुरु जाम्भोजी कहते है कि ऐसे लोगों ने ही जीवन की विधि को जाना है जीवन में तो लाभ होगा ही, मृत्योपरान्त भी कोई हानि नहीं होगी।

''कायं रे सीच वनमाली। इहिं बाड़ी तो भेल पड़सी।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि हे बाल नाथ योगी इस शरीर रूपी बाड़ी की सार संभाल क्यों करते हो, यह शरीर रूपी बाड़ी एक दिन नष्ट हो जोयगी।

''जीव तड़ेको रिजक न मेटूं। मूंवा परहथ सारूं।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि जिस शरीर में जब तक जीव निवास करता है, तब तक मैं उसकी जीविका के साधन नहीं मिटाता। पर शुभ कर्म न करने की वजह से मरने के बाद पराये हाथों में सौंप देता हूं।

''भलकै बीर बिगोवो होयसी। दुसमन कायं लकोवो।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि शीघ्र ही आत्मा शरीर से बिछुड़ जायेगी इसलिए अपने शत्रुओं के काम, क्रोध आदि को भीतर क्यों ताले में छिपा रखा है।

''पवन बंधान काया गढ़ काची। नीर छलै ज्यूँ पारी।।
पारी बिनसै नीर ढुलैलो। ओपिंड काम न कारी।
काची काया दृढ़ कर सीचों। ज्यूं माली सींचै बाड़ी।।
ले काया बासंदर होमो। ज्यूँ ईंधन की भारी।।
शील स्नाने संजमें चालो। पाणी देह पखालीं।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि पानी से भरे हुए मिट्टी के घड़े की भांति काया कच्ची है। इसी में प्राण वायु बंधी हुई है। घड़े के फुटने पर उसमें भरा हुआ पानी बह जायेगा, इसी प्रकार शरीर से प्राण निकल जाने पर यह शरीर भी किसी काम का नहीं होगा। जैसे माली बाड़ी को सींचता है, वैसे ही कच्ची काया से दृढ़तापूर्वक साधना करनी चाहिए। जिस प्रकार ईंधन के गट्ठर को अग्नि से जला दो। यह शरीर पानी की मस्क के समान कभी भी खाली हो सकता है। इसलिए शील रूपी स्नान करके संयम पर चलो।

''घर आगे इत गोवल बासो। कूड़ी आधो चारी।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि जीव का वास्तविक घर तो आगे बैकुण्ठ है, यहां इस संसार में तो गोवलवास मात्र है, यहां का आधोचार झूठा है।

''आज मूवा कल दूसर दिन है। जो कुछ सरै तो सारी।।
पींछे कलीयर कागा रोलो। रहसी कूक पुकारी।।
ताण थकै क्यूं हारयो नाहीं मुरखा अवसर जो लेहारी।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि मरने से पहले जो कुछ करना है, शीघ्र करो, मरने के बाद दूसरे दिन आ जाते हैं, अर्थात् अपने माल व धन के स्वामी और पुरूष हो जाते हैं। इस कलयुग में मरने के बाद तो कौओं की कांव-कांव की भांति व्यर्थ का रोना पुकारना ही रहेगा। जब तू मन को हराने में समर्थ था, तब तुमने इसको क्यों नहीं कराया। हे मूर्ख उस अवसर को लेकर तू हार गया।

''कहे सतगुरु भूलमत जाइयो।। पड़ोला अभै दोजखे।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि तब तक गुरु का आसन समराथल पर विद्यमान रहेगा। मैं सतगुरु हूं, तुम्हें कह रहा हूं कि मेरी बात भूल मत जाना। यदि भूल गये तो नरकों में पड़ोगे।

''दोजख छोड़ भिस्त जे चाहो। जो कहिया करो हमारा।।
इन्द्रपुरी बैकुण्ठे बासो। तो पावो मोक्षहिं द्वारा।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि हे लोगो यदि नरक का त्याग और स्वर्ग की प्राप्ति चाहो तो मेरा कहना मानो। इससे इन्द्रलोक या बैकुण्ठ वास मिलेगा, और मोक्ष की प्राप्ति होगी।

''चरणभि रहींया लोयण झुरिया। पिंजर पड़यो पुराणे।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि वृद्धावस्था में व्यक्ति चलने फिरने से रह जाता है। आंखों से पानी बहने लगता है और शरीर पुराना पड़ जाता है।

"तेरी कुड, काचीं लगवाड़ घणों छै। कुशल किसी मन भाई।।"

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि तेरा शरीर नाशवान है और झंझट ज्यादा है। हे भाई ! फिर कुशल किस बात की है।

"भूली दुनियां मर मर जावै। ना चीन्हों सुरराई।।"

भूल में पड़ी हुई दुनिया बार-बार मरती है, देवाधिदेव विष्णु को नहीं पहचानती।

''भूला प्राणी विष्णु जंपो रे। ज्यूं मौत टलैं जिरवाणें।।

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि हे भूले हुए प्राणी ! विष्णु का जप करो, जिससे मृत्यु और आवागमन से छुटकारा मिले।

''हरि नारायण देव नरूं।। आशा सास निरास भईलो।
पाईलो मोक्ष दवार खिणूं।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि हरि ही नारायण, देवता तथा श्रेष्ठ नर है, सभी आशाओं को छोड़कर निराश होंगे, तो एक क्षण में मोक्ष द्वार प्राप्त होगा।

"और कूं जीम कर आप कूं पोखणा।"
जिहिं की रूवा ले दीजसीं। दोरै घुप अंधारूं।।''

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि वे लोग जो वन्य जीव धारियों की हत्या करते हुए अपना पोषण करते हैं। उनके जीव को भयंकर अंधकारमय नरक का कष्ट दिया जायेगा।

''ओ३म् विष्णु-विष्णु तू भणरे प्राणी, इस जीवन के हावै।।
क्षण-क्षण आव घटंती जावैं। मरण दिनों दिन आवैं।।
पालटीयों घर कांय न चेत्यों। घाती रोल भनावै।।

गुरु जाम्भोजी ने रतना राड़ तो यह शब्द सुनाया और कहा कि क्षण क्षण आयु घटती है और मृत्यु नजदीक आती है। ये शरीर बदलता रहता है, फिर भी तू सचेत क्यों नहीं हो सका। अब काल ने तेरे शरीर पर प्रभाव जमा लिया है।

❍ **ओमप्रकाश बिश्नोई**
शोधार्थी (इतिहास विभाग), महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

नारी सशक्तिकरण के विषय में गुरु जाम्भोजी का वैश्विक चिंतन

वर्तमान साहित्य में स्त्री विमर्श एक प्रमुख विषय के रूप में पत्र-पत्रिकाओं, शोधग्रंथों, सेमीनारों व व्याख्यानों के माध्यम से चर्चा में है। देह से मुक्ति की अवधारणा इसके मूल में है, स्त्री को एक स्वतंत्र एवं समृद्ध मानसिकता की अधिकारिणी मानकर देखने की सोच विकसित हुई है, क्योंकि समाज ने धर्मसत्ता व राजसत्ता के साथ गठजोड़ करके स्त्री को दैहिक खांचों में जकड़ दिया था। जो विषय आज के साहित्यकारों ने साढ़े पांच सौ वर्ष पहले ही अपना मंतव्य स्पष्ट कर दिया था। यह बात अलग है कि उनकी विचारशीलता को परखने का समालोचकों के पास समय नहीं था या अनुयायियों की गम्भीरता में कमी थी।

मैं इस शोध पत्र के माध्यम से गुरु जाम्भोजी के नारी विषयक चिंतन को साहित्यिक गरिमा के अनुरूप प्रस्तुत करना चाहता हूं, क्योंकि विश्व साहित्य में तथ्यों एवं तर्कों की वैज्ञानिक अवधारणाएं जितनी स्पष्ट एवं सटीक होंगी, विषय के प्रति उतना ही बड़ा जनमत तैयार होगा। मैं यहां गुरु जाम्भोजी की वाणी के उस स्वरूप को रख रहा हूं जो साहित्यिक दृष्टि से समालोचना का अधिकारी है, लेकिन जिसे हमारे समीक्षकों ने एक पेहरे में समेटकर रख दिया है। इन समालोचनाओं के खतरों से रूबरू हुए बिना हम उनके विचारों का प्रसार इस संचार के युग में नहीं कर सकते। आपको विदित होगा कि अकेले कबीर पर कितने आरोप, प्रत्यारोप लगे, कई समीक्षकों ने तो उन्हें कवि मानने तक से इंकार कर दिया, तो कई समीक्षकों ने समस्त भक्ति परक रचनाओं को कविता की परिधि से बाहर कर दिया। पूरे भक्तिकाल में तीन नाम सबसे बड़े हैं, एक कबीर है, दूसरे गुरु नानक और तीसरे गुरु जाम्भोजी, लेकिन भक्तिकाल में समीक्षकों ने गुरु जाम्भोजी पर एक बार भी दृष्टिपात नहीं किया। इसका क्या कारण रहा, मैं नहीं जानता, लेकिन इतना अवश्य कहना चाहता हूं कि हमने साहित्यिक मार्ग से आगे बढ़ने की अपेक्षा राजनैतिक मार्ग से आगे बढ़ने की भूल कर दी, परिणाम स्वरूप राजनीति ने धर्मचर्चाओं, धर्मस्थलों, मेलों, साथरियों पर कब्जा कर लिया। साहित्यिक शोध करने वाले लेखकों, चिंतकों, कवियों की बिरादरी मुट्ठीभर रह गई, जो थे वे भी आर्थिक कारणों से आगे नहीं बढ़ पाए। जो क्षण को पकड़ता है, वही सच्चा साधक होता है। परिस्थितियों के सामने ताल ठोककर खड़े होने वालों में कबीर भी गुरु जाम्भोजी के आगे नतमस्तक दिखाई पड़ते थे -

''अठगी ठंगण, अदगी दागण, अगजा गंजण, ऊंनथ नाथन
अनु नवावन, काहिकौ मैं खैंकाल कीयो।''(सबद-57)

नारी शक्ति के प्रति भक्तिकाल में संतों का स्पष्ट चरित्र व मंतव्य दिखाई नहीं पड़ता। वे भिन्न-भिन्न प्रसंगों में विरोधाभासी बातें कहते हैं लेकिन गुरु जाम्भोजी में दुराव-छिपाव कुछ नहीं, जो है स्पष्ट है। कुछ संतों के उदाहरण देखें -

दादू कहते हैं कि नारी पुरुष की व पुरुष नारी का स्वाभाविक शत्रु है -

''नारी बैरनि पुरुष की, पुरुषा बैरी नारि।''

''बाबा-बाबा कहि गिलै, भाई-भाई कहि खाय
पूत-पूत कहि पी गई, पुरुषा जनि पतियाई।।'' (दादू, पृ. 249)

भारतीय संस्कृति के सशक्त हस्ताक्षर तुलसी भी कहीं-कहीं नारी विषय सोच में विरोधाभासी बातें कह जाते हैं जैसे -

ढोल गवार सूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी (मानव 5/59/3)

''जिमि सुतंत्र होइ बिगर नारी
राखिअ नारि जदीप उरमांहि, युवती शास्त्र नृपति बस नाहीं''

मलिक मोहम्मद जायसी नारी को मंदबुद्धि की संज्ञा देते हैं (पद्मावत, 137, 621) वे तो इस बात पर भी बल देते हैं कि जमीन, नारी, पृथ्वी ताकत के आधार पर जीती जाती हैं।

तिरिया पुहुमि खरग कैं चेरी जीतै खरग होइ तेहि केरी। (पदमावत, 618)

कबीर जैसे विद्रोही छवि तो अपने अनुभवों को इन सबसे अधिक प्रखर रूप में व्यक्त करते हैं वे तो नारी के संग से पूरी तरह बचने की सलाह दे रहे हैं।

''नारी की झांई परे अंधा होत भुजंग
कबीरा तिनकी कवणं गति, जो नित नारी के संग।''

रैदास जी कहते हैं -

''कहा भयौ बहु पाखंड कीयै, हरि हिरदै सपनै न जान
ज्यूं दारा बिभयाचारिनी, मुख पतिव्रता जीय आन।''

कबीर कहीं-कहीं पर में जो कुछ कह रहे है। वह हिला देने वाली बात है -

नारि कहौ कि नाहरी, नख सिख से यह खाय
जल बूडा तो उबरै, भग बूडा बहि जाय। (संतबाणी - 1 पृ. 58)

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन संतों ने नारी को किस रूप में देखा था, कारण जो भी रहा हो पर दृष्टि के विस्तार का अभाव इन सभी में स्पष्ट दिखाई देता है। वहीं गुरु जाम्भोजी संयम की साधना के बल पर आसुरी वासना को परास्त करने पर बल देते हैं। वे पलायन नहीं करते अपितु नारी के प्रति ऐसी संवेदना रखते हैं कि समस्त प्रकृति में उसी के रूप को स्थापित कर देते हैं।

नाथों और सिद्धों ने जी भरके नारी को कोसा था। परिणाम ये हुआ कि उनकी वाणी कैकट्स के कांटों का रूप लेकर भारतीय संवेदनशील मस्तिष्कों में

गड़ गई ऐसी शुष्कता को हमारे यहां स्थान नहीं, किसी भी समाज की कल्पना नारी के बिना सम्भव नहीं, जो जितना अधिक उदार चरित्र रखता है। वही समाज को उतनी ही स्पष्ट दिशा दे सकता है। गुरु जाम्भोजी के इस पद में यह धारणा स्पष्ट हो जाती है, जब वे अद्वैतवाद् को स्त्री-पुरुष के रूप में स्पष्ट करके यह बता रहे हैं कि जब भेद सृष्टा ने नहीं किया तो तूं भेद करने वाला कौन होता है - देखें -

तईया सासूं तईया मासूं, तइया देह दमोई,
उत्तम मध्यम क्यों जाणीजै बिबरस देखो लोई। (सबद-50)

मैं यहां गुरुनानक की वाणी का उदाहरण देकर स्पष्ट करना चाहता हूं कि गुरु जाम्भोजी के नारी विषयक दृष्टिकोण के अगर कोई आस-पास फटकता है तो वे नानक ही हैं, वे कहते है। कि -

''भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान
भंडहु ही भंडु उपजै भंडै बाझु न कोई
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ।''

आसा दी वार टीका (पृ. 105)

अर्थात् स्त्री की मृत्यु के बाद भी उसकी तलाश रहती है। उस स्त्री को बुरा क्यों कहें जिसने बड़े-बड़े प्रतापी राजाओं को जन्म दिया। स्त्री ही स्त्री को जन्म देती है बिना उसके कोई पैदा नहीं हो सकता केवल ब्रह्म ही है जो उससे परे है। लोकतत्व के साथ जिसका जितना गहरा रिश्ता होता है वह उतनी ही अधिक दिव्य दृष्टि रखता है। जाम्भोजी आध्यात्मिकता के कैलाश से बीहड़ जंगलों की घनी पगडंडियों तक ही यात्रा करते हैं। उनके लिए एक राजा से लेकर एक साधारण जीव तक के अस्तित्व का मूल्य एक जैसा है -

किणरी खातिर छाली रोसो किणरी गाडर गाई। - सबदवाणी-8

यहां सिर्फ जीव हत्या का निषेध ही नहीं स्त्रीतत्व के प्रति संवेदना का ज्वार भी है। गुरु जाम्भोजी की साथरियों पर उनके प्रवचन सुनने में बड़ी संख्या स्त्रियों की होती थी। उस काल में ऐसा वैज्ञानिक एवं सार्वभौमिक दृष्टिकोण उन्हें भक्ति साहित्य के गिने चुने संतों में स्थापित रहता है। खेजड़ली बलिदान का पहला पन्ना एक स्त्री के रक्त से लिखा गया, आखिर कोई तो वजह होगी। बात स्पष्ट है कि स्त्रियों में चेतना का विस्तार स्वयं गुरु महाराज ने किया। उन्हें पुरुषवादी कट्टरता व अहंकार से उबारा। इसके लिए पुरुषवादी मानसिकता को खूब डांट फटकार गुरु जाम्भोजी ने जगह-जगह लगाई है। वे स्त्री के प्रति पूज्य भाव रखते हैं, लेकिन जब डांटने की बात आती है तो पुरुष को साथ लेकर डांटते हैं -

''असध पुरुष विषलीपति नारी

बिण परचै पार गिरांय न जाइ।''(सबद-27)

गुरु जाम्भोजी ने अपनी वाणी में हमारे पूर्ववर्ती धर्मग्रंथों वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत एवं सिद्धों व नाथों के प्रसंगों के साथ-साथ हजरत मोहम्मद साहब की शिक्षाओं को प्रसंगानुसार उठाया है। गीता उनका प्रिय ग्रंथ है क्योंकि उसमें माया से मुक्ति एवं कर्म से हेत की बात कही गई है। उनके प्रिय पौराणिक पात्रों में सीता श्रेष्ठ है क्योंकि वह शील, शांति, सौन्दर्य, दया, करूणा, त्याग का प्रतिरूप है। उसकी रक्षा होनी ही चाहिए इसलिए समस्त शक्तियां (राम, लक्ष्मण, हनुमान, गुरूड़, विभीषण, अंगद) उसे बचाने में जुट जाती हैं। यहां तक की बंदर भालू, जंगली जातियां भी सीता के साथ खड़ी हैं। क्या यह गुरू जाम्भोजी का स्त्री के प्रति समर्पण का दृढ़ प्रमाण नहीं। डॉ. विद्यानिवास मिश्र अपने निबन्ध ''राघवः करुणो रसः'' में इन्हीं भावों को व्यक्त करते हैं, जो ऋृत के साथ बंधा होता है वह निरपेक्ष भाव से अपनी बात कहता है। एक उदाहरण देखें -

फेरी सीत लई जदि लंका तदि म्हैं ऊंथे थायों।
दहशिर का दश मस्तक छेद्या बाण भला निरतायों।'(सबद-29)

ऐसी जीवटता, ऐसा समर्पण और ऐसी अपने आपको होम करने की प्रवृति गुरु जाम्भोजी को हिन्दी साहित्य के इतिहास में भला कब तक उपेक्षित रखेगी। साहित्य जगत् में स्त्री ने निर्वासन भोगा है, कभी दरबार की वस्तु बनाई गई, कभी बाजार की, कभी राजाओं ने भोग की लालसा में मानवता को तलवारों और घोड़ों के टापों से रौंद दिया। स्त्री को एक सम्पूर्ण मानवी रूप में स्वीकारने का साहस बिरले महापुरुषों ने दिखाया है उनमें गुरु जाम्भोजी की तान सबसे ऊंची और निराली है -

''तउवा बाण जू सीता कारिण लछमण खैंच्या
अवर भी खैंचत बांणौ।''(सबद-58)

सीता स्वयंवर में केवल धनुष टूटना ही मुख्य नहीं है अपितुं वहां स्त्री के स्वाभिमान के आगे राजशाही का पराजित होना भी झलकता है। जिस स्त्री को समाज में भोग की वस्तु माना गया, उसे पाने के लिए अहंकारी पुरुषत्व की मिट्टी पलीत होना जरूरी था। यह प्रसंग गुरु महाराज का प्रिय प्रसंग भी है। जाम्भोजी की वाणी में स्त्री कहीं भी याचक या दया की पात्र नहीं है वह तटस्थ हैं, साहस व उत्कट जिजीविषा की धनी है। उसके प्रति निरादर क्षमायोग्य नहीं।

जाम्भोजी की वाणी में स्त्री के शील व पवित्र स्वरूप को इस रूप में उद्घाटित किया गया है कि जहां-जहां पुरुष की विराटता व पौरुष वर्णित किया गया है साथ-साथ स्त्री सहधर्मी स्वरूप में पग-पग पर खड़ी दिखाई देती है -

''तउवा सीर जो ईश्वर गौरी और भी कहियत सीरूं
तउवा लाज जो सीता लाजी और भी लाजत लाजूं।''- सबद-65

वे कमाल के युगपुरुष है । साधुता व विचारों की इतनी ऊंचाई पाकर भी अपनी जमीन नहीं छोड़ते। समस्त प्रकार की श्रेष्ठता को लात मारने का साहस व स्वयं को साधारण से साधारण मानने का लगाव जाम्भोजी को कबीर से भी बड़ा बना देता है, जैसे –

म्हे आप गरीबी तन गूदड़ियो, मेरा कारण किरिया देखो। – सबद–115

हरी ककहड़ी मंडप मैंडी, जहां हमारा बासा – सबद–73

यही सरलता, यही संवेदना, यही आंचलिकता अपने माता–पिता के प्रति भी गुरु जी में नजर आती है –

बाप जाणै मेरे हलियों टोरे, कोहर सींचण जाई
माय जाणै मेरे बहूटल आवै बाजै बिरद बधाई[70]

गुरु जाम्भोजी ने पाखंडों का डटकर विरोध किया था क्योंकि इनका सर्वाधिक शिकार स्त्रियाँ ही होती हैं। भूत, प्रेत, डाकिन, तंत्र, मंत्र के नाम पर आज भी समाज बेहतर स्थिति में नहीं है तो फिर उस युग में इसकी आड़ में दैहिक शोषण भी स्त्रियों का सर्वाधिक हो रहा था अत: वे कहते हैं –

भूत परेती सब जाखा खैंणी, अै पाखंड परवांणौ।''[71]

गुरु जाम्भोजी की वाणी में स्त्रियों के प्रति आस्था तो कूट–कूट कर भरी ही है साथ ही कुमार्ग से दूर रह कर जीवन यापन करने की नेक सलाह भी दी गई है –

त्रीया त्रिषणां पाषणीं, तासूं प्रीति न जोड़ि
पैड़ी चढ़ि पाछां पड़ै, लागै मोटी खोड़ि (कबीर)

गुरु जाम्भोजी के स्त्री को लेकर जो विचार आए हैं वह निश्चित रूप से उस समय की सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए बेहद परिपक्व हैं क्योंकि जो काल से प्रभावित नहीं होता वही काल को बदलता है। गुरु जाम्भोजी ने स्त्रियों के प्रति नकारात्मक वैचारिकता के स्थान पर बराबरी के अधिकार को स्थापित किया है। कोई धर्मराज अगर युधिष्ठिर है तो उसे जन्म देने वाली मां को कैसे भुलाया जा सकता है, दशरथ अगर महाराज है अपने पुत्र को वन में भेज देते तो देवकी के त्याग को कैसे भुलाया जा सकता है। गुरु जाम्भोजी ने आश्चर्य चकित कर देने वाले समन्वय को निभाया है –

दशरथ सो कोई पिता ना देख्यो देवलदे सी माई
नव क्रोड़ी राव युधिष्ठिर ले उतरिया धन–धन कुंतीमाई।

गुरु जाम्भोजी की वाणी में स्त्री विमर्श इतना तार्किक है कि उसके आगे सारे मिथक टूट जाते हैं। लेकिन हमारे साहित्य जगत के बड़े–बड़े मठाधीश स्त्री विमर्श को कभी मार्क्सवाद तो कभी अस्तित्ववादी चिंतक सार्त्र में खोजते हैं। मेरा

विनम्र आग्रह है कि वे एक बार गुरु जाम्भोजी की वाणी का अध्ययन करके देखें, उनकी सारी धारणाएं टूट जाएंगी, क्योंकि जाम्भोजी के दरवाजे उन सबके लिए खुले हैं जिन्हें वक्त ने ठुकराया है –

सोक दुहागण तेपण पूछै, ले ले हाथ सुपारी
बांझ तिरिया बहुतेरी पूछै किसी परापति म्हारी। – सबद-85

वे तो नारी को समस्त जगत् के स्वामी का ही प्रतिरूप मानते हैं। इसके उदाहरण पूरी जाम्भाणी साहित्य में देखने को मिलते हैं। बिश्नोई लोकभजन, लोकगीत, लोकपरम्पराएं जाम्भोजी की चौकियां इसके, जीते जागते प्रमाण हैं क्योंकि ज्ञान बिना अनुभूति के नहीं आता। अत: निश्चित ही स्त्रियां जाम्भोजी की शरण में रही थी। चौकियों, साथरियों पर भजनों की पूरी शृंखला व रात जगाने की परम्परा इसके उदाहरण हैं। इसी प्रकार तीस दिन का सूतक व रजस्वला धर्म निभाने के पीछे गुरु जाम्भोजी की नारी विषय दृष्टि का सबसे अनूठा उदाहरण है क्योंकि इन दोनों ही स्थितियों में नारी को मानसिक व शारीरिक पीड़ा से गुजरना पड़ता है। अत: उसे चौके चूल्हे से दूर रखा जाए अर्थात् गृहकार्य पुरुष या कोई अन्य स्त्री करे। स्त्री की रक्षार्थ वे कुछ भी कर गुजरने को तैयार हैं यह चिंतन भक्ति साहित्य में अन्य किसी संत में देखने को नहीं मिलता।

तीन भवन की राही रक्मण मतूंत थल शिर आण बसाऊं
सीत बहोड़ी लंका तोड़ी ऐसो कियो संग्रामो। सबद-116

गुरु जाम्भोजी परम ब्रह्म स्वरूप के साथ-साथ शौर्य एवं वीरता के गुणों से ओत-प्रोत भी है। यह बेबसी का गान नहीं, अपितु अखंड व प्रचंड सत्य की स्थापना का संग्राम है जो स्वत: स्फूर्त है –

भक्तिकाल के गड़गड़ाते आकाश, छिन्न-भिन्न होती सांस्कृतिक मान्यताएं, आक्रमणकारियों की मनचाही ठिठोलियां एवं सायं-सायं करती झुलसा देने वाली लू के उस काल में गुरु जाम्भोजी की वाणी सावन की ठंडी फुहारों जैसी थी। जिसमें समराथल से गूंजे शंख की ध्वनि सबसे अनोखी और विलक्षण थी। भला यह किसे ना मोह लेती जो भी आया उन्हीं का होकर रह गया। बड़े-बड़े राजा, जमींदार, ठाकुर, लुटेरे सब उनकी शरण आते गए। जिसका चरित्र ऊंचा होता है, वह मन को जीत लेता है, परन्तु जिसका समर्पण व भक्ति ऊंची होती है वह जगत् को जीत लेता है।

जाम्भोजी अपने युग के पुरोधा थे। कबीर, नानक, रैदास, दादू, रज्जब, पलटू, भीखा, नामदेव, दरिया साहब, मलूकदास, मीरां, तुलसी, सूर, बुल्लेशाह, बाबा फरीद, जैसे रत्नों के बीच गुरु जाम्भोजी की वाणी को परखने में अगर समीक्षकों ने अधिक देर की तो यह उनके रचनाधर्म के साथ-साथ मानव धर्म का भी अहित होगा। जाम्भोजी का पूरा जीवन त्याग, तप, संघर्ष, साधना, वैराग्य से

परिपूर्ण है वे कहीं भी झुके नहीं, कहीं भी टूटे नहीं जो सिकंदर लोदी कबीर को तालाब में फैंकवा देता है, वहीं दिल्ली का बादशाह गुरु जाम्भोजी की शरण में आ बैठता है। इस साहस, इस प्रताप को हम भुला नहीं पाएंगे बस जाम्भोजी जैसा हौसला पालने की जरूरत है जो अपने मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए जीते जी मर जाने को तैयार है –

''जीवत मरो रे जीवत मरो
जिन जीवन की बिध जाणी।'' – सबद-98

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – शुक्ल
2. उत्तर भारत की संत परम्परा – परशुराम चतुर्वेदी
3. जाम्भोजी की वाणी – सूर्य शंकर पारीक
4. कबीर वचनामृत – डॉ. विजेन्द्र स्नातक
5. सामाजिक मूल्य एवं सहिष्णुतावाद – सावित्री चंद्र
6. साहित्यिक निबंध – डॉ. त्रिभुवन सिंह
7. रैदास बानी – रैदास
8. शब्दवाणी – गुरु जाम्भोजी
9. आसा दी वार – प्रो. साहिब सिंह
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
11. जायसी ग्रंथावली सटीक – डॉ. श्री निवास

❍ **सुरेन्द्र सुन्दरम्, व्याख्याता हिन्दी,**
985, वार्ड नं. 12, सुखवंत सिनेमा रोड, पु.आ.,
श्रीगंगानगर (राज)

गुरु जांभोजी रो अहिंसा विसयक वैश्विक चिंतन

बिश्नोई पंथ मांय अहिंसा घणी महताऊ है। इणरो प्रमुख कारण पंथ रा प्रवर्तक जांभोजी। जांम्भोजी री टैम दिल्ली मांय सिकन्दर लोदी रो राज हो। राजस्थान रो अजमेर अर नागौर भी मुसलमान शासकां रै आधीन हा। मुसलमाना रै राज मांय गौ हित्या अर जीव हित्या जोंरा पर चालै ही। इणां रै अलावा राजा महाराजा भी शिकार रा शौकिन हुवणै रै कांरण वन्य प्राणिया री हित्या कर रैया हा। जांभोजी इण व्यापक जीव हत्या नैं देखर आं रै विरुद आवाज उठाई। जीवां री हित्या करण वाला नै जांभोजी अनेकूं तर्क देयर समझावण रौ प्रयास करयौ। सबदवाणी रा अनेकूं सबद इणी उद्देश्य स्यूं संबंध राखै है। गौ हित्या करण वाला मुसलमानां नै फटकारता हुया जांभोजी कैवे है कि –

चरि फिरि आवै सहजि दुहावै तिंह का खीर हलाली।
तिंहकै गलै करद क्यों सारो?
थे पढ़ि गुणि रहिया खाली।

जिका पसु दिन भर जंगल मांय घास चरणै रै बाद सिंझयां नै घरां आयर सरलता स्यूं थानै दूध देवै है। वांरौ दूध पीवणो ही उचित है, वारै गल पर छूरी चलावणो अनुचित है। इण आधार पर गुरु जांभोजी नै जीव–हत्या करण वाला ज्ञानी लोगां नै अज्ञानी मान्या है। ज्ञानी मिनख दोस रै आधार पर अपराधी नै दण्ड देवै है। पर जीव–हत्या करण वाला इण री परवा नीं करै। ई वास्त गुरु जाम्भोजी कैवे है–

रे विनहीं गुन्हैं जीव क्यूं मारौ?
थे तकि जांणों तकि पीड़ न जाणौ।

बिना किसी दोस थे जीवां री हत्या करो? थे जीवा नै मारणो ही जाणो हो, पर वांरी पीड़ा नै नीं जाणों, सगला सरीरधारी प्राणियां नै पीड़ री अनुभूति अेक जिसी ही हुवै है। पंर अणबोल प्राणी आपरी पीड़ नै अभिव्यक्त नीं कर सकै। इणी आधार पर गुरु जाम्भोजी लोगां नै समझाया है कि

'सूल चुभीजै करक दुहेली तो है है जायो जीव न घाई॥'

थारे सरीर मांय छोटो सो कांटो गुड जावै जद थानै घणी असहनीय पीड़ा हुवै है पण थे जिण रो सिर बाढ़ौ उण री के दसा हुवंती हुवैला? बीं पीड़ नैं ध्यान मांय राखता थकां किणी पैदा हुयोड़ै जीव री हित्या मति करौं।

गुरु जांभोजी महाराज काजियां नैं समझावंता केवै है कि कृषाण (करसा) नैं भाई सूं बलद घणो उपयोगी है। वो हर टेम उण रै काम आवै है। भाई किणी टेम किणी काम रैवास्ते इकांर भी कर देवै पर बलद बापड़ो पर किणी भी काम रै वास्ते ना नीं करै। ऐडै उपयोगी पशु रो वध करण वाला वास्तव में अज्ञानी है।

भाई नाउं बलद पियारो
तिंहकै गलै करद क्यौं सारो ?

जाम्भो जी करम नैं सबसूं अधिक महताऊ बताओ है वारैं अनुसार मिनख रा आछा करम कदै निरर्थक नीं जावैं अर बुरा करमा रो दण्ड भी मिनख नैं निश्चित रूप स्यूं भुगतणो पड़ै है। जीव हत्या स्यूं बढ़ कर कोई बुरो करम नीं हौय सकै। इण वास्ते गुरु जाम्भो जी कैवे है कै –

जीवां ऊपरी जोर करीजै
अंति काल हुयसी भारी ॥

संसार मांय सगला प्राणियां रौ सरीर अैक जिस्यो है। अर सगला नैं अेक जिसी पीड़ हुवै है। सगला प्राणियां नै आप आप रो सरीर प्रिय लागै है। अर भगवान जिण भांत मिनख रै सरीर नै बणायो है बियां ही अन्य सगला प्राणियां रै सरीर नैं बणाया है। अन्य प्राणियां स्यूं इती समानता होवणै पर भी मिनख अन्य प्राणियां री हत्या करै है जद जाम्भो जी महाराज वांनै फटकारै है–

रे रे पिंडस पिंडू
निरह जीव क्यूं खंडू ?
ताछै खंड विहंडूं
घड़ीये से घमंडू ॥

सरीर रै प्रति अेक जिसो लगाव हुवणै कारण कष्ट री समान अनुभूति हुवणै पछै भी जद मिनख आपरै सरीर रै पालन पोषण रै वास्ते अन्य प्राणियां री हित्या करै है तो ओ भोत अनुचित है, जाम्भो जी रै अनुसार ऐड़ा अनुचित करम करण वाला नै भगवान रै द्वारा अंधेर नरक मैं कष्ट दियो जावैला –

और कूं जिबह करि आप कूं पोषणां
जांकी रवाहै दीजसी दोरे घुप अधारुं

आपरै प्राणां री रिछया खातिर दुजा प्राणीया रै जीवण नैं नष्ट करणो मिनख रो सबस्यूं बड़ो स्वार्थ है अर इणी स्वार्थ स्यूं प्रेरित होय र जद मिनख अखाद्य नैं खावै है तो वो निश्चित रूप स्यूं जमदूता रै द्वारा घोर नरक मांय लेज्याया जावेला।

जीव विणासै लाहै कारणे लोभ सवारथ
खायबा खाजे अखाजों

गो सेवा अनन्त महताऊ है। जांभो जी गो–वध करण वाला नैं गउ सेवा रो महतव अनेकूं बार बतायो है, वारे गुजब जे गाय री हित्या करणो आछो होवंतो तो क्यूं राम जी गायां नैं दान में देवंता अर क्यूं किरसण अर करीम वांनै जंगल मांय चरावंता ?

गऊ विणासौ काहे कै तांई

राम रायं सूं दीन्ही दानी
कान्ह चराई रेनबे वानी
कांहे काजै गऊ बिणासो,
तो करीम गऊ क्यूं चारी?

सगला जीवां मांय परमात्मा रो अंस, आत्मा रो निवास है। इणीं ज वास्ते परमात्मा नै सगला जीव समान रूप स्यूं प्यारा है। अर परमात्मा जद जद भी इण संसार माय अवतार लियो है तद-तद वांरौ प्रेम अभिव्यक्त हुयौ है। इणीज प्रेम रै कारण वां कई वार जंगल मांय पसु चराया। गुरु जांभो जी नै सबदवाणी रै अेक सबद मांय इण बात री ओर संकेत करयो है।

त्रेता जुग मां हीरा बिणज्या, दवापुर गऊ चराई।
वृंदावन मां बंसी बजाई, कलि जुग चारी छाली।

अेक ओर जद मिनख भगवान रा प्रिय प्राणियां रो वध करै है अर दुजी ओर भगवान रो नांव समरण करै तद इण रो कोई लाभ नीं रैवै। इस्यां मिनखां स्यूं भगवान कदै ही राजी नीं हुवै। गुरु जांभो जी रै अनुसार इस्यां लोगों रै लियै जीव-हित्या बंद करणों ही भगवान री भगती है।

जोर जरब करद जो छाडौ तो कलमा नांव खुदाई।

जांभोजी मिनख मातर रो ही नीं प्राणी मातर रो कल्याण चावता हा। ओ ही कारणहो जिको कुछ कैयो वो प्राणी मातर नै ध्यान में राखर कैयो है वे किणी रौ अहित नीं चावतां हा। इणीज कांरण वा प्रत्येक प्राणी री हित्या रो घोर विरोध करयो है। जीवं-हत्या नै रोकण सारु वां कैवल उपदेस ही नीं दियां, सिकन्दर लोदी, मल्लू खां अजमेर रा नवाब, अर कर्नाटक रै नवाब शेख सदो स्यूं मिल र वां सू जीव हत्या बंद करवाणे री प्रतिज्ञा करवाई। आज रै दिन तांई जिका पसु धन अर वन्य प्राणी बच्योडा है वां रो भोत कुछ श्रेय गुरु जांभोजी रै उपदेसां अर वांरा अनुयायियां री जीव रिछया री भावना नै दियौ जा सकै है।

जांभो जी करम रै साथै वचन स्यूं भी हिंसा नीं चावंता हां। किणी नै बुरी बात कैय र मानसिक कष्ट पहुंचाणो भी हिंसा है। बिश्नोई धरम रै नियमां में झूठ नीं बोलणो निंदा नीं करणों अर वाद विवाद स्यूं अलगो रैवणो जेड़ा नियम बताइज्या है। **'पाणी वाणी ईधणी, दुध इतरा लीजे छाण'** रै माध्यम सूं भी करम अर वचन सूं हिंसा नीं करणे री ओर संकेत करीज्यो है। पाणी अर जलावण वाले ईधन मांय भी जीव हुवै वानै बचावण सारु पाणी नै छाण र अर ईंधन नै झाड़ प्रयोग मांय लयावणो चाईजै। वाणी नैं छाण बोलण रो मतलब मिनख नै सोच समझ बोलणो चाइजै। इसी कोई बात किणी नै नीं कहणी चाईजै, जीण सूं दूजै ने पीड़ हुवै। वाणी सूं दूजै ने कष्ट पहुचाणो हिंसा ही है। इणीज आधार पर अहिंसा री रिछया खातर वाणी में

छाणनै री बात कैयीजी है।

गृहस्थ जीवन यापन करतो मिनख अहिंसा रौ भली भानं पालण कर सकै है। मिनख पर स्वार्थ रै कारण रै अहिंसा नै छोड़तो जावे। अर हिंसा री ओर बढ़तो रैवे। झूठ बोलणो मिनख रै स्वारथ रो प्रमाण है। झूठ बोलणै स्यू मिनख रो स्वारथ पुरो हुवै है। इणस्यूं दूजै ने कष्ट पुंचै। किणी ने कष्ट पुंचाणौ भी हिंसा मानिजै। गुरु जाम्भोजी कईक संबदा मांय झूठ रो विरोध करयो है अर मिनख नै झूठ सूं दूर रैवणै री प्रेरणा दी है।

झूठ रो सारो लेय र जिका कारज करया जावै वांसू नीं तो स्थायी लाभ हुवै हर ना ही किणी ऊंचे उद्देश्य री प्राप्ति हुवै।

कूड़ ताणि ज क्रतब कीयौ
ना ते लाव न सायौ

इणीज आधार पर मिनख नै किणी भी समै कठै भी झूठ नीं बोलणो चाइजै। इण स्यूं अेक ओर मिनख अहिंसा रो पालण करण मांय सफल हुवैलो अर दूजो बुरा करमा स्यूं बचैलो।

किणी री निंदा करणो बचना रै द्वारा करण आली हिंसा है। जद आपा आपरी निंदा नीं सुण सकां तो दूजै री निंदा नी करणी चाईजै। निंदा रौ कष्ट ही हिंसा है, गुरु जाम्भौ जी आपरै कई संबदा मांय निंदा रो विरोध करयो है।

जंपो विसन न निंद्या करणी।

क्रोध अहिंसा रै मारग मांय सबस्यूं बड़ी बाधा है। क्रोधित मिनख नै न आच्छै बुरे रो धियान रैवै है अर न हिंसा अहिंसा रो। केई बार मिनख क्रोधी अवस्था मांय हिंसा कर बैठे है। जाम्भौजी रै अनुसार क्रोध में मिनख नै पाप अर गुनाहो रौ डर नीं रैवैं।

पापे गुनहे बीहै नांही, रीस करै रीसांणौ।

दयावान मिनख ही अहिंसा री रिछ्या कर सकै है निरदयी मिनख रै द्वारा अहिंसा रौ निरवाह करणो असंभव है वो तो हिंसा ही करसी। इण वास्तै जाम्भोजी अहिंसा रिछया हेत दया रै महत्व नै प्रतिपादित कर बतायौ कै दया रहित मिनख रा सगला कारज बिरथा है। निरदयी मिनख दूजै प्राणीयां नै पीड़ पहुचावै। दूजै प्राणियां नै पीड़ा देवण वालो इण संसार रै मांय सुखी नी रैय सकैं। अर नाही मोक्ष प्राप्त कर सकै है। जाम्भोजी रै अनुसार इस्यां मिनखा रा सगला कारज उल्टा हुवै।

जां जां दया न धरमूं
तां तां विक्रम करमूं।

अहिंसा संबंधी सिद्धांतिक मानतावां रै खातर सभी आचार दर्शन अेक दूजे स्यूं सहमत है पर व्यावहारिक जीवन रै माय अहिंसा रो प्रयोग सगला आचार दर्शना

मायं न्यारा न्यारा हुआ है। कठै पसुधन नैं ही नीं नर बलि नै भी हिंसा री कोटि में नी राख्यौ जावे, अर कठै रुंखा अर पौधा नै नष्ट करणो भी हिंसा मान्यो जावै। इण भातं जो मिनख या समाज नै जीवण रै प्रति जतो घणो संवेदनशील रैवे है बठै अहिंसा नै उतनो ही व्यापक अरथ प्रदान हुयो है। संवेदनशीलता अहिंसा रै लिये ही नी समाज रै विकास वास्तै भी जरूरी है। समाज के लिए प्रेम सहयोग अर आत्मीयता आद भावनावां आवश्यक है। अर ओ ही अहिंसा रो आधार है। बिश्नोई पंथ रै मांय अहिंसा स्यूं संबंधित विशेषतावां नै बिश्नोई पंथ न केवल सैद्धान्तिक रूप स्यूं स्वीकार कर व्यावहारिक जीवण मायं भी अंगीकार करयो है।

अहिंसा रै संबंध मांय बिश्नोई पंथ री सबस्यूं बड़ी विशेषता आ है के अेक ओर जठै पंथ रा लोग खुद अहिंसा रै मारग पर चालता रैवे है वठै दूजी ओर आपरै सामै किणी नै भी हिंसा नी करण देवै। दुजे मिनख य वरण द्वारा करणै वाली हिंसा नै आपरा प्राण देयर रोकण री परम्परा पंथ में आज तांई विद्यमान है। अहिंसा सम्बंधी आ मानता (मान्यता) बिश्नोई पंथ री मौलिक विशेषता है।

सबद वाणी मांय अहिंसा नै घणो महताऊ देवण रो कारण ही बिश्नोई पंथ रा उन्नतीस नियमां मां सू अनेकूं नियम अहिंसा स्यूं सम्बंध राखै॥

जीव दया पालणी, रुँख लीलो नी घावै।
अमर रखावै थाट, बैल न बधिया करावै।
पाणी, वाणी, ईधणी अर दूध इतरा लीजै छाण।

जाम्भोजी रै पछे वारें शिष्य भगत बिल्होजी भी बिश्नोई पंथ नै मजबूत बणावण सारु अनेकूं कारज करया। वां भी अहिंसा रो समरथण करता ईण बात पर जोर दियो कै आपरा प्राण तांई न्यौछावर कर देणा चाईजै। वा कैयो कै–

जीव दया नित राख, पाप नहीं कीजियै।
जांटी हिरण संहार, देख सिर दीजियै॥
बधिया करै तो बैल जु देख छोड़ाइयै।
बरजत मारै जीव तंहा मर जाइयै।
राख दया घट माही वृक्ष घावै नहीं।
घर आवै नर कौय भूखो जावै नहीं।
जूवां लिखा काढ छाह में डारियै॥
इन मारयां सुख होय पुत्र क्यों न मारियै॥

वील्होजी रै प्रयासा सूं ही बिश्नोई समाज में अहिंसा री भावना धणी दृढ़ हुयगी। जिण स्यूं लोग मन, वचन अर करम सूं अहिंसा रो पालण कर रैया है। अहिंसा री रिछया सारु बिश्नोई पंथ रा लोग समै समै पर आपरै जीवण रो बलिदान भी करता रैया है। बिश्नोई पंथ रो इतिहास जीव रिछया अर बिरच्छ रिछया हेत करया

जाण वाला बलिदानां स्यूं भरयो पड़यो है। अहिंसा रै उल्लंघन नै पंथ कदै सहन नीं करै। आ सगली प्रेरणा पंथ नै पंथ रा प्रवर्तक गुरु जाम्भौजी स्यूं मिलयोड़ी है।

बिश्नोई धर्म रा प्रवर्तक जाम्भौजी आज स्यूं लगै टगै 527 बरस पैला अहिंसा रै संबंध माय जिकी शिक्षा दी ही बिश्नोई समाज लगातार उण रो पालण करतो आय रैयो है। समाज रा लोग नीं तो जीव हत्या करै अर ना ही आपरै सामै आपरा क्षेत्रा मांय जीव हत्या करण देवे है। वन्य प्राणिया री रिछया सारुं बिश्नोई समाज नै दूजै मिनखा स्यूं उलझणो पड़ै है, वन्य प्राणियां पर हमलो करण वाला स्यूं केई बार बिश्नोई लोग खुद ही सलटे अर वारैं खिलाफ मुकदमा भी दरज करवावै।

मिनख मिनख आपस मांय झगड़े कर तो थाणै कचेड़ी मांय मुकदमा करण जावंता तो देख्या पर वन्य प्राणियां पर हमलो करण वाला रै खिलाफ बिश्नोई उण वन्य प्राणीरी ओर स्यूं मुकदमो करै ऐड़ा उदाहरण विश्व रै माय किणी अन्य सामज में मिलणो दुर्लभ है। आज विश्व रै मांय वन्य जीवां रै विनास नै रोकण सारुं जिती भी संस्थावा काम कर रैयी है वैना प्रेरणा बिश्नोई पंथ स्यूं मिल्योडी है।

गुरु जाम्भोजी आपरै अेक संबद मांय कैयो है के मिनख नै आच्छो करम करता जे कोई संकट आवै है तो उण रै वास्तै पछतावो नी करणो चाइजै।

सुकरत करतां हरकति आवै, तो ना पछतावो करियो।

गुरु जाम्भोजी रा अनुयाइयां इण शिक्षा नै पूर्ण रूप स्यूं आपरै जीवण मांय ढाल राखी है। अर इण सुकरत रै वास्तै आपरा प्राण देवणै स्यूं भी पाछा नीं हटै। जाम्भौ जी री इणीं सीख रै आधार पर बिश्नोई मुक प्राणिया री रिछया नै आपरौ धरम समझै अर जरूरत पड़ण पर आपरै प्राणां री बलि देवतां रैया है।

आधुनिक काल मांय आजादी स्यूं पैला 1946 मांय श्री धुंकलराम बेटो श्री लिक्ष्मण राम माल हिरणां री जान बंचावतो शिकारियां री गोली स्यूं शहीद होग्यो। राजस्थान रै बाड़मेर जिले रा बारासाण गांव रा श्री चिमनराम अर प्रताप राम बेटा श्री गोरखाराम 12 अप्रैल, 1947 नै दोन्यू भाइयां हिरणा री रक्षार्थ आपरा प्राण न्यौछावर कर दिया। इणीजं भांत जोधपुर जिलै रा भगतासनी गांव रो 36 वर्षीय अरजन बेटो श्री प्रभुराम पंवार 3 फरवरी 1948 नै हिरणां री रक्षार्थ शहीद हुयग्या हो। जोधपुर जिले रा रोही चाकला गांव रा चुनाराम बेटो हरदान जी गोदारो, बणाद गांव रा भीयांराम बेटो लाल राम जी गोदारा 17 मई 1963 मांय हिरणा रै खातर आपरा प्राण तज दिया हा।

17 दिसंबर, 1977 जोधपुर जिलै रै लोहावट गांव रा बीरबल राम खीचड़ बिश्नोई हिरणा री रक्षार्थ आपरा प्राण तजर जीव रक्षा रो ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करयो। जनवरी 1979 नै अरब रो शहजादो गोडावण (बस्टर्ड) रै शिकार वास्तै आयौ उण रै खिलाफ बिश्नोईयां आवाज उठायी अर अरब रै शाहजादै नै उलटा पगा

भाजणो पडयो। बिश्नोई लोगा रै तांण गोडावण जैड़े दुर्लभ पक्षी जात जीवंती है। बिश्नोई धरम री जीव दया भावना रै मुजब ही 30 अक्टूबर 1996 नै चुरु जिलै रा सांवतसर गांव रा निहालचंद बेटा श्री हनुमान धारणिया बिश्नोई हिरणां री रक्षार्थ शहीद हुवणे पर भारत सरकार रा महामहिम राष्ट्रपति रै द्वारा 22 अक्टूबर 1999 नै शौर्य चक्र स्यूं सम्मानित कराया गया। शौर्य चक्र प्राय: सैनिका नै ही दिया जावै है। निहालचंद ने शौर्य चक्र देयर भारत सरकार जीव दया भावना रो परिचय दियो। भारत बरस अर बिश्नोई समाज रै वास्ते घणै गौरव री बात है। सितंबर 1998 मांय जोधपुर जिले में अभिनेता सलमान खान पर वारै साथिया द्वारा गांव कोंकणी अर गुढ़ा बिश्नोईयान में हिरणों रो शिकार करण पर बठै रा बिश्नोईयां नै उणरै विरुद्ध मुकदमो दरज करवायर उण रै खिलाफ आंदोलन छेड र उणनै गिरफ्तार करवाया अर जेल भिजवार आपरी जीव दया भावना रो परिचय दियौ।

12 अगस्त 2000 नै ही जोधपुर जिलै रा चेराई (एकलखोरी) गांव रो श्री गंगाराम बेटो श्री फुसाराम ने भी हिरणा री रक्षार्थ आपरै प्राणां नै तजर जीवा प्रति बलिदान होवण वाला बिश्नोईयाँ मांय आपको नाम जुड़वा यर बिश्नोई इतिहास नै सौने रो बणायो।

बिश्नोई इतिहास वन्य जीवा री रक्षार्थ आपरै जीवण रो बलिदान करण वाला स्यूं भरयो पड़यो है। आधुनिक जुग में हिंसात्मक अर आपा धापी रै इण वातावरण में जठै मिनख रो प्रेम लुप्त सों होग्यो बठे वन्य प्राणियों री रक्षार्थ आपरै जीवण रो बलिदान देवणो बिश्नोई पंथ री अेक मौलिक अर अद्वितीय विशेषता ही मानी जा सकै है।

जीव रक्षा रै इण पवित्र कारज में बिश्नोई महिलावा (लुगाया) रो सक्रिय योगदान रैयो है। वा हिरणा रै अनाथ बच्चा नै आपरै स्तन रो दूध पिलायर पालती रैयी है। 10 मई 1978 नै जिला हिसार के नाढोड़ी गांव री श्रीमती रामी देवी बिश्नोई ने हिरणी रै नवजात शिशु नै आपरै घरां ले जाय र आपरै बोबा स्यूं दूध चुंगायर आपरा टाबरां री तरै पालण पोषण करियौ।

आधुनिक जुग रै मांय जद मातावां आपरा टाबरा नै ही दूध पिलावण मांय हिच किचाट करै है इस्यै वातावरण मांय तो श्रीमती रामी देवी बिश्नोई रो त्याग संसार मांय अनूठौ ही मान्यौ जा सकै है। इसी तरै सन 1980 में पंजाब रै महराणा गांव री शारदा बिश्नोई ने आपणी हिम्मत अर जीव दया री भावना स्यूं प्रेरणा लेय र शिकारियां नै गोली मार र घायलकर दिया अर हिरण नै बचालियौ। धागड़ गांव री श्रीमती परमेश्वरी देवी ने भी आपरा स्तन स्यूं दूध पिलाय र हिरण रै बच्चे नै बचावण मांय सफल रैयी धिन है असी मातावां नै।

बिश्नोई धरम रा अनुयायी भैला हुय र प्राणियां री रिछया करै है। जीव

रिछया री भावना रै कारण ही बिश्नोई पंथ ने श्री जम्भेश्वर पर्यावरण एवं जीव रक्षा प्रदेश सभा राजस्थान रो गठन कर राख्यो है। इण सभा रो प्रदेश कार्यालय श्री गुरु जंभेश्वर जन्म स्थली पीपासर जिला नागौर राजस्थान मांय राखिज्यो है। सभा लोगा मांय जीव दयारी भावना रो प्रचार प्रसार करै है। दूजी ओर जीव हत्या करण वाला रै खिलाफ मुकदमा कर दण्ड री व्यवस्था करावै।

जीव दया री भावना स्यूं ही बिश्नोई रोज आपरै घरां री छात पर या मंदिर रै चौक पर पक्षियां खातर चूण बिखेरे, वांरी पाणी पीवण री व्यवस्था भी करै है।

श्री गुरु जाम्भोजी री सीख अर बिश्नोईयां रै घणै प्रयास सूं आज इस्यो वातावरण बणगयो है जिण रै कारण कोई भी शिकारी बिश्नोई गावां री सीमा मांय शिकार करणे री हिम्मत नीं करै। मरुस्थल री रिंध रोही में चौकड़ी भरता हिरणां री टोलि देख र मतै ही ठा पड़ै कै नैडी बिश्नोइयां री ढाणियां है। बिश्नोईयां रो बिरछा अर वन चंरा सू हेत जगचावो है। जीव दया सत्य अर अहिंसा आपणी घण मूंगी राथा पोथी है। बिश्नोइयां रै धर्म गुरु रो औसाप अर गुण आ धरती कदेई नी बिसार सकै। बिश्नोई धरम रा गुणतीस नेमा में जीव दया पालणी अर रुंखा री रिछपाल आज री शाश्वत अर सनातन है।

इण संसार मांय अनेकूं महापुरुष हुआ है। पशु अर पक्षियां री रक्षा करी है। कण किणी पंथ या वर्ग विशेष मांय पशु पक्षियों री रक्षार्थ आपरै जीवण रो बलिदान करणै री परम्परा नी रैयीं। वन्य प्राणियां री रक्षार्थ आपरा प्राण न्यौछावर करण री परम्परा केवल बिश्नोई पंथ में प्रारंभ स्यूं आज तांई देखी जा सकै है। गुरु जाम्भोजी री जीव दया री शिक्षा रो बिश्नोई पंथ पर घणो प्रभाव रैयो है जिण रै परिणामस्वरूप बिश्नोई पंथ आज तांई वन्य प्राणियां री रक्षार्थ आपरै जीवण रौ बलिदान कर रैयो है।

पर्यावरण संरक्षण री दीठ स्यूं बिश्नोई पंथ री आ परम्परा घणी उपयोगी एवं मूल्यवान है। आज विश्व नै इण परम्परा रो अनुकरण करण री आवश्यकता है। इण में ही मिनख रो कल्याण निहित है।

❍ **मनोहर लाल बिश्नोई**
सेवानिवृत्त व्याख्याता,
संगरिया, जिला हनुमानगढ़ (राजस्थान)
मोबाइल : 9414958363

जंभवाणी में युगबोध

मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों से त्रस्त जनता प्राणान्तक पीड़ा झेल रही थी। मुगलों का शासन स्थापित हो जाने के बाद भारत में अराजकता का साम्राज्य फैल गया। राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक अराजकता का बोल बाला हो गया। समाज दो भागों में बंट गया। राजा नवाब, मनसबदार, तालुकेदार जनता का दोहन करने लगे। उनकी विलासिता अपने चरम पर पहुंच गई और दाने-दाने को तरसती जनता त्राही-2 कर उठी। युद्ध करना राजाओं का शौंक हो गया और जनता पिसती रही। बादशाहों के हरमों में स्त्रियों की संख्या बढ़ती गई और सामान्य स्त्रियां अपने ही घरों में कैद हो गई, अपनी मान प्रतिष्ठा खोकर केवल दासी बन गई। हिन्दू मुसलमानों में टकराव था। हिन्दू भी वैष्णव, शैव, शाक्त आदि वर्गों में बंटकर, आपसी भेदभाव ईर्ष्या- द्वेष, एक दूसरे को नीचा दिखाने के प्रयास में स्वयं अधोपतन के गर्त में गिरते जा रहे थे। अपने धर्म को बचाने के मोह में नियमों को कड़ा कर रहे थे जिसके कारण छुआछूत की भावना इतनी तीव्र होकर उभरी कि मानवीय संवेदनाएं दया - धर्म का मर्म सब तिरोहित हो गए। आदमी कठोर हो गया और समाज विकृत।

गीता में श्री कृष्ण ने कहा था कि जब धर्म की हानि होती है तब मैं धर्म की रक्षा के लिए जन्म लेता हूं।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्यूत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्

भारतीय संस्कृति का ऐसा क्षरण देख कर भगवान विष्णु ने गुरू जम्भेश्वर के रूप में पीपासर की मरू भूमि पर जन्म लिया।

विसंगतियों से मनुष्यों को बचाने के लिए श्री जम्भेश्वर भगवान ने बिश्नोई पंथ की स्थापना की। सभी जाति, धर्म, गोत्र के व्यक्ति चाहे व राजा हो या किसान, तालुकेदार हो या मजदूर, जाम्भो जी के व्यक्तित्व से प्रभावित हो उनकी शरण में आए। उन्होंने व्यक्तियों के प्रश्नों के समाधान हेतु जो शब्द कहे वह शब्द ही जम्भवाणी है। उन्हीं शब्दों में गुरू जाम्भों जी की शिक्षाएँ और सिद्वान्त समाहित हैं।

इन सिद्वान्तों के द्वारा जाम्भो जी ने समाज को व्यवस्थित किया और मनुष्य का विवेक जागृत कर सुख शान्ति से जीने की राह दिखाई।

जाम्भो जी की शिक्षाएं आज की विषम परिस्थितियों में कितनी कारगर है यह विचारणीय प्रश्न है।

जाम्भो जी ने निर्गुण भक्ति का प्रतिपादन किया उन्होंने इस संसार को ब्रह्ममय माना है वे कहते हैं-

अलाह अलेख अडाल आजोनी स्वयंभू

जिहि का किसा बिनाणी।

ईश्वर अमर अजर निर्विकार आयोनी जाति बन्धन से परे हैं।

रूप अरूप रमू पिण्डे, ब्रह्माण्डें घट घट अघट रहायों।।

ईश्वर का न रूप है न रेखा है परंतु नित्य घट घट व्याप्त है।

आज की परिवर्तित परिस्थितियों में मानसिक दबाव व तनाव के फलस्वरूप धार्मिक भावना दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति कर रही है। तीर्थ स्थानों और मन्दिरों में निरन्तर भीड़ बढ़ रही है। सोने चांदी की मूर्तियों पर लाखों करोड़ों का चढ़ावा चढ़ता है। दूसरी ओर हजारों भूखे नंगे बच्चे चौराहों पर भीख मांगते है। मंदिरों में भी पैसे वालों उच्चासीनों को पहले स्थान मिलता हे। साधारण जन पंक्ति में लगे लगे थक जाता है तो उसकी सारी श्रद्धा भक्ति चूक जाती है, पूजा का भाव समाप्त हो जाता है। हाथ लगती है सिर्फ विरक्ति।

"ईश्वर कण कण में विराजमान है मन की आंखे खोलो ईश्वर के दर्शन कर लो" आज इस सिद्धान्त की बहुत आवश्यकता है।

न मेरे माई न मेरे बाप अलख निंरजन आप ही आप
गंगा यमुना बहै सरस्वती कोई[2] नहावे विरला यति।।
"तिल में तेल पुहुप में वास पांच ततं में लियो प्रकाश।"

जैसे तिल में तेल और पुष्प में सुगन्ध होती है परंतु दिखाई नहीं देती उसी प्रकार ईश्वर कण कण में व्याप्त है उसे देखने के लिए खास नजर की जरूरत है।

आज का युग भौतिकवादी युग है। इस युग में पैसा सर्वोपरि हो गया है। आदमी अंधी दौड़ दौड़ रहा है। सबसे आगे जाना है कहां जाना है इसका पता है नहीं। सब कुछ पाकर भी असंतुष्ट है। हर जगह मारा मारी है। किसान जैसा मेहनतकश भी आत्महत्या करने को विवश हैं। दस- बारह साल के बच्चे आत्महत्या कर रहे हैं। नवीं दसवीं के छात्र हत्याएं कर रहे हैं। अपहरण कर रहे हैं वो भी अपने साथियों का। इसके पीछे कौन सी भावना है, असहनशीलता, शीघ्राति शीघ्र सब कुछ पा लेने की लालसा। पांच साल के बच्चे से लेकर 70 साल के बूढ़े तक सब तनाव में जी रहे है, दवाब से मस्तिष्क फटता जा रहा है, ऐसे में आवश्यकता है- नैतिकता की जाम्भो जी कहते है-

'सुवचन बोल सदा सुहलाली'
" चन्द सूर दोय बैल रचीलो गंग जमन दोय रासी,
सत सन्तोष दोय बीज बीजी लो खेती खड़ी अकासी"।

सत्य और सन्तोष रूपी बीज बीजने चाहिए उसी से आकाश वत् सर्व व्यापक ब्रह्म का आत्मा रूप रूपी खेती का अमृत फल प्राप्त होता है।

सत्य मार्ग पर ऐसे अडिग रहना चाहिए जैसे राजा हरिश्चन्द्र-

तारा दे रोहितास हरिश्चन्द्र कायादश बन्ध दीयों।

बिना शील के व्यक्ति कुटिलता से भरा होता है।

"जां जां पाले न शीलू तां तां कर्म कुचीलू।"

जाम्भो जी का सिद्धान्त है कि सादा जीवन और सच्चा व्यवहार ही सुख और शान्ति प्रदान करता है, आज की इस आपधापी में शान्ति की परम आवश्यकता है। इसका एक उदाहरण देखिए–

एक बार झाली रानी ने जाम्भो जी से पूछा कि हे देव आपने अयोध्या पुरी मथुरा नगरी जहां आपने राम और कृष्ण रूप में में जन्म लिया उन सुन्दर नगरियों को छोड़ कर इस मरू भूमि पर अवतार क्यों लिया, तब गुरू जी ने कहा–

खरड़ ओढीजैं, तूम्बा जीमीजै सुरह दुहीजैं। कृत खेती की सींव मलीजै। पीजैं ऊंडा नींरू। सुर नर देवा बदी खानैं। उतरिया तीरूं।

यहां के लोग सादा जीवन बीताते है। भाखला वस्त्र को कम्बल के स्थान पर प्रयोग करते है। अकाल में तूंबा जैसे कड़वे फल खाकर जीवन निर्वाह करते हैं। गौओं को पाल कर उनके दूध से जीवन को सात्विक तथा शुद्ध रखते हैं। खेतों में ही घर बनाकर रहते हैं। इनका व्यवहार छल कपट रहित है इसलिए मैंने यहां जन्म लिया है। अर्थात् गुरू जाम्भो जी सादे जीवन को ही सर्वश्रेष्ठ मानते है। आज के इस भ्रष्टाचारी युग में सदाचार और सादगी की आवश्यकता है।

आज के इस भौतिकवादी युग में दिखावे की भावना प्रबल हो रही है। भौतिक वस्तुओं का अत्यधिक प्रयोग प्राकृतिक संसाधनों का अधिकाधिक दोहन करता रहा है जिससे पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। प्रदूषित पर्यावरण मानव जाति के स्वास्थय के लिए खतरा बन गया है। बीमारियां मनुष्य को निगल जाने को मुंह खोले खड़ी है।

गुरू जाम्भो जी को सदियों पहले इस स्थिति का बोध हो गया था तभी तो उन्होंने कहा– **'कायं काटी बनरायों'**

हरे वृक्ष को काटना अपराध ही नहीं पाप भी है क्योंकि वृक्ष पर्यावरण को शुद्ध करते हैं, वर्षा करने में सहायक होते हैं। ऑक्सीजन देते है। थोड़े में कहूं तो प्राणी मात्र को जीवन देते हैं। इसीलिए गुरू जी ने वृक्षों की सेवा को जीवन का एक नियम बताया। जिसका बिश्नोई समाज सदा पालन करता है, वह पर्यावरण के प्रति सदा सजग रहता है, चाहे वृक्षों की रक्षा के लिए 363 व्यक्तियों के बलिदान देने की घटना हो या फिर काले हिरण के लिए लम्बी कानूनी लड़ाई लड़नी हो।

गुरु जम्भेश्वर जी ने वातावरण को शुद्ध करने के एक उपाय को जीवन का अंग बताया है वह है 'हवन'। प्रत्येक व्यक्ति को हवन करना चाहिए। हवन वातावरण को प्रदूषण मुक्त करता है।

प्रदूषण मुक्त पर्यावरण में ही व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है और स्वस्थ व्यक्ति ही अपने घर समाज देश व मानवता का कल्याण कर सकता है। अत:

स्वास्थ्य मनुष्य की पहली पूंजी है। गुरु जम्भेश्वर जी के सिद्धान्त मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए अति आवश्यक है।

सेरा करो स्नान शील संतोष सुचि प्यारो।

प्रतिदिन प्रात: काल स्नान स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है। गाय का दूध स्वास्थ्य के लिए अमृत है, गौ पालन और गौ सेवा के लिए गुरु जी ने बार-बार कहा है।

बिश्नोई समाज गौशालाओं के प्रति-प्रतिबद्ध है गौ सेवा को समर्पित है। भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है पर वास्तव में यह जातितंत्र बन गया है जाति धर्म के नाम पर चुनाव लड़े जाते हैं जीते भी जाते हैं। सारे मुद्दे चाहे वो भ्रष्टाचार के हो या विकास के, हाशिये पर चले जाते हैं मुख्य हो जाता है जाति, धर्म ऐसे समाज और लोकतंत्र को बचाने और सुधारने के लिए जाति धर्म से ऊपर उठना होगा। कोई भी जातियां चोरी करने, झूठ बोलने, हिंसा करने की इजाजत नहीं देता। सभी धर्म अहिंसा सत्य धैर्य दान को श्रेष्ठ मानते हैं। परंतु धर्मों के बाह्य आडम्बर ही लोगों में भेदभाव ईर्ष्या द्वेष उत्पन्न करते हैं। जाम्भो जी ने इन आडम्बरों का वाणी में विरोध किया है। **हिन्दू होयकर तीर्थ धौके पिण्ड भरावै, तेपण रहया इंवाणी। जोगी होयके मूंड मुडावैं, कान चिरावै गौरख हटड़ी धोके, तेपण रहया इवाणीं। तुरकी होय हज काबो धोकै भूला मुसलमानी।**

गुरु जाम्भो जी ने कर्म को ही सर्वश्रेष्ठ माना है। उत्तम कुल में उत्पन्न होकर भी यदि व्यक्ति अच्छे कार्य नहीं करता तो वह कुलीन नहीं है-

उत्तम कुली का उत्तम न होयबा कारण किरिया सांरू। जो समाज कल्याण के कार्य करता है वही कुलीन है वही श्रेष्ठ है।

इसी सिद्धान्त से समाज व देश का वास्तविक कल्याण व विकास हो सकता है। आज के इस वैज्ञानिक युग में अन्ध विश्वास से भरे चमत्कार, चमत्कारियों के पाखंड, बाबाओं की धोखा धड़ी खबरें चैनलों की सुर्खियां बनती है। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने सदियों पहले इन पाखंडियों का पुर जोर विरोध किया था। जिसकी आज के इस वैज्ञानिक युग में भी आवश्यकता है:

जड़ जटा धारी लंघै न पारी, वाद विवाद के करणौ।
थे वीर जपौ बेताल धियावौं, कांय न किसूं।
खोजे तंत कंणौ। आयसां डंडत डंडू, मुंडत मुडू मुडंत माया मोह।

आज आर्थिक विषमताएं समाज में वैरभाव, भय, क्रोध, घृणा, हत्या, अपहरण भ्रष्टाचार को जन्म दे रही है। कुछ व्यक्ति यह नहीं समझ पाते कि उसे धन खर्च कैसे करें। उनके कुत्ते भी बिस्कुट खाते हैं ए.सी. में रहते हैं दूसरी तरफ भूखमरी कुपोषण सर्दी गर्मी का प्रकोप हजारों लोगों का जीवन लील जाता है। इस आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए अपरिग्रह के सिद्धान्त का पालन करते हुए

जाम्भो जी ने दान के महत्व का प्रतिपादन किया। दान देना वह भी सुपात्र को।

'कुपात्र कूं दान जु दीयो
जाणै रैंण अंधेरी चोर जु लीयो।'
'दान सुपाते बीज सुखेती
अमृत फूल फलीजै।'

सामाजिक समानता से ही बैर भाव क्रोध नफरत मिट सकती है। समानता लाने के लिए जरूरी है कि हम जाम्भो जी के वचनों का पालन करते हुए सभी मनुष्यों में ब्रह्म के दर्शन करें, सभी को आदर सम्मान दें, दुखियों के दुख को दूर करें तभी समाज की सारी विशेषताएं दूर होगी और समाज सुखी होगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आज हमारे सामने जितनी भी समस्याएं हैं–चाहे राजनैतिक हो, धार्मिक हो, आर्थिक हो या सामाजिक, सभी का समाधान जाम्भो जी की शिक्षाओं में निहित है। बस उन शिक्षाओं और सिद्धांतों का अनुसरण की आवश्यकता है।

रोशनी इसकी अचानक सौ गुना बढ़ जाएगी।
आ गया जिस पल में दीपक, दो आइनों के बीच में॥

❍ **श्रीमती रेणु बिश्नोई**
गुरदेव नगर, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

मानवता के पथ प्रदर्शक : श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान

हमारे देश की धरती को देवधरा के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस धरा पर सन्तों, महात्माओं, सिद्ध योगियों, मुनियों ने ही नहीं स्वयं भगवान श्री हरी विष्णु जी ने अनेक रूपों में अवतार धारण कर आम लोगों को, जिये जुगति-मरे मुक्ति देने के लिए मानवता का पथ प्रदर्शन किया है। भगवन श्री कृष्ण ने गीता का अमर सन्देश देते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा है कि -

''यदा य दा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।।1।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्टकृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामी युगे युगे।।2।।''

(अध्याय-4, श्लोक-7 एवं 8)

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं , हे भारत ! जिस देश और काल में जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब मैं अपनी योग माया से अवतार धारण कर प्रकट होता हूं। वे आगे कहते हैं कि साधूजन और भक्तों की रक्षा एवं पापियों का विनाश करने और धर्म की स्थापना के लिए युग-युग में अवतार ग्रहण करता हूं। इसी बात को सार्थक करते हुए श्री हरि विष्णु जी ने कलयुग में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के रूप में अवतार लिया। श्री जाम्भाणी साहित्य के प्रमाणों के अनुसार जब भगवान श्री विष्णु जी ने नृसिंह अवतार लेकर हिरण्यकश्यिपु का वध किया और भक्तराज प्रह्लाद की रक्षा की थी, तब श्री हरि ने भक्त प्रह्लाद के आग्रह पर चारों युगों में अवतार ग्रहण कर प्रह्लाद से बिछुड़े हुए 33 करोड़ अनुयायी प्राणियों का उद्धार करेंगे : - जैसे नृसिंह, परशुराम, राम-कृष्ण, बुद्ध आदि अवतार लिये। इसी बात को प्रमाणित करने हेतु भगवान श्री कृष्ण अवतार के समय जो काम बाकी रह गये थे उनको पूरा करने के लिए परमपिता श्री विष्णु जी श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के रूप में लीला करने हेतु अवतार लिया। इस अवतारूप में लड़ाई आदि कार्य न करके केवल 29 धर्म-नियमों और कालजयी महावाणी (शब्दवाणी) के द्वारा स्थानीय आम लोगों को उनकी बोली में उपदेश दिया, क्योंकि इस समय में ऐसे अवतार की आवश्यकता थी।

श्री जाम्भाणी साहित्य में हजूरी अनुयायियों, सन्तों, भक्तों और कवियों ने तथा शोध-ग्रन्थों में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का अवतार का बहुत ही सुन्दर महिमागान किया गया है। स्वयं श्री गुरु जाम्भो जी ने अपनी शब्दवाणी में अपनी बहुत ही सही जानकारी दी है, जैसे : -

''मौरे छाया न माया, लोहू न मासूं, रक्तू न धातू, मोरे माई न बापूं-आपण आपूं, रोहि न रापू कोपू न कलापूँ दुःख न शरापूँ, लोई अलोई त्यू तिरलोई ऐसा न कोई जपा भी सोई, जिंह जपिये आवागवण न होई'' (शब्द संख्या - 2)

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान कहते हैं कि, मेरे न अविद्या रूपी छाया है न माया है, रक्त है न मांस है, रज है न धातु है, मेरे शुद्ध ब्रह्म स्वरूप के मां है न बाप है, मैं तो स्वयं अपने आप में ही प्रकाशित हूं, अर्थात् मैं न कुपित होता हूं न किसी प्रकार का संताप करता हूं, मैं किसी को न दुःख देता हूं न कभी किसी को शाप देता हूं अर्थात् मैं तीनों लोकों में अलिप्त भाव से सदा व्याप्त रहता हूं। तीनों लोकों में हमारे सिवाये कोई नहीं है जिसका जप करने से जन्म-मरण रूपी आवागमन से मुक्ति मिल सके।

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का अवतार ठीक उसी समय, महीना तथा तिथि इत्यादि को हुआ जिसमें भगवान श्री कृष्ण का अवतार हुआ था। कृपा निधान दया के सागर, कृपासिन्धु श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का चरित्र-चित्रण स्थानीय लोगों की भाषा में वर्णित है, जो कंचन के समान पावन है। भादोवदी अष्टमी विक्रमी सम्वत् 1508 में अद्धरात्रि में देश मारवाड़ गांव पीपासर क्षत्रिय जाति पंवार ग्रामपति ठाकुर लोहटजी की धर्मपत्नी हांसा देवी के शुद्ध स्वरूप से श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान प्रकट हुए। सात साल तक बाल क्रीडा में बिताये, 27 वर्ष तक गायें चरायी और 51 वर्ष तक मानवता को मुक्ति प्रदान करने हेतु अमर लोक के सन्देश वाली शब्दवाणी सुनाई। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के अवतार के बारे में श्री जाम्भाणी साहित्यकार, महान सन्त कवि श्री साहब रामजी राहड़ ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में महिमा गाई है, जैसे : -

''भाद्रव मास कृष्णपख रूंधा, अष्टम तिथि वार ससि सुधा, सिद्धि जोग शुभ लग्न सुनायेक, मृत मण्डल प्रभु आगमन भयेउ।।''

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान बचपन से ही जंगलों में घूमे और पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण देशों की यात्राएं की ओर अपनी योग सिद्धी से अन्धों को आंखे दी, अपंगों को चलने योग्य किया और रोगियों को स्वस्थ किया। थोड़े से अन्न दान के द्वारा बहुतों को तृप्त कर किया और 29 धर्म-नियम बनाये विक्रमी सम्वत् 1542 में बिश्नोई धर्म की स्थापना की। दिल्ली में बादशाह सिकन्दर लोदी को चेताया और गायों की हत्या बन्द करवाई। कैद में बन्द भक्त कैदियों को छुड़ाया, उपकारी कार्य किये और सुगन्धित पदार्थों से हवन करवाया। इस भूतल पर गुरु जी को मानने वाले हर स्थान पर पाये जाते हैं। बिश्नोई पन्थ के श्री गुरुजी के आठ धाम प्रमुख हैं, जैसे - 1 पीपासर, 2. समराथल, 3. मुकाम, 4. जांगलू, 5. जांगलू की सांथरी, 5 रोटू,

6. लालासर, 7. लोधीपुर, 8. जाम्भोलाव (जम्भसरोवर)। ये सभी पावन तीर्थ स्थल एवं पूज्य धाम माने जाते हैं। विष्णु अवतार श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान इस संसार में 85 साल 3 महीना 10 दिन विराजमान रहे और अन्तर्धान का समय मिंघसर वदी 9वीं था।

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने अकरणीय एवं पशु प्रवृतियों पर प्रहार कर मानव को एक उत्तम-सुदुढ़त्तम नैतिक धरातल प्रदान किया। उन्होंने अपनी वाणी के द्वारा निश्चय ही मरूभूमि के गहरे नीर धौरां वाली धरती पर कालजयी वाणी और 29 धर्म:नियमों से उपदेश के प्रभाव से जनमानस में नैतिकता की गंगा बहा कर वहाँ स्वर्ग एवं सतयुग जैसा माहौल पैदा किया। श्री जम्भगुरु देव की वाणी में वेद तथा उपनिषदों का सार अर्थात् गागर में सागर भर दिया। उनकी वाणी में ज्ञान, भक्ति एवं उत्तम कर्म की प्रेरणा समाहित है। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने शब्द श्री महावाक्य श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की वाणी, कार्यों और सिद्धान्तों में आकाश-पाताल, नदी-नाले, सागर, पर्वत, वनस्पति, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु,औषधि, ग्रह-नक्षत्र, पृथ्वी, मानव यहाँ तक कि प्राणी-मात्र सभी के लिए मंगल कामनाएं की। उनकी नजर में पेड़-पौधों में भी स्वयं उनका निवास होता है। उन्होंने अपने अनुयायियों को पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सद्भावना और भक्ति पूर्वक लम्बा जीवन जीने के लिए हर क्षेत्र में मानवता का पथ प्रदर्शन किया। इनको हम निम्नलिखित बिन्दुओं से दर्शा सकते हैं :-

1. बिश्नोई पंथ की स्थापना

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने कार्तिक बदी अष्टमी विक्रमी सम्वत् 1542 को अपने महान एवं आदि सिद्ध आसन समराथल धोरे पर कलश की स्थापना कर बिश्नोई समाज की स्थापना की। जाम्भाणी साहित्य ग्रंथों में भी विष्णु एवं 29 नियमों पर आधारित बिश्नोई समाज की स्थापना की। संतों, महात्माओं एवं समाज के साहित्यकारों के अनुसार, आदि अष्टमी अन्त अमावस्या, चार वरण कूं किया तपावस। यह भी कहा जाता है कि कार्तिक की सोमवती अमावस्या और विशखा नक्षत्र थे। कलश स्थापना उपरान्त पाहल बनाया और चार वर्ण एवं 36 बिरादरी के सभी पात्र लोगों को पाहल पिला कर बिश्नोई बनाया। बिश्नोई समाज को प्रह्लाद पंथी भी कहा जाता है। उन्होंने शब्द संख्या 94 में कहा है कि वे मत्स्य, कच्छ, वराह, नृसिंह, परशुराम, राम-लक्ष्मण, कृष्ण, बुद्ध और कलयुग में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के रूप में अवतार लेकर पाप-वृति का नाश और धर्म की स्थापना की । इस प्रकार मत्स्य, कच्छ, वराह, नृसिंह, परशुराम, राम-लक्ष्मण, कृष्ण, बुद्ध आदि को मानने वाले सभी लोगों को यदि आपस में गुरु भाई कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी अर्थात् सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं। कहने का अभिप्राय है कि श्री

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने अनेकता में एकता का संदेश दिया और एक पावन पंथ की स्थापना की।

2. 29 धर्म-नियमों की आचार संहिता:-

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने 29 धर्म-नियमों की आचार संहिता प्रदान करके केवल बिश्नोई समाज ही नहीं बल्कि समस्त प्राणी-मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। समाज में संक्षेप में नियमों को इस प्रकार बखान किया जाता है:-

''तीन दिन सूतक पॉच ऋतुवन्ती न्यारो, सेरो करो स्नान शील संतोष सुचि प्यारो।। द्विकाल संध्या करो, सांझ आरती गुण गाओ। होम हित चित प्रीत सूँ होय, बास बैकुण्ठा पावो।। पाणी वाणी इन्धणी दूध इतना लीजै छाण। क्षमा दया हृदय धरो गुरु बतायो जाण। चोरी निंदा झूठ बरजीयो, वाद न करना कोय। अमावस्या व्रत राखणों, भजन विष्णु बतायो जोय। जीव दया पालणी रूँख लीलो नहीं घावै। अजर जरै जीवत मरै, वै वास स्वर्ग ही पावै। करै रसौई हाथ सूं आन सूं पल्लो न लावै। अमर रखावै थाट बैल बधिया न करावै। अमल तमाखू भाँग मॉस मद्य सूं दूर ही भागै। लील न लावै अंग देखते दूर ही त्यागै। उणतीस धर्म की आखड़ी हिरदै धरियो जोय। श्री जाम्भौजी कृपा करी, नाम बिश्नोई होय।।''

इन नियमों में चार नियम ऐसे हैं जो विशेष रूप से हमारा ध्यान अपनी ओर खींचते हैं और वे नियम है : - प्रथम-शिशु के जन्म के समय औरत को तन्दरूस्त होने के लिए होने के लिए शिशु की अच्छी तरह से सम्भाल करने हेतु श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने एक माह तक सूतक रखने की आज्ञा इन 29 नियमों में दी है। द्वितीय-श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान प्रथम ऐसे गुरु हैं जिन्होंने ऋतु अवस्था में नारी को होने वाले दु:ख दर्द को समझा और निरन्तर इन पांच दिनों तक घर का कोई कार्य न करवाकर उसे पूर्ण आराम करने की सलाह दी है ताकि उसकी दु:ख वृत्ति का परिवार पर असर न पड़े। तृतीय गुरुजी ने छोटे-बड़े सभी जीवों पर दया करने की आज्ञा दी है। इसके साथ-साथ चतुर्थ-रूँख लीलो नहीं घावै अर्थात् हरे वृक्ष को काटना तो दूर उसके घाव करना भी पूर्ण रूप मना किया है।

3. अकाल पीड़ितों की सहायता करना :

विक्रमी सं. 1542 में राजस्थान में बहुत भयानक अकाल पड़ा था। जाम्भाणी साहित्यकारों ने इस अकाल का विस्तृत उल्लेख किया है। ''भूख तणा दु:ख सह्या न जावै, बिचल्यो लो मउ मन लावै।'' इस क्षेत्र में हर तीसरे साल अकाल पड़ने की बात प्रसिद्ध है। किसी कवि ने लिखा है कि - **''पग पूंगल धड़ कोटड़ै, बाहू बाड़मेर। जोयां लाद्धै जोधपुर ठावौं जैसलमेर।।''** परन्तु विक्रमी सम्वत् 1542 का अकाल बहुत भयानक था। इस बारे में जाम्भाणी साहित्य के

महान साहित्यकार सन्त कवि एवं लेखक महात्मा श्री साहिबरामजी राहड़ ने जम्भसार में बहुत ही सुन्दर एवं विस्तृत वर्णन किया है। देखिये एक उदाहरण – **''पनरा सइयो समत कहावै, कुसमो संवत वैयालो आवै। मेघन बरसै बूंद न परिहैं, जेठ असाढ़ सावन अवतारिहैं। यहि विध भादव गयेउफ पुलाई, मेघ देत न दिखाई। यह विध आसोज चलि आई, घन गरजेहू नं बीज खिंवाई। मंडल काल पड़े बड़ भारी, त्राह त्राह सब दुनी पुकारी। भूख मरै जीया जुणी, दिन दिन दाह लगै भई दूणी।''** श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने इस अकाल की घड़ी में भूख से बिलखती आम जनता की अन्न-धन और पाणी से बहुत सहायता ही नहीं की बल्कि इस मरु प्रदेश को जन-शून्य होने से बचाया।

4. श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की जन-कल्याणकारी यात्राएं –

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का प्रमुख कार्यक्षेत्र राजस्थान रहा है मगर उन्होंने बाहर देश-विदेश का व्यापक भ्रमण किया और 29 नियम एवं युक्ति-मुक्ति देने वाली वाणी से प्रचार किया था। श्री गुरु जी की शुक्ल हंस शब्द संख्या – 67 में उनके व्यापक भ्रमण के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। उनकी वाणी और अन्य जाम्भाणी साहित्य में अफगानिस्तान, काबुल, कान्धार, सिन्ध, गढ़-लंका, ईरान, इटली, फ्रांस, सिंहलद्वीप आदि विदेश भ्रमण के अतिरिक्त पंजाब, मध्य प्रदेश, दिल्ली, हांसी, हिसार, मलेर कोटला, लाहौर, मुल्तान, असम, कर्नाटक, बंगाल, काशी, नगीना, काल्पी, कन्नौज, अवध, रूहेलखण्ड, आंवला, लोदीपुर, सलेमपुर, शिवहरे, खरड़, सरधना कश्मीर, गोरखहटड़ी, बराड़ इत्यादि स्थलों के भ्रमण और हवन, यज्ञ, वन एवं वन्य सम्पदा की रक्षा के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त होती है।

5. पाखण्ड, मूर्तिपूजा और अन्धविश्वास आदि का घोर विरोध :

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान पाखण्ड, मूर्तिपूजा, जातिभेद, लैंगिक भेद और अन्धविश्वास का जोरदार विरोध किया। जाम्भाणी साहित्य में झूठे आडम्बरों के लिए कोई स्थान नहीं है। उन्होंने सदैव सत्य का ही आरोहण किया है और तीनों कालों में सत्य का एक ही रूप सत्य बतलाया है। श्री गुरुजी ने अपनी वाणी में दान, योग, पर्यावरण एवं वन्य सम्पदा की रक्षा, शुद्ध शाकाहारी खाने, पीने, सात्विक विचारों और अच्छी जगह रहने को महत्व देते हुए हर स्थान पर मानवता का मार्ग दर्शन करते हुए कहा है, जैसे शब्दवाणी सभी मामलों में उन्होंने अपने शब्दों में साफ ही कहा है :

''अड़सठ तीर्थ हिरदै भीतर, बाहर लोका चारूं। शब्द – 3 अड़सठ तीर्थ हृदय में है और बाहर तो लोक दिखावा है **सोम अमावस आदितवारी, कांय काटी बनरायो। जा दिन तेरे होम न जाप न तप न क्रिया, जाण के भागी कपिला**

गाई। शब्द - 7 अर्थात् सोमवती अमावस्या और आदित्य की उपस्थिति में वृक्षों को काटते हो। जिस दिन हवन यज्ञ जप तप नहीं किया उस जैसे कामधेनू गाय को घर से भगा दिया हो, इसी प्रकार अन्य शब्दों में श्री गुरुदेव ने हर तामसी वृति, जीव हिंसा, इत्यादि मामलों पापियों को फटकार लगाई है।

सुण रे काजी... गाडर गाई। सूल चुभीजै... जीव न घाई। थे तुर्की छुर्की... खायबा खाज अखाजू। चर फिर आवै... तिसका खीर हलाली। जिसके गले करद क्यो... थे पढ़ सुण रहिया खाली।। (शब्द-8) सुण रे काजी सुण रे ... मुरदारू। जीवां उपर जोर करिजै... अन्तकाल होयसी भारूं। (शब्द-9) हम दिल लिल्ला, तुम दिल... लिल्ला। रहम... रहमाणों। इतने मिसले... भिस्त इमाणों। (शब्द-10) हक हलाल पिछाण्यों नाहीं... तो निश्चय गाफिल दोरे दीयों। (शब्द-11) कायं रे मुरखा... करणी का उपकारूं। (शब्द-13) अड़सठ तीर्थ हिरदै भीत्तर... कोई कोई गुरूमुख बिरला न्हायो। (शब्द-19) लोलो रे राजिन्दर रायों... तो नीरे दोस किसायो। (शब्द-22) साहिल्या हुआ मरण भय ... धर्म अचारे शीले संजमे सतगुरु तुठो पाइये। (शब्द-23) राज न भूलीलो राजेन्दर पवण झोले बीखर... गैण विलम्बी खैहूं। (शब्द-25) घण तण जीम्या... मल्ल भरिया भण्डारूं। घणा दिनां का बड़ा न ... पारूं। उत्तम कुली का उत्तम न होयबा... कारण क्रिया सारूं। बेद ग्रन्थ उदगारूं। (शब्द-26)। किण दिस आवै.....माई लखे न पीउ। तेल लियो ख.....थोड़ेरो कियो। (शब्द-27) मीन का पंथ मीन ही जाणै, नीर.....रहियो। सिध का पंथ.....बीजा बरत न बहियों। (शब्द-28) जो ज्यूं आवै..... थरप्या, साचा सों.....भायों। (शब्द-29) भल मूल सींचो रे प्राणी.....ता दिन थाक रहे षिर मारूं। (शब्द-31) कोट गऊ जे.....नाहिं उतरिबा पारूं। (शब्द-32) कवण न हुआ कवण न होयसी.....आवागवण निवारूं। (शब्द-33) फुरण फुहारै.....ताने कौन कहसी साल्हिया साधो। (शब्द-34) उत्तम संग सुसंगू। उत्तम.....मोक्ष द्वारूं। (शब्द-39) सुण राजेन्द्र.....जां जां नुगरे थिती न जाणी। (शब्द-41) घट उंधै बरसत बहु मेहा। तिहिं मां किसन..... पड़सी पाणी। (शब्द-42) थे कान चिरावो चिरघट पहरो, जोग न होई। जटा पधारो.....जोग न कोई। (शब्द-43) जोग तणी थे खबर न पाई, कायं तज्या घर बारूं। (शब्द-44) दोय मन दोय दिल.....पारब्रह्म की शुद्ध न जाणी, तो नागे जोग न पायो। (शब्द-45) जिहीं जोगी..... थमायो। जिहीं जोगी.... पार लंघावै। नाथ कहावै.... थे क्यों नाथ कहावै। दौरे भिस्त.... मिलिया काम संवारूं। (शब्द - 47) लक्ष्मण का लक्षण नाहीं शीश किस विध नाऊं। (शब्द - 48) अवधू अजरा जार ले अमरा राख ले.... गुरु को दर्शनों।'' (शब्द - 49)

एक बार महात्मा श्री लक्ष्मणनाथ योगी के एक चेले ने समराथल धोरे पर

आकर श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान से कहा कि श्री लक्ष्मणनाथ एक महान बाल योगेश्वर है। उनकी योग शक्ति अपार है। ये कभी किसी औरत का मुख तक नहीं देखते। हर तरह की अछूत से बचते हैं। उस योगी की बात सुन कर श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने उसे निम्न शब्द सुना कर उपदेश दिया -

''तइया सांसूं तइया मांसू, तइया देह.... अंजन माहिं निरंजन आछै सों गुरु लक्ष्मण कवारूं।'' शब्द - 50

अर्थात् सबके शरीर में वही एक जैसा सांस चल रहा है, वही एक जैसा ही मांस है। वही एक जैसा शरीर या देही है और सभी में एक जैसे प्राण प्रवाहित हो रहे हैं, तो फिर उत्तम और मध्यम का भेद-भाव क्यों किया जाए अर्थात् भेद-भाव करना व्यर्थ है (जिस प्रकार आदमी के शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रियां-नाक, कान, त्वचा, आंख और जीभ और पांच कर्मेन्द्रियां-हाथ, पांव, वाणी, उपस्थ तथा गुदा एवं पांच प्राण तथा चार अन्त:करण होते हैं, ठीक उसी प्रकार ये सब औरत के शरीर में भी होते हैं) श्री गुरुदेव ने कहा कि साधू तो वही सफल है एवं मुक्ति को प्राप्त होता जिसके साधना करते करते वह उस स्थिति को प्राप्त हो जाए कि उसकी नजर में आदमी और औरत में भेद-भाव दिखाई ही नहीं दे। दोनों का शरीर एक समान है और पूर्ण परमात्मा चैतन्य स्वरूप से दोनों में एक समान व्याप्त है। अत: ईश्वर की प्राप्ति हेतु दोनों शरीर को एक समान निष्पाप देखें। पाप या कमियां तो आदमी एवं औरत के कुविचारों में होती हैं। जो अज्ञानी तथा अशुद्ध अन्त:करण वाला होता है वह साधक या महात्मा या साधू अपनी आत्मा और आत्मा से जुड़े परमात्मा का अनुभव नहीं कर सकता। ऐसा व्यक्ति ही दूसरे लोगों से व्यर्थ का भेद-भाव/वाद-विवाद करता है तथा अपने आपको महान ज्ञानी तथा त्यागी बतलाता है। परंतु वह अधूरे साधक की भूल ही तो है। ऐसे ही अज्ञानी व्यक्ति के दिल में आदमी और औरत उसके दिल में आदमी और औरत के भेद-भाव प्रतीत होता है। जिस साधक के वाद-विवाद, मत्सर, संशय आदि त्रुटियां/कमियां दूर हो गई हो उसके दिल में आदमी और औरत के भेद-भाव होते ही नहीं है। परमपिता परमात्मा सबके दिल में सदैव जागते रहते हैं तथा सब प्राणियों के दिल में विराजमान जागने, उठने, बैठने की शक्ति प्रदान करते हैं अर्थात् परमात्मा की शक्ति से अखिल विश्व हर समय क्रियाशील रहता है। यही बात गीता में भी कही गई है : -

''बहिरन्तश्च भूतानामचं चरमेव च। सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेये दूरस्थं चान्तिके च तत्।'' अर्थात वे परमात्मा चर और अचर प्राणियों के बाहर और अन्दर सर्वत्र व्यापक हैं। वे अति सूक्ष्म हैं, अति समीप है एवं सबसे बहुत दूर भी हैं। अत: साधारण प्राणी उनको जान नहीं सकता। श्री गुरु महाराज आगे कहते हैं - जिस परमात्मा ने हज काबे में मुहम्मद साहब को जगाया था, वही मैं वर्तमान में समराथल

धोरे पर लोगों को जगाने आया हुआ हूं। जो व्यक्ति स्वयं परमपिता परमात्मा विष्णु का ध्यान नहीं करता तथा जो साधना करते हैं उनमें भी विघ्न डालता है वह मलीन बुद्धि वाला राक्षस है। हिंसा रहित शुद्ध-पवित्र परिवार व कुल में जन्म लेकर हवन, जप, तप आदि शुभ कर्म छोड़ कर केवल तीर्थों में जाकर स्नान करके व पित्रों को पिण्डदान देने में अपना कल्याण समझते हैं वह कोई फल नहीं पाता शून्य ही रह जाता है। जोगी होकर सिर के बाल मुण्डवाते हैं, कान चिरवाते है। गोरखनाथ की समाधि की पूजा करने में ही मुक्ति मानते हैं तो इससे किसी फल की प्राप्ति नहीं हो सकती अर्थात् आवागमन से छुटकारा नहीं मिल सकता। मुसलमान होकर पवित्र रहना, सत्य भाषण करना, पांच समय ईश्वर की नमाज पढ़ना, रोजा रखना, जीव हिंसा न करना, ईश्वर को सदैव सर्वत्र विराजमान जानना आदि श्रेय साधनां को भूल कर केवल मक्के शरीफ की यात्रा करने से ही स्वर्ग की प्राप्ति मानते हैं तो ये उनकी बहुत बड़ी भूल है। यथा समय की आवश्यकता अनुसार और भी बहुत से विभूतिवान, सिद्धि से सम्पन्न महान व्यक्ति सांसारिक लोगों को धर्म का मार्ग बतलाने के लिए इस संसार में प्रकट होंगे और परा वाणी के ज्ञाता मैं (श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान) पवित्र समराथल धोरे पर प्रकट हूं। मैं अज्ञान निद्रा से जागा हुआ हूं और अनन्य भक्तों को जगाने आया हूं। जिस ईश्वर के सगुण अवतार के शील मय शब्द वेद मन्त्रों के समान पुण्यकारक तथा अनन्त शुभ लक्षणों वाले हैं। माया और अविद्या उपाधि से रहित ब्रह्म माया उपाधि को धारण कर श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के रूप में समराथल धोरे पर विराजमान हूं। हे लक्ष्मणनाथ ! अन्य तुच्छ गुरुओं का आश्रय छोड़कर मुझ परम गुरु का आश्रय ग्रहण करो, जिससे तुम्हारा कल्याण हो। (यह एक शब्द का भावार्थ दिया जा रहा है। इसी प्रकार से हर शब्द के हर वाक्य में श्री गुरु महाराज ने महा मार्ग दिखाया है) ''**भूख नहीं तो अन्न जीमत कौण। - 51 ज्ञान खड़ग जथा हाथे, कौण होयसी हमारा रिपू। शब्द - 52** अर्थात् जिसके हाथ में ज्ञानरूपी खड़ग हो, उसका शत्रु कौन हो सकता है। **क्रोड़ निनाणवे राजा.... माया राणी राज तजिलो गुरु भेटिलो जोग सझीलो। (शब्द - 53) रणघटिये को खोज... हस्ती चढ़ंता गेवर गुड़ंता सुणी सुणहां भूंकत कायो। (शब्द - 55) कुपात्र कूं दान जो दियो, जाणै रेण अन्धेरी चोर जो लियो। दान सुपाते बीज सुखेते... अनन्त गुण लिख लीजै। (शब्द - 56)** अर्थात् कुपात्र को दिया गया दान ठीक उसी प्रकार है जैसे कोई चोर अन्धेरी रात में घर से धन निकाल कर ले जाए। सुपात्र को दिया गया दान और उत्तम खेत में डाला गया बीज अमृत फल देने वाला होता है। इसलिए दान सुपात्र को ही देना चाहिए, कुपात्र को नहीं। **अहनिश आव घटंती जावै... ऊर्द्धक चन्दा निर्द्धक सूरू, सुन घट.... बजावत तूरू... बेझे नहीं गंवारू। (शब्द - 59) एक दुःख लक्ष्मण बन्धू हइयो। एक दुःख बूढ़ै घर तरणी**

आइयो। एक दु:ख बालक की मां मुइयो। एक दु:ख औछे को जमवारू। एक दु:ख तूठे से व्यवहारू... खल के साटैं हीरा गइयो। (शब्द - 60) अर्थात् श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान लक्ष्मण मूर्छा के समय भगवान राम के द्वारा लक्ष्मण से कही गई बातों को दोहराते हुए कहते हैं कि लक्ष्मण जिस प्रकार एक सच्चे मानव को अपने भाई के मरने का असहनीय दु:ख होता है। इसी प्रकार वृद्ध व्यक्ति के जीवन में जवान औरत से विवाह होना दु:खदायी होता है। छोटे बालक की मां का मर जाना उस बालक के लिए बहुत ही दु:खदायी होता है। इसी प्रकार नीच के रूप में जन्म होना दु:खदायी होता क्योंकि ऐसे घर में साधना और भगवान की भक्ति नहीं हो सकती न ही मोक्ष पाया जा सकता है और द्रव्य एवं बुद्धिहीन से कार्य व्यवहार दु:खदायी होता है। हे लक्ष्मण ! तुझ में तो अनन्त गुण एवं अनन्त लक्षण हैं, जिनका कोई साधारण व्यक्ति पार नहीं पा सकता। फिर आपको मेघनाथ की शक्ति कैसे लगी, आप उसे क्यों नहीं समझ सके। क्या आप परशु राम के दिये गये धनुष से ठीक प्रकार से युद्ध नहीं कर पाये ? क्या तुम राक्षसों के छल कपट के व्यवहार को नहीं जान सके ? हमने तो सोचा था तुम रावण के दसों सिर काट कर उसका वध कर दोगे। इस प्रकार के युद्ध में हमें आशा नहीं थी। हे लक्ष्मण जो व्यक्ति हमारे नाम का जप करता है मैं उसको भी बैकुण्ठधाम ले जाता हूं। तुम तो हमारे प्रिय भाई हो, अत: तुम्हें किसी प्रकार का अनुचित दु:ख नहीं होना चाहिए। अब शीघ्र उठो और हमें उत्तर दो। हे भई लक्ष्मण ! तुम्हारे बिना तो हनुमान, सुग्रीव, अंगद आदि सेनापति भी निराश खड़े हैं। हे लक्ष्मण! तुम्हारे बिना त्रिलोकी का राज भी शून्य है। आपके बिना लंका जीत ले या रावण को मार दें अथवा सीता को वापिस प्राप्त कर लें, लेकिन अब मैं तुम्हारे बिना क्या काम करूं क्योंकि जिस प्रकार हीरों के व्यापार में जैसे खल हाथ में आ जाए। अब हमें कुछ भी प्राप्त हो जाए तुम्हारे बिना कोई प्रसन्नता नहीं हो सकती। इसी प्रकार आगे दो शब्द और भी हैं जिनमें लक्ष्मण मूर्छा के कारण पूछते हैं। **काचा कंद गलै गल जायसैं। बीखर जेला राजों.... तातै तेरी कहा न बसाई। (शब्द - 64) तउवा जाग जू... इहं धर पर रती न रहिबा राजू। (शब्द - 65) दुनिया के रंग सब कोई राचै, दीन रचै सौ जाणौं। जीवतड़ा.... मूवा न आवत हांणी। (शब्द - 69) धवणा धूजै पाहण पूजै, बे फरमाई खुदाई। गुरु चेले के पायें लागै देखो लोग अन्याई। शब्द - 71 आदि आदि।।''**

6. संसार में गुरु का महत्व

शब्दवाणी में लगभग सैंकड़ों बार गुरु शब्द का प्रयोग हुआ है। उन्होंने गुरु को बहुत ही महत्व दिया है। प्रथम शब्द में ही गुरु की महिमा का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है। गुरु की वन्दना, स्तवन और उनका महत्व भारतीय समाज और संस्कृति में हमेशा से विद्मान रही है। गुरु जी समाज, राष्ट्र और धर्म का

नियामक रहा है। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान अपनी वाणी में कहते हैं मै (गुरु) तुझे पार उतारने के लिए आया हूं। जिस प्रकार काठ के उत्तम संग के कारण लोहा भी पानी में तैर जाता है, ठीक उसी प्रकार गुरु के साथ से तुम पार हो जाओगे। गुरु के वचन मोक्षदायक होते हैं। सतगुरु देव साक्षात्कार कर शिष्य के सभी दु:खों का नाश कर देते हैं। गुरु उपदेश मानने वाला प्राणी अपने असली घर परम धाम को प्राप्त कर लेता है। श्री गुरु जम्भेश्वर जी कहते हैं अब गुरु मिल गया और उसने सत्य का मार्ग बतला दिया, समस्त दु:ख दूर हो कर सभी भ्रान्तियों का निराकरण कर दिया। श्री गुरु जम्भेश्वर अपने शिष्यों को कहते हैं कि प्रकाश रूप गुरु के मौजूद होते हुए तुम लोग भूल में पड़ कर अन्धेरे में क्यों चल रहे हो। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने इस क्षेत्र के बहुसंख्यक जाट समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे जाटो ! सुनो मुझ प्रकाश स्वरूप गुरु के होते हुए तुम लोग अज्ञान रूपी अन्धकार में क्यों चलते हो। श्री गुरु जम्भेश्वर वाणी युगान्तरकारी एवं कालजयी रचना है। वाणी में जीवन के गम्भीर एवं उलझन पूर्ण मामलों पर व्यवहारिक विचार प्रस्तुत किया गया है और नैतिक प्रदान करने वाले शुचिता, सत्य-बोलना, स्नान, ध्यान, संयम, होम, जप, तप, दान, समानता, एकता, अहिंसा एवं व्यर्थ वाद-विवाद से दूर रहने वाले लोक कल्याणकारी सन्देश दिया है।

श्री गुरु ने अपनी वाणी में बाहरी आडम्बरों, पाखण्डों एवं मूर्तिपूजा का खुल कर विरोध किया तथा सत्कर्म करने, परोपकार करने और हर प्राणी का सम्मान करने का उपदेश दिया है। श्री गुरु जम्भेश्वरीय बिश्नोई समाज जैसा होना चाहिए वैसा ही शुद्ध सद्गुणों से परिपूर्ण है। इस बारे में स्वामी ब्रह्मदास जी ने लिखा है कि यदि इस पूर्ण शुद्ध समाज की सही सही बड़ाई की जाये तो उसका ही एक बहुत बड़ा एवं महा ग्रन्थ बन जाये।

❍ **पृथ्वी सिंह बैनीवाल 'बिश्नोई'**
मकान नं. 189 एफ, सैक्टर 14, पंचकूला (हरियाणा)

मोरा उपख्यान वेदूं

भगवान जम्भेश्वर जी ने अपनी वाणी में घोषणा की, **मोरा उपख्यान वेदूं** अर्थात मेरी वाणी वेद है। जन श्रुति के अनुसार वेद एक ईश्वरीय कृति है। अत: गुरु जी की इस घोषणा के तत्वार्थ को समझने के लिए हमें वेद सम्बन्धित कुछ विशेष तथ्यों का अन्वेषण करना अनिवार्य है। इस विषय में हम मुख्य रूप से केवल तीन बिन्दुओं पर ही विचार करेंगे- क्या वेद सृष्टि रचना का अभिन्न अंग हैं। क्या वेद की रचना मानव सृष्टि के बाद हुई? और क्या वेदों का कोई अन्य उद्देश्य भी है।

वर्तमान सृष्टि की रचना और उसकी अकाट्य संचालन व्यवस्था बताती है कि यह रचना एक महानतम बौद्धिक व वैज्ञानिक संरचना है। बुद्धि चेतना का गुण है। अत: स्वयं सिद्ध है कि यह सृष्टि किसी अनन्त बौद्धिक, अनन्त सामर्थ्य युक्त, अनन्त ज्ञानी, अनंत ऐश्वर्यवान तथा साधन सम्पन्न चेतन सत्ता का निर्माण है। परम सत्ता चूंकि सर्वसमर्थ है। अत: उसमें किसी प्रकार की इच्छा का कभी भी उद्‌भव होना अस्वाभाविक है। अत: इस सृष्टि का स्वयं उसके लिए कोई प्रयोजन नहीं हो सकता है। स्पष्ट है कि इस सृष्टि की रचना उस दयानिधान ने, जीव जगत के लिए ही की, जिसका एकमात्र उद्देश्य सभी जीवों का सुविधानुसार उत्तरोत्तर विकास करना है। इस विकास के बाद की चरम परिणति मानव संरचना है जो सृष्टि रचियता की सर्वोत्तम कृति है।

यहां एक आश्चर्य का विषय है कि सृष्टि का एक सर्वश्रेष्ठ प्राणी एक बात में सभी जीवों से पिछड़ा हुआ है। अन्य सारे जीवों को जहां अपने जीवित रहने भर का नैसर्गिक ज्ञान, जन्म से ही प्राप्त होता है वहीं मानव शिशु सफेद कागज के समान जन्म लेता है। उसे दूध पीना, लेटना, बैठना, खड़े होना, चलना, दौड़ना, खेलना, पढ़ना, स्वस्थ रहना तथा स्वस्थ रहना तक सिखाना पड़ता है। इस सबके लिए उसे पग-पग पर पराश्रय की अनिवार्यता अपेक्षित है। इसीलिए धर्म-प्राण भारत में गुरु की महिमा का मुक्त कंठ से बखान किया जाता है।

हमने देखा है कि मनुष्य बिना सिखाये कुछ भी नहीं सीख सकता है। मानव जाति की यह अक्षमता, प्रथम दृष्टया तो परम सत्ता का उसके प्रति किया गया अन्याय दिखाई देता है किन्तु गहन अध्ययन से पता लगता है यह भी चूक रहित सृष्टि व्यवस्था का एक सोद्देश्य अंग है। मनुष्य और अन्य जीवों के बीच एक विशेष अंतर यह है कि जहाँ सभी जीवों में वरिष्ठता का आधार शरीर मात्र है। वहीं मानवीय वरिष्ठता का मानक उसकी मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक उन्नति है जिसे विकसित करने के लिए अपेक्षित समय और प्रयास की दरकार है। यदि यह सब भी सभी को जन्म से मिला होता तो व्यक्ति के व्यक्तिगत पुरुषार्थ का क्या

महत्व रह जाता ? इसी आधार पर मनुष्य योनि को कर्म योनि और अन्य योनियों को भोग योनि की संज्ञा मिली।

इस विषय को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हमें मानव जीवन के अन्य पक्षों की भी सूक्ष्म समीक्षा करनी होगी। जग निर्माता की और से मानव को पांच ज्ञानेन्द्रियां प्राप्त हुई जिनके माध्यम से वह संसार से परिचय प्राप्त करने में समर्थ हुआ। इन पांचों ज्ञानेन्द्रियों के लिए परम सत्ता ने पांच ही 'सहायक विषयों' का निर्माण भी किया जिनकी सहायता के बिना कोई भी इन्द्रिय अपना निर्दिष्ट कार्य सम्पन्न नहीं कर सकती। ये पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं- आंख, नाक, कान, जीभ और त्वचा तथा इनके सहायक विषय हैं क्रमशः- प्रकाश, गंध,शब्द, रस एवं स्पर्श। मनुष्य को यदि ज्ञानेन्द्रियां तो मिल जाती किन्तु उनके सहायक विषयों का निर्माण न हुआ होता तो कोई भी इन्द्रियां अपना निर्दिष्ट कार्य नहीं कर पाती और इस प्रकार ज्ञानेन्द्रियों का निर्माण भी निष्प्रयोजन सिद्ध होता। इस अवस्था में रचनाकार की अक्षमता ही सिद्ध होती। अतः स्वयं सिद्ध है कि ज्ञान स्वरूप परम सत्ता ने इन्द्रियों और उनके सहायक विषयों का निर्माण भी यथोचित्त ढंग से साथ-साथ ही किया।

इन ज्ञानेन्द्रियों के अतिरिक्त मनुष्य को एक और सौगात भी बुद्धि के रूप में प्राप्त हुई। अन्य इंद्रियों के समान ही बुद्धि को भी एक सहायक विषय की अनिवार्यता है जिसे ज्ञान कहते हैं। बुद्धि के बिना अपना निर्दिष्ट कार्य नहीं कर सकती, इसलिए इसे छठी ज्ञानेन्द्रिय भी कहा जाता है। चूंकि बुद्धि भी अपने विषय के बिना निष्क्रिय है। अतः उपरोक्त न्याय के अनुसार ज्ञानेन्द्रियों और उनके सहायक विषयों के समान ही बुद्धि और उसके सहायक विषय 'ज्ञान' अर्थात् 'वेद' का निर्माण भी परम सत्ता ने स्वयं ही किया। इसी कारण महर्षि पतंजलि ने सृष्टि निर्माता ईश्वर को गुरुओं का भी आदि गुरु कहा, 'स पूर्वेषामपि गुरुः।'

उपर्युक्त स्वयं सिद्ध तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यदि मानव सृष्टि के आदि में ही वेद का प्रकाश न हुआ होता तो मानव बुद्धि का विकास भी न होता। उस दशा में मनुष्य न तो कुछ सीख पाता और न बोल पाता। वह कोई भी कार्य सही ढंग से नहीं कर सकता था। परिणामतः सारी मानव जाति गूंगे, बहरे और उन्मादी व्यक्ति के समान आचरण कर रही होती जो स्वयं सृष्टि निर्माता के लिए भी उपहास का ही कारण बनती है। अतः स्पष्ट है कि वेदों की रचना मानव सृष्टि का एक अपरिहार्य अंग है।

वेद, उपनिषद् आदि शास्त्र वर्तमान समय में आम आदमी की पहुँच से परे जा चुके हैं। जन सामान्य के बीच अब वे पठन-पाठन व चिंतन-मनन की सामग्री न होकर केवल श्रद्धा और पूजा की वस्तु रह गए हैं। अतः देश, काल और परिस्थितियों का आंकलन करते हुए वेद का अनिवार्य ज्ञान बांटने के लिए, ईश्वरीय

प्रेरणा से प्रेरित होकर अनेक महान विभूतियां समयानुसार धरती पर अवतरित होती रहती हैं। कैवल्य ज्ञानी भगवान जम्भेश्वर जी इस युग की ऐसी ही एक महानतम विभूति थे। कैवल्य ज्ञानी के विषय में महर्षि पातंजलि ने कहा '**सर्वभावाधिष्ठातृत्वं सर्वज्ञातृत्वं सर्वज्ञातृत्वं च**-3/49 अर्थात् कैवल्य ज्ञानी को सर्वभावों अर्थात् पंच भूतों पर पूर्ण अधिकार तथा सर्वज्ञता प्राप्त होती है। ईश्वर के विषय में उन्होंने कहा, '**तत्र निरतिशंय सर्वज्ञ बीजम**-1/25'। अर्थात् ईश्वर निरतिशय सर्वज्ञाता का बीज है। सारे संसार में जो ज्ञान फैला है उसका आदि स्रोत ईश्वर ही है। यह 'सर्वज्ञ बीज' कैवल्य ज्ञानी में पल्लवित पुष्पित तथा पूर्णत: फलित होता है। अत: कैवल्य ज्ञानी ईश्वर की निकटतम सत्ता होती है और उनका पृथ्वी पर अवतरण भी कभी-कभी ही होता है। इस प्रकार स्वयं सिद्ध है कि श्री जम्भेश्वर वाणी साक्षात् वेद-वाणी है जो भगवान जम्भेश्वर जी के मुख से कालानुकूल जन भाषा में प्रकट हुई।

वेद ज्ञान का पर्याय है और ज्ञान का मूल है आदि गुरु परमेश्वर। अत: मानव मात्र का परम कर्तव्य है कि वह अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करे अर्थात् ईश्वर से निकटतम सम्बन्ध स्थापित करे वेद ने स्वयं आदेश दिया-

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्व: पश्यन्त् उत्तरं। देवं-देवत्रा सूर्य मगन्म ज्योति रूत्तमम्-वेद अर्थात् सभी मानव उस सूर्य रूप व सब जगत के शासक उस ईश्वर को जाने को अंधकार से परे, आनन्द स्वरूप, दिव्य और देवत्व का दाता है तथा जो प्रलय के बाद भी यथावत विद्यमान रहता है।

ओ३म् उदुत्यं जातवेदसम् देवं वहन्ति केतव: दृशे विश्वाय सूर्यम्-वेद अर्थात् जिस परम सत्ता से यह सारा जगत उत्पन्न हुआ और जो इसका एकमात्र यथार्थ ज्ञाता है, उस दिव्य सत्ता की ओर संकेत करता हुआ सृष्टि का प्रत्येक कण, एक-एक झंडा है ताकि विश्व के सभी मानव उस सूर्य को देख सके।

उपर्युक्त वेद मंत्रों में ईश्वर को सूर्य कहा गया और उसे देखने की प्रेरणा दी। सूर्य को देखने के लिए सृष्टि जैसे-प्रकाश रहित, उपकरण का अद्भुत प्रयोग सिद्ध करता है कि यह प्रयोग रहस्यात्मक है। रहस्य यह है कि पूर्ण स्वस्थ आंखें होने पर भी हम पदार्थ को नहीं देख सकते। यह एक अकाट्य सत्य है। किसी पदार्थ पर जब सूर्य की किरणें पड़ती है तो वे किरणें परावर्तित होकर हमारी आंखों के रैटिना पर उस वस्तु के चित्र बनाती है, जिसे देखकर हमें उस वस्तु का भान होता है। इसीलिए गहन अंधकार में हम कुछ भी नहीं देख पाते। इस प्रकार हम किसी वस्तु को नहीं बल्कि सूर्य की किरणों से बने चित्र को अथवा दूसरों के शब्दों में केवल सूर्य को ही देखते हैं जिसके अलावा और कुछ देख ही नहीं सकते।

इसी प्रकार भगवान जम्भेश्वर ने सबद-04 में सिद्ध किया कि हम ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु को नहीं देख सकते, '**जद पवन न होता पाणी न**

होता, न होता धर गैणारुं चन्द न होता सूर्य न होता न, न होता गंगदर तारूं-जब पवन, पानी, पृथ्वी, आकाश सूर्य और तारकावलि आकाश गंगाए (निहारिकाएं) भी न थी।''**गऊ न गोरू माया जाल न होता**-'तथा जब गौ आदि प्राणी जगत व उन्हें भ्रमित करने वाली माया भी न थी '**तद् होता एक निरंजन शिम्भू कै होता धंधूकारुं**-तब या तो एकमात्र निरंजन स्वयं-भू: अर्थात् अव्यक्त होने पर भी स्वेच्छा से अभिव्यक्त होने की सामर्थ्य वाला ईश्वर था अथवा अव्यक्त पदार्थ जगत था जिसे वैज्ञानिकों ने 'डार्कमैटर' कहा और जिसमें स्वैच्छिक अभिव्यक्ति का नितान्त अभाव था जो आज भी उसके विकसित रूप पदार्थ में ज्यों का त्यों विद्यमान है। यही कारण है कि कोई भी वस्तु बिना छुए अपनी जगह से हिल भी नहीं सकती। स्वयं सिद्ध है कि स्वैच्छिक अभिव्यक्ति की सामर्थ्य वाले अव्यक्त स्वयं-भू: नामक बल के सक्रिय व्यापकत्व के कारण ही, यह निष्क्रिय डार्कमैटर पदार्थ जैसे साकार रूप में अभिव्यक्त हो पाया जिसे सृष्टि कहते हैं। स्पष्ट है कि जिस प्रकार सारा दृश्य जगत सूर्य का ही प्रतिबिम्ब है उसी प्रकार सृष्टि के सारे आकारों में निराकार ईश्वर ही मूर्तिकार है।

❍ **बलबीर सिंह बिश्नोई**
बिश्नोई कालोनी-सर्किट हाउस के पीछे,
दिल्ली रोड़, मुरादाबाद (उ.प्र.)
मो. : 9837241173

जम्भवाणी में लोकमंगल की भावना

भारतीय इतिहास में मध्यकाल अनेक कारणों से संक्रमण काल माना जाता है। यह काल भारत में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से ह्रास का काल था। इस काल में भारतीय धर्म एवं संस्कृति का भवन डांवाडोल हो गया था और चारों और अशांति का वातावरण फैला हुआ था।

परंतु यह भी सत्य है कि जब-जब भारतभूमि पर संकट आता है तब-तब यहां नाना रूपों में परमपिता परमात्मा स्वयं अवतार धारण करके मनुष्य को पाप और दुखों से छुटकारा दिलाता है जैसा भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है -

'परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्म संस्थापनार्थाय् संभवामि युगे-युगे॥

मानवता की रक्षा करने के लिए गुरु जंभेश्वर जी का अवतार हुआ। उनका अवतार सन् 1451 ई. को भादो वदी अष्टमी सोमवार को कृतिका नक्षत्र में राजस्थान के गांव नागौर जिले के पीपासर गांव में हुआ था। गुरु जंभेश्वर जी को साक्षात् विष्णु का अवतार माना जाता है। ये महान ईश्वरीय व्यक्तित्व वाले चमत्कारिक तथा अलौकिक विभूति थे।

सन 1485 ई. में बिश्नोई सम्प्रदाय की स्थापना से लेकर 1536 ई. तक ईक्यावन वर्षों के समय को उन्होंने आस्थावन भक्तों को उपदेश देने तथा उनका मार्ग प्रशस्त करने में लगाया। इन दिनों में उनके श्री मुख से उपदेश के रूप में जो वाणी फूटी उसका नाम जम्भवाणी अपरनाम सबदवाणी है और इसे वेदवाणी भी कहते हैं। जम्भवाणी का प्रत्येक सबद मुक्तक कविता की भांति एक स्वतंत्र रचना है जो समय-समय पर गुरु महाराज ने अनेक लोगों के प्रति उनकी शंका निवारण, जिज्ञासा समाधान कराने के लिए कही थी। जम्भवाणी का प्रमुख लक्ष्य कर्मयोगी बनाने की भावना, आत्मज्ञान, आत्म शुद्धि एवं लोकमंगल की भावना है यह मनुष्य की अज्ञानता तथा जड़तागत कुसंस्कारों पर विजय प्राप्त कराके उदात पक्षों का आत्मबोध कराती है।

गुरु जम्भेश्वर जी ने जम्भवाणी के माध्यम से समस्त परम्पराओं और मानवीय मूल्यों को स्थापित करके सादगी, सात्विकता, प्रेम, अहिंसा, शांति सद्भावना, वैदिक हवन पर्यावरण, प्रति रक्षा और आचार-विचार की प्रेरणा दी है। उन्होंने 29 धर्म नियमों की एक ऐसी आचार-संहिता का निर्माण किया था जिस पर चलने से व्यक्ति तथा समाज का जीवन कल्याणकारी बन सकता है, चाहे वह किसी धर्म, जाति, सम्प्रदाय, वर्ण, वर्ग या स्त्री पुरुष का हो उनकी 29 धर्म नियमों की सहज वेद, उपनिषद, गीता रामायण व भारतीय प्राचीन वाड्.मय की आधार संबंधी मान्यताओं पर आधारित है, जिसका मूल आधार आत्ममुक्ति और आत्मपरिष्कार करना है। जम्भवाणी में हमें अनेक रूपों में

जगह-जगह लोक मंगल की भावना देखने को मिलती है।

सत्संग की महिमा

सम्पूर्ण जाम्भाणी संत परम्परा में सत्संग को भक्ति का मूल आधार माना जाता है। सत्संग को जाम्भाणी अध्यात्म परम्परा में 'जम्मा' या 'जागरण' कहा जाता है। जाम्भाणी संतों ने इसे 'जमला' या 'जुमला' कहा है। क्योंकि सत्संग महिमा से ही भक्ति भाव के उदय, विकास एवं पोषण के अनुकूल वातावरण निर्मित होता है। सत्संग का लाभ बड़े भाग्य से मिलता है और सज्जन पुरुषों की संगति से लैकिक दुखों का विनाश होता है। 'संत सूरदास ने भी कहा है कि संतों के दर्शन से ही करोड़ों तीर्थों के स्नान के बराबर फल मिलता है।'

'संगति रहै साधु की अनुदिन, भव-दुख दूरि नसावत
सूरदास संगति करै तिनकी, जे हरि सुरति करावत ॥[2]'

सत्संग मनुष्य को सांसारिक विषय वासनाओं से भी पृथक् रखता है। जिस प्रकार से पारसमणि के स्पर्श से लोहा भी सोना हो जाता है। उसी प्रकार से एक अच्छे मनुष्य की संगति में रहने से बुरा मनुष्य भी अच्छा बन सकता है। जंभवाणी में स्थान-स्थान पर सत्संग करने का उपदेश दिया गया है।

गुरु की महत्ता

हमारे देश में प्राचीन काल से गुरु की महत्ता को स्वीकार किया गया है। गुरु ही मनुष्य को सही और गलत का भेद बतलाकर मानव को सही मार्ग दिखाकर उस परमपिता परमेश्वर से मिलाता है। गुरु के बिना ईश्वर की प्राप्ति के मार्ग में साधक विषय को साधना का माध्यम बनाकर चरम लक्ष्य तक पहुँचाता है। ईश्वर और साधक के बीच सबसे बड़ी बाधा माया की है। वह मनुष्य के माया रूपी बंधन को तोड़कर उस परमपिता परमेश्वर से उसका साक्षात्कार करा देता है।

सम्पूर्ण जाम्भाणी परम्परा में गुरु को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। जंभवाणी के प्रथम 'सबद' का आरंभ 'गुरु' ..... शब्द से हुआ है। गुरु महाराज ने अपनी वाणी में गुरु की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है कि जिस प्रकार से खुरसाणी पत्थर कठोर लोहे में लगे हुए जंग रूपी मैल को काटकर उसे पवित्र कर देता है उसी प्रकार से जंग रूपी माया के बंधन को गुरू ही काट सकता है।

'गुरु ध्याईरे ज्ञानी तोड़त मोहा, अति खुरसाणी छीजत लोहा।[3]'

सम्पूर्ण जाम्भाणी परम्परा में गुरु को सर्वोच्च स्थान दिया गया है परंतु गुरु ऐसा होना चाहिए जो मनुष्य को सही मार्ग दिखला सके ढोंगी, कपटी गुरू से बचना चाहिए क्योंकि एक सच्चा, ज्ञानी गुरु ही मनुष्य को इस भवसागर से पार उतार सकता है। इस सबद के द्वारा गुरु महाराज ने सच्चे गुरु की पहचान बतायी है।

'गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पुरोहित,

गुरु मुख धर्म बरवांणी।
जो गुरु होयबा, सहजै शीले
नादे वेदे तिहिं गुरु का आलिंकार पिछाणी
छव दर्शन जिहि के रोंपणि थांपणि'[4]

गुरु की महिमा की इससे बढ़कर और कोई परिभाषा नहीं हो सकती। क्योंकि श्रेष्ठ गुरु ही मन के मलिन आवरण को हटाकर आंतरिक हृदय को अत्यंत निर्मल बना देता है। गुरु महाराज कहते हैं कि जब तक ईश्वर के स्वरूप एवं उसकी प्राप्ति का सही ढंग ज्ञात नहीं होगा भ्रम के आवरण को हटाकर अन्त:करण को निर्मल बना देता है। गुरु महाराज कहते हैं कि जब तक ईश्वर के स्वरूप एवं उसकी प्राप्ति का सही ढंग ज्ञात नहीं होगा भ्रम के आवरण का निवारण संभव नहीं है। गुरु के ज्ञान द्वारा ही इस भौतिक शरीर में काम, क्रोध, मोह, ममता व अहंकार को नष्ट किया जा सकता है और मन पर संयम रखकर सतगुरु द्वारा बताये गये परमतत्व रूपी ज्ञान की खोज इस शरीर के भीतर ही करनी चाहिए। जिससे मनुष्य के अज्ञान, लोभ, माया अपने आप समाप्त हो जाएंगे।

पर्यावरण संरक्षण एवं अहिंसा का संदेश –

आजकल संसार में पर्यावरण संरक्षण को लेकर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर व्यापक बहस जारी है। जिस पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से आज का मानव जूझ रहा है, उसका ज्ञान तो गुरु महाराज को पहले ही हो गया था। क्योंकि गुरुजी जानते थे कि मनुष्य और पृथ्वी का बहुत घनिष्ठ संबंध है। मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर है। मनुष्य का अस्तित्व प्रकृति पर ही निर्भर करता है। गुरु जम्भेश्वर जी ने जंभवाणी में जीव रक्षा, पर्यावरण रक्षा को प्रमुख सिद्धांत मानकर पर्यावरण की प्रबंधकीय व्यवस्था का विवरण अपनी स्वानुभूतियों के माध्यम से प्रकट किया है। गुरु जम्भेश्वर जी ने तो अपनी तपस्या स्थली का निवास स्थान कंकेड़ी वृक्षों के मंडप के बीच बनाया या जैसा जंभवाणी के एक सबद से पता चलता है–

'हरि कंगहड़ी मंडप मैड़ी, तांहा हमारा वासा।
च्यारों चक नवदीप थर हरै, जै आपौ परगासा॥'[5]

गुरु जंभेश्वर जी ने जिस वक्त बिश्नोई पंथ की स्थापना की उस समय राजस्थान में भीषण अकाल पड़ा था। तब जंभेश्वर जी ने पेड़ पौधों और जीव-जंतुओं की बहुत सेवा की, क्योंकि उन्हें पता था कि यदि धरती पर मनुष्य का अस्तित्व बनाये रखना है तो, पर्यावरण संरक्षण जरूरी है और तभी से वे अपने शिष्यों व अनुयायियों को जीव-जन्तुओं व पेड़ों की रक्षा का उपदेश देते आये है और तभी से बिश्नोई समाज के लोग वृक्षों की रक्षार्थ अपने प्राणों की आहुति देते आए हैं। जिसका साक्षात् प्रमाण खेजड़ली बलिदान है। जहाँ पर 363 स्त्री पुरुषों ने वृक्षों की रक्षार्थ स्वेच्छा से अपने प्राणों की आहुति दी थी। यह बलिदान विश्व में अद्वितीय है।

गुरु महाराज ने आज से 500 वर्ष पूर्व ही पर्यावरण संरक्षण के महत्व को जानकर ही हरा रूंख न काटने का नियम बनाया जिसे देश की सरकारें अब बनाने जा रही है। जम्भवाणी तथा सम्पूर्ण जाम्भाणी साहित्य परम्परा में अहिंसा के सिद्धांत को केंद्र बिंदु माना है। गुरु जम्भेश्वर जी ने सबद वाणी में स्थान-स्थान पर जीवों पर दया करने का संदेश दिया है। उन्होंने कहा कि मनुष्यों को मूक और निरही जीवों पर दया करनी चाहिए। ये मूक जीव जो मनुष्य पर ही आश्रित है। जिनकी सेवा करना मानव धर्म है जैसा इस सबद से ज्ञात होता है।

'जीवा उपरि जोर करीजै, अंतराल हुयसी भारूं'[6]

मुस्लिम लोगों को वे चेतावनी देते हुए कहते हैं कि खाली नमाज पढ़ने से कोई लाभ नहीं सबसे पहले अपने अत:करण में दया की भावना का पालन करना सीखो। क्योंकि दया ही धर्म का मूल बिंदु है। उन्होंने अपने सबदों में मुस्लिमों के हिंसा परक कार्यों को देखकर उन्हें जगह-जगह फटकार लगाई है वे कहते हैं-

'सुण रे काजी सुणरे मुल्ला, सुण रे बकर कसाई।[7]
किणरी थरपी छाली रोसों, किणरी गाडर गाई॥''

यह सम्पूर्ण दृष्टांत मुसलमानों की हिंसा वृति पर दृष्टव्य है। निर्दोष जीवों की हत्या करना महापाप है। जो गाय प्रकृति प्रदत घास खाकर सहज में ही अमृत समान दूध देती है। उस पर छुरी क्यों चलाते हो उसका दूध पीना तो जायज है परंतु उसको मारना कहां तक उचित है।

गुरु जंभेश्वर जी ने जीव हत्या को ब्रह्म हत्या के समान माना है। यह शरीर जो पंचभौतिक तत्वों से निर्मित है उसमें जो चैतन्य आत्मा है वह ब्रह्म का अंश है। इसलिए किसी भी प्राणी को मारना, कष्ट पहुंचाना निर्मम अत्याचार है। इस प्रकार से गुरु जंभेश्वर जी ने पर्यावरण तथा अहिंसा को धर्म के साथ जोड़कर मानव जाति को महत्वपूर्ण उपलब्धि प्रदान की है।

विरक्ति की भावना-

सांसारिक विषय वासनाओं से मुक्त होना ही विरक्ति है। मनुष्य पूरी उम्र इस मोह, ममता, माया में लिप्त रहता है। वह ऐश्वर्य, भौतिकता, दिखावा, आधुनिकता के जाल में फंसा रहता है, सभी जगह अपना स्वार्थ खोजता है, कोई भी कार्य निष्काम भाव से नहीं करता। इसी कारण आवागमन के चक्र में फंसा रहता है।

गुरु जंभेश्वर जी कहते हैं कि मानव जीवन मिलना बड़ा दुर्लभ है। यह सभी को प्राप्त नहीं होता, कुछ भाग्यशाली लोगों को ही इसकी प्राप्ति होती है। इसलिए हमें संसार में रहते हुए मोह माया में न पड़कर इसे सत्कर्मों में लगाना चाहिए। जीवात्मा का वास्तविक साथी तो सत्कर्म ही है। मनुष्य के साथ उसके सत्कर्म ही जाते हैं ऊपर जब परमेश्वर मनुष्य से सत्कर्म का हिसाब मांगेगा तो क्या जवाब दोगे।

'आप खुदाबंद लेखौ मांगै'[8]

इस संसार में कोई किसी का वास्तविक साथी नहीं है। केवल उसके शुभ कर्म ही उसके साथ जाते हैं। अत: मानव को समय रहते हुए इस माया रूपी बंधनों को तोड़ देना चाहिए क्योंकि एक बार समय निकल गया तो फिर लौट कर नहीं आयेगा।

'कांय रे मुरखा तै जन्म गुमायों भुंय भारी ले भारू'[9]

गुरु महाराज कहते हैं कि जब तक मनुष्य सांसारिक आकर्षणों से मुक्त नहीं होता तब तक उसका कल्याण होना असंभव है। मनुष्य को ये सांसारिक बंधन ही उसको बुरे कार्यों में लिप्त रहने की प्रेरणा देती है। इसलिए गुरु महाराज ने सांसारिक बंधनों पर विजय प्राप्त करने का उपदेश सबदवाणी में दिया है।

विष्णु जप की प्रेरणा –

गुरु जंभेश्वर जी ने जम्भवाणी में विष्णु नाम स्मरण को सबसे बड़ा जय माना है। यह मनुष्य के संपूर्ण जीवन का मूल मंत्र है।

'विष्णु विष्णु भण अजर जरीजै यह जीवन का मूलूं'[10]

गुरु महाराज कहते हैं कि विष्णु नाम के स्मरण से काम क्रोध, मोह, ममता का स्वत: ही विनाश हो जाता है। विष्णु का जप ही मनुष्य को इस भवसागर से पार उतार सकता है। विष्णु ही परमतत्व के रूप में प्राण शक्ति का आधार है। विष्णु मंत्र का जाप, मुक्ति, आत्मोपलिब्ध तथा स्वर्ग प्राप्ति में भी सहायक एवं उपयोगी है। विष्णु नाम का जाप करने वाले व्यक्ति को इस जीवन में सुख और अलौकिक जीवन में मोक्ष की प्राप्ति होती है। किन्तु मनुष्य को समय रहते विष्णु का स्मरण कर लेना चाहिए। जीवन समाप्ति के बाद इसका लाभ मिलता है, उन्होंने अपने इस सबद के द्वारा मनुष्य को सचेत करते हुए कहा है–

'ताती बेलां ताव न जाग्यो ठाढी बेला ठारूं।
बिंबैं बेलां विष्णु न जंप्यों तातै बहुत भइ कसवारूं'[11]

यदि मानव विष्णु का जप नहीं करता तो इसमें भगवान विष्णु का कोई दोष नहीं है। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है। विष्णु का जप करने के लिए किसी श्रम, बाह्य आडम्बर की आवश्यकता नहीं है क्योंकि जप को मात्र मुख से न करके प्राण, मन एवं प्रत्येक श्वांस से करना चाहिए। विष्णु के जाप से ही प्रत्येक मनुष्य का कल्याण हो सकता है और मानव अनंत दुखों से छुटकारा पाकर मोक्ष को प्राप्त होगा।

विश्वबन्धुत्व की भावना –

जंभवाणी में हमें स्थान-स्थान पर विश्व बंधुत्व की भावना का संदेश मिलता है। गुरु महारजा ने अपने उपदेशों के द्वारा, संसार में ऊंच-नीचे, छुआछूत

भेदभाव, छोटे-बड़े की भावना इत्यादि सामाजिक कुरीतियों को जड़ से समूल नष्ट करना चाहते थे। कोई भी व्यक्ति जाति से बड़ा नहीं होता, न कुल परम्परा से, मनुष्य अपने सत्कर्मों व आचार से बड़ा होता है। गुरु जंभेश्वर जी ने कभी भी भेदभाव पूर्ण नीति को स्वीकार नहीं किया। उनकी दृष्टि में सभी व्यक्ति एक समान थे। वे कथनी करनी की एकरूपता पर बल देते हुए कहते हैं कि प्रत्येक कार्य को सर्वप्रथम स्वयं करना फिर दूसरे को उसके बारे में उपेदश देना चाहिए।

'पहलु किरिया आप कुंमाइये
ते अवरां न फुरमाइयै।'[12]

उनकी सम्पूर्ण वाणी सैद्धान्तिक न होकर स्वानुभूतिमय है। गुरु महाराज द्वारा उच्चारित जंभवाणी से निर्धारित निर्देशित नियमों का सम्बन्ध समस्त मानव जाति से है। इसमें किसी भी मनुष्य के प्रति भेदभाव पूर्ण नीति का अनुसरण नहीं किया जा सकता है। उनकी उदात विचारधारा से अनुप्राणित होकर न केवल गृहस्थजनों ने अपने मार्ग को प्रशस्त किया बल्कि अनेक साधु सन्यासियों ने भी उसके द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण कर अपने जीवन को अलौकिक किया। उन्होंने अपने वाणी में इन तत्वों का प्रतिपादन किया जो प्रत्येक मानव के लिए आदरणीय और ग्राह्य है। गुरु महाराज ने सच्चाई, सादगी, सात्विकता, कर्मठता, श्रमशीलता एवं कर्ममय जीवन जीने का प्रेरणा देते हुए लोकमंगल और लोक कल्याण का मार्ग सुदृढ़ किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी : जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य भाग-1 पृष्ठ 445, 2. सूरसागर 2/17
3. श्री कृष्णानन्द आचार्य : जम्भसागर, पृष्ठ 20
4. डॉ. किशनाराम बिश्नोई : गुरु जम्भेश्वर विविध आयाम, पृष्ठ 48
5. डा. किशनाराम बिश्नोई : जम्भवाणी मूल संजीवनी व्याख्या, पृष्ठ 285
6. श्री कृष्णानंद आचार्य : जम्भसागर, पृष्ठ 34
7. वही, पृष्ठ. 32, 8. सूर्यशंकर पारीक : जाम्भोजी की वाणी, पृ. 192
9. श्री कृष्णानंद आचार्य : जम्भसागर, पृष्ठ 38
10. वही, पृष्ठ. 43, 11. सूर्य शंकर पारीक : जाम्भोजी की वाणी, पृ. 194
12. डॉ. किशनाराम बिश्नोई : गुरु जम्भेश्वर विविध आयाम पृ. 54

❍ **श्रीमती अंजू रानी**
शोधार्थी
गुरु जम्भेश्वर धार्मिक अध्ययन संस्थान
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

जम्भवाणी में क्षमा का महत्व

विक्रमादित्य के संवत् 1508 भादो वदी अष्टमी में आधी रात के समय, मारवाड़-देश, गांव-पीपासर ग्रामपति ठाकुर लोहटजी की धर्मपत्नी हंसादेवी के शुद्ध उदर से श्री जम्भेश्वर भगवान् का अवतार हुआ। परोपकार करना सबसे ऊंचा काम है, इस बात को विष्णु भगवान जानते हैं। भूमिभार हारी श्री विष्णु भगवान ने कृष्णावतार में बहुत से कार्य किये, जो कुछ शुभ कर्म बाकी रह गये, उनके करने के निमित श्री विष्णु-श्री जम्भेश्वर भगवान् के रूप में अवतरित हुए। श्री जम्भेश्वर भगवान ने मानव जाति की आध्यात्मिक तथा समाजिक उन्नति के लिए उणतीस धर्मों-नियमों को पालन करना अनिवार्य बताया तथा शब्दवाणी का उपदेश दिया। विश्नोई धर्म का अधिकांश साहित्य स्वामी यतीन्द्रवर्भ्यजी, स्वामी वील्हाजी और उनके दो शिष्य श्री सुरजनदास जी और श्री केसोदासजी द्वारा ही लिखा गया है। विष्णु अवतार श्री जम्भेश्वर जी ने उणतीस धर्म आधारित मानव धर्म की स्थापना की। उनमें से ग्यारवां धर्म नियम क्षमा। अपना उपकार करने वाले से बदला लेने की सूदी सामर्थ्य रहते हुए भी बदला न लेकर उस उपकार को प्रसन्नता के साथ सहन कर लेना क्षमा कहलाता है।

मनुष्य माया से मोहित है, मोह के कारण वह भागों में सुख समझकर उनकी प्राप्ति के लिये परिणाम न सोचकर दूसरे का अनिष्ट कर बेठता है। मन से साधारण प्रतिकूल घटना में ही मनुष्य अपना अनिष्ठ मान लेता है और उसी अवस्था में उसे क्रोध आता है। आगे चलकर इसी क्रोध के कई रूप बन जाते हैं, जिन्हें द्वेष, वैर, प्रति हिंसा और हिंसा आदि नामों से पुकारा जाता है, जिस समय किसी के प्रति मन में द्वेष उत्पन्न होता है, उसी समय से अमंगल का प्रारम्भ हो जाता है। किसी को अपना शत्रु समझकर उससे बदला लेने की प्रवृत्ति से न केवल उस वैर का ही अनिष्ठ होता है, पर अपना भी महान् अनिष्ट होता है, दिन-रात हृदय डाला करता है। इतने में भी इस अमंगल की समाप्ति नहीं हो जाती। दोनों ओर से द्वेष और प्रतिहिंसा की पुष्टि होते-होते परस्पर विविध प्रहार से संघर्षण होने लगता है और उससे एक ऐसा प्रबल दावा नल जल उठता है, जो बड़ी-बड़ी जातियों और राष्ट्रों को भस्म कर डालता है।

यदि मनुष्य अपने ही जैसे दूसरे मनुष्य की किसी भूल को द्वेष न समझकर उस पर क्षमा कर दे तो उन दोनों के साथ की समय सारा समाज भी बड़े अनर्थ से बचा सकता है। हम जिस घटना को अपनी बुराई समझते हैं, वह वास्तव में हमारी बुराई ही है, ऐसा कोई निश्चय नहीं है। बहुत बार मनुष्य किसी घटना से अपना अनिष्ट समझता है, पर वही घटना परिणाम में उसके सुख का कारण सिद्ध होती है। हम भूल से मन के प्रतिकूल प्रत्येक घटना में ही प्रायः अनिष्ट देखते हैं।

यह निश्चित बात है कि सभी घटनाएं या दूसरों के द्वारा किये हुए सभी कार्य हमारे मन के अनुकूल नहीं हो सकते, सबके मन की भावना ओर प्रवृत्ति तथा सबकी परिस्थिति समान नहीं हो सकती। मनुष्य की जो शक्ति जगत की भलाई में व्यय होनी चाहिए, वही शक्ति एक-दूसरे के विनाश के लिये व्यय की जाती है। इससे यह सिद्ध हो गया कि हमें जिस मनुष्य के जिस कार्य से कुछ हानि पहुंचती है, उसने वह काम जान बूझकर ही हमें हानि पहुंचाने के लिए किया हो, सभी जगह ऐसी बात नहीं होती, हमारी भ्रान्त धारणा ही उसके कार्य को इस रूप में परिणत कर देती है।

दूसरे के द्वारा अपना कोई अनिष्ट होते देखकर सबसे पहले इस बात का विचार करना चाहिये कि वास्तव में इसमें हमारा कोई नुकसान है या नहीं। बहुत बार मनुष्य क्रोध या द्वेष के विकार में इस बात का स्वयं निर्णय नही कर सकता। ऐसी स्थिति में उसे चाहिए कि वह आस-पास के किसी सत्पुरूष के पास जाकर उससे पूछे कि अमुक मनुष्य के अमुक कार्य से वास्तव में कोई हानि है या नहीं ? सत्पुरूष्ज्ञ की रागद्वेष्ज्ञ रहित बुद्धि से बड़ा सुन्दर निर्णय होता है। यदि वह यह कह दें कि इसमें तुम्हारी कोई हानि नहीं, तब तो क्रोध करने का कोई कारण ही नहीं रह जाता। हमें चाहिये कि अपनी भूल के लिये पश्चाताप करें और शुद्ध तथा सरल चित से विनयपूर्वक उससे क्षमा-याचना करें और शुद्ध तथा सरल चित से विनयपूर्वक उससे क्षमा याना करें। बार-बार क्षमा याचना करने पर यह सम्भव नहीं कि वह हमें क्षमा न कर दे। ऐसी अवस्था में अभिमान और झूठी ऐंठ तथा अकड़ को त्यागकर क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये। जो मनुष्य किसी दूसरे की हानि करना चाहता है, वह स्वयं अपनी ही हानि करता है, यह सिद्धान्त है। अतएव जो नुकसान आप करता है वह भ्रम में पड़ा हुआ है - पागल है। भूला हुआ या पागल सर्वथा क्षमा का पात्र होता है। यदि मनुष्य समाज इसे क्षमा सिद्धान्त को स्वीकार कर ले औश्र इसके अनुसार बर्ताव करने लगे, यदि परस्पर में लोग एक-दूसरे के प्रति क्रोध या प्रतिहिंसा के भाव से काम लेने के पूर्व इस प्रकार से विचार कर लिया करे तो जगत् बड़े-बड़े अनर्थों से बच सकता है। फिर न तो जगत् में शांति स्थापना के लिये जेनेवा में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का खिलवाड़ करने की आवश्यकता रहेगी।

गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा ''क्षमा दया हिरदै-धरो-गुरु बतायो जाण''

यदि भूल से कोई गलत कार्य कर बैठे तो उसे दण्ड देने की भावना न कर क्षमा कर देनी चाहिये। मनुष्य का वास्तविक आभूषण गुण है अर्थात् जिस मनुष्य के पास कोई गुण नहीं है उसकी सुन्दरता शोभा नहीं देती। इसी गुण का आभूषण ज्ञान है अर्थात् परमात्मा तत्व के ज्ञान होने पर विद्या और कार्य-कुशलता की अधिक शोभा बढ़ती है और ज्ञान का आभूषण क्षमा है अर्थात् इस प्रकार ज्ञानी होते हुए भी जो व्यक्ति अज्ञान में पड़े हुए जीवों के प्रति क्षमा भाव रखकर उनके उपकार में लगा रहे वह व्यक्ति युग-युग शोभा पाता है। जाम्भेजी एक शब्द में कहते हैं - ''जो कोई

आवै हो-हो-करता। आप ज होइये पाणी। अगर कोई क्रोध वश आग बबूला होकर हो-हो करता हुआ आता है, तो आज समाशील हो जावें। गुरु जाम्भोजी ने अपने भक्तें से फरमाते हैं - हे भाईयों ! अगर आपकी किसी से अनबन हो गई है तो एक रात भी न गुजरने दो। विरोधी के घर जाकर उससे क्षमा याचना करते हुए सुलह कर लो, यही मानवता है। आगे गुरुवर फरमाते हैं कि विपति काल में धैर्य धारण करना, वैभव काल में क्षमा करना, मानव धर्म है। समर्थ पुरुष के लिए सब जगह और सब समय में क्षमा ही है। एक मनुष्य ने दूसरे को गाली दी, बदले में उसने दे दी। दोनों बराबर हो गये, यह प्रतिहिंसा का प्रत्यक्ष रूप है। परन्तु उसके मुंह में सहला यह उद्‌गार निकल गया कि गाली देता है तो उसका मुंह गंदा होता है, परमात्मा तो सब देखते हैं, जो करेगा सो पावेगा। परमात्मा सबका न्याय करते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्तमान काल में इस भाव के लोग भी बहुत ही कम पाये जाते हैं। वैर की वासना को साथ रखकर मरने वाला न मालूम कितने काल तक प्रेत योनि की कठिन यंत्रणाओं को भागता है और स्कूल देह की प्राप्ति के बाद भी न मालुम कितनी योनियों में उसे केवल वैर भाव के कारण ही भटकना पड़ता है। क्षमा ही एक ऐसा साधन है जो इस दु:ख से मनुष्य को बचाता है।

एक समय महर्षि भृगु भगवान् शिव और ब्रह्मा के समीप से होते हुए बैकुण्ठ में भगवान् विष्णु के पास गये। भगवान् उस समय श्री लक्ष्मीजी की गोद में मस्तक रखे लेट रहे थे। भृगुजी ने जाते ही भगवान् के वक्ष: स्थल पर जोर से लात मारी। भगवान् उठे और भृगुजी के चरण पलेटते हुए बोले, महाराज ! मेरी छाती बड़ी कठोर है, आपके अत्यन्त कोमल चरणों में बड़ी चोट लगी होगी। भगवान् ! मुझे क्षमा कीजिये, आपके चरण-चित्त को मैं सदा आभूषण के समान हृदय में रखूंगा।

भृगुजी तो भगवान् विष्णु का यह व्यवहार देखकर दंग रह गये। भगवान् चाहते तो भृगुजी को कड़े-से कड़े दण्ड दे सकते थे। परंतु उन्होंने मुनि के पद कमल पलोट कर केवल भृगुजी के हृदय पर ही नहीं वर जगत् के इतिहास पर एक ऐसी छाप लगा दी जो क्षमा को सर्वदा ऊंचा बनाये रखेगी।

क्षमा पुण्य की सरिता है। क्षमा का हृदय विशाल है चाणक्य नीति में कहा है कि क्षमा बराबर तप नहीं। महाभारत में वेदव्यास जी ने कहा कि क्रोध, लोभ्ज्ञ से उत्पन्न होता है, पर दोष्ज्ञ दर्शन से रूठता है, क्षमा करने से थम जाता है।

विष्णु अवतार श्री जाम्भोजी ने भी अपने उन तीन नियमों में क्षमा पर बल दिया है। अगर हम सभी क्षमा बल पर चले तो विश्व शांति स्थापित होकर मानवता की गंगधरा बह सकती है।

❍ **पुरखाराम साहू, एडवोकेट**
मानद् प्रधान सम्पादक-जम्भादेश
1 च 6, मधुबन नगर, जोधपुर 342005

बिश्नोई पंथ : वैश्विकता का प्रतीक

विक्रम सम्वत् 1508 (सन् 1451) भादव कृष्णापद अष्टमी को वर्तमान राजस्थान के नागौर जिला के पीपासर गांव में श्री गुरू जाम्भो जी ने अवतार लिया। उनके पिता का नाम लोहटजी व माता श्री हांसा देवी था। गुरू जाम्भोजी ने अवतार के साथ ही अपनी दिव्य अलौकिक विभूतियों से सबको अचरज में डाल दिया। वे एक पलक में अपनी दिव्य अलौकिक शक्तियों से अनहोनी को होनी कर देते और दूसरे ही पलक में साधारण बालक की तरह क्रीड़ा करते। माता-पिता, चाचा भुआ, सेविका, ज्ञानवान ग्रामीण नर-नारी बालक सभी उन क्रिया-कलाप देखकर अपने आप पर विश्वास नहीं कर पाते कि जो वे देख रहे हैं क्या वह वास्तविकता है या हमारा भ्रम है। सभी अपनी अपनी शंकाएं एक दूसरे को बताने लगे तब सबको यह पूर्ण विश्वास हो गया कि यह साधारण बालक नहीं है। गुरू जाम्भोजी ने सात वर्ष तक बिना बोले लीलाएं की।

गुरू जाम्भोजी ने अपने आगमन के प्रयोजन से जनसाधारण को अवगत करवाने के लिए श्रीमुख से सर्वशक्तिमान सृष्टि के रचियता की गुरूता की अभिव्यक्ति निमित प्रथम सबद उच्चारित किया। मानव मात्र को उपदेश दिया कि हे मानव! तू इस गुरू को पहचान जिसने समस्त सृष्टि की रचना की जो समस्त प्राणियों का आधार है और सम्पूर्ण ज्ञान का स्त्रोत है, जो गुरू रूप में समस्त सृष्टि का पोषण करता है। मानवमात्र के सांसारिक अज्ञान माया, मोह को तोड़ने वाला साक्षात् वही गुरू आपके सामने है। कच्चे धागे और मिट्टी के कच्चे पात्र में कुएं से जल निकालने की क्षमता अन्य किसी में न थी और ना होगी। गुरू जाम्भोजी ने ईश्वर की व्यापकता और उसके स्वरूप का जो वर्णन किया है वह समय स्थान, व्यक्ति से परे सार्वकालिक, सार्वभौमिक है।

गुरू जाम्भोजी ने राजस्थान के बीकानेर जिले की नोखा तहसील में स्थित "समराथल धोरा" पर कार्तिक कृष्णा अष्टमी विक्रम सम्वत् 1542 (सन् 1885) को विधिवत् रूप से बिश्नोई पंथ की स्थापना की। सम्वत् 1515 से 1542 तक गुरू जाम्भोजी ने लौकिक एंव अलौकिक ज्ञान देकर जिज्ञासुओं में ज्ञान का प्रकाश किया। अपने समस्त अनुयायियों के समक्ष समराथल धोरा पर गुरू जाम्भोजी ने कलश मंत्र से कलश स्थापित कर हवन किया। कलश के जल को "पाहल मंत्र" से अभिमंत्रित कर पाहल बनाया। इस पाहल से गुरू जाम्भोजी ने अपने चाचा पुल्होजी को अपना प्रथम शिष्य बनाकर बिश्नोई-पंथ की स्थापना की। उन्होंने बिश्नोई पंथ में दीक्षित होने वाले अनुयायियों के लिए 29 नियमों की आचार संहिता प्रतिपादित की। बीस और नौ नियम के आधार पर पंथ का नामकरण बिश्नोई हुआ।

गुरू जाम्भोजी ने जीवन पर्यन्त पंथ में सबको दीक्षित किया।

बिश्नोई पंथ की व्यापकता उसकी स्थापना के प्रथम सोपान कलश मंत्र में परिलक्षित होते हैं। इस मंत्र के माध्यम से गुरू जाम्भोजी ने सृष्टि के मूल कारण व उसके विस्तार का उल्लेख इस प्रकार किया :- **समरथ कथा सुणो सब कोई। ताते पृथ्वी उत्पति होई। अकलरूप मनसा उपराजी ता मां पांच तत्व होय राजी। आकाश, वायु, तेज, जल, धरणी। ता मां सकल सृष्टि की करणी। .....**..... ..... अर्थात् पंथ स्थापना के समय उपस्थित समस्त जीवों को गुरू महाराज ने उपदेश दिया कि समस्त ब्रह्माण्डों में समर्थवान ने सृष्टि रचना करने की (इच्छा) मनसा से उन्होंने पृथ्वी उत्पन्न कर पांच तत्व आकाश , वायु, तेज, जल व धरती पैदा किये। इन सबको मिलाकर समस्त सृष्टि की रचना की। उसी समर्थवान से पृथ्वी के समस्त जीवों का सृजन पालन और संहार रूपी परिवर्तन चक्र चलता है। उस समर्थवान को गुरू जाम्भोजी ने विसनूं शब्द से सम्बोधित किया। विसनूं ही समस्त चराचर जगत का मूल (आधार) हैं। विसनूं ही शब्द, गुरू, परमात्मा स्वयंभू है। गुरू जाम्भोजी ने बताया कि समस्त सृष्टि एक इकाई है और उसका रचियता एक है।

गुरू जाम्भोजी ने उपदेश दिया कि उस परमात्मा को असंख्य नामों से जाना जाता है लेकिन बिश्नोई के लिए केवलमात्र विसनूं नाम ही स्मरणीय, अनुकरणीय व मूल है। गुरू, शब्द, विसनूं तीनों एक ही है। जाम्भोजी गुरू रूप में विसनूं है। शब्दवाणी गुरू महाराज के श्री मुख से उच्चारित सारस्वत ज्ञान है। ये शब्द ही गुरू है। शब्दवाणी के सबद संख्या 4 में गुरू जाम्भोजी ने अपने स्वरूप, ब्रह्माण्ड, समय की गणना तथा समय-समय पर हुए वर्तमान व आगे भी होते रहने का उल्लेख किया। अपनी सर्वज्ञता बतायी। सबद स. 6 में स्पष्ट कहा कि मैं किसी पाठशाला में नहीं पढा, किसी गुरू से नहीं पूछा मैं अपने स्वभाव से समस्त चराचर जगत को जानता हूं। सबद सं. 40, 50, 59, 85, 88, 89, 94 में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, उसके अंग सूर्य चन्द्रमा तारे उनकी गति दूरी व सापेक्षिकता का प्रमाणिक वर्णन विस्तार से किया है जो सर्वसाधारण के समझ आने वाली भाषा में बतलाया गया। वैज्ञानिक अनुसंधान उनकी पुष्टि करता है।

गुरू जाम्भोजी का मुख्य केंद्र समराथल धोरा था। वे निरन्तर भ्रमण करते रहते थे जो भी उनके सम्पर्क में आया उसकी जीवन शैली पर गुरू जाम्भोजी के उपदेशों का प्रभाव पड़ा। शब्द सं. 64, 65, 67, 85, 88 में गुरू जाम्भोजी के कार्यक्षेत्र की जानकारी मिलती है। उनके सम्पर्क में दिल्ली के बादशाह सिंकदर लोदी के सहित अनेक देशों के सुलतान नवाब, राजा, महाराजा, राव, जागीरदार, सूबेदार के साथ-साथस धर्माचार्या, साधू, सन्त, विद्वान, सदाचारी, दुराचारी स्त्री

पुरूष आते रहते थे। गुरू महाराज ने सभी को अच्छा व्यवहार रखने पर बल दिया। भ्रमित का भ्रम मिटाया। वर्तमान भूभाग के अलावा वे कंधार अफगानिस्तान, सिंध, लंका आदि स्थानों पर गये।

गुरू जाम्भोजी ने लौकिक के साथ-साथ अलौकिक ज्ञान बताया। उस समय धर्म के नाम पर पाखण्ड, आडम्बर, अंध विश्वास था। धर्म की आड़ में अनैतिक आचरण करने वालों की संख्या काफी थी वे जनसाधारण को धर्म का भय दिखाकर भ्रमित कर अपना निजि स्वार्थ सिद्ध करते थे। गुरू जाम्भोजी ने धर्म की एक नयी परिभाषा दी। देवी, देवता, वेद, पुराण, शास्त्र, कुरान गीता के नाम पर हो रहे झूठे कर्मकाण्डों का खुलकर विरोध किया। साधू, महंतो, मुल्ला, मौलवी, पण्डित भोपों, पूजारियों की अज्ञानता को उजागर किया। अवतारों, सत्पुरूषों की आड़ में चल रहे आडम्बरों का सबद सं॰ 3, 5, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 23, 42, 44, 48, 50, 71, 72, 84, 90, 116, 117 में गुरू महाराज ने खण्डन किया तथा प्रमाण सहित समझाकर उन्हें सन्मार्ग पर चलाया।

गुरू जाम्भोजी ने अपने शिष्यों को 29 नियमों की आचार संहिता दी जो इनका पालन करेगा वही बिश्नोई कहलाने का अधिकारी होगा। यदि इनमें से एक भी नियम की पालना नहीं की तो वह अपने गुरू को लज्जित करने का दोषी होगा। ये नियम प्राणी मात्र के लिये कल्याणकारी है। गुरू जाम्भोजी ने शताब्दियों पहले प्राणी मात्र की भलाई के लिए जिन नियमों का पालन करने का आदेश दिया था वे आज ज्यादा प्रासंगिक हो चुके हैं। आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सृष्टि को बचाने के जो उपाय व तरीके अपनाये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की जा रही है वह गुरू जाम्भोजी ने बहुत पहले बता दी थी तथा उनका अनुसरण व आचरण बिश्नोई समाज करता आ रहा हैं जिसकी मिशाल समाज ने अनवरत रूप से अपने त्याग व बलिदान से विश्व के सामने की है। अधिकांश स्थानों पर जीवों का भक्षण किया जाता है वहीं उन्हीं जीवों को बचाने के लिए गुरू जाम्भोजी के शिष्यों ने आत्म बलिदान दिया। जहां विकास के नाम पर आज अपने असंख्य पेड़ काटे जाते हैं वहीं बिश्नोइयों ने पेड़ों की रक्षार्थ बलिदान देकर मानव इतिहास में सर्वप्रथम अद्वितीय उदाहरण पेश किये हैं। नशा मानव समाज की जड़ें खोखली कर रहा है। सम्पूर्ण नशीली वस्तुओं के सेवन से त्रस्त व दुखी है। गुरू महाराज ने नशीली वस्तुओं से हमेशा दूर रहने का आदेश दिया। गुरू महाराज ने योग व ध्यान संयम, सुचिता, चरित्र की नैतिकता, सुपात्रता पर विशेष बल दिया।

गुरू जाम्भोजी ने ज्ञान (सबद) को सर्वोपरि महत्व दिया। उन्होंने मानवमात्र को बताया कि ज्ञान ही गुरू है जिसके पास ज्ञान है उसका कोई शत्रु हो ही नहीं सकता। उन्होंने संसार में अज्ञानताप को दूर कर ज्ञानरूपी प्रकाश फैलाया। उन्होंने

कहा मैं छतीस युगों को जानता हूं तथा उससे आगे छतीस युग को भी जानता हूं। उन्होंने बताया कि कर्म ही जीवन है तथा कर्म के अनुसार उसे परिणाम भुगतना पड़ेगा। विद्वान शक्तिशाली, अवतारी पुरूष भी अपने कर्मों के फल से मुक्त नहीं हो सकते। इसलिए कर्म करने से पहले विचार करने का उपदेश दिया। जो मानव मात्र को गलत व अनैतिक कार्य नहीं करने के लिए प्रेरित करता है। जिस भी व्यक्ति के मन में यह विचार दृढ़ हो जायेगा वह कभी गलत कार्य नहीं करेगा।

उन्होंने उपदेश दिया कि संसार में समय-समय पर सतगुरू हुए हैं तथा आगे भी होते रहेंगे। उनमें किसी धर्म या स्थान के नाम पर नहीं करना। शब्दवाणी में कहा है कि जो जिंदा काबे में था समराथल पर मौजूद हूं तथा आने वाले समय में भी किसी रूप में होता रहूंगा।

गुरू जाम्भोजी ने सृष्टि के प्रत्येक प्राणी को महत्व दिया। 29 नियमों में व्यक्ति को जीव के प्रति कर्त्तव्य व व्यवहार पर विशेष बल दिया। क्षमा व दया को धारण कर प्रत्येक जीव के प्रति दया व अहिंसा का पालन कड़ाई से करवाया। उन्होंने पेड़ों की रक्षा का ही नियम नहीं बताया बल्कि बैल, मिंढे व बकरों को बधिया नहीं कर उन्हें जीवन पर्यन्त सुरक्षित रखने का आदेश दिया। ऐसी व्यवस्था का बिश्नोई समाज द्वारा पालन करने के कारण समस्त विश्व में इस विचारधारा के अनुयायियों को मार्गदर्शन व प्रोत्साहन मिला।

पाणी, वाणी, ईंधन की शुद्धता वैश्विक चिन्तन का उत्कृष्ट उदाहरण है। आज समस्त विश्व में जल की शुद्धता ज्वलंत समस्या है। वाणी के शोर ने प्राणी मात्र की शांति व सकून छीन लिया है। ईंधन के रूप में वायु प्रदूषित होकर प्राणी मात्र का जीवन कष्टमय हो गया है। इन तीनों का समस्त पृथ्वी के क्रिया कलाप पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। इनका महत्व केवल बिश्नोई के लिए नहीं प्राणी मात्र के लिए है।

नशीली वस्तुओं के सेवन का निषेध केवल बिश्नोई समाज के लिए लाभप्रद नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति व जीव के लिए है। जानवर भी इनका सेवन करेगा तो उसका जीवन नरक बन जायेगा। ये ऐसी पद्धति है जो समस्त विश्व को सही दिशा की ओर से जाने में सहायक है।

सृष्टि के रचियता समर्थवान परमात्मा की विद्यमानता बिश्नोई पंथ में वैश्विक है। गुरू महाराज के अनुसार वह शक्ति एक है जो दृश्य-अदृश्य प्रत्येक प्राणी स्थान व कण-कण में विराजमान है। जिसका कोई रूप रंग आकार प्रकार नहीं है जो सर्वव्यापक व कल्याणकारी है। बिश्नोई पंथ किसी स्थान विशेष या आकार विशेष की पूजा की पद्धति नहीं है बल्कि सर्वव्यापक, सर्वग्राह्य व सर्वसुलभ विचारधारा है, जिसमें वैश्विकता का प्रत्येक गुण विद्यमान है।

श्री गुरू जाम्भोजी ने सृष्टि की रचना जीवन की उत्पति उसके रूप का वैज्ञानिक व प्रमाणिक ज्ञान मानव को दिया। उन्होंने बताया कि समस्त सृष्टि का रचियता एक है किसी में भेदभाव नहीं है कोई व्यक्ति जाति स्थान व रंग से श्रेष्ठ नहीं होता। उसका महत्व उसके क्रिया-कलाप के अनुसार अलग-अलग है। प्रकृति में जब तक संतुलन है तब तक मानव का अस्तित्व रहेगा। प्रकृति के संतुलन में मानव मात्र का कल्याण है उनकी शिक्षा, उपदेश किसी व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष के लिए नहीं है बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याणर्थ है। बिश्नोई पंथ के माध्यम से श्री गुरू जाम्भोजी ने मनुष्य को जीने का सर्वोत्तम ढंग बताया। उनके पंथ से मानव को जीने का तरीका व जीवनोपरांत मोक्ष प्राप्त होता है।

बिश्नोई पंथ की विचारधारा किसी स्थान विशेष, समय विशेष या व्यक्ति विशेष की सीमा में बंधी हुई नहीं है। यह सर्वकालिक मानव मात्र को उसके कल्याण सुख समृद्धि एवं प्रगति की ओर अग्रसर करने की जीवन पद्धति है। इसको अपनाने वाला कभी संकीर्णता से ग्रस्त नहीं हो सकता। यह पद्धति व्यक्तिगत व्यक्तित्व का विकास करती है तथा सामूहिक क्रिया-कलापों को सकारात्मकता प्रदान करती है। इसलिए बिश्नोई पंथ वैश्विकता का प्रतीक है।

❍ **राजाराम थालोड एडवोकेट**
30, केनाल पार्क, श्रीगंगानगर
मो.नं. - 94145-12169

सुकृत अहल्यो न जाई

गुरु जाम्भो जी ने सबदवाणी में कहा है कि 'सुकृत अहल्यो न जाई' अर्थात् शुभ कार्य किया हुआ कभी व्यर्थ नहीं जाता। जैसे श्री कृष्ण ने गीता में उपेदश दिया है कि 'कर्म किये जा फल की इच्छा मत कर' श्री कृष्ण ने शुभ कार्य करने का संदेश दिया था परंतु गुरु जाम्भो जी ने उससे भी आगे की बात कही है कि शुभ कार्य कर शुभ कर्म किया हुआ कभी व्यर्थ नहीं जायेगा। यह अवश्य काम आयेगा और इससे मुक्ति अवश्य प्राप्त होगी।

जितने भी धार्मिक ग्रन्थ वेद-पुराण आदि हैं सभी में मनुष्य के उद्धार की बातें बतलाई हैं। गुरु जाम्भो जी द्वारा कही हुई सबदावली सभी ग्रन्थों का सार है और सबका सार है केवल यह शब्द 'सुकृत अहल्यो न जाई।' अगर केवल इसी शब्द का पालन हो जाये तो मनुष्य शुभ कर्म करेगा अगर शुभ कर्म करेगा तो गुरू जाम्भो द्वारा बताये गये उन्नतीस नियमों का पालन होगा। जिसमें मनुष्य को जीवां ने जुगती तथा मरे मोक्ष प्राप्त होगा। गुरु जाम्भो ने बहुत सीधा रास्ता मानव मात्र 'सुकृत अहल्यो ने जाई' शब्द की पालना करने से मुक्ति प्राप्त होगी। केवल इस एक शब्द की पालना करने से जीवन की सच्चाई, ईमानदारी, सादगी, पवित्रता और कर्मठता आयेगी।

गुरु जाम्भो जी ने अपनी सबदवाणी में अनेक जगह कहा है कि मैं अपने सुगरे शिष्यों का दास हूं, सुगरे शिष्य वही हैं जो सुकृत कार्य कार्य करें और वे ही व्यक्ति स्वर्ग में जाएंगे। निगुरे व्यक्ति तो निराश ही रहेंगे। गुरु जाम्भो ने कहा है कि मेरी बातें पुस्तकों और शास्त्रों में लिखी हुई नहीं है बल्कि अनुभव की है। मैं वेद-तत्व का बखान करता हूं। संसार में भटके हुए अनेक लोग सच्ची करनी (सुकृत कार्य) से पार उतर गये। गुरु जाम्भो ने कहा कि तुम भूल में न चलकर तत्व पर विचार करो। कलयुग में तत्व न जानने के कारण सभी भ्रम में हैं। गुरू जाम्भो ने संसार को गोवलवास बताया है। अर्थात् बताया कि यह संसार तुम्हारा स्थाई निवास नहीं है। यह नश्वर है। संसार की उलझनों में पड़ना व्यर्थ है इसलिए आयु, कुल और पद आदि का विचार न करके उसके कर्मों को सुधारना चाहिए।

अन्तःकरण शुद्ध होना चाहिए यदि अन्तःकरण शुद्ध है तो अड़सठ तीर्थ हृदय भीतर ही है। सदा सादगी और सदाचरणपूर्वक रहना मनुष्य का परम कर्तव्य है।

गुरु जाम्भो ने शुभ कर्म (सुकृत कार्य) की दोहरी महता बतलाई है। मनुष्य जन्म पूर्वजन्म के शुभ कार्यों के कारण ही मिलता है और इस जन्म के किये

गये शुभ कर्मों का फल आगे मिलेगा। मनुष्य कार्यों से ही ऊंच और नीच माना जाता है कुल और आयु से नहीं। सार के रूप में गुरु जाम्भो जी का कथन है कि साथ तो केवल सुकृत ही चलते हैं, बिना सुकृत कार्यों के पछताना ही पड़ेगा। गुरु जाम्भो ने कहा है कि जो सुकृत कार्य करता है और जीने की विधि जानता है वही जीवन मुक्ति प्राप्त कर सकता है। मनुष्य का लक्ष्य ही मुक्ति प्राप्ति का होता है। वे कथनी और करनी में एकरूपता चाहते थे। उन्होंने कर्ममय (शुभ कर्म) जीवन का उपदेश दिया। अन्ततः मनुष्य ही उनका लक्ष्य था उन्होंने कहा प्रत्येक व्यक्ति को सुकृत (सद्कार्यों) और लोक-कल्याण में अपनी सामर्थ्यनुसार सहयोग देना चाहिए। वे कहते हैं कि जीते-जी मरो, जीवन मुक्ति प्राप्त करो, पर वही ऐसा कर सकता है जो सुकृत करे। जो अपना कर्तव्य पालन करे। ईमानदारी की कमाई खाए, सत्य को प्रमाण माने, अत्यंत विनम्र और क्षमाशील तथा जीने की विधि जाने। इस प्रकार जीवन का लक्ष्य जीवन मुक्ति प्राप्त करना अर्थात् आत्म-दर्शन करना है और एक बार की मुक्ति सदा की मुक्ति है। उन्होंने कहा है कि हे मनुष्य! तू भले मूल को सींच। जिसने मूल को नहीं खोजा, उसने लोक और परलोक दोनों गंवा दिये। बिरले पुरुष ही भली मूल का सिंचन करते हैं तथा परमतत्व को जानने का प्रयास करते हैं। जो जीवन की विधि जानते हैं, वही ऐसा कर सकते हैं। उनको इस जीवन में तो लाभ होगा ही। मरने पर भी वो आवागमन से मुक्त हो जाएंगे।

व्यक्ति का दोहरा दायित्व है-अपने प्रति तथा समाज के प्रति। अतः जीवन की विधि के अंतर्गत आत्मोथान के साथ , लोक संग्रह और लोक मंगलकारी अर्थात् सुकृत कार्यों की गणना है। जाम्भो जी ने किसी-न-किसी रूप में निरंतर लोक मंगल के कार्य करना मनुष्य का एक प्रमुख कर्त्तव्य बताया है।

जाम्भो जी ने जहां कथनी और करनी में सामंजस्य पर बल दिया, वहां उन्होंने बार-बार शुभ कार्य (सुकृत) और श्रम शील जीवन बिताने का संदेश भी दिया। उन्होंने कहा हे प्राणी! तू अपनी मृत्यु से पहले ही स्वयं को संभाल लें क्योंकि सुपथ (सुकृत) पर चलकर ही तू पार उतर सकेगा।

जाम्भो जी ने अपनी सबदवाणी में कहा है कि-

परमात्मा शुभ कार्य (सुकृत) करने वालों के कल्याण, अन्यायियों के दमन और धर्म-रक्षार्थ समय-समय पर अवतार लेते हैं। उन्होंने कहा है कि सुकृत करके फलना-फूलना चाहिए और अमृत-की परम-तत्व की प्राप्ति करनी चाहिए। सुपथ पर चलकर ही पार पहुंचा जा सकता है।

जाम्भो जी की जीवन-पद्धति और कार्य प्रणाली से यह स्पष्ट है कि वे

एक महान कर्म योगी थे। उन्होंने अपनी ज्ञानमयी वाणी से समाज को सुसंस्कृत और आदर्श समाज बनाने का यत्न किया था। उनकी वाणी में दृढ़ता, स्पष्टवादिता और ओजस्विता थी। उन्होंने अपनी वाणी में कहा है- **'सुकरत साथि सखाई चालै'** अर्थात् पुण्य कर्म, शुभ कर्म (सुकृत) साक्षी के रूप में हमेशा साथ चलते हैं। मरणोपरांत तो किए हुए सुकृत ही जीवन के साक्षी होंगे।

जाम्भो जी ने अपनी सबदवाणी में कहा है कि जीवन का वास्तविक घर तो आगे है, यहां तो केवल 'गोवलवासा' है। यहां का 'आधोचार' झूठा है। अत: जो भी शुभ कार्य (सुकृत) काम पूरा कर सकते हो उसको जल्दी (अभी) करो। जाम्भो जी की यह वाणी व्यक्ति को सदैव जागरूकता का संदेश देती है। अत: सबदवाणी का मूल संदेश आज भी अतना ही प्रासंगिक और उपादेय है।

केवल **'सुकृत अहल्यो न जाई'** सबद सभी वेद, ग्रन्थ व पुराण आदि का सार है। केवल इस एक सबद की पालना करने से प्राणी मात्र का जीवन सुधर सकता है तथा मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

गुरु जाम्भो जी की सबदवाणी उन्नतीस नियम तथा उनके द्वारा बताई गई सभी शिक्षाओं से सबसे अधिक महत्व केवल इस सबद **'सुकृत अहल्यो न जाई'** का है।

❍ **मनोहर लाल गोदारा**
पूर्व संपादक, अमर ज्योति
सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार

गुरू जाम्भोजी का पर्यावरण विषयक वैश्विक चिंतन

पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति। है वेद विहित यह मुक्ति।
श्री जम्भ वाणी में है जुगति। अन्य सतगुरुओं की है सम्मति।
यही है सत्य सनातन धर्म की संपत्ति।

यज्ञ पर्यावरण प्रदूषण मुक्त क्रिया

(वैदिक-आध्यात्मिक- बौद्धिक-वैज्ञानिक- शास्त्रोक्त)

आज पर्यावरण प्रदूषण का विकराल रूप महिरावण बना हुआ है और यह दिन पर दिन अपना अस्तित्व बढ़ाता जा रहा है। इसे मनुष्य ने ही पैदा किया है। सारा विश्व इससे कम्पायमान है। वैज्ञानिक कई प्रकार के उपाय कर चुके हैं। वे भी चिंतित हैं और आगे आणविक अस्त्र-शस्त्र की भी होड़ लगी हुई है। आणविक युद्ध अवश्य होगा ऐसे आसार नजर आते हैं।

जब-जब विश्व पर ऐसी परिस्थितियां आती हैं तब-तब ईश्वर ही रक्षा करते हैं तथा रक्षा के उपाय यत्र-तत्र फैल चुके हैं और लाभान्वित हो रहे हैं जैसे-

1. भोपाल का गैस कांड जिन उपायों से दो परिवार युक्ता युक्त से अपने घर में सकुशल रहे और आज भी सकुशल हैं।

2. चैरोनिया का गैस कांड से पोलेण्ड पर गहरा असर पड़ा तथा पोलेण्ड की राजधानी वारसा में दैनिक हवन पर डाउजर नाम के वैज्ञानिक ने सूक्ष्म गणना यंत्र द्वारा 1 करोड़ निगेटिव अंश 1 वक्त की संध्या उपासना हवन से प्राप्त होना पाया तो पोलेण्ड सरकार ने पूरे देश में कई प्रचारक केन्द्र खोल कर प्रत्येक परिवार को 50 ग्राम गायका मक्खन कूपन से हवन के लिए देते हैं और वहाँ लोग विकिरणों से राहत पा रहे हैं।

3. अमेरिका में वैदिक दैनिक हवन से मानसिक रोग, चर्मरोग और कई प्रकार के रोगों से राहत पा रहे है तथा हवन विधियों को अपना कर कृषि से शुद्ध अन्न पैदा कर रहे हैं और शुद्ध अन्न कीमती दरों से दोगुनी कीमत पर बेच रहे हैं।

4. जर्मनी की मोनिका येले वैज्ञानिक अग्नीहोत्र और उसकी भस्मी पर प्रयोग कर कहती हैं कि ऐसी कोई बीमारी नही है जो ''अग्निहोत्र चिकित्सा'' नामक पुस्तक लिखी है जिसमें कई बिमारियों के ईलाज की विधियों का ज्ञान दिया है। ह्ह्ह

5. वही हाल हमारा है श्री गुरुजी का आदेश है- ''मेरा शब्द खोजो'' परंतु हम, जो कुछ कहा है वह नहीं करते और जिसकी मनाही की है वह बड़े उत्साह से करते हैं। जैसे- ''पढ़ सुन रहिया कछु न लहिया'' गुरुजी के शब्दों में होम जप हृदय में लाकर हम पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं। प्रबुद्ध जन और नेत्रत्व धारी मेरे इस लेख को

ध्यान से पढ़े और आचरण में लावें तथा संपूर्ण मानव मात्र को अनुभव के आधार पर प्रचार करेंगे तो जितने अधिक आचरण कर्ता होगें उतना ही पर्यावरण प्रदूषण खत्म होगा। खान–पान और आचरण में शुद्धता आवेगी।

वाणी

श्री सतगुरु जम्भेश्वर जी के उपदेशक 120 शब्द ही उपलब्ध है। इन शब्दों के द्वारा धर्मादेश मानव मात्र के लिए दिया है जो वेदोक्त है, तथा वेद ही सत्य है जिन्हें श्रुतियां कहते हैं जो ईश्वर की वाणी है।

(गुरु वाणी शब्द नं. 14– मेरा उपख्यान वेंदू)

अर्थ– मेरा उपदेशिक शब्द वेद विहित है। यहाँ यह कहना उचित होगा कि जब–जब धरा पर धर्म का ह्रास हुआ तब–तब ईश्वर शक्ति अवतरित होकर सतगुरु ईश दूत पैगम्बर आदि रूपों में आकर धर्म का पुनरोत्थान किया और आगे भी करते रहेगे। ये सभी वेद में बताये धर्म नियमों का ही विश्लेषण देश काल और परिस्थिति के अनुसार वहाँ की भाषा में वेदोक्त नियम निर्धारण करते हैं।

शब्द नं. 4 म्हे तदपण होता अब पण आछे।

बल–2 होयसा कह कद कद का करुं विचारुं।।

जब सृष्टि की रचना की तब भी मैं था अब इस वक्त मैं वही हूँ ह्ह्ह्ह्ह्ह्और आगे भी बार–बार आवश्यकतानुसार आते रहूँगा मैं आपको कब–कब का विचार बताऊँ।

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं।

यदा यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।। (गीता– 4–7)

अर्थात् जब–जब धर्म में ग्लानि भाव और अधर्म में अभिरुचि का अभिवर्धन होता है, तब तब मैं धर्म के पुनरुत्थान और अधर्म के विनाश हेतु अवतरित होता हूँ।

मानसकार ने भी इससे मिलता जुलता भाव अभिव्यक्त किया हैं।

जब जब होय धर्म की हानि, बाढ़हि असुर अधम अभिमानी।

तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा, हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा।।

श्री जम्भ सागर जो हमारे लिए अत्यन्त पूजनीय और आदरणीय ग्रंथ है उसमें श्री जाम्भोजी ने अपनी वाणी से इसी तथ्य को स्वीकारते हुए भविष्यवाणी के रुप में चेतावनी दी है।

1) शब्द नं. 26– कलयुग बरतै चेतो लोई, चेतो चेतण हारुं।

सतगुरु मिलियो, सत पंथ बतायो।

भ्रांति चुकाई, विद्गा राते, उद्गा गारुं।।

अर्थात् कलयुग चल रहा है इसलिए चेतना है, सावधान तथा सजग होना है किन्तु

चैतन्य लोग ही सजग होंगे, सजग लोगों को सतगुरु (ईश्वर) से परिचय होगा। सतगुरु सत पंथ (सत्य धर्म) अर्थात् सत्य सनातन धर्म का पुनरोत्थान करेंगे, भ्रांतियाँ विज्ञान द्वारा दूर होगी। अज्ञान रूपी अंधकार दूर होगा और ज्ञान रूपी सूर्य का प्रकाश फैलेगा।

उपर्युक्त सतगुरु के अवतार की पहचान के लिए श्री जम्भेश्वर जी ने कहा हैं।

2) शब्द नं. 7- परशुराम के अर्थ न मूवा, ताके निश्चय सही न कायों।

अर्थ- श्री परशुराम जी के चिरंजीवी होने का लोग आशय नहीं समझते। इसका अर्थ है कि जिन्हें श्री परशुराम जी अपना शिष्य बनाने का निश्चय करेंगे, उनके द्वारा बताये गये मार्ग के आचरण किये बिना (सतगुरु में प्रवेश) का कार्य सिद्ध नहीं होगा।

श्री जम्भेश्वर जी की उपर्युक्त भविष्य वाणी का सर्मथन ''भार्गवराम यशोगाधा'' नामक ग्रंथ में भी देखने को मिलता है। इस ग्रंथ के अनुसार कलिकाल के अन्त में जो अवतार (कल्कि अवतार) होगा। उन अवतरित को श्री परशुराम जी दीक्षा देंगे। भार्गव राम यशोगाथा, इस दिव्य ग्रंथ में पृष्ठ क्रमांक 564 में स्पष्ट दिया हुआ है कि सत्य धर्म प्रणेता सद्गुरु को भगवान श्री त्रिपुरी की दीक्षा दी। तथा गुरुदक्षिणा के रूप में पुनर्जीवन की प्रतिज्ञा करवाई।

3. श्री जम्भेश्वर जी अपने दसवें, कालग अवतार के लिये अवगत ज्ञान देते हैं।

शब्द नं. 85- नवखेड़ी म्हें आगे खेड़ी।
दसवें कालंगे की बारी।
उत्तम देश पसारो माण्ड्यों।
रमण बैठा जुआरी।
एक खण्ड बैठा नौ खण्ड जीता।
को ऐसो लहो जुआरी।

अर्थ:- श्री गुरु जम्भेश्वरजी कहते हैं कि मैं नौ पूर्ण अवतार पूर्व में धारण कर चुका हूँ। आगे दसवां कल्कि अवतार की बारी है। उत्तम देश भारत में अवतरित होकर वहीं रहकर ''सत्य धर्म'' वेदोक्त विधि की रचना कराकर अन्य अविथिवत धर्म प्रचार से होड़ रुपी जुआ रचाऊंगा। भारत में ही रहकर नौ-खण्ड पृथ्वी पर धर्म रूपी विजय प्राप्त करूंगा। कोई दूसरा विजय प्राप्त नहीं कर सकेगा। उपरोक्त तीनों भविष्यवाणी सत प्रतिशत सत्य साबित हुई है।

1. सतगुरु अवतरित हुए। सन् 1963 में वेदोक्त सूर्यास्त, सूर्योदय पर होम (अग्निहोत्र) विधिवत् शुरु हुआ और अवैतनिक प्रचारकों द्वारा सम्पूर्ण विश्व के प्रत्येक देश में प्रचार हो गया तथा भ्रांति विज्ञान द्वारा दूर हो चुकी है।

2. सतगुरु के गुरु श्री सतगुरु ही होते हैं तथा इन सतगुरु के गुरु श्री

परशुरामजी हुए।

3. वेदोक्त होम (अग्निहोत्र) अर्थात् सत्य धर्म सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण प्रदूषण पर विजय पाने का एक मात्र उपाय सिद्ध हो चुका है।

उपरोक्त तीनों भविष्यवाणियों की सत्यता से उनके कथन में शब्द नं. 15 में कहा हैं–

''म्हे भूल न भाख्या थूलूं।

अर्थ– गुरु श्री कहते हैं कि भूल से भी मेरे मुख से झूठे शब्द नहीं निकलते।

अब आगे 4 थी भविष्यवाणी जिसमें गुरुजी ने सम्पूर्ण विश्व के लिए भंयकर त्रासदी की चेतावनी दी हैं।

4. **सबद नं. 73– जागो जीवी जोत न रवोवो।**
भणी न भणवा, सुणी न सुणवा।
कही न कहवा, खडी न खड़वा।।
रे भल कृषाणी। ताके करण न धाती हेलो।
कली काल जुग बरते जेलो।
ताते नहीं सुरां सू, मेलो।।

भावार्थ:– गुरुजी चेतावनी देते हैं कि हे मानव पुत्रो! जागो। ठीक सूर्यास्त, ठीक सूर्योदय (दोनों संधिकाल), संध्या उपासना होम की ज्योति जलनी चाहिए जिसमें कपट करेगा तो संसारी का विनाश सुनिश्चित हैं। उन क्षणों में न तो कोई पढने वाला है न कोई सुनने वाला हैं, न कोई कहने वाला है और न कोई खड़ा रह सकेगा अतएव सब अपने ही दुख से दु:खी हो जावेगें। याद रहे धर्म के मूल संध्या उपासना (होम) को भूल जाओगे तो तुम्हे इस विनाश से बचाने या संभालने वाला कोई नहीं होगा। अरे हरि नाम की खेती करने वाले किसान (धार्मिक पुरुष) तू कान खोलकर इन वचनों को याद रखना। कलयुग जब बीतेगा तब केवल देववृति ही शेष रहेगी। देववृति तब ही जागृत होगी जबकि धर्म के मूल संध्या उपासना (होम अग्निहोत्र) के तुम आचरणकर्ता बने रहोगे।

या निशा सर्व भूताना तस्यं, जागृर्ति संयंमी।
यस्या जाग्रति भूतानी सा निशा पश्यतो मुने।। (2/69 गीता)

सांसारिक लोग भौतिकता में सजग है किन्तु आध्यात्मिकता में अभिरुचि नहीं लेते। अस्तु भौतिकता उनके लिए दिवस जागरण काल हैं तथा आध्यात्मिक जिसमें उन्हें जागृत रहना चाहिए उसमें वे सोते रहते हैं भौतिक समृद्धि को ही अपना सर्वस्व सर्वसाधारण भी आध्यात्मिक युग (सतयुग) आयेगा। जिसके पहले चरण में आध्यात्मिक पुरुष ही होते है अर्थात् (ऋषियों का राज्य)।

सत्य धर्म स्थापक भी ऐसी ही घोषणा करते हैं।

''पाखण्ड वेद दूषका: ऐते सर्वे विनश्यंति'', मिथ्याचार प्रवर्तका:''।
अर्थ:- वेद विरोधी अर्थात् सतगुरु की कथनी के अनुसार धर्म का पालन न करने वाले और झूठी मन मुखी क्रियाओं को अपनाने वालों का विनाश निश्चित होगा। कथनी करनी भिन्न है जहाँ धर्म नहीं पाखण्ड है वहाँ।।

श्री गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है

जादिन तेरे होम न, जाप न, तप न क्रिया।
गुरु न चीन्हो पंथ न पायो, अहल गई जमवारुँ। (सबद-13)
सत्य सनातन धर्म यज्ञ दान तप कर्म स्वाध्याय निरतो भवेत्।
एष एव हि श्रुत्युक्त: सत्य धर्म सनातन:।। (सप्त श्लोकी)
श्रीकृष्ण गीता:- यज्ञ दान तप: कर्म न त्याज्यं कार्य मेव तत्।
यज्ञों दानं तपश्चैय पावनानि मनीषिणाम।। (18/5 गीता)

ये पंच साधन मार्ग ही वेद का सार है। इन कर्मों को करने से सृष्टि चक्र सुचारु रूप से कार्य करता है अर्थात् जगत का आधार है। प्रत्येक मनुष्य किसी भी स्थिति में इन्हें न छोड़े। इससे मनुष्य पवित्र होता हैं।

अर्थात्:- होम (यज्ञ सेक्रीफाइज)
जप-दान (गिफ्ट)
तप (आस्टेरिटि)
कर्म (एक्शन)
स्वाध्याय (सेल्फ स्टडी)

ऋषि काल से आज तक जितने सतगुरु (ईश्वर अवतार) पृथ्वी पर आये उन्होंने इन्ही पांच साधन मार्गों से भक्ति मार्ग का प्रचार किया जो विधि इन कर्मो की वेद में बताई गई है उसी को इन्होंने प्रचारित किया।

यज्ञ

1. निष्काम- संध्या उपासना होम और व्याहृति होम, या मंगल हवन।
2. सकाम हवन- महामृत्युजंय हवन, साप्ताहिक हवन, पाक्षिक हवन (अमावेष्टि, पूर्णमेष्टि हवन) ऋतुमेष्टि हवन, सष्टमेष्टि हवन वर्षमेष्टि हवन, वाजपेयी हवन, सोमयज्ञ, पुत्रमेष्टि हवन आदि कामेष्टि हवन हजारों, वेद में दर्शाये हैं और अंतिम सबसे बड़ा राजसूय यज्ञ हैं।

इन दोनों प्रकार के यज्ञों में संध्या उपासना होम (अग्निहोत्र) मूल है, दैनिक मूल धर्म है।

श्री जम्भेश्वर जी ने इसे धर्म का मूल प्रतिपादित किया है।

शब्द नं. 36- ''जइया गुरु न चीन्हों, तइया सींचा न मूलूं।''

अर्थ- जो वेद को नहीं जानता वह मूलधर्म (संध्या उपासना) को नहीं सींचता अर्थात्

संध्या उपासना का आचरण नहीं करता तथा जो संध्या, उपासना, यज्ञ नहीं करता उसका ईश्वर से परिचय नहीं होता और यदि ईश्वर से परिचय नहीं होता तो भवसागर से पार (मोक्ष) नहीं होता

सबद वाणी 27:- ''बिन परचे पार गिराय न जाई।''

श्री जम्भ सागर बिश्नोई धर्म का मुख्य ग्रन्थ है उसमें संध्या उपासना से नीचे लिखे प्रमाण प्रस्तुत हैं।

1. व्याख्या तीसरा धर्म:- जो मनुष्य इसे नहीं करता वह दूसरे कर्मो को करने का अधिकारी नहीं होता।

2. पांचवे नियम में कहा गया है प्रत्येक मनुष्य को प्रात: व सांयकाल अग्निहोत्र करना चाहिए।

वेदोक्त संध्या उपासना

संध्या:- अस्त और उदय- सूर्य जब रात्रि में प्रवेश करता है अर्थात् सूर्यास्त- दिन और रात्रि का संधिकाल कहलाता है और रात्रि से दिन के संधिकाल को सूर्योदय कहते हैं। श्री जम्भेश्वर जी ने इस समय को बिम्बे बेला कहा है। अर्थात् सूर्य का बड़ा रूप इन दोनों समय दिखता है श्री गुरुजी ने इस समय को बहुत महत्वपूर्ण दिखता है।

शब्द नं. 115- पवणा रूप फिरै परमेश्वर।।

बिम्बे बेला निश्चल थाग अथागूं।

अर्थ- सूर्य का बड़ा रूप सूर्योदय पर दिखता है। इस समय ईश्वर वायु रूप में इन दोनों समय पर हमारे यहाँ आते हैं। अब विचारणीय बात यह है कि जब ईश्वर हमारे यहाँ आते हैं तो ऐसे समय की होड़ में कोई दूसरा समय क्या महत्व रख सकता है। प्रमाण- वैज्ञानिक खोज बताती है इन दोनों समयों में परम पवित्र वायु की बाढ़ सूर्य की पहली किरण और आखिरी किरण के साथ रहती है ऐसी स्थिति पोने दो मिनिट रहती है।

सतगुरु जम्भोजी ने यह महत्व पूर्ण बेला जो वैज्ञानिक आधार पर सत्य साबित हुई है इस शुभ बेला में होम करने से क्या लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गुरुवाणी सबद नं. 54- ''अरुण विवाणे रे रवि भाणे''

सूर्य का विमान इस स्थिति में आवे कि हमें सूर्य उगने का भान (महसूस) हो।ठीक सूर्योदय।

''देव दिवाणे''- इस देवमग्न रहते हैं।

'विष्णु पुराणे''- दिन का समय शुरु हुआ।

''बिम्बा वाणे सूर उगाणे''- सूर्य बिम्ब से किरणे निकली सूर्य उदय हो चुका।

''विष्णु विवाणे, कृष्ण पुराणे''- सूर्य का विमान जब रात्रि में प्रवेश करता है अर्थात्

ठीक सूर्यास्त।

''कांय झंक्यों ते आल प्राणी'' तू मनुष्य होकर, अन्य प्राणियों की तरह क्या देखता रहा मुझे तो दोनों संधिकाल में वेद (गुरु) द्वारा होम (अग्निहोत्र) करने का आदेश है।

''सुर नर तणी सबेरॅु''– यह शुभ घड़ी (अच्छा वक्त) देवता और मनुष्य दोनों के लिए होती है।

''इण्डो फूटो बेला बरती''– यदि सूर्य क्षितिज से ऊपर आ गया अर्थात् सूर्योदय हो चुका, सूर्यास्त के बाद तो समझो वक्त बीत चुका। होम (अग्निहोत्र) का समय बीत चुका अर्थात् सुबह सूर्य को क्षितिज से बाहर आने में और शाम को सूर्य के अंदर जाने में पौने दो मिनट समय लगता है। समय की पाबंदी होम कृति का वैशिष्ठय है यदि समय को चुकाकर कृति करेगें तो हमें कोई अनुभव और लाभ नहीं मिलेंगे। यदि हम अनुभव पर्यावरण की शुद्धि (प्रदूषण से रक्षा), तन का स्वास्थ्य, सुसप्त शक्तियों का विकास चाहते हैं तो समय की पाबन्दी का पूरा पूरा ध्यान रखें। यही तप तथा साधना है। बिन तपे तप नहीं और बिना साधन के साधना नहीं होती। वेद, विज्ञान तथा सतगुरु जाम्भोजी परम् वैज्ञानिक अनुभव ज्ञान की साधना की चेतावनी देते हैं किन्तु समय का उचित पालन नहीं हुआ तो कहते हैं।

''**ताछे हुई बेर अबेरुं**''– इसलिए उपरोक्त वक्त अब बेवक्त हो गया क्योंकि ठीक सूर्यास्त, सूर्योदय पर पवन रुप में स्वयं ईश्वर उपस्थित रहते हैं।

''**मेरे परे सो जोयण बिम्बा लोयण**''– ठीक सूर्यास्त या सूर्योदय पर लैलायमान अग्नि में समंत्रक दो आहुतियां दी जाती है तो अग्नि में ज्योति आती है इस ज्योति पर ध्यान क्रिया अपनाना चाहिए। आगे ऐसा करते रहने पर आंखो से परे (भृकुटि पर) बिम्ब प्रकाश का अनुभव दिखेगा। यह ब्रह्मज्ञान हैं।

उपरोक्त अनुभव अनेक संध्या उपासना होम आचरणकर्ताओं को मिल चुके है। अतएव आप भी अनुभव साधना द्वारा ले सकते हैं। यहाँ हम आपको यह भी कहना चाहेगें की ब्रह्म ज्ञान की पूर्व आखों पर पांचों तत्व अर्थात् आकाश, वायु, तेज, जल और धरणी (पृथ्वी) इन पांचो देवताओं द्वारा अपने रूप का दर्शन आपको प्राप्त होगा। जहाँ इन पांचों तत्वों की उपस्थिति होती है वहाँ छटवी चेतन अवस्था की उपस्थिति अनिवार्य रूप से होती ही है। यही ब्रह्म ज्ञान है और इस ज्ञान के हो जाने पर ''आत्म ज्ञान'' की शुरुआत होगी।

''पुरुष भलो निज वाणी''– वैदिक होम मंत्र जो अपनी वाणी से ठीक समय पर शुद्धता से बोलकर आहुतियाँ देता है वही पुरुष भला है क्यों कि वैज्ञानिक खोज में बताया गया है कि मंत्रों को कहने से वाणी तंतुओं पर कंपन होता है जो द्यूलोक तक जाता है कि मंत्रों को न अधिक जोर से न अधिक धीमे बोलकर कहना

चाहिए। इन्हें साधारण स्तर से बोलने से दूर से दूर (पूरे अस्तित्व में) सुनाई देंगे। जो तुम्हारे लिए लाभदायक गुणदायक तथा अत्यन्त बलकारी सिद्ध होगें। अतः वाणी परिचय!

''वाकि म्हारी एका ज्योति''– संध्या उपासना होम की ज्योति रूपी पवन प्रज्वल्लित हैं इस ज्योति को ही'' ज्योति स्वरूपी आप निरंजन की संज्ञा दी गई है। इस ज्योति पर आचरणकर्त्ता एक टकी लगाये रखते हैं और ज्योति से ईश्वर आचरणकर्ता की सूरत से परिचय हो जाते हैं।

इस समय आचरणकर्ताओं का भाव बदलाव होना चाहिए। ईश्वर के सम्मुख दासत्व भाव से कोटि जन्मो के पाप नष्ट हो जाते हैं।

''सम्मुख होई जीव जब, मोहिं, कोटि जन्म अघ नासंहु तबहि।'' (रामा.)

❍ सेवक राम पंवार
हरदा, मध्यप्रदेश

समन्वय के साधक गुरु जांभो जी

जिस समय करोड़ों सूर्यों का तेज लेकर विष्णु स्वरूप गुरु जम्भेश्वर भगवान ने इस धरा-धाम पर अवतार लिया, उस समय भारतीय समाज भयानक विषमता से ग्रस्त था। सभी धर्मों, जातियों, वर्णों व वर्गों में आपसी मतभेद व मन-मुटाव चरम सीमा पर था। हर कोई अपने को श्रेष्ठ और दूसरे को हीन साबित करने में लगा था। ऐसे वातवरण में सुख-समृद्धि और आत्मकल्याण की राह कठिन दिखाई देती थी। पद-पद पर खींची गई विषमता की दीवारों में आम व्यक्ति का दम घुट रहा था और वह किसी समन्वय की ब्यार की प्रतीक्षा में था। ऐसे विषम समय में गुरु जांभो जी ने अद्‌भुत समन्वय की स्थापना कर भारतीय जन मानस पर बहुत बड़ी कृपा की थी। उन्होंने जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं छोड़ा जहाँ समन्वय स्थापित न किया हो। हम कुछेक बिन्दुओं के माध्यम से गुरु जांभो जी की समन्वय शक्ति को समझने का प्रयास करेंगे :-

1. विज्ञान एवं अध्यात्म का समन्वय -

विज्ञान एवं अध्यात्म अपनी प्रवृति से परस्पर भिन्न है परन्तु दोनों का सामंजस्य संसार में एक नये युग का सूत्रपात कर सकता है। विडम्बना का विषय है कि विज्ञान में विश्वास करने वाले धर्मावलिम्बयों को पाखण्डी व हीन मानते हैं व धार्मिक लोग विज्ञान में विश्वास करने वालों को भौतिकतावादी व पदार्थवादी मानते हैं। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने अपनी वाणी व 29 धर्म नियमों की आचार संहिता में विज्ञान व अध्यात्म का अद्‌भुत समन्वय कर एक नई राह प्रशस्त की थी। इस आचार संहिता में जहां पांच ऋतुवन्ती न्यारो, तीस दिन सूतक, सेरा स्नान, यज्ञ करना, हरे वृक्ष नहीं काटना, नील का प्रयोग नहीं करना जैसे वैज्ञानिक नियम है वहीं विष्णु भजन, आरती-संध्या , अंत:शुद्‌ध, शील संतोष का पालन क्षमा-दया, अजर जरना जैसे आध्यात्मिक नियम भी है। 'आमवस्या व्रत'' जैसे नियम भी है जो उत्कृष्ट आध्यात्मिक होने के साथ-साथ पूर्णत वैज्ञानिक है। वस्तुत: विज्ञान एवं अध्यात्म का ऐसा अद्‌भुत समन्वय अन्यत्र दुर्लभ है।

2. सगुण व निर्गुण का समन्वय :-

मध्ययुग में निर्गुण व सगुण विवाद बहुत गहरा था जिसने भगवान के चाहने वालों को दो भागों में बांट दिया था। दोनों पक्ष एक-दूसरे के खण्डन में रत थे। ऐसे समय में गुरु जम्भेश्वर भगवान ने सगुण एवं निर्गुण का समन्वय कर इस विवाद को समाप्त करने की बहुत बड़ी पहल की थी। वे एक ओर जहाँ परमात्मा के निर्गुण स्वरूप को स्वीकारते हुए कहते हैं - **''नदियाँ नीरूं सागर हींरू पवणा रूप फिरै परमेश्वर''** और उसे चौदह भुवनों व तीनों लोकों में व्याप्त मानते हैं, वहीं

दूसरी ओर अवतारवाद को भी मानते है। वे स्वयं विष्णु के अवतार थे और अपने पूर्व नौ अवतारों का वर्णन करते हुए कहते भी हैं –''**नव अवतार नमो नारायण तेपण रूप हमारा थींयू ।**'' गुरु जांभो जी ने अपने नौ अवतारों एवं उनके कार्यो का सविस्तार वर्णन किया है।

3. ज्ञान भक्ति व कर्म का समन्वय

ज्ञान, भक्ति व कर्म तीनों को ही मोक्ष प्राप्ति का साधन माना जाता है। मध्यकाल में इन तीनों में श्रेष्ठता को लेकर बड़ा विवाद था। गुरु जांभो जी ने अपनी वाणी में इन तीनों का समन्वय स्थापित कर इस विवाद का शमन किया है। उन्होंने अपनी वाणी में स्थान–स्थान पर विष्णु भक्ति का उपदेश दिया है तथा उसके बिना जीवन को व्यर्थ माना है जैसे – **विष्णु अजंप्या जनम अकारथ**''**'विष्णु–विष्णु भण अजर जरीजै, यह जीवन का मूलूं।'**

इसके साथ ही उन्होंने ज्ञान को भी महत्व दिया है क्योंकि ज्ञान से मोह को नष्ट किया जा सकता है तथा सभी विकारों को जीता जा सकता है – ''**ज्ञानी के हिरदे प्रमोद आवत अज्ञानी के लागत डांसू।**''

भक्ति एवं ज्ञान की भांति गुरु जांभो जी ने कर्म को भी अति आवश्यक माना है। उनकी एक पंक्ति से ज्ञात होता है कि भक्ति एवं कर्म का जैसे अद्‌भूत समन्वय उन्होंने किया है वैसा कहीं नहीं मिलता – ''**हिरदे नाम विष्णु का जंपो हाथां करो टबाई**''। वस्तुतः ज्ञान, भक्ति एवं कर्म के समन्वय के बिना मोक्ष की कल्पना निर्मूल है।

4. सभी धर्मो जातियों का समन्वय –

मध्यकाल में विभिन्न धर्मो व जातियों में संघर्ष की स्थिति थी। हिन्दू, मुस्लिम ,बौद्‌ध, जैन आदि धर्म जहाँ अपने को श्रेष्ठ सिद्‌ध करने में लगे थे, वहीं जातिवाद समाज को घुन की भांति खा रहा था। समाज में ऊंच और नीच की भावना व्याप्त थी। गुरु जांभो जी ने स्वस्थापित बिश्नोई पंथ में सभी धर्मो जातियों के लोगों को बिना किसी भेदभाव के सम्मिलित करके समन्वय का जो व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत किया, वह अन्यतम है। गुरु जांभो जी ने अपनी वाणी में हिन्दुओं, मुस्लिमों, नाथ योगियों आदि सभी को उपदेश दिया है। उनकी वाणी किसी वर्ग विशेष के प्रति न होकर मानव मात्र के प्रति है।

5. सभी वर्णों व आश्रमों का समन्वय –

गुरु जांभो जी ने चारों वर्णो के लोगों को अपने पंथ में सम्मिलित किया तथा सभी को बराबर के अधिकार दिए थे जिससे सामाजिक समानता का प्रादुर्भाव हुआ था। उन्होंने गृहस्थ को भी उतना ही महत्व दिया था जितना संन्यास को। इसलिए उनके शिष्यों में जहां सन्त संन्यासी थे वहीं गृहस्थ भी थे।

6. लोक और शास्त्र का समन्वय

हमारे यहाँ लोक और शास्त्र के मध्य एक दूरी रही हैं परन्तु गुरु जांभो जी ने लोक और शास्त्र का समन्वय किया था। उनकी वाणी पूर्णत: शास्त्र सम्मत है। उन्होंने अनेक स्थानों पर वेद, पुराणों, गीता व षड्दर्शनों की चर्चा भी की है और अपनी वाणी को वेद कहा है - ''**मोरा उपाख्यान वेदूं ।**'' शास्त्र के साथ उन्होंने लोक को भी उतना ही महत्त्व दिया है। उनकी सम्पूर्ण वाणी लोकभाषा में है और कथन शैली लोक के निकट हैं। इतना ही नहीं उनकी वाणी में प्रयुक्त सभी प्रतीक लोक जीवन से आये है। लोक एवं शास्त्र का समन्वय एक कठिन कार्य है जो गुरु जांभों जी ने किया था।

7. राजा और प्रजा का समन्वय

मध्यकाल में राजा और प्रजा के मध्य दूरी बहुत बढ़ गई थी। गुरु जांभो जी ने अपने पंथ में दोनों का समन्वय किया है। वील्हो जी की वाणी एवं शब्दवाणी के प्रंसगों से ज्ञात होता है कि अनेक बड़े-बड़े राजा उनके शिष्य थे तो दूसरी ओर सामान्य जनता भी उनकी शिष्य थी। गुरु जांभो जी ने बिना किसी भेदभाव के राजा और प्रजा को उपदेशित किया था और उनके राजाओं को प्रभावित कर प्रजोन्मुखी बनाया था।

8. कथनी व करनी में समन्वय

मध्यकाल में व आज भी कथनी व करनी में अन्तर बहुत बड़ी समस्या है। गुरु जांभो जी का व्यक्तित्व व कृतित्व कथनी व करनी के समन्वय का श्रेष्ठ उदाहरण है। जिस बात का वे उपदेश करते थे, उसे स्वयं भी अपनाते थे। उन्होंने कहा भी है - **पहले किरिया आप कमाइये तो औरां न फरमाइये।'** यही कारण है कि गुरु जांभो का अमिट प्रभाव लोगों पर पड़ा था और लोग उनके अनुयायी बने थे।

9. लौकिकता व अलौकिकता का समन्वय

गुरु जंभेश्वर भगवान का व्यक्तित्व भी लौकिकता व अलौकिकता का अनूठा संगम था। अपनी आचार संहिता व शब्दवाणी में भी उन्होंने लोक व परलोक दोनों को सुधारने की शिक्षा दी है। जहाँ मृत्यु के पश्चात् मोक्ष की राह बताते है, वही इस संसार में सुखी कैसे रह सकते है, इसकी युक्ति भी बताते है। उन्होंने परलोक के सामने लौकिकता की उपेक्षा नहीं की है अपितु उसे बराबर का महत्व दिया है और उनके सिद्धान्त ''**जिया न जुगति और मुआ न मुक्ति**'' देने वाले सिद्धान्त है।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गुरु जांभो जी की दृष्टि अत्यन्त ही व्यापक व उदार थी जिस कारण उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में समन्वय की स्थापना की थी। जार्ज ग्रियर्सन ने महात्मा बुद्ध के पश्चात् गोस्वामी तुलसीदास को सबसे

बड़ा समन्वयवादी माना है, जो उचित नहीं है क्योंकि यदि हम व्यवहारिकता के धरातल पर देखें तो महात्मा बुद्ध जैसा समन्वय गुरु जांभो जी ने ही किया था। तुलसी का समन्वय केवल काव्य तक सीमित है जबकि गुरु जांभो जी यह समन्वय अपने पंथ बिश्नोई पंथ व जीवन के अन्य क्षेत्रों में प्रत्यक्ष करके दिखाया था। आज की विषय परिस्थितियों में गुरु जांभो जी का समन्वयवादी दृष्टिकोण रामबाण औषधि का कार्य कर सकता है। अत: हम सगर्व कह सकते है कि गुरु जांभो जी अब तक के सबसे बड़े समन्वयवादी है।

❍ **योगिता**
शोधछात्रा (हिन्दी विभाग)
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई तमिलनाडू

श्री गुरु जम्भवाणी : एक अपरम्परागत् वाणी

''**अइया लो अपरम्पार वाणी। म्हे जंपा न जाया जीऊँ।**'' गुरु जम्भेश्वर जी की वाणी की यह लघु सूक्ति अपने अन्दर एक गहन व विलक्षण अर्थ रखते हुए भक्तिकालीन अन्य सन्तों, महापुरुषों की दार्शनिक विचार धाराओं में अपना पृथक् एवं विशिष्ट स्थान रखती है। गुरु जाम्भोजी का उक्त कथन स्पष्ट संकेत दे रहा है कि उनकी विचारधारा, उनका दृष्टि कोण, उनका दर्शन सोलहवी सदी के अन्य सन्त साहित्यकारों की भाँति परम्परावादी न होकर एक अन्वेषणात्मक आधार का दर्शन है, जिसमें सृष्टि के शाश्वत् नियम परिवर्तशीलता के महत्व को मानते हुए देश काल व युग धर्म के अनुरूप मानव को अपने जीवन में परिस्थितिजन्य परिवर्तन को वरीयता देनी चाहिये। नितान्त परम्परावादी बन कर जीवन को कुण्ठाग्रस्त नहीं बनाना चाहिये। जम्भेश्वर वाणी के यह लघु सन्देश ''**म्हे खोजी था पण होजी नाँही।।** तथा **निज पोह खोज ध्याइये।** इस बात का स्पष्ट संकेत मनुष्य को दे रहे हैं।

पुरातन परम्पराओं का महत्व किसी समाज के संचालन में निसन्देह महत्वपूर्ण है। चाहे वह धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक कोई भी क्षेत्र के क्यों न हो। परम्पराओं का अन्धानुगमन समाज के साधारण वर्ग को अनुदेशित करता हुआ उसे सदैव अनुशासन व रीतिरिवाजों की जंजीरों से बांधे रखता है।

ईश्वरीय प्रेरणा से धरातल पर जब किसी महामानव या दिव्य विभूति का अवतरण होता है तथा वह अपनी अद्भुत व दिव्य शक्तियों व क्षमता से अपने आने के उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु विलक्षण व अनुपम कार्य करता है और अपने वांञ्छित लक्ष्य को प्राप्त करके समाज को नियंत्रित व अनुशासित कर देता है, तो मनुष्य, समाज उसको अवतार, पीर, पैगम्बर मसीहा के रूप में स्वीकार करके उसका यहां गान, मान, सम्मान करते हुए उसमें, उसके विचारों में, उसके द्वारा निर्धारित रीति रिवाजों में श्रद्धा व विश्वास प्रकट करते हुए उसके अनुगामी बन जाते हैं। उस काल उनमें एक विशेष ऊर्जा युक्त अमुक अवतारी पुरुष या मसीहा के प्रति श्रद्धा या विश्वास की भावना भरी होती है। समाज उस विभूति के नियमों सिद्धान्तों को समर्पण भाव से मानते हुए अपने आप में संगठित, संयमित व अनुशासित रहता है। समाज पीढ़ी दर पीढ़ी उन्हें मानते हुए निर्बाध गति से अग्रसर होता रहता है। संसार में किसी समाज विशेष द्वारा किसी महापुरुष के द्वारा प्रतिपादित रीति रिवाजों नियमों धर्मों को चिरकाल तक मानकर चलते रहना ही किसी परम्परा के जन्म का कारण होता है।

परन्तु कुछ काल के उपरान्त जब प्रकृति की परिवर्तनशीलता के नियम के अंतर्गत देश काल की परिस्थितियां बदलती हैं तथा नये युगधर्म का आविर्भाव होता

है तो पुरातन परम्परा व रीति-रिवाजों में कुछ ऐसे घटक होते हैं जो तथ्यहीन होकर अनुपयोगी होते हैं। आगे जैसे जैसे परिवर्तन की स्थिति आती है, वैसे वैसे उनका महत्व भी घटता जाता है और वे लाभ के स्थान पर समाजिक हानि पहुँचाना प्रारम्भ कर देते हैं। परन्तु तब तक उपर्युक्त महामानव के अनुयायियों के संस्कारों में उसके द्वारा स्थापित मान्यताओं का, रीति रिवाजों के परम्परागत स्वरूप का इतना गहरा प्रभाव बैठ जाता है कि उस महापुरुष का अनुयायी समाज यह जानते हुए भी कि उनकी मान्यताएं व परम्परायें समय के परिवर्तन के साथ महत्वहीन हो गयी है। यह उपयोगी न होकर अनुपयोगी या हानिकारक हो गयी है। फिर भी उनको यथावत् ओढ़े रहकर पीढ़ी दर पीढ़ी उन अनुपयोगी पुरातन परम्पराओं का हस्तान्तरण करता रहता है। यदि कोई उक्त परम्पराओं के गुप्तदोष आधार पर उन्हें कुछ समझना चाहता भी है, तो उसे समाज के जनाक्रोश का सामना करना पड़ता है। कभी कभी तो जीवन जीना भी दुष्कर हो जाता है। परन्तु अमुक समाज के अनुयायी अपनी परम्पराओं के प्रति विरोध स्वरूप कुछ भी सुनने या मानने को तैयार नहीं होते। उनकी यही प्रक्रिया उन्हें घोर परम्परावादी बनाती है। ऐसे परम्परावादी समाज कभी भी प्रगति की दौड़ में आगे नहीं निकल पाते तथा आदर्शों के परमलक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाते।

परम्परावाद का प्रभाव समाज के जन साधारण वर्ग को ही नहीं प्रभावित करता अपितु अधिकांश रूप से बौद्धिक वर्ग भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं रहता। यही कारण है कि बौद्धिक वर्ग में साहित्यकार, लेखक, चिन्तक, समीक्षक भी किसी पुरातन परम्परा के विरुद्ध कुछ लिखने या बोलने का साहस न करके सब कुछ देखते समझते हुए भी प्रायः मौन रहते हुए परम्पराओं के पुरातन स्वरूप के ही पक्षधर बनकर अपनी प्रतिभा व ज्ञान को कुंठित कर लेते हैं।

पुरातन परम्पराओं को यथावत् ग्रहण कर लेने में मनुष्य की आलसी प्रकृति का भी महत्वपूर्ण योगदान सदियों से रहा है ऊपर भी कहा जा चुका है कि परम्परायें एक ओर समाज को स्थायित्व प्रदान करके उसे अनुशासित व संयमशील बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परन्तु इसी भूमिका के रूप में विपरीत देशकाल परिस्थितियों के अनुसार उनमें परिवर्तन या विकास का होना तथा उनका यथावत् अनुपालन व दुख व अशान्ति का कारण बनकर समाज को विचलित करता हुआ उसे प्रगति के पथ से भटका देता है। आज के मनुष्य समाज का वर्तमान भय परिवेश भी युग धर्मानुसार पुरातन परम्पराओं में परिवर्तन किये बिना ही उनके ज्यों का त्यों रूप से अन्धानुशीलन करने का ही परिणाम है क्योंकि सुखद परम्परायें ही कालान्तर में (समायानुसार परिवर्तन न होने के कारण) बाधाएं वनकर समाज को दुखद परिवेश प्रदान करती है। परम्पराओं के अनुपालन में देश काल के अनुरूप

यदि विकास या बदलाव नहीं लाया जाता है तो उसके कारण मनुष्य की खोजी प्रवृत्ति प्रायः लुप्त हो जाती है। व्यक्ति और अधिक आलसी व अज्ञानी बनता चला जाता है। पुराने रीति-रिवाजों, परम्पराओं को बदलने व विकसित करने हेतु प्रयत्न नहीं करता भले ही उनसे उसे कितनी ही हानि उठानी पड़े और यही बात उस परम्परावादी वर्ग, समाज अथवा व्यक्ति की प्रगति में सबसे बड़ी अवरोधक बन जाती है।

गुरु जम्भेश्वर जी ने उपर्युक्त परम्परागत दोषों को दृष्टि में रखते हुए, उन्हें ठीक से पहचानते हुए ही शायद नूतन पद्धति का प्रयोग अपनी विचारधारा और दर्शन में किया है। उनका दर्शन उक्त परिवेश का प्रबल विरोधी है। जाम्भो जी पुरातन परम्पराओं के उन्मूलन की बात भी नहीं कहते। अपितु उनमें युगधर्मानुसार परिवर्तन व विकास की बात पर बल देते हैं। **"मैं खोजी हा पर होजी नाँही"** अर्थात मैं एक तत्वान्वेषी (खोजी) के रूप में अवतरित होकर संसार में आया हूँ न कि पहले से प्रयोग होती रही, चलन में चली आ रही परम्पराओं की बात करने। मैं एक प्रयोगधर्मी शक्ति के रूप में कुछ अनुसंधान करने इस धरती पर अवतरित हुआ हूँ कुछ नया कहने व नया करने के लिये अवतरित हुआ हूँ।

इसलिये भारतीय ही नहीं अपितु वैश्विक दर्शन पटल पर गुरु जाम्भो जी का दर्शन अन्य दार्शनिकों के दर्शन से अलग है। परन्तु दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है कि जाम्भो जी के अनुयायी उन्हें ईश्वर तुल्य सम्मान व श्रद्धा तो देते हैं लेकिन उनकी वाणी व उनके मंतव्य को ठीक से समझ पाने में प्रायः असफल ही रहे हैं। उनकी वाणी के टीकाकारों, समीक्षकों में भी अधिकांश विद्वान व साहित्यकार पुरातन पारम्परिक परिवेश में जाम्भो जी के दर्शन को देखते हुए ही अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि विगत साढे पांच सौ वर्ष में विश्व तो क्या उनका अनुयायी विश्नोई समाज भी उसको सही अर्थों में समझकर उतना लाभान्वित नहीं हो सका जितना उसे होना चाहिये था।

भारतीय संस्कृति को जाम्भो जी ने पुरातन परम्परागत प्रवाह में कुछ नयी अवधारणाओं का, नवीन मान्यताओं का समावेश करके उसे आधुनिक विकास पथ पर अग्रसर करने का जो प्रयत्न किया है, उसे यह संसार यदि ठीक से समझकर उसका अनुगमन करना शुरू कर दे तो विश्व की अनेक भयावह समस्याओं का निराकरण हो सकता है तथा विश्व में शांति स्थापित होकर मानव के इतिहास को एक सुन्दर सुखद आयाम मिल सकेगा। क्योंकि उन्होंने केवल भारतीय सांस्कृतिक परिवेश व निमित्त या केवल मानव मात्र के निमित ही कल्याणकारी मान्यताओं का प्रतिपादन नहीं किया अपितु संसार के प्राणी मात्र के हित की बात कही है, पुरातन परम्पराओं में बदलाव व विकासशील मान्यताओं व अवधारणाओं का समावेश

उन्होंने जिस निर्भीकता व निष्पक्षता से किया है ऐसा किसी अन्य दर्शन में कम ही दृष्टिगोचर होता है। प्रथमत: उन्होंने प्राप्ति को जीवन पर्यन्त जागृति युक्त जीवन जीने का संदेश दिया और कहा कि हे! प्राणी (मुख्यत: मनुष्यों को सम्बोधित करते हुए कहा) तू सदैव जागृत अवस्था में अर्थात् सजग व सतर्क रहते हुए जीवन यापन करने और अपने ज्ञान और विवेक की ज्योति को ज्योतिर्मान रख उसे लुप्त न होने दे वर्ना यह संसारिक माया जाल तुझे क्षण मात्र में (छल) भटका देगा और तेरा लक्ष्य तुझे नहीं मिल पायेगा- **जागो, जोवो, जोत न खोवो छल जासी संसारुँ॥ सबद 73॥**

प्राणी मात्र (मानव) को सजग करके फिर उन्होंने अनेक लोकोपयोगी मंगलमयी नूतन अवधारणाएं व मान्यताएं स्थापित करने के साथ साथ पुरानी मान्यताओं में भी परिवर्तन व विकासशील बिन्दुओं को अभिव्यक्त कर उन्हें नया स्वरूप व न्यायकता प्रदान कर संकीर्णता व वाद की सीमाओं से निकाल कर विश्वव्यायी बनाया।

भारतीय संस्कृति वैदिक संस्कृति कही जाती है जिसमें चार वेदों की मान्यता है। वेद ही संस्कृति का आधार है। वेद को ईश्वरीय पुस्तक (ग्रन्थ) कहा जाता है तथा उनमें निहीत ज्ञान को ईश्वरीय ज्ञान कहा जाता है। भारतीय जनमानस वैदिक संस्कारों व वैदिक परम्पराओं में पूर्णत: रचा बसा है। लेकिन एक ओर जहाँ हम वेदों को सनातन व आदि ज्ञान ग्रंथ मानकर भारतीय सभ्यता की पुरातनता का प्रतीक मानते हैं वही दूसरी ओर उनका सहारा लेकर नाना प्रकार के ढोंग पाखण्ड स्थापित करके दन्त कथाएं मनगढन्त रूप में स्थापित कर समाज में छल व प्रपंचों का परिवेश उत्पन्न करके भोले व सीधे साधे जन मानस का शोषण करके उसे गुमराह कर रहे हैं। ऐसे परिवेश के प्रति जाम्भो जी ने उद्घोष करते हुए कहा कि **"पढ वेद कुराया कुमाया जालो दन्त कथा जुग छायो"** और स्वार्थ सिद्धि उपर्युक्त घटित परिवेश पैदा करने वाले पंडितों, पोंगा पंथियों व तथाकथित विद्वानों को चेतावनी देते हुए सही मार्ग पर आने का संदेश दिया।

जाम्भो जी ने वेदों को भारतीय सीमा परिवेश से उठाकर उन्हें विश्वव्यापी छवि प्रदान की, उनके अनुसार उस पिता की असीम, अनन्त सता को सीमाबद्ध में नहीं किया जा सकता। वेद का ज्ञान विश्वव्यापी है। विश्व के किसी भी क्षेत्र में किसी भी वर्ग धर्म जाति के व्यक्ति के मुख से कभी भी उद्घटित हो सकता है। यदि वह व्यक्ति लोकमंगल, सर्वहिकारी भावना व वेद करणी ही है। जाम्भो जी ने शब्द की व्याख्या बताते हुआ कहा कि शब्द अनेकार्थक होते हैं उनका आशय उनमें ही समाया रहता है। जो उनमें प्रवेश कर जितनी खोज करता है उसे उतना ही गहन अर्थ मिलता है इसलिये निरन्तर खोजी बने रहो। **"मोरा उपख्यान वेदूँ कण तत**

भेदूँ। शास्त्रे पुस्तके लिखणा न जाई, मेरा शब्द खोजो ज्यों सबदे सबद समाई॥ सबद 14॥ कहकर जाम्भो जी उक्त कथन के द्वारा वेदों को सार्वभौमिक, सार्वदेशिक घोषित करके भारतीय संस्कृति को एक अपरम्परागत व नूतन आयाम प्रदान किया है।

जम्भेश्वर वाणी में अपरम्परागत् नूतन अवधारणाओं का बाहुल्य है। जिनके विस्तार से वर्णन किया जाए तो एक बड़ा ग्रंथ बन जाये यहां विस्तार न करते हुए कुछ नवीन अवधारणाओं व मान्यताओं को संक्षेप में ही वर्णित करना अपेक्षित है।

भारतीय संस्कृति में मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, गुरुदेवो भवः तथा अतिथि देवो भवः की मान्यता के अनुसार उपर्युक्त गुरु बन देव तुल्य पाने के अधिकारी है। लेकिन जाम्भो जी ने मानव को सजग रहते हुए इनको सम्मान प्रदान करने को तो कहा परन्तु साथ ही अपने स्वयं के विवेक व ज्ञान द्वारा उनके दृष्टि को जान समझकर अपना व्यवहार निर्धारित करने की भी एक नवीन परम्परा से हटकर बात कही। उन्होंने अपनी वाणी में माता पिता द्वारा भी सनातन के प्रति उनके दायित्व का बोध कराते हुए कहा है कि **"इस कलियुग में दोयजन भूला एक पिता एक माई॥ बाप जाने मोरै हलियो टोरे, कोहर सीचण जाहि॥ माय जानै मोरै बहुटल आवै, वाजै विरद बधाई॥ सबद 24॥** इस कलयुग में माता पिता भी स्वार्थ वश सन्तान पैदा करके निःस्वार्थ भावना के वश होकर ही सन्तान को पोषता व संस्कार प्रदान करते हैं जबकि उन्हें अपनी सन्तान को ऐसे संस्कार देने चाहिये जो संसार में उसे विलक्षण लोक मंगल हेतु भावना प्रदान कर मानव से महामानव बनने को प्रेरित करते रहे।

इसी तरह गुरु शिष्य के मध्य स्वार्थ जनित संबंध पर भी जाम्भो जी ने एक नवीन किन्तु शाश्वत् सत्य की अभिव्यक्ति करते हुए कहा कि **"चेला गुरु अपरिचै खीणा, मरते मोक्ष न पायौ॥** सबद 117॥ गुरु एवं शिष्य के संबंधों में कुछ छुपाव (अपरिचय भाव) से नहीं होना चाहिये वर्ना दोनों में से कोई भी मरणोपरांत मोक्ष का अधिकारी नहीं बन सकता।

अतिथि देवो भवः की अन्धी मान्यता में भी परिवर्तन दर्शाते हुए एक लोकहितकारी जागृति परक बात उन्होंने कहते हुए कि **"अनन्त रुप जेवो अभ्यागत तिहि का खोज लही सुरवाणी॥** सबद 98॥ आम आदमी ही नहीं शासकों प्रशासकों तक को चेताया है कि आने वाला क्या उद्देश्य लेकर तुम्हारे पास आ रहा है। अपनी बुद्धि, विवेक एवं ज्ञान के द्वारा पहले उसका आशय समझो तब उसके प्रति अपना व्यवहार निर्धारित करो अन्यथा वह आपको कहीं क्षति भी पहुंचा सकता है।

दान की पुरानी मान्यता है कि दान देने मात्र से ही उसे पुण्य फल प्राप्त हो जाता है उसे यह जानने की आवश्यकता नहीं है कि उसके द्वारा दिया गया दान किसी भले कार्य में प्रयुक्त हुआ या नहीं। इसके परम्परागत रूप से अलग हट

करके जाम्भो जी ने अपनी वाणी में कहा कि '**कुपात्र को दान जो दीयो, जानै रैण अंधेरी चोर ज लीयो॥** शुभ कार्य के दिए दान के परिणाम के विषय में उन्होंने कहा कि **दान सुपाते बीज सुखेते, अमृत फूल फलींजे॥ 56॥** सुपात्र को दिया दान व (सुखेते) अच्छे उपजाऊ खेत के बोया गया बीज अमृत के समान फल प्रदान करते हैं।

उत्तम कुली का उत्तम न होयिबा कारण क्रिया सारुँ॥ सबद 26॥ गुरु जाम्भो जी ने पुरातन परम्पराओं के प्रचलन कि आदमी कर्मों के बल से छोटा या बड़ा होता है जबकि उत्तम कुल परिवार में जन्म लेने से। यहां नवीन मान्यता की स्थापना द्वारा जाम्भोजी कहते हैं कि जग प्रचलित परम्पराओं के अनुसार प्राय: लोग उच्च कुल अलग जाति कर्म धर्म में जन्म लेने वालों को बड़ा मानकर आदर सम्मान देते हैं, कुछ लोग कर्मों के आधार को व्यक्ति की छवि निर्धारण का मापदण्ड मानते हैं। लेकिन आदमी न उच्च कुल में जन्म लेने से बड़ा होता है और न ही कर्मों के बल पर ही उसको बड़ा कहा जा सकता है। क्योंकि कर्म का क्षेत्र तो विशाल है। कर्मों के आधार पर किसी को बड़ा मान लेना महा भूल है। यहां मुख्य बात कर्म करने के उद्देश्य (कारण) में निहित है। क्योंकि एक ही जैसी क्रिया विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये की जा सकती है और उद्देश्य उत्तम व निकृष्ट किसी भी तरह का हो सकता है। अत: मात्र कर्म (किरिया) के द्वारा किसी को उत्तम या अधम की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। इस बात को एक उदाहरण के द्वारा ठीक से समझा जा सकता है ''एक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की सम्पत्ति हड़पने के उद्देश्य से उसका वध कर देता है। जो एक घृणित व निन्दनीय कार्य समझते हुए संविधान में उस वधिक व्यक्ति के लिये मृत्युदण्ड का प्रावधान है। पर्याप्त साक्ष्य मिलने पर उसे फांसी पर लटका दिया जाता है। इसके विपरीत किसी देश की सीमा पर एक व्यक्ति जो सेना का सिपाही है युद्ध में लड़ते हुए शत्रु सेना के पांच सात सिपाहियों का वध कर देता है तो उसे उस देश के शासन द्वारा अनेक सम्मानित अलंकारों (उपाधियों) से सम्मान प्रदान किया जाता है। जबकि सम्पत्ति हड़पने वाले व सैनिक द्वारा एक ही कार्य दूसरे व्यक्ति का वध किया गया परन्तु उसके परिणाम एक दूसरे के विपरीत क्यों हुए कारण यही कि एक का उद्देश्य स्वार्थ पूर्ति हेतु दूसरे की सम्पत्ति हड़पना था तथा दूसरे का उद्देश्य देश की रक्षार्थ आतताई का वध कर जनसाधारण की सुरक्षा करना था। अत: यहां उत्तम व अधमता का मापदण्ड कर्म (किरिया) न होकर उसका उद्देश्य (कारण) ही मुख्य है। जाम्भो जी की यह मान्यता सांसार में उन्हें सभी दार्शनिकों से अलग श्रेणी में रखते हुए विशिष्टता प्रदान करती है।

उपर्युक्त उद्धरणों से सिद्ध होता है कि गुरु जम्भेश्वर जी की वाणी व उनका दर्शन एक अपरम्परागत वाणी व दर्शन है। वे परम्पराओं के धुर विरोधी न

होकर उनमें युग धर्म व देश काल परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तन, परिवर्द्धन व विकास करते हुए परम्पराओं के तथ्य हीन व अनुपयोगी घटकों के उन्मूलन के पक्ष धर है। उनके दर्शन में एक अद्‌भुत समन्वय झलकता है। निराकार व साकार वाद के चिरकालिक विवाद का निपटारा करते हुए उन्होंने नयी अपरम्परागत बात कही ''अंजन मांहि निरंजन आछै।।'' अर्थात् निर्गुण ब्रहम् के दर्शन या अनुभव साकार जगत में ही सम्भव है। साकार व निराकार एक दूसरे के बिना अस्तित्वमान कदापि नहीं हो सकते। वे एक दूसरे के पूरक हैं। एक दूसरे पर निर्भर हैं। निराकार ब्रह्म एक अक्षय व अनंत ऊर्जा पुंज है जिसके आलोक में उसी की इच्छानुसार साकार सृष्टि की साधना होती है। जो उसका ब्रह्म का विराट रूप है। यह सब घटना उसी की इच्छा मात्र से घटित होती है।

सारांशत: गुण जाम्भो जी की वाणी व दर्शन एक अद्‌भुत विलक्षण लोक मंगल की भावना से परिपूर्ण एक पूर्ण विकसित व वैज्ञानिक खोज परक विचारधारा है जो पुरातन परम्पराओं को नया कलेवर प्रदान करती हुई चिर नवीन होने के कारण अपरम्परागत है, शाशवत है, चिर मंगलमयी व लोक कल्याण कारी है। इसमें और भी अनेक नवीन मान्यता एवं अपरम्परागत बिन्दुओं का समावेश है जिन पर गहन चिन्तन मनन व अध्ययन करके बहुत कुछ खोजकर निकाला जा सकता है जो नि:सन्देह लोककल्याणकारी व मंगलमय होगा।

❍ **राजकुमार सेवक**
रसूलपुर गुज्जर, कांठ
मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश)

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी दा जीवन अते वातावरण सुरखिया

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवानजी बिश्नोई पंथ दे महान गुरु हन जो जाम्भोजी नां नाल वी जाणे जांदे हन। ईना दा जन्म दिवस वी भगवान श्री कृष्ण जन्म अष्टमी दे दिन मनायिया जांदा है। ईंना दे भगत अते बिश्नोई पंथ दे लोकी ईना नूँ भगवान श्री हरि विष्णु जी दा अवतार मनके पूजा कर दे हन। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी दा अवतार अज तों 562 साल पहिलां बिकमी संवत 1508 नूँ राजस्थान दे नागौर परगने दे पीपासर नां दे पिण्ड विच होयिया सी। आप जी दी माता दा नां हांसा देवी उप नां केसर सी अते पिता दा नां श्री लोहटजी पंवार सी जो अपणे पिण्ड दे ग्रामपति वी सन।

आप जी ने 7 वर्ष तक बाल लीला कीति, 27 साल तक गउवां अते उनां दी सेवा अते रॅखिया विच पूरण रूप विच कम किते। उहनां ने बहुत सारे बड़े महान बादशाहां अते मुस्लिम समाज दे लोकां कोलों गउवां नूँ ना मारण दा संकल्प लिया। उहन दा सारा जीवन धर्म उपदेश विच ते हरें रूंखा अते जंगली जानवरां (जीवां) दी रॅखिया विच ला दिता सी। जो बिश्नोई पॅथ लयी प्रेरणा स्त्रोत ते धर्म दा ईक अंग बण गिआ। विकमी संवत 1542 नूँ कॅतक महीनें दी अष्टमी तों उहना ने विधिवत तरीके नॉल सम्भराथल धोरे ते कलश दी स्थापना करके सरोमणी बिश्नोई पंथ दी स्थापना किती ते जीवन दे सोहणें 29 जो नियमां दी आचार संहिता पंथ नूं प्रदान करके शानदार जीवन जीण ते मरण ते मुक्ति दी गारंटी दे दिती सी। ईंना नियमां विचों ईक नियम जंगली जीवां दी रखिया नाल सम्बन्धित है। जिस तरां जीव" दया पालणी-रूंख लीलो नहीं घावे" जिस दा अर्थ है हरा दरखत कटण तां दूर किसे रूंख नूं जख्म वी नहीं देणा चाहिदा है। हरे दरखत नूं कटण दी उन्ना ने जीव हत्या करण दे बराबर तुलना किती है।

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी दा जन्म दिवस आम तौर ते बिश्नोई पंथ दे लौकां द्वारा देश भर विच मनाईया जांदा है। परन्तु इस दा मुख आयोजन उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, मध्य-प्रदेश, दिल्ली, गुजरात अते पंजाब विच कीता जांदा है। हरियाणा विच जन्मास्टमी दा मुख समारोह श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार विच कीता जांदा है। गुरुजी ने विकमी सम्वत 1542 विच कलश दी स्थापना करके सिरोमणी बिश्नोई पंथ दी स्थापना किती, जिवें श्री गुरु नानकदेवजी ने सर्बत दे भले लयी सिख धर्म दी स्थापना कीती सी। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान अते श्री गुरु नानक देव

नोट : इस लेख की भाषा पंजाबी है।

जी दोनों साडे साहमणे महान समाज सुधारक, मानवता दे मार्ग दर्शक, समाज विच फैलियां कुरीतियां नूँ दूर करन वाले, अहिंसावादी सन्देश देण वाल अते महान कर्मयोगी दे रुप विच जाणे जांदे हन।

श्री गुरु जम्भां जी ने पंथ विच सच्चाई सादगी, सहिणशीलता अते शुभ कारज करन दा प्रचार कीता। आप करनी अते कथनी दी ईकरूपता उत्ते जोर देंदे सन। जात-पात दे उह कटड़ विरोधी सन। ठेठ राजस्थानी भाषा विच **उत्तम कुंली का उत्तम ना होयिबा-कारण किया सारूं,** कहिण वाले पहिले बाणीकार सन। उनां ने दलित अते लताड़े होये लोकां दे कलियाण लयी संघर्ष किता ते मार्ग तों भटके लोकां नूं सही मार्ग विखायिया। जिवें भारती दर्शन अते हिन्दु धर्म ग्रन्था अते मानता दे अनुसार मृतक ईन्सान दे अन्तिम संस्कार चार प्रकार दे दसे गए हन। उनां विच जल दाग, वायु दाग, भूमि दाग अते अग्नि दाग हन। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी भूमि समाधि देण नूं महत्व दिता सी। क्योंकि इस नाल वातावरण दूषित नहीं हूंदा अते गरीब मृतक दे वारस महंगाई दे कारण जलाण दे साधन पैदा नहीं कर सकदे। इस लयी भूमि समाधि देण नूं ही गुरुजी ने पहिल दिती सी। इथे हरेक मसिया नूं बिश्नोई पंथ दे सारे किसान छुट्टी मनाउंदे हन अते जंगली जीवां दी रखिया लयी प्रण देंदे हन अते आत्मशुद्धि लई मसिया दे दिन व्रत रखदे हन। परम पिता परमात्मा श्री विष्णु जी दे मन्दिर जा के अरदास वी कुरदे हन। सच दी रोशनी विच बिश्नोई पंथ उत्ते कोई दोष नहीं मिलदा।

कहिन्दे हन कि स्वामी दिया नन्द अते ईक बिश्नोई सन्त चेला राम दी हरिद्वार विच अर्ध कुम्भी मेंले दे समय मुलाकात होयी सी। इस वक्त स्वामी जी ने किहा सी कि श्री गुरु जम्भश्वर भगवान जी ने वैदिक धर्म नूं जिन्दा रखिया होयिया है। इसे लयी किहा जांदा है कि जो कम वैदिक धर्म नूं पून जीवित करण श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी ने आरम्भ किता, श्री स्वामी दियानन्द सरसवती जी ने उसनूं पुरी तरां सही मनियां सी।

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान अते वातावरण सुरखिया :-

अज दे युग विच ईंसान दे साहमणे सब तों वडी समस्या वातावरण प्रदूषण दी है। जेकर ईंज ही जंगलां दा विनाश हूंदा गिआ तां उह दिन दूर नहीं जदों सम्पूर्ण जीव-जन्तु दे प्राण खतरे च पै जाणंगे। उपनिषदां विच वी लिखिया है कि ईक रूॅख दस सुपुत्रां दे बराबर हूंदा है। उह सानूं दस कीमती तोहफे दिंदा है, जिंवे जल, मिट्टी, वस्त्र, ऊर्जा, आसरा, दवाई, चारा अते हरी:भरी छां।

साडे देश दी पवित्र धरती ते समें समे बड़े कष्टा अते अत्याचारां दा दौर गुजरिआ सी। इसदी दासतां बड़ी दर्द भरी, अकिह अते ससिह है। पर! इतिहास गवाह है कि इस देश दे शूरवीरां ने अत्या-चारां दा साहमणा करदे होये शानदार जितां

प्राप्त किती हन। इनां दे त्याग, तप, तपस्या अते बलिदान दे सहारे ही साडा ईह भारत मुल्क आजाद होईया। अनाथां नूं सहारा मिलिया ईथों तक कि जंगली जीवां अते रूँखां तक नूं वी सुरखिया मिली।

वातावरण नूं शुद्ध रॅखण अते रूँखा दी रखवाली लयी बिश्नोई पंथ दी इस देश नूं बहुत वॅडमुली देण है। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी ने 16वीं शताब्दी दे अरम्भ विच ही रूँखां विच जीवन दी होंद दे सिद्धांत दी पालणा करदे होये उहनां रूँखां दी सुरखिया लयी बिश्नोई पंथ दा हर औरत, मर्द, अते बच्चातक ईक बलिदानी सेना वांग तियार रहे हन। सिटे वजों जम्भेश्वर भगवान जी दे अनुयायी स्त्री-पुरूषां अते बॅचियां ने हरे दॅरखतां अते जंगली जीव-जन्तुआं दी राखी करदिया आपणीयां अपणियां जानां तक निछावर कर दितियां हन।

विकमी सम्वत 1787 भादो सुदी दसमीं वार मंगलवार दी घटनां है जो बहुत दर्दनाक अते हिरदे नूं हिला देण वाली है। उस वेले जोधुपर नरेश महाराजा अभैसिंह नूं किले दे निरमाण लयी चुना पकाउण लई लकड़ दी जरूरत सी। पर भियानक मारूथली ईलाका होण करके उस खेतर च दरखतां दी बहुत कमी सी। ईना दे सैनापति गिरधर दास भण्डारी जो महाराजा दे बहुत नेड़े सी ते खुशामदी वी सी, ने राजे दा धियान खेजड़ली नां दे ईक पिण्ड लहिलाहांदे दॅरखतां दे वल दिलवाया अते उहनां कॅट के लिआउण लयी प्रस्ताव पास किता ते राजे नूं विश्वास दिवाईया कि उह सब कूझ उथों दे बिश्नोई लोकां दी सहिमति नालन ही होवेगा। परन्तु हाकम गिरधर दास ने बिना बिश्नोई पंथ दे लोकां दी सहिमति तों ईहनां हरे भरे दरखतां नूं कॅटण दा हूकम सुणा दिता।

बिश्नोई पंथ दे लख मना करण दे बावजूद वी हाकिम अते राजे दे होर कर्मचारी नहीं मॅने ते पूरे बाहूबल नाल हथियारां समेत खेजड़ली पिण्ड विच आ धमके। सब तों पहिलां रामोंजी दे घर दे साहमणे दा लहलाहांदा खेजड़ी (जाण्डी) दे दरखतां नूं कॅटण लगे। उदों ही रामाजी खौड़ दी धर्म पत्नी श्रीमती अमृता देवी बिश्नोई ने अपणें घर तों बाहर आ करके दॅरखत कटण दा विरोध कीता। उस ने किहा कि दरखत उहनां दे धर्म अते संस्कृति दे प्रमुख अंग हन अते जीवन दी होंद लयी बहुत महत्वपूर्ण हन। पर इह सब कुझ दा उस सेनापतति उते कुझ वी असर नहीं सी होहिया। ईह वेख के दॅरखत नूं कटण लयी जदों उसदे कारिंदियां ने दरखत कटणां चाहिआ तां सिर ते कफण बॅन अमृता देवी दा सिर धड़ तों अलग कर दिता। उनां तों पिछों उस दिआ तीन धीयां दा वी उह ही असर कीता गिआ।

जदों इस हिरदे वेदक कांड दा होरनां पिण्डा वासियां नू पता लगा तां 84 पिण्डा दे लोकां ने आके पंचायित बुलाई अते सहीदी दा पाहल पिकै श्री जम्भ सरोवर विच ईसनान कीता अते इह प्रतिगिआ कीती कि जदों तक साडे शरीर विच

साहं हन उह हरे दरखतां नूं कॅटण नहीं देणगे ते ना ही उह जंगली जीवां दा शिकार करण देणगे। हुण फिर दुबारा सैनापति ते राज कर्मचारी सैंकड़ियां दी गिणती विच आए अते दॅरखतां दी कटाई शुरू कर दिती। दॅरखत कॅटण दी आवाज सुणके सरे पिण्डा दे बिश्नोई स्त्री, पुरूष अते बॅचे सारे बिश्नोई लोक ईकतर हो गये अते उनां दे लॅख मनां करण दे बावजूद वी हाकिम अते राजा दे करिंदे नहीं मंने अते दॅरखतां दी कटाई शुरू दिती। आए होये स्त्री पुरूष ते बॅचे श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी दी जै जै कार करदे अते उहनां नूं नमन करदे होए दॅरखतां दे नाल गलवखड़ी पा के खड़े हो गये इस तरां लगातार ईक, दो जां चार नहीं पूरे 363 लोकां नूं जालमां ने दॅरखतां दे नाल ही सहीद कर दिता। अजिहा अनूठा उदाहरण सारे संसार दे पन्नियां विच नहीं मिलदा, जिथे कि रूखां अते जीवां नूं बचावण खातिर लोकां ने हसदे हसदे सहीदी पाई होवे।

जदों इस समूहिक हतिया कांड दा पता जोधपुर नरेश महाराजा अभैसिंह नूं लगिया तां उह नंगे पैरी उत्थे हतिया कांड वाली जगां उते पहुंचिया अते 84 पिण्डा दे आये होवे बिश्नोई औरतां, मरदां अते बॅचियां कोला मुआफी मंगी। उना ने बिश्नोई पंथ दे लोकांनूं विश्वास दिवाईया अते तांमर पॅतर लिख के दिता जिस विच हूकम जारी कीता कि कोई वी मनुॅख भविख विच बिश्नोई पिण्डा दी सीमा विच ना तां हरे दॅरखतां नूं कॅटेगा ते ना ही कोई जंगली जीवां दा शिकार कर सकेगा। जदों सेनापति गिरधर दास भण्डारी नूं सजा देण दी गॅल आई तां बिश्नोई पंथ दे सब लोकां ने किहा कि हुण ईह मामला परमपिता श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी ते ही छॅड दिउ, उह ही ईसनूं ईसदे किते पाप कर्मा दी सही सजा देणगे। कहिंदें हन कि उसे वले गिरधर दास भण्डारी दे मुंह खून निकलिया ते उह चकर खाके धरती उते डिग पिया और डिगण सार उसदे प्राण पंखेरू उड़ गये।

संसार विच कोई सोच वी नहीं सकदा कि ईहनां बिश्नोई पिंडा दे लोकां ने दॅरखतां दी रखवाली करदे होये इनां वॅडा बलीदान दितॉ सी। जोधपुर दे किले तों प्राप्त कागजा दी जाणकारी दे हिसाब नाल पता लगिया है कि खेजड़ली पिंड दे 84 पिण्डा दे स्त्री, पुरूष्ज्ञ अते बॅचों ने रूॅखां दी रखवाली करदे होये आपणे प्राण निछावर कर दिते सन। हूण तां उण सहीदां दे नावां दा वी पता लग चुकिया है। हूण हर साल भादों महीनें दी 10वीं नूं सहीदां याद विच मेला लगदा है। **मड़ीयां दे मेले लगदे, लोकी नां लेंदे ने** इस मेल विच पूरे भारत देश देकौने कौने विचों ना केवल बिश्नोई पंथ दे लोकी ही आंदे बॅलकि होरनां धरमां दे लोक वी सहीदां नूं सरद्धान्जली देण लयी पहुंचदे हन। बिश्नोई पंथ लोकां ने ईहना सहीदां दी याद रखण लयी 25 बीघा जमीन खरीद कर 363 रूॅख लाये सन। पर! हूण उह नां दी गिणती हजारां विच हो गयी है। उस स्थान, ते राजस्थान सरकार ने ईक नर्सरी दी स्थापना किती

होई है, जिथों पौधे मुफ्त विच लोका नूं मुहईया करवाये जांदे हन। सहीदी स्थल थां ते अखिल भारतीय बिश्नोई जीव रक्षा सभा, अबोहर दे तत्कालीन प्रधान चौधरी संत कुमारजी राहड़ दी कोशिशां नाल ते स माज दे सहयोग तों ईक सहीदी स्मारक वी बणयिया होया है। जॉच तो बाद लेबोरेटरी दा कथन है कि जिथे जिथे वी ईहनां सहीदां दा खून डूलिया सी उस थां ते हूण तक वी घाह नहीं उगदी अते उह धरती अॅज वी लाल है।

सन् 1982-1983 विच ईक अरब दा सहिजादा अल बदर अति दूर्लभ पंछी **गोडावण** दा शिकार करण लयी भारत दे राजस्थान दे ईलाके विच आइया सी। पर! बिश्नोई पंथ दी अगवाई हेठ सारे धरमां दे लोकां ने इकजुट होके ईक आवाज विच उस शिकार दा पुरजोर विरोध कीता। सिॅटे वजों उह अरबी सहिजादा कनां नूं हॅथ ला के बिना शिकार कीते ही आपणे वतन नूं मुड़ किया ते मुड़ तों शिकार करण लयी भारत विच आउण तो तौबा कीति। ईसे तरां साडे देश दा दूर्लभ पंछी शिकार होण तों बचा लिया गया।

फतूर नाल भरे होये सलमान खान ने सन् 28-29 सितम्बर, 1998 नूं फिल्म हम साथ साथ है दी शूटिंग दौरान राजस्थान दे जिला जोधपुर दे पिंड मथानिया दे गौधा फार्म विखे दूर्लभ प्रजाति दे दो काले हिरनां दा शिकार कर लिया। इस मामले विच उसनूं पंज साल दी कठोर कैद अते पंच्चीस हजार रूपये जुर्माने दी सजा होई। लोकां दे जीवन नूं तुच्छ समझण वाले नूं जंगली जानवरां दी कीमत दा पता लग गिया होवेगा। वर्णन योग है कि इस मामले दा सम्बन्ध बिश्नोई खत्तर नाल सी अते इस मामले दी पैरवाही करण वाला अैडवोकेट वी श्री महीपाल जी बिश्नोई सन। दुबारा काला हिरण शिकार मामले विच दोषी करार दिते जाण तों बाद जोधपुर दी अदालत ने फरवरी, सन् 2006 विच फिल्म अभिनेता सल्मान खान नूं इस केस विच ईक साल दी कैद दी सजा अते 5 हजार रूपये जुर्माने दी सजा सुणाई सी। हूण ईह केस हाई कोर्ट विच चल रिहा है।

इसे भावनां अते प्रेरणा दे फलस्वरूप अज वी जिथे जिथे बिश्नोई आबादी निवास करदी है, उहनां पिंडा दे आले-दुवाले हिरन, खरगोश, नील गावां, मोर, कबूतर आदि वण प्राणी आजादी नाल घमदे नजर अरउंदे हन। इहनां खेतरां विच **हरियाणे दे हिसार, सिरसा, फतेहाबाद कुछ एरिया भिवानी आदि जिलों दे पिंड जिवं आदमपुर, सदलपुर, सीसवाल, बड़ोपल, चपलामोरी, चौधरीवाली, चिन्धड़, चिकनवास, कालवास, खाराखेड़ी, खजूरी जाटी, काजल-हेड़ी, काजलां, झलनियां, ढ़ाणी माजरा, भिरड़ाना, नागपुर, धांगड़, सहू, यालकी, महम्मदपुर रोही, रत्ताखेड़ा, हड़ोली, हांसपुर, पिरथला, पारता, सनियाना, भाणा, सारंगपुर, गंगा, लीलस, चौधरीवास, भोडिया बिश्नोईयान, रूपाणा**

बिश्नोईयान, बुर्ज-भंगू, गोसाईयाना, खैरमपुर, झुम्पा, तिलहोड़ी, सैनिवास, सिवानी, बड़वा, रावतखेड़ा और मंगाली इत्यादि पिंडा दे नाल नाल पंजाब दे अबोहर फाजिल्का इत्यादि क्षेत्रों दे पिंडा दे खेतां विचों 100-300 तक हिरनां दीयां डारां (टोली) आजादी नाल धुमंदियां ते छलांगा मारदिया हर वक्त आम नजर आउंदिया हन। चिपको आन्दोलन दे वास्तविक प्रणेता (जन्मदाता) ईह बिश्नोई पंथ दे लोक ही हन।

इस प्रकार दृढ़ निश्चा अते बलिदान देण दी गाथा विश्व इतिहास विच मिलणी न केवल दूर्लभ ही है बल्कि असम्भव वी है। इस प्रकार वातावरण अते जंगली जीव जन्तुआंदी रखवाली लयी बहादुर मौत वी किसे कमा वाले वियकती नूं ही मिलदी है। धन है ईह साडी पवित्र धरती जिथे अजिहियां मावां जिने ऐहो जिहे शूर:वीर पुत्र-पुत्रियां नूं जन्म दिता है।

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी दी जै। भारत माता दी जै।

❍ **सरदार ध्यान सिंह जख्मी**
मकान नम्बर 1545, सैक्टर-25, पंचकूला (हरियाणा)
मो. फोन नं. 09876555961

पर्यावरण संरक्षण व जीव रक्षा के अग्रदूत गुरु जम्भेश्वर भगवान

आजकल पर्यावरण प्रदूषण की विकट समस्या समस्त विश्व में व्याप्त है। संसार में कोई भी स्थान और संस्थान ऐसा नहीं है जहाँ पर प्रदूषण का बोल बाला ना हो। आधुनिक युग में पर्यावरण प्रदूषण को समाप्त करने तथा इसको जड़ से मिटाने तथा संतुलन बनाए रखने के लिए अनेकों उपाय किया जा रहे हैं। नई-नई योजनाएं बनाई जा रही है। विचार-विमर्श करने के लिए गोष्ठियां आयोजित की जा रही है। हरे वृक्ष लगाये जा रहे हैं और उन पर लाखों रुपये व्यय किए जा रहे हैं। प्रदूषण समाप्त करने के लिए भरसक प्रयास किये जा रहे हैं। सारा संसार प्रदूषण से परेशान है। परन्तु इस विकट समस्या पर पूरी तरह से नियंत्रण नहीं हो पा रहा है।

परन्तु बिश्नोई पंथ के प्रवर्तक और पर्यावरण व जीव रक्षा के अग्रदूत गुरु जम्भेश्वर भगवान ने आज से पांच शताब्दी पूर्व ही पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रदूषण को समाप्त करने तथा सन्तुलन बनाये रखने पर विशेष बल दिया था। वन्य जीवों की रक्षा, हरे वृक्ष नहीं काटने पर तथा नये वृक्ष लगाने के लिए आदेश दिया था। आज भी उनके उपदेश तथा आदेश खरे उतर रहे हैं। बिश्नोई समाज प्राचीन काल से ही भगवान जम्भेश्वर के नियम और सिद्धान्तों का दृढ़तापूर्वक पालन करता आया है और सन्तुलन बनाये रखने में और पर्यावरण संरक्षण करने में पूर्ण रूप से प्रयत्नशील और सक्षम है।

विश्व इतिहास में बिश्नोई समाज वृक्षारोपण, हरे वृक्षों की रक्षा के लिये प्रसिद्ध है और उनकी रक्षा के लिये अपने प्राणों की आहुति देने में कभी पीछे नहीं रहता। नीचे लिखी पंक्तियों को देखिये -

पर्यावरण व जीव रक्षा, बिश्नोई जन की पहचान।
गुरु जी का उपदेश यही है, सब करते इसका सम्मान।।

इस संदर्भ में यदि मैं आपको खेजड़ली बलिदान दिवस की याद दिलाऊं तो अनुचित नहीं होगा। यह घटना भाद्रशुदी दसमी विक्रमी सम्वत् 1787 सन् 1730 को हुई थी। जो खेजड़ली गांव जिला जोधपुर, राजस्थान में घटी। जोधपुर के महाराजा अभय सिंह के काल की बात है। उस समय भवन निर्माण कार्य हेतु चूने की जरूरत रहती थी और चूना लकड़ियों को जलाकर एक प्रकार का पत्थर पकाकर बनाया जाता था। राजस्थान में रेतीली भूमि है और यहां पेड़ कम उगते हैं। प्राचीन पेड़ पहले किला बनाने में काट लिये गये थे। बिश्नोई गांव खेजड़ली में खेजड़ी के हरे वृक्ष काफी संख्या में मौजूद थे क्योकि बिश्नोई धर्म में हरे वृक्ष काटने देना मना है परन्तु महाराजा ने अपने मंत्री गिरधर दास भण्डारी को बिश्नोई गांव

खेजड़ली में लकड़ी काटने हेतु भेजा था। यह खड़ाणा 9 मास चला था इसका अन्त हुआ उस दिन भादोशुदी दसमी दिन मंगलवार था।

गिरधरदास ने सारे वृक्ष काटने का आदेश दे दिया। सर्वप्रथम सैनिक **श्रीमती अमृत देवी** के द्वार पहुँचे और पेड़ काटने शुरु कर दिये। इस समय सुबह का समय था- पुरूष अपने-अपने काम पर जा चुके थे। खट-खट की आवाज सुनकर अमृता देवी बाहर आ गई और उसने पेड़ काटने को रोका, पर सैनिक नहीं रुके। इस समय भण्डारी भी वहीं था। अमृता ने भण्डारी से पूछा कि तुम हमारे पेड़ को क्यों काट रहे हो तो भण्डारी ने कहा- महाराजा गुरु का हुक्म है कि हरे पेड़ मत काटने देना- हमारे धर्म में अपराध हैं इसलिए मैं पेड़ नहीं काटने दूंगी और स्वयं पेड़ के साथ कटकर मर जाऊँगी, वृक्ष नहीं काटने दूंगी और अमृता पेड़ से चिपक गई। भण्डारी के आदेश से सैनिक ने अमृता देवी को भी काट दिया। इस प्रकार अमृता देवी ने पेड़ बचाने हेतु अपना प्रथम बलिदान दे दिया। उसके पश्चात् उनकी तीनों बेटियों ने भी बलिदान दे दिया। गांव में खबर अग्नि की तरह फैल गई। लोग बलिदान देने के लिए हजारों की संख्या में आकर जमा हो गये और धर्म के नाम पर पेड़ों के बचाव के लिए बलिदान देना शुरू कर दिया। जब यह नर संहार चल रहा था तो कुछ वीर बिश्नोई लोगों ने महाराजा से फरियाद करने की बात कही और वे चल पड़े तो वह उनसे पहले ही पहुँच गया और महाराजा को भड़काया। जब बिश्नोई फरियादी महाराजा के पास पहुँचे तो महाराजा ने कहा कि तुम क्यों आये हो और क्या खो गया है ? हमारा धर्म खो गया है और लोगों का कत्लेआम जारी है। महाराजा को सब बात पूरी तरह से समझाई - असलियत जान कर राजा दुखी हुआ। भण्डारी को खूब डाटा और घटनास्थल पर पहुंचकर नर-संहार को बन्द कराया। इस समय तक 363 बिश्नोई नर-नारी और बच्चे अपना बलिदान दे चुके थे। इनमें 71 औरतें और 292 पुरूष थे। महाराजा ने वहां पेड़ के नीचे खड़े-खड़े फरमान जारी किया जो इस प्रकार है - 1. आज से मेरे राज्य में बिश्नोई गांव में कोई भी हरे वृक्ष नही काटेगा, जो ऐसा करेगा उस पर रुपया जुर्माना किया जाएगा, दूसरे बिश्नोई गांव में वन्य जीवों का शिकार कोई नहीं करेगा, यदि ऐसा करेगा तो उसको दंड दिया जाएगा। यह सोचकर कि हमारे धर्म की रक्षा होगी, बिश्नोई जन फरमान लेकर वापिस चले गये। यह खडाणे का साका लगभग 9 मास तक चला था।

''धन्य हो अमृता देवी'' जग में, धन्य युवा बेटियों का बलिदान। धन्य 363 बिश्नोई नर-नारी व बच्चे, वृक्ष हित दे गये अपने प्राण।। अमृता देवी की मूर्ति यूरोप में फ्रांस देश के शहर (राजधानी पेरिस) में एक चौक पर लगी हुई है जो बिश्नोई समाज का गौरव बढ़ा रही है।

विश्व भर में किसी भी देश के समाज में ऐसी घटना देखने को नहीं

मिली और ना ही भविष्य में मिलेगी। जो भी इस घटना के बारे में सुनता है दांतों तले उंगली दबा लेता है और उन शहीदों को नमन करता है। धन्य हो भगवान जम्भेश्वर के अनुयायी शहीद, जिनके हृदय में वृक्षों के प्रति प्रेम और उनके बचाव हेतु बलिदान की भावना कूट-कूट कर भर दी और उन्होंने हंसते-हंसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य अध्यक्ष बिश्नोई सत्संग समिति ने श्री बिश्नोई मन्दिर ऋषिकेश में गंगा दशहरा के पावन-पर्व और समिति के वार्षिक उत्सव के अवसर पर 7, 8 जून, 2002 को अपने भाषण में बोलते हुए कहा था कि खेजड़ी बलिदान पर्यावरण के संदर्भ में यह विश्व भर में अद्वितीय बलिदान है।

आज भी बिश्नोई समाज जीव रक्षा, वृक्ष रक्षा व पर्यावरण संरक्षण करना अपना धर्म समझता है। 23 अक्टूबर, 1998 में राजस्थान की पवित्र भूमि सूर्यनगर ऐतिहासिक स्थल पर, कुछ फिल्मी सितारों ने श्री राज प्रोडक्शन की ओर से एक फिल्म ''हम साथ साथ'' की शूटिंग करने आये थे तथा उन्होंने काले हिरणों का शिकार कर डाला। बिश्नोई बन्धुओं को जब पता लगा तो इसकी रिपोर्ट राजस्थान सरकार को दी। इस घटना को सरकार ने गंभीरता से लिया है और कोर्ट में केस चला। बिश्नोई समाज में काफी रोष रहा। उन्होंने विरोध जताने के लिये जुलूस निकाले और सरकार से मांग की कि अपराधियों को कड़ी सजा मिलनी चाहिए और शिकार विरोध कानून को और भी कड़ा बनाया जाये, जिससे भविष्य में कोई भी वन्य जीवों का शिकार न कर सके। एक और घटना अगस्त सन् 2000 में चेरई गांव, जिला जोधपुर में घटी। श्री गंगाराम जो अपने खेतों में लगभग 4 बजे फसल निराई का काम कर रहे थे। हिरण को बचाते-बचाते अपनी जान न्यौछावर कर दी और हिरण को भी नहीं बचा सके। चेरई गांव के बस स्टैंड के पास श्री गंगाराम की समाधि बनवाई तथा साथ में हिरण की समाधि भी बनवा दी। इनकी पुण्य तिथि पर इनका बिश्नोई तथा अन्य लोग श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिये हम जगह-जगह पर अधिक से अधिक पेड़ लगायें तथा उनकी रक्षा करें तथा इस बात का भी ध्यान रखें कि असामाजिक तत्व इन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचा सकें। गुरु जम्भेश्वर भगवान के पर्यावरण विषयक पर यदि वैश्विक चिन्तन किया जाये तो पर्यावरण संरक्षण करने संतुलन बनाये रखने में तथा प्रदूषण को नष्ट करने में काफी सहयोग मिल सकता है तथा विश्व का कल्याण सम्भव है।

बिश्नोई समाज प्रेम और सद्भाव को अपनाकर समाज की प्रगति के लिये कार्य करे, इसी में हमारी तथा समाज की भलाई है।

❍ **ओ.पी. बिश्नोई 'सुधाकर'**
प्रधान, अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा (दिल्ली प्रदेश)

जम्भवाणी में लोक मंगल की भावना

1. लोक मंगल भावना
2. लोक मंगल भावना से साहित्य और संस्कृति का विकास
3. जीवात्मा का प्राण–लोक धर्म
4. लोक मंगल भावना में आत्मिक सुख
5. सबके सुख में अपना सुख
6. आत्म कल्याण अथवा मोक्ष
7. उपसंहार

जम्भवाणी के शब्द शब्द, पंक्ति पंक्ति तथा पृष्ठ पृष्ठ पर लोक मंगल भावना का दिव्य दर्शन होता है। यह भगवान जम्भेश्वर महाराज के मुखारबिन्द से प्रवाहित पावन गंगा की अमृत धारा है। इस प्रवाह में जिसने भी अवगाहन किया अथवा आचमन ही किया, वह सहज में मोक्ष के परम पद को प्राप्त हो गया। इहलौकिक और पारलौकिक सुख का भरपूर आनन्द प्राप्त हुआ। इसी भगवद् स्वरूप लोक मंगल भावना में संस्कृति और साहित्य का सृजन हुआ। इस मंगलमयी भावना की गोदी में पल कर नर से नारायण और भक्त से भगवान बने। जम्भवाणी का सम्पूर्ण चिन्तन मनन, नैतिक और आध्यात्मिक विचार धाराओं का पवित्र संगम है। यथा–

आसण बैसण कूड़ कपट्टण, कोई कोई चीन्हत वोजू वाटे।
वोजू वाटे जे नर भया, काची काया छोड़ कैलाशे गया।। (सबद 24)

सम्पूर्ण साहित्य में जड़, जीव, चेतन आत्मा का सर्वथा हित और कल्याण निहित है। दुर्गुणों से दूर रहना और सच्चाई को ग्रहण करने का पारदर्शी संदेश है। सृष्टा के दिव्य गुणों का दर्शन और समर्पण का मंगलमयी उद्घोष है। इस सर्वमंगलीय भावना में डुबकी लगाकर सत् साहित्य का सृजन संभव होता है। ईश्वर के प्रति प्रेम, श्रद्धा, समर्पण तथा उसके द्वारा रचित संसार की प्रत्येक जीव जन्तु के प्रति संरक्षण एवं संवर्धन की कामना उसे सच्चे पथ का आभास कराती है। संसार के प्रति कल्याणकारी भावना चिन्तन मनन व क्रियान्वयन ही लोक मंगलमयी भावना को जन्म देते हैं।

हिन्दी साहित्य में कबीरदास जैसे विशिष्ट व्यक्ति ने सर्वमंगलकारी कल्याणकारी लोक मंगल भावना के आधार पर साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त किया। वह कहते हैं –

कबिरा खड़ा बाजार में सबकी मांगे खैर।
न काहू से दोस्ती न काहूं से बैर॥

लोक मंगल की भावना का निष्काम दर्शन और क्या हो सकता है ? इसी तथ्य को जम्भवाणी के पचासवें सबद से उद्धरित किया है।

तइया सांसू तइया मांसू तहया देह दमोई
उत्तम मध्यम क्यों जाणी जै विवरस देखो लोई॥

मानवीकरण और प्राकृतिक दर्शन का आधार भी लोक मंगल भावना ही है। जैसे मनुष्य का दिव्य स्वरूप अपनी गुणवाचक सत्ता का परिचय देता है।

हम ही जोगी हम ही जती, हम ही सती, हम ही राखबा चितूं
पंच पटण नव थानक साध ले, आदिनाथ के भक्तूं।। सबद 47

श्री जम्भेश्वर भगवान की वाणी भारतीय संस्कृति के आधारभूत मेरूदण्ड योग का अनुसरण करती हुई परम पिता परमेश्वर का साक्षात्कार करवाती है। यह जीव मात्र के परम कल्याण अथवा मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती है।

योग की अवधारणा प्रवृत्ति की ओर संकेत करके उसे आत्म कल्याण की ओर उन्मुख करती है। यह प्रवृत्ति भी निवृत्ति की साधना है यही कारण है कि इसकी साधना करने वाले नागरिक स्वार्थवश आपस में नहीं टकराते हैं। वे वित्तैषणा और लोकैषणा में प्रकृति के घातक दोषों में सदैव असम्पृक्त रहते हैं। अनासक्ति योग, निवृत्ति योग का प्राण है। यह सम्पूर्ण आसक्ति मूलक पापों के सर्वनाश की निर्दोष साधना है। इसमें साधन कर्ता कार्य-कारण से होने वाले प्राकृतिक दोषों से विमुक्त रहता है।

निष्काम कर्म योग, साधक के अन्त:करण को सर्वथा निर्दोष बना देता है। निष्काम कर्मयोगी संसार में रहता हुआ भी, सब कुछ करता हुआ भी निर्लिप्त रहता है। साधक का अन्त:करण सात्विक तत्वों की विहार स्थली बन जाता है। सबदवाणी में भगवान के दर्शन का उपाय इस प्रकार बताया है -

अवधू अजरा जार ले अमरा राख ले, राख ले बिन्द की धारणा
पाताल का पानी आकाश को चढ़ाय ले, भेंट ले गुरू का दर्शणा।।

सबद 49

जब साधक के विकार समूल नष्ट हो जाते हैं तो परमात्मा से मिलने का संयोग बनता है। परमात्मा से मिलना ही सर्व मंगलीय भावना का आधार है।

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का भारतीय समाज तथा संस्कृति पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से लाभ हुआ है। गुरु जम्भेश्वर जी ने जो आध्यात्मिक और नैतिक धरातल प्रदान किया उसमें लोक मंगल की भावना अत्याधिक परिष्कृत हुई है। उनकी रचनात्मक और सकारात्मक भूमिका ने रामबाण का कार्य किया जो निरन्तर जनमानस को प्रेरणा प्रदान करती रही है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि गुरु महाराज के मानव मूल्यों ने मानव मात्र के हित व

सुख कल्याण के लिए ही नहीं कार्य किया बल्कि प्राणी मात्र के कल्याणार्थ अपने आपको समर्पित कर दिया। आत्मा और परमात्मा के मध्य अद्वैत मत के आधार पर नर में नारायण की भावना का दर्शन करवाया। जीव मात्र की सेवा को नारायण की सेवा मानकर धर्म के पथ को उजागर किया है।

उनकी वाणी की मौलिकता ओजस्विता एवं स्पष्टवादिता आज भी उनके अनुयायियों का मार्गदर्शन कर रही है। बिश्नोई पन्थ पर्यावरण तथा अहिंसा के लिए सम्पूर्ण विश्व में अपनी यश पताका फहरा रहा है। इसके सिद्धान्त एवं मान्यताएं कालजयी एवं सर्वयुगीन है। उन जीवन मूल्यों एवं मान्यताओं को पुनर्जीवित कर विश्व को सर्वहितकारी व कल्याणकारी बनाया जा सकता है। आजकल की विषम परिस्थितियों में लोक मंगलकारी तथा कल्याणकारी सिद्धान्तों का परिपालन आवश्यक हो गया है। पूर्वाग्रहों तथा दुराग्रहों से पूर्णतया मुक्त होकर आज के सत्ताधारियों को श्री गुरु महाराज की अमृत मयी वाणी का अनुकरण कर जनमानस को स्वच्छ तथा सांस्कृतिक धरातल प्रदान करना चाहिए। उन्होंने मानव मन की दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करके उच्चादर्श अपना कर मानव जीवन को दिव्य संकेत दिया और एक स्वच्छ युग का निर्माण किया है। यह विचार सर्वथा युक्तियुक्त पूर्ण है कि गुरु जम्भेश्वर जी ने अध्यात्मिक प्रासंगिकता एवं पवित्र विचारधारा के दर्शन अध्ययन एवं विश्लेषण का निरूपण ही नहीं किया बल्कि व्यवहारिक आचरण में उतार कर दिखाया।

अत: यह अत्यन्त आवश्यक है कि गुरु महाराज की वाणी मात्र चर्चा और चिन्तन का विषय नहीं प्रत्युत व्यवहारिक जीवन का अनिवार्य अंग है। उन्होंने करनी कथनी की एकरूपता को अधिक बल दिया। यही विश्व को सर्व मंगलकारी एवं कल्याणकारी संदेश है।

सर्व-परमात्मस्वरूप की भावना ही लोक मंगलकारी भावना है जिसके अनुदान वरदान और अभिशाप भी कल्याणप्रद होते हैं। साहित्य का सृजन भी ''सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया'' की पवित्र भावना को आधार बनाकर किया गया है। यद्यपि विश्व साहित्य का सृजन विभिन्न प्राकृतिक परिवेशों में होने के कारण या विभिन्न भाषाओं के कारण काया कलेवर में कुछ भिन्न दृष्टि गोचर होता है किन्तु जब उसकी मूल भावना पर हम दृष्टिपात करते हैं तो वह भी 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' होकर समस्त समष्टि और व्यष्टि में कल्याण की ओर संकेत करता है। सृजनकर्ता का यह परम कर्तव्य भी है कि साहित्य का अमृत जन जीवन को सुख और आनन्द प्रदान करने वाला हो। उसमें भूति अनुभूति और विभूति के सम्यक विचार आन्दोलित होकर जनमानस के अन्त:करण में अपना गहन प्रभाव छोड़कर प्रशंसा और यश देने वाले हो।

श्री जम्भेश्वर महाराज ने जिस साहित्य का सृजन किया है वह मूलत: वेद, पुराण और उपनिषद् की वाणी है। वह मनुष्य के आत्मिक, भौतिक और नैतिक उत्थान के मौलक सिद्धान्त और दर्शन का उन्मेष करती है। उदाहरण स्वरूप–

घणा दिना का बड़ा न कहिवा, बड़ा न लंघिबा पारूं
उत्तम कुली का उत्तम न होयवा, कारण क्रिया सारूं॥

सबद 26

आधुनिक साहित्य की रचना भी लोक मंगलकारी भावना से ओतप्रोत होकर जीवन जगत के कल्याण की ओर अग्रसर होती है।

ऐसा कुछ कर चले सखे, हम इस जग से जाते जाते।
अम्बर महके धरती महके, महक उठेगा जग जाते जाते।।

डॉ॰ महेश दवाकर, मुरादाबाद

लोकमंगल भावना निष्काम कर्म योग का ही दूसरा पक्ष है। निष्काम कर्मयोग साधक के अन्त:करण को पावन बना देता है। श्री जम्भेश्वर भगवान ने जप तप योग का विस्तार पूर्वक उद्घोष किया है। तपो साधना से नैतिक कार्यों में विलक्षण स्वर्गीय भावना उत्पन्न हो जाती है। नैतिक सम्बंधों में अनुभूति जिज्ञासा और कर्मठता का वातावरण बन जाता है। नैतिक आचरण से विश्व को नीतिमय बनाने की शक्ति स्वत: ही उत्पन्न हो जाती है। नैतिक आचरण दिव्य हो जाते हैं। उसके संग-प्रसंग में रहने वाले व्यक्ति भी ऋषिकल्प बन जाते हैं।

यह कहना अनिवार्य हो जाता है कि जम्भवाणी भारतीय संस्कृति की विशिष्ट कृति है जिसमें नीति विज्ञान, आत्म विज्ञान, कला संस्कृति निस्संदेह परिपूर्ण है। यह आत्म तत्व की तरह अच्छेद्य, अभेद्य, अशोष्य, अकलेश्य एवं अदाह्य है। अपना विश्वास है कि यदि विश्व का नीतिगत कल्याण होगा तो उसमें जम्भवाणी का भी प्रमुख योगदान होगा।

अत: हम सबका परम कर्तव्य है कि अध्यात्म प्रधान संस्कृति के प्रतिष्ठा में एवं सर्वमंगलीय सदाचरण में अपना तन, मन, धन समर्पित कर दें। तब ही देश और धर्म का कल्याण होगा। यह ध्रुव सत्य है।

❍ **योगेन्द्र पाल सिंह बिश्नोई**
एस॰ 5/123, कृष्णापुरी, लाइनपार, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

बिश्नोई-विलक्षण अहिंसा का धर्म

यस्य स्मरणमात्रेण जन्म संसार बन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे।।

भगवान श्री जाम्भोजी ने जब अवतार ग्रहण किया उस समय विश्व की आध्यात्मिक राजधानी भारतवर्ष की काया लहूलूहान हो चुकी थी। विदेशी आक्रांताओं के भीषण आक्रमणों और लूट ने जहाँ भारत की राजनैतिक और आर्थिक शक्ति का ह्रास किया, वहीं बलपूर्वक धर्मान्तरण ने धार्मिक और सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर दिया। आग लगने से उजड़े हुए अपने घर के अवशेषों और मलबे के ढेर से उड़ते हुए धुएं को देखकर घर के मालिक की जो दशा होती है, वही दशा समराथल के ऊँचे टीले पर बैठे श्री जाम्भोजी की थी। जनमानस में थोड़ा बचा हुआ धर्म भी जर्जरित था। आगे आने वाली सदियां इनसे भी भयंकर आने वाली थी।। ऐसे तूफान में समराथल पर उस धर्म का दीपक जलाना था, जिसका पालन सतयुग, त्रैता और द्वापर में क्रमशः प्रहलाद, हरिश्चन्द्र और युद्धिष्ठर ने किया था। पूर्व में हुए इन तीनों महापुरुषों के जीवन पर नजर डालें तो इनका स्वभाव हमें सौम्य, मृदुल, उदार, दयालु, सहनशील, दृढ़ विश्वासी, कठोर तप और सच्चाई वाला मिलेगा। ऐसे ही लोग इस चौथे युग में तैयार करने थे गुरु जाम्भोजी को। जाम्भाणी साहित्य के विपुल भण्डार में बिश्नोई सन्त कवियों की रचनाओं और ऐतिहासिक घटनाओं का अवलोकन करें तो हमें पता चलेगा कि गुरु जाम्भोजी ने अपना कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किया था। इतिहास की पिछली पांच शताब्दियों में विश्व में भयंकर मार-काट मची रही और कमोवेश आज की परिस्थितियां भी कुछ अच्छी नहीं हैं। ऐसे समय में वृक्ष का एक पत्ता टूटने का अफसोस करने वाले लोग भी इस धरती पर हैं। जब दुनियां परस्पर वाद-विवाद, द्वेष, षडयंत्र और लड़ाई-झगड़े में उलझी है। हिंसा-प्रति हिंसा की भावना उत्तरोत्तर बढ़ रही है। परमाणु आदि विनाशक हथियार प्राप्त करने की होड़ लगी है। देशों के बजट का बहुत बड़ा भाग रक्षा-सामग्री प्राप्त करने में खर्च हो रहा है। गरीब भूख से बिलबिला रहा है, अमीर भयाक्रांत है, पूरे विश्व में भय और तनाव व्याप्त है। किसी धर्म का सन्देश विश्व-शान्ति, अहिंसा और आपसी सद्भाव होता है, पर सच्चाई यह है कि इस वसुन्धरा को इसके मानव पुत्रों ने सबसे अधिक बार धर्म के नाम पर ही रक्त से सींचा है। धर्म के नाम पर छल-प्रपंच पाखण्ड, मनमानी व्याख्या, झूठ-कपट से लोगों का दम घुटने लगा है। ऐसे समय में श्री गुरु जाम्भोजी का सरल, सारगर्भित और कल्याणकारी उपदेश लोगों को इस ब्रह्माण्ड के सबसे सुन्दर ग्रह पर सुन्दर तरीके से रहने की युक्ति बताता है।

आपका होना किसी के कष्ट का कारण न बने और किसी के कष्ट निवारण के लिये आपका होना काम आ जाये, यही है श्री जम्भेश्वर-दर्शन का मूल। परहित के यज्ञ में अपने जीवन की आहुति देने वालों का समूह बिश्नोई समाज –

अहिंसा परमो धर्मो अहिंसा परमं सुखम्।
अहिंसा धर्मशास्त्रेषु सर्वेषु परम पदम्।। (महाभारत)

'अहिंसा परम धर्म पर। अहिंसा परम सुख है, सम्पूर्ण धर्म शास्त्रों में अहिंसा को परमपद बताया गया है।

विद्यालयों के पाठ्यक्रम की पुस्तकों में यह पढ़ाया जाता है कि आदि मानव वनों में रहता था और अग्नि का आविष्कार होने से पहले वह जानवरों को मारकर उनका कच्चा मांस खाता था, एक दिन अचानक पत्थर आदि के घर्षण से अग्नि उत्पन्न हुई और वह मांस पका कर खाने लगा। इसके लिये पाषाण आदि युगों का निर्धारण भी इतिहासकारों ने किया है। हालांकि हिन्दू धर्म शास्त्र इन मनोकल्पित बातों को नहीं मानते। वैदिक संस्कृति डार्विन के विकासवाद, मछली या बन्दर से मनुष्य की उत्पत्ति तथा मनुष्य के पूर्वजों के मांस भक्षण की बात सिरे से नकारती है। मनुष्य एक पूर्ण विकसित जाति है और आदि से लेकर अन्त तक वह एक जैसी ही रहती है। इस पृथ्वी पर जब मनुष्य की उत्पत्ति हुई तब वह वैदिक ऋषि था, वह प्रारम्भ से ही सदाचारी और धर्मसम्मत जीवन जीने वाला व्यक्तित्व था। उसके जन्म के साथ ही इस पृथ्वी पर प्रत्येक प्रकार के कन्द, मूल, फल, अन्न आदि की उत्पत्ति हो चुकी थी और इनके प्रयोग का भी उसे नैसर्गिक ज्ञान था।

मनुष्य के जीवन में हिंसा का प्रवेश कब और कैसे हुआ, यह अज्ञात है और बाद में यह इतना व्यापक हो गया कि इसने धर्म को भी अपनी चपेट में ले लिया तथा यज्ञादि में पशुबलि का प्रचलन हो गया। जब भारतवर्ष में अग्निश्वरवादी मतों का प्रादुर्भाव हुआ तो हिंसा का भाव तो कम हुआ पर वैदिक धर्म लुप्तप्राय हो गया। भक्तिकाल के संतों ने नामजप पर अधिक जोर दिया पर गुरु जाम्भोजी ने नामजप के साथ वैदिक परम्परा को पुनः प्रतिष्ठित किया। शास्त्र वचन के अनुसार यज्ञ करने से देवता तृप्त होते हैं जो कि यज्ञकर्ता के सुख-समृद्धि के कारक हैं, आज का विज्ञान कहता है कि यज्ञ करने से प्रकृति के पांचों तत्व-अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी पुष्ट होते हैं, जो कि देवता ही है। प्रकृति के तुष्ट होने पर उसका पुरुष परमात्मा संतुष्ट होता है जो यज्ञकर्ता के लौकिक सुख के साथ उसका परलोक भी संवारता है। यज्ञकर्ता सदा ही अग्निशिखा की भांति उच्च नैतिक मूल्यों व प्रगतिशील विचारों का स्वामी तथा तेजस्वी होता है, उसके वर्तमान क्रिया-कलापों तथा भविष्य की योजनाओं में सुख, शान्ति व आनन्द से परिपूर्ण विश्व की

संकल्पता रहती है, जो कि हिंसादि दोषों से दूर एक संवेदनशील वातावरण में रहना पसन्द करता है। ऐसा ही है गुरु जाम्भोजी का एक पूर्ण बिश्नोई।

लाखों रुपये खर्च करके एवं तमाम व्यवस्था करके किसी नगर में 51 या 108 या इससे कम-ज्यादा कुण्डियों का यज्ञ किया जाता है, जो विश्व शान्ति के निमित्त होता है। सौभाग्य से किसी स्थान को यह अवसर वर्षों बाद मिलता है। अगर भारत के सभी बिश्नोई घरों की गणना करें तो हजारों कुण्डीय यज्ञ यह समाज नित्यप्रति कर रहा है। यह है बिश्नोई का हिंसक वृत्तियों के निवारणार्थ वैश्विक शान्ति का अद्वितीय सद्प्रयास।

प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखने का भगवान श्री जाम्भोजी का उपदेश उनको मानने वालों ने ऐसा घोटकर पी लिया कि सम्प्रदाय के पांच सौ वर्षों के इतिहास में अनेकों बार ऐसे अवसर उपस्थित हुए जब इन लोगों ने परहित के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा दी। इन लोगों की विलक्षण बात यह है कि इनका परहित का क्षेत्र बहुत व्यापक है, जिसमें मूक प्राणी और वृक्ष भी शामिल है। जिनका दर्द इन्होंने समझा और उन्हें अपने परिवार का सदस्य मानकर प्यार दिया। चराचर प्राणियों को अभयदान देना ही तो धर्म का उत्तम लक्षण है।

सर्व भूतेषु यः सम्यत्र ददात्यभयदक्षिणाम्।
हिंसा दोष विमुक्तात्मा स वै धर्मेण पुज्यते।।
सर्वभूतानुकम्पी यः सर्वभूतार्यव व्रत।
सर्वभूतात्म भूतश्च स वै धर्मेण युज्यते।। (महा.)

- ''जो हिंसा-दोष से मुक्त होकर सम्पूर्ण प्राणियों को अभयदान कर देता है, उसी को धर्म का फल प्राप्त होता है। जो सम्पूर्ण प्राणियों पर दया करता है, सबके साथ सरलता का बर्ताव करता है और समस्त भूतों को आत्मभाव से देखता है, वही धर्म के फल से युक्त होता है।''

इस शास्त्र वचन के अनुसार अगर यही धर्म का फल है तो बिश्नोई इस कसौटी पर पूरा खरा उतरता है। इस समाज के पास इस धर्म को पुष्ट करने की लम्बी परम्परा है। यह विक्रम संवत् 1650 से शुरू होता है। कूदसूं, तिलवासणी, रामासड़ी, पोलावास, कापड़हेड़ा, जाम्भोलाव और खेजड़ली का महाबलिदान और इसके अतिरिक्त ज्ञात-अज्ञात रूप में सैंकड़ों बार बिश्नोई जनों ने स्वेच्छा से अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। किसी वन्य प्राणी और वृक्षों की रक्षा के लिये मरना तो बिश्नोई का स्वभाव है ही इसके अलावा किसी प्रकार का अन्याय या झगड़े-फसाद को बन्द करवाने के लिये भी इन्होंने सहर्ष बलिदान दिया है। हिंसा की आग को बुझाने के लिये इन्होंने अपना शरीर पानी बनाकर बहा दिया। जरा कल्पना करें खेजड़ली महाबलिदान की जब कुल्हाड़ी चलने वाले हाथ थक गये पर ये लोग नहीं

थके। कहीं किसी से कोई शिकायत, द्वेष, रोष या प्रतिहिंसा की भावना इनके मन में नहीं रही। किसी ने हाथ उठाकर जरा रूकने के लिये भी नहीं कहा, अन्यथा तो हजारों लोगों के सामने कितने सैनिक रहे होंगे। ऐसी भयानक हिंसा के सामने ऐसे शान्तिपूर्वक अहिंसात्मक सत्याग्रह का उदाहरण विश्व इतिहास में अन्यत्र मिलना असम्भव है। एक वृक्ष के लिये सिर कटाने के बाद भी बिश्नोई सोचता है कि इस वृक्ष के उपकार के बदले में मैं इसे कुछ और भी दूं, क्योंकि सिर की कीमत पर इसे बचाने का सौदा तो सस्ता है। (सिर साटै रूंख रहे तो भी सस्तो जाण)।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति से शौर्य चक्र और भारत सरकार व राज्य सरकारों से विभिन्न पर्यावरण पुरस्कार वर्तमान समय में अहिंसा के पुजारी इन विलक्षण सत्याग्रहियों को मिल चुके हैं। बीसवीं सदी में महात्मा गांधी ने विश्व को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया। पराई पीर जानने वाले बापू के प्यारे 'वैष्णव जन' बिश्नोई के सिवाय और कौन है ? दुर्भाग्य से प्रचार के अभाव के कारण अपने पूरे जीवन में महात्मा गांधी बिश्नोई परम्परा और साहित्य के सम्पर्क में नहीं आये वरना आज से सौ साल पहले इस अद्‌भुत बिश्नोई जीवन पद्धति का परिचय विश्व को मिल जाता और निश्चय ही बापू को गर्व होता कि आज के जिस अहिंसा, सत्य, करूणा, सादगी और पवित्रता जैसे सिद्धान्तो की रक्षा और प्रचार के लिए अपना जीवन होम कर रहे हैं। इसका उपदेश तो पन्द्रवीं शताब्दी में भगवान श्री जाम्भोजी ने इस भारत भूमि पर ही दिया था और श्री जाम्भोजी के अनुयायियो ने ठीक बापू की तरह इन आदर्शों का प्रयोग भी अपने जीवन में करके दिखलाया है। काश! बापू यह जानते तो टॉलस्टॉय या किसी अन्य पश्चिमी विभूति से पहले बापू के आदर्श श्री जाम्भोजी होते।

'न हिंस्यात् सर्वभूतानि- किसी भी प्राणी की हिंसा न करें।'

सन्तस्त एवं ये लोके पर दुःख विदारणाः।
आर्ता नामार्ति नाशार्थ प्राणा येषां तृणोपमा।। (महा०)

संसार में वे ही संत है, जो दूसरों के दुःखों का नाश करते हैं तथा पीड़ित जीवों की पीड़ा दूर करने के लिए जिन्होंने अपने प्राणों को तिनके के समान न्यौछावर कर दिया है।

इस कसौटी पर बिश्नोई पूरा खरा उतरता है। जाम्भाणी साहित्य में अनेक बार कवियों ने बिश्नोई को साधु कहकर पुकारा भी है।

हिंसक व्यक्ति के शरीर से कुछ ऐसी तंरगों का प्रवाह निकलता है, जिसे हालांकि इन्सान कम ही अनुभव कर पाता है पर बेजुबान मासूम वन्यजीव भली-भांति महसूस करते है और मासांहारी शिकारी प्रवृति के व्यक्ति की गन्ध सुंघकर दूर भाग जाते है, जबकि वही वन्य जीव बिश्नोइयों के खेतों में उनके बच्चों के साथ खेलते है।

जाम्भाणी साहित्य में बाईस राजाओं के गुरु जाम्भोजी के सम्पर्क में आने का वर्णन मिलता है। दिल्ली के सिकन्दर लोदी का प्रसंग हो, पंजाब के मलेर कोटला या कर्नाटक के नवाब का प्रसंग हो अथवा तो गुरु जाम्भोजी के पास आने वाले हर शासक को, उनका उपदेश कहता कि वे अपने राज्य में जीव हिंसा बन्द करे। दुर्भाग्य से भारतीय इतिहास में इन प्रसंगों का वर्णन नहीं मिलता। भारत का इतिहास सैंकड़ो वर्षों की परतन्त्रता में मनमाफिक और दुराग्रह पूर्वक लिखा गया तो ये घटनाएं भी इसकी भेंट चढ़ गई।

हिंसा प्रिय लोगों के समझाते हुए गुरु जाम्भोजी ने कहा कि तुम असहाय जीवों के साथ जोर जबरदस्ती करोगे तो इसका फल तुम्हें अन्त समय में भुगतना पड़ेगा। निर्बल प्राणी पर बलप्रयोग करना अन्याय है। हमारे प्रति अपराध करने वाले को भी हमें क्षमा कर देना चाहिए। दण्ड देने की सामर्थ्य रहते हुए भी क्षमा करना क्षमा रूपी तपस्या है। हमारे प्रति किए गए बुरे बर्ताब को और कहे गये अपशब्दों को अनदेखा और अनसुना कर देना चाहिए–

–'देख्या अदेख्या सुण्या असुण्या, क्षमा रूप तप कीजै'– (सबद 103)

अगर कोई हिंसक बनकर क्रोध की अग्नि भड़काकर आए तो आप पानी बन जाइये। आपके ऐसा करने पर वह शान्त हो जाएगा–

'जे कोई आवै हो–हो कर, आप जै हुइये पाणी'– (सबद 98)

दूसरा क्या है, क्या कर या कह रहा है, यह देखना हमारा काम नहीं है।

हमारा अन्त:करण राग, द्वेष, काम–क्रोधादि विकारों से रहित हो। हमारे सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक प्राणी शान्ति, सुख और आनन्द का अनुभव करे। ऐसे निर्मल अन्त:करण का वर्णन सबदवाणी में सर्वत्र मिलता है। ''आत्म शुद्धि के बिना अहिंसा धर्म का पालन सर्वथा असम्भव है– महात्मा गांधी।'' विकारी मनुष्य ना तो जीव मात्र के साथ प्रेम रख सकता है, न अहिंसा धर्म का पालन कर सकता है और न ही परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है।

प्राणी मार्ग के प्रति प्रेम और दया रखने के विलक्षण उदाहरण संसार में बिश्नोई समाज के अतिरिक्त मिलना दुर्लभ है। जब किसी बिश्नोई से पूछा जाता है कि आप वृक्षों ओर जीवों की रक्षार्थ प्राण देने के लिए क्यों तत्पर हो जाते हो? तो उनके मुहं से निकलता है–''यह हमारा धर्म है।'' अहिंसा को धर्म कहना और उसे प्रयोग में करके दिखाना, यह बहुत बड़ी बात है। अहिंसा की सामान्य परिभाषा में मन, वचन और कर्म से किसी को पीड़ा नहीं पहुँचाना है, पर बिश्नोई की अहिंसा की विशेष परिभाषा है– किसी पीड़ित जीव के प्रति करूणा का ऐसा सागर उमड़े कि उसमें स्वयं के अस्तित्व को ही डूबो दे।

आज का इन्सान घर के मुख्यद्वार से शयनकक्ष तक तीन ताले लगाने के

बाद भी निर्भयता से नहीं सो पाता। परिवार में ही अविश्वास और सन्देह के हजारों कारण पैदा हो जाते है। अपने पास सब कुछ होते हुए भी वह इस जीवन से उब जाता है और जीवन का घात कर लेता है, उसको ऐसा करने के लिए मजबूर करने वाले कारक और उसका परिणाम आत्महत्या, हिंसा की पराकाष्ठा है, यह किसी दो देशों के बीच छिड़े युद्ध में मारे गये लाखों लोगों की हिंसा से भी क्रूर है, क्योंकि युद्ध की हिंसा नियोजित होती है, जबकि वह व्यक्ति ऐसी जगह (घर में) बेमौत मारा जाता है, जहां उसे सुखी जीवन जीने का मौलिक अधिकार है। विश्व के हर हिस्से में ऐसे बेमौत मरने वालों की संख्या नित्यप्रति बढ़ती जा रही है। जरा कल्पना करें उस वैदिक ऋषि की जो भयानक बियावान जंगल में एक वृक्ष के नीचे निवास करता है या अधिक से अधिक उसके पास एक झोपड़ी है, फिर भी वह चैन से रहता है। उसके संसर्ग में रहने वाले हिंसक प्राणी भी हिंसा भूल जाते है। हिरण आदि वन्यजीव अपने सींगों से उसकी पीठ खुजलाते हैं, चिड़िया उसके कंधे पर बैठ जाती है और मोर उसके हाथ से दाना चुगता है। किसी महानगर की गगनचुम्बी अटालिकाओं में रहने वालों को ये बातें कपोल कल्पित लगे, पर ये बातें झूठी नहीं है, यह सब सत्य है और इससे बड़ा सत्य यह भी है कि वह वैदिक ऋषि आज भी जीवित है। सुदूर किसी बिश्नोई क्षेत्र की ढ़ाणी में गुरु जाम्भोजी का बिश्नोई आज भी उस वैदिक ऋषि की तरह जीवन जी रहा है। सस्वर सबदवाणी का पाठ करने पर ऐसा लगता है कि वह वेदमंत्रों का उच्चारण कर रहा है। विश्व का सर्वोत्तम, वैदिक परम्परा का अवशेष है यह बिश्नोई धर्म।

मनुष्य हिसंक कब बन जाता है? जब वह अतृप्त, अंसतुष्ट और पराजित होता है। हिंसक मनुष्य विवेक शून्य होता है और ठीक जानवर की तरह व्यवहार करता है। हिंसक मनुष्य क्रूर, कायर, कपटी, विध्वंसक और पलायनवादी होता है, वह कभी रचनात्मक कार्य नहीं कर सकता, वह सुन्दर संसार के सृजन का सहयोगी नहीं हो सकता। हिंसा का एक बड़ा कारण है मनुष्य के अहं को ठेस पहुंचाना। संसार में अधिकांश युद्ध और विध्वंस इसी कारण से हुए है। ऐसी परिस्थिति से गुजरे आदमी को जब समझाने का प्रयास किया जाता है तब वह बिफर पड़ता है और कहता है कि 'मैं मरा नहीं हूं जो चुपचाप यह देखता-सुनता रहूँ।' अपनी अहं तुष्टि के लिए इन्सान किसी भी हद तक जा सकता है। यहां पर गुरु जाम्भोजी अहं को मारने की बात कहते हैं-

'जीवत मरो रे जीवत मरो जिन जीवन की विध वाणी'

यहां शरीर की मौत की बात नहीं है, जो जीवन जीने की विधि को जान लेता है, वही ऐसी मौत मरता है।

'जाकै बहुती नवणी, बहुती खिंवणी, बहुती क्रिया समाणी

जाकी तो निज निर्मल काया, जोय-जोय देखो लेयदियो असमाणी- (98)'

जो अत्यन्त विनम्र है, अत्यन्त क्षमाशील है और प्रत्येक परिस्थिति में समभाव से रहता है, वही मोक्षलाभ प्राप्त करता है।'

यहां यह भ्रम ना रहे कि यहाँ कायरता की झलक मिलती है क्योंकि अहिंसक आदमी से बड़ा कोई शूरवीर हो ही नहीं सकता, कायरों के झुण्ड में अहिंसा जीवित नहीं रह सकती। परहित के लिए गुरु जाम्भोजी तुरंत प्राण अर्पण के लिए भी कहते है-

'खेत मुक्त ले किसना अर्थे, जे कंध हरे तो हरियो'- (सबद 34)

अतृप्ति की कुण्ठा से हिंसक भाव पैदा होता है, इसलिए श्री गुरु जाम्भोजी ने मनुष्य को संयमी, संतोषी, सदाचारी बनने और दुनियां के गाजे-बाजों की चकाचौंध में न पड़कर सादगी से भरा जीवन जीने के लिये कहते हैं और ऐसे व्यक्ति के लिये स्वयं के द्वारा हिंसा करना तो दूर रहा, वह जिस क्षेत्र से गुजरेगा वहां भी हिंसा के कीटाणु खत्म हो जाएंगे।

अहिंसा प्रिय बिश्नोई समाज का निर्माण श्री गुरु जाम्भोजी की विश्व को बहुत बड़ी देन है। जब किसी बिश्नोई का जिक्र आता है तो यह निश्चय समझा जाता है कि वह जीव हिंसा और मांस भक्षण नहीं करेगा तथा आखिरी दम तक वृक्षों और वन्य जीवों का रक्षण करेगा, यह समाज की एक बड़ी उपलब्धि है।

महात्मा गांधी कहते थे कि - 'जहां अहिंसा है, वहीं ईश्वर है।' पर यह कहने में भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि - 'जहां सच्चा बिश्नोई है, वहीं अहिंसा है और वहीं ईश्वर है।''

अहिंसार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्।

य:स्याद हिंसा सम्पृक्त: स धर्म इति निश्चय:।। (महाभारत)

- 'जो अहिंसा से युक्त है, वही धर्म है, ऐसा धर्मात्माओं का निश्चय है।'

ऐसे अद्वितीय अहिंसा से युक्त बिश्नोई समाज में जन्म पाना निश्चय ही परम सौभाग्य का कारण है।

❍ **विनोद जम्भदास कड़वासरा**
हिम्मतपुरा, तह. अबोहर - 152116
जिला फाजिल्का

गुरू जांभोजी का अहिंसा व पर्यावरण विषयक चिंतनअ वर्तमान कानूनी व्यवस्था

किसी भी देश, समाज, संस्था या संगठन को सुचारु रुप से चलाने हेतु कुछ कायदे कानून बनाये जाते हैं जिसे आचार संहिता, अधिनियम, नियम एंव प्रवाधान कहा जाता हैं ताकि शासन को दुरुस्त रखने हेतु अच्छी प्रशासनिक व्यवस्था कायम की जा सके। ठीक इसी प्रकार भारत सरकार एंव प्रांतीय सरकारों ने वनों, पशु पक्षियों तथा पर्यावरण की रक्षा हेतु संविधान, अधिनियम व नियम बनायें हैं जिनके द्वारा पेड-पौधो, पशु-पक्षियों तथा पर्यावरण के विरुद्ध किये गये कृत्य को अपराध की श्रेणी में माना गया हैं तथा ऐसा करने पर अपराधी को सजा एंव जुर्माना या दोनों हो सकतें हैं । अत: मनुष्य मात्र का कर्तव्य यही हैं कि धर्म के रास्ते पर चलते हुए पर्यावरण के प्रति सदाचारी हो तथा सत्य, अहिंसा, तप, दया व दान का पालन करते हुए पर्यावरण के प्रति माता पिता व गुरुजनो जैसा सम्मान करें क्योंकि पंच तत्वों से निर्मित यह सृष्टि हमारे जीवन का आधार हैं, जो पर्यावरण की सुरक्षा से और अधिक सुखदायी एंव स्वस्थ रहेगी ।

पर्यावरण, पेड़-पौधों, जीव जन्तुओं व वन्य जीवों की सुरक्षा हेतु केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों ने विभिन्न कानून बनाए हैं जिसके तहत सरकारी स्तर पर सर्वप्रथम प्रयास के अन्तर्गत ब्रिटिश इंडिया काल में सन् 1865 में भारतीय वन अधिनियम लागू किया गया जिसके तहत वृक्षों की रक्षा, आग की रोकथाम तथा वन्य क्षेत्रों में खेती एवं चारागाह की मनाही की गई । उसके बाद 1878 में इस अधिनियम का क्षेत्रीय विस्तार करते हुए वनों को रिजर्व व प्रोटेक्टिव क्षेत्र घोषित किया गया । भारतीय वन अधिनियम 1927 के लागू होने से पहले इस संबंध में कई और अधिनियम लाए गए । 1927 के अधिनियम के अन्तर्गत वनों से संबंधित मामलों को केन्द्रीय विषय सूची में डाला गया तथा पुराने कानूनों में सुधार करते हुये इसे और अधिक सशक्त बनाया गया । इसके उपरांत वन संरक्षण अधिनियम 1980, वन संरक्षण नियम 1995 व 2003, हरियाणा वन नीति 2006, हरियाणा वन विकास अधिनियम 1983, वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972, वन्य जीव संरक्षण संशोधन अधिनियम 2002, वन्य जीव एंव पक्षी संरक्षण अधिनियम 1912, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986, मोटर व्हीकल अधिनियम 1988 बनायें गए हैं जिसके अन्तर्गत वन्य जीवों, पशु-पक्षियों एंव पर्यावरण की रक्षा करने हेतु वनों को काटना, जलाना, पेड़-पौधो को उखाड़ना, रिजर्व वन क्षेत्री मनाहि वाले स्थानों पर बीना अनुमति के अतिक्रमण करना, शिकार करना, मछली पकड़ना, पानी को दूषित या जहरीला करना, जानवरों को पकड़ने के लिए ट्रैप करनीचुंगा लगाना, वन्य भूमि का

दुरुप्रयोग करना, नाजायज कब्जा करना, भू-अभिलेखों में दर्ज वन्य क्षेत्र में बदलाव करना, वन्य प्राणियों को मारना, उनकी खाल व अन्य शारीरिक अंगो का आदान-प्रदान करना, तस्करी करना, पशुओं के साथ क्रूरता करना, उनकी क्षमता से अधिक भार लादना या काम लेना, पशुओं के रहने के स्थान अथवा उनको लाने ले जाने के स्थान में क्षमता से अधिक पशुओं को ठूंसना, पशुओं को भूखे प्यासे रखना, चिड़याघर में पशु-पक्षियों को तंग करना और अपनी आमदनी के लिए पशु-पक्षियों या जानवरों से मनोरंजन करवाना आदि कानूनन अपराध हैं । धुम्रपान निषेध नियम, चिड़ियाघर नीति, पॉलिथीन प्रयोग निषेध नियम तथा हरियाणा मयुन्सिपल अधिनियम एवं नियम बनाए गए हैं जिसके तहत वर्जित क्षेत्र में धुम्रपान करना, जीव-जन्तुओं को तंग करना या छेड़ना तथा नगरपालिका क्षेत्र में बिना लाईसैंसीअनुमति के मांस, मछली, अण्डे व शराब आदि का प्रयोग वर्जित हैं, उल्लघंना करने पर सजा या जुर्माना या दोनों का प्रावधान किया गया हैं । पशु-पक्षियों, वन्य प्राणियों व वृक्षों की लुप्त हो रही प्रजातियों की सुरक्षा हेतु भी कदम उठाये गये हैं । यहां तक कि 1950 में निर्मित भारतीय संविधान में संशोधन करते हुए भाग क के तहत अनुच्छेद 51 क को जोड़कर भारतीय नागरिकों को उनके कुछ मूल कर्तव्यों से अवगत कराते हुए लिखा गया हैं कि:-

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण , जिसके अन्तर्गत वन, झील एंव वन्य जीव आते हैं, की रक्षा करें, उसका संवर्धन करें तथा प्राणा मात्र के प्रति दयाभाव रखें ।

(झ) सार्वजनिक संपति को सुरक्षित रखें और हिसां से दूर रहें ।

स्टाकहोम 1972 व रियोडीजनैरो 1992 आदि की कान्फ्रेंस में वैश्विक स्तर पर किए गये विभिन्न प्रयासों में भी सरकार द्वारा भागीदारी की गई हैं तथा इस संबंध में अनेकों नियम व दिशा निर्देश जारी किये गये हैं परन्तु इनको लागू करने में जाने अनजाने जो ढिलाई बरती गई हैं उसके परिणाम स्वरुप अभी तक किए गये प्रयास ना काफी हैं ।

जिस प्रकार भारतीय संविधान के निर्माताओं ने संविधान निर्माण के समय विभिन्न देशों के संविधानों से अनुकूल व्यवस्थायें लेकर एक लोकप्रिय संविधान का निर्माण किया था ठीक इसी प्रकार संविधान एंव पर्यावरण जैसे अन्य अधिनियमों के प्रावधानों को बनाते समय भी विभिन्न समाजिक संगठनों एंव संस्थाओ के उच्च आदर्शो तथा अच्छी बातों को इन अधिनियमों एंव नियमों का हिस्सा बनाया गया हैं क्योंकि ये चीजें पुराने काल से हमारी सभ्यता एंव संस्कृति का हिस्सा रही हैं जो कि भारतीय परंपरा के महान साधु-सतों व गुरुजनो के माध्यम से हमें प्राप्त हुई थी ।

इन्ही महापुरुषों में से एक विष्णु अवतार श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी द्वारा दिये गये उपदेशों, नियमों एवं शब्दवाणी के उच्च आदर्शो को भी सम्मान देते हुए

पर्यावरण से संबंधित उपरोक्त कुछ अधिनियमों एंव नियमों में इनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष समावेश किया गया है क्योंकि भारत सरकार व राज्यों सरकारो ने जो कानून अभी केवल 100-150 साल पहले बनाये हैं उनमे शामिल सभी नीति-निदेर्शों को श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान जी ने आज से 500 वर्ष पूर्व ही अपनी अलौकिक दूरदर्शिता का परिचय देते हुए अपनी शब्द वाणी एंव उपदेशों का आधार बनाकर अपने अनुयाइयों एवं जन साधारण को पशु-पक्षियों, वन्य प्राणियों, पेड़-पौधो एवं पर्यावरण की रक्षा करने का उपदेश दे दिया था ।इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जो उपदेश गुरु महाराज ने आजसे 500 वर्ष पूर्व दिये थे उनमें से अधिकतर को आज कानून का रुप दे दिया गया हैं उदाहरण के तौर पर गुरु महाराज ने बिश्नोई धर्म की स्थापना के समय 'कलश पूजा मंत्र' देते हुए कहा था:-

ओ३म अकल रुप मनसा उपराजी, तामा पांच तत्व होय राजी ।
आकाश वायु तेज जल धरणी, तामा सकल सृष्टी की करणी ।

अर्थात् आकाश, वायु, अग्नि, जल और धरती इन्हीं पांच तत्वों से सम्पूर्ण सृष्टि की सरंचना हुई हैं अत: इनके साथ जैसा हम व्यवहार करेगें हमारी सृष्टि का स्वरुप भी वैसा ही होगा इसलिए हमें इनको शुद्ध रखना चाहिए ताकि कानून एंव धर्म की पालना की जा सके ।

ठीक इस प्रकार वनों एंव पेड-पौधों के संबध में बनाये गये कानूनो में दिये गये नीति-निदेर्शो के बारे में भी गुरु महाराज ने कहा था:- **हरे वृक्षो को नहीं काटना, लील ना लावै अंग-देखते दूर ही भागे, जीवदया पालनी- रुंख लीलो नहीं घावे, क्षमा दया हिरदे धरो-गुरु बतायो जाण, हरी कंकैड़ी मंडप मेंडी-जहां हमारा वासा ।**

वन्य प्राणियों एंव जीवों की रक्षा हेतु गुरुजी ने कहा कि- **मांस नहीं खाना, अमर रखावे थाठ-बेल वधिया ना करावे, जां जां दया न मया- तां तां विकरम कया(आचरण विरुद्ध), जां जां दया न धर्मू- तां तां विकरम कर्मू, चल फिर आवे सहज दुहावे (गाय)- जिसके गले करद क्यूं सारो, भाई नाऊ बलद पियारो-ताके गले करद क्यूं सारो, काहे काजे गऊ विणासो (हत्या करना)- कांही लियू रक्तू रुहियू, जीवां ऊपर जोर करिजे-अन्त काल होयसी भारुं, चल फिर आवे सहज दुहावे (गाय)- जिसकी खिर हलाली-तिलके गले करद क्यूं सारों, कारण खोटा करतब हिणां (हिंसक)-थारी खाली पड़ी नमाजू।**

पर्यावरण की रक्षा हेतु गुरु जी ने कहा- हर रोज हवन करना चाहिए, पाणी वाणी ईधनी- सब लिजे तुम छाण, एक मास सुतक-पांच ऋतुवन्ती न्यारो, पालो शील सन्तोष सुजाना (आंतरिक व बाहय पवित्रता), अमावस्या का व्रत रखना, करो रसोई हाथ सुं- आन सुं पल्ला ना लावै, जां जां पाले ना शिलू

(पवित्रता)- तां तां कर्म कुचिंलू ।

ध्वनि प्रदूषण से होने वालि हानि से बचाव हेतू भी गुरुजी ने कहा:-

दिल साबत हज काबो नेड़े-क्यूं उलबंग पुकारो, थे चढ चढ भीते मड़ी मसीते- क्यू उलबंग पुकारो, जे कोई आवे हो हो करके- आपणे होवे पाणी, निवणी खिवणी बिनती- सबसो आदर भाव।

गुरु जी के द्वारा दिये गये उपरोक्त पर्यावरण सरंक्षण के आदर्शो से प्रेरित होकर ही अमृता देवी सहित 363 लोगों ने पेड़ों की रक्षा हेतु अपने जीवन का बलिदान था । इनके अतिरिक्त जीवों व पेड़- पौधो की रक्षा हेतु करमा, गौरा, खीवणी, भक्त मोटो, नेतू नैण, बूचोजी, रामूजी, चिमनाराम, प्रतापराम, अर्जुनराम, चुनाराम, भीयाराम तथा बीरबल आदि ने अपने जीवन का बलिदान दिया । गुरु जी के द्वारा दिये गये उपदेशों की पालना में जहां सैकडों लोगों ने अपनी जान दी हैं वहीं हजारो लोग आज भी उपरोक्त कानूनो की रक्षा में लगे हुए हैं जो वास्तव में बधाई के पात्र हैं।

अत: जरुरत इस बात की हैं कि हर आम नागरिक अपने तुच्छ निजी स्वार्थो का त्याग करके यह समझें कि पशु-पक्षियों, वन्य प्राणियों एंव पेड़-पौधो का पर्यावरण को सुरक्षित रखने में कितना बड़ा योदगान हैं । अगर हम सभी मिलकर पशु-पक्षियों, वन्य प्राणियों एंव पेड़-पौधो की रक्षा करेगें तो निश्चित ही पर्यावरण शुद्ध होगा एंव हमारा जीवन स्वस्थ एंव खुशहाल बनेगा । जब भी कभी पशु-पक्षियों, वन्य प्राणियों एंव पेड़-पौधों पर होने वाले की भी अत्याचार को देखें तो हमें वन्य अधिकारियों अथवा वन्य जीव अधिकारीयों (वन्य जीव निरीक्षक-वन्य जीव रक्षक) या पुलिस(एस.एच.ओ) को तुरन्त शिकायत करनी चाहिए ताकि हम पशु-पक्षियों, वन्य प्राणियों एंव पेड़-पौधों की रक्षा करके अपने व आने वाले अपनों के लिए सुरक्षित एंव स्वस्थ जीवन का सपना साकार कर सकें ।

❍ आत्मा राम पूनिया, महासभा सदस्य एंव
कानूनी सलाहकार अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा प्रदेश
हरियाणा, कुरुक्षेत्र (9416173029)

Scientific Outlook Of Guru Jambheshwar Ji On The Evolution Of Universe

India has a rich tradition of epoch-making mentors (Guru), out of all such eminent mentors; Guru Jambheshwar Ji's name is taken with utmost respect and pride.

For the sake of real empowerment of human creed, the great sage Guru Jambhoji had given messages and preachings in the local dialect of Rajasthan by thoroughly compiling all the four Vedas, six sashtras (शास्त्र), eighteen puran (पुराण), holy Gita, Bhagwat, The Ramayana, The Mahabharata, holy Kuran (कुरान), Holy Bible and all such precious scriptures. Like He mentioned in his shabad no. 6 ''भवन–भवन म्हे एका जोती। चुन–चुन लीया रतना मोती.. .....मिसलमानी।।'''' i.e., He selected precious pearls of knowledge which are all these holy scriptures, and gave us the Kohinoor (most precious) of his preachings.

Those messages and preachings were called "Shabad"; out of those so many valuable "Shabad", only 120 were preserved and compiled into a book and this treasure is called "शब्दवाणी" Shabadvaani. Later, his messages or preachings were compiled to form 29 amendments or rules called "29 Neeyam". Miraculous incidents of Jambhoji's life prove His transcendental (supernatural) nature.

Guru Jambheshwar Ji's preaching presented true picture of Life's core realities. In his preachings, Jambhoji had attracted lot of attention at different points about the real objective of human existence. To satisfy the curiosity of his followers, Jambhoji had also thrown light on this mysterious topic of origin and evolution of Universe, Sun, Moon, solar system, constellation, dark matter and many more. Jambhoji's priceless preachings are based on the firm ground of genuine logic, reasoning, rationality, showing Jambhoji's scientific outlook towards everything, as we all know science is subject based on pure logic and reasoning. And the scientific perspective of Jambhoji is proved every time a new discovery is made, because he had already taught about those discoveries hundreds of years ago.

And what is more surprising is that Jambhoji had never

gone to any school, college, or any institution, as Jambhoji told in his Shabad no. 6 म्हे सरै ना बैठा सीख ना पूछी, निरत सुरत सब जाणी''.....

In Shabad no. 4 of Shabadvaani, Jambhoji has told us about the ETERNITY of Universe and Being-"जद पवन ना..... तद होता एक निरंजण संभू, कै होता धंधूकारु बात कदो की पूछै लोई, जुग छतीस बिचारूँ . म्हे तद पण होता अब पण आछै बलि बलि होयसा, कह कद कद का करु विचारूं।। " That is, when air, water, space, earth, sun, moon, etc, nothing was there, no sign of universe was there; at that time, Sovereign God and Dark matter (Dhandhookar) existed.Guru Jambheshwar Ji pointed towards the Eternity of His Being by saying "I am omnipresent, I was there before the present universe, I am here at present and will always remain even after these transitory Universes fade away. Only god has absolute sovereignty over all creations and creatures".

Jambhoji says, "I am beyond the limits of time, existence, ages, universe, holocaust, I was, I am and I will remain. Always".

Jambhoji had discussed the ORIGIN of this universe in Shabad no. 107 "ओ३म् आपौ आप उपनो स्वयंभू, निरह निरंजण धंधूकारो..... .....लेह विचारूँ।। That is, before creating this universe, the imperceptible mysterious, invisible Supreme Being(God) created himself. At that time, total darkness was spreaded everywhere, everything was covered with Darkmatter (dhandhookar). There was no one to create Him, no sun, no moon, no air, no water, no light, no time, no heaven, no hell, no truth, no virtue, no maundy, nothing was there, first He created Himself, then the whole universe.

Again in Shabad no. 95 Jambhoji had discussed the important issue of the Origin of Universe; "ओउम् सहंस नांव सांई..... ..... पावो मोख दवारा।। Here also, Guruji said nobody created Me, I made myself, and I don't have parents. At that time darkness was spreaded everywhere. After creating myself, I made Vishnu, Brahma, and Shiv, gave them all the relevant powers and created the Sun and the Moon as witness. Then, I created the whole Universe. In this way the universe we live is created.

While in Shabad no. 94, Jambhoji describes a way about the EVOLUTION of this universe similar to the modern scientists describe in the most established Big Bang Theory. "आद शब्द अनाहद

बांणी। चवदै भवण रहण छल पाणी। जिहिं पाणी से इंड उपना। उपना ब्रह्मा इन्द्र मुरारी।" In this Shabad, Jambhoji uses a word 'ind' (इंड) for Nebula or ball of extreme energies, which exploded, and spread in all directions. From that explosion our solar system, stars, planets, constellation etc. everything came into existence. From that nebula, divine idols Vishnu, Brahma, Shiv were all evolvedè made.

In the Shabad 90, Jambhoji describes astronomy of our universe in a very interesting way. In it Jambhoji tells us about the VASTNESS of Universe and Infinity. " उरथक चंदा, निरधक सूरूँ। नव लख तारा नेड़ा न दूरूं। नव लख चंदा नव लख सूरूं। नव लख धूंधू कारूँ। तांह परेरै तेपण होता। तिहंका करूं बिचारूं।।

That is, the moon is very near to the earth, while the sun is very far away from earth. Billions of stars are not near rather very far away. There are billions of other stars like our sun, billions of moon, billions of other solar systems like ours, billions of darkmatter and all these heavenly bodies are very far away from us, it's very difficult to find the end point of this extremely vast unending universe. These heavenly bodies are contained in many huge universes (शून्य) and all these universes are contained in the infinity(महा शून्य), we can not discuss all these infinite pervasive heavenly bodies here. Vastness of this universe is beyond our imagination.

Evolution of universe and evolution of life is also described in Kalash-Puja Mantar (कलश पूजा मंत्र). In it, Jambhoji described that how he created this universe by his spontaneous will. Also Jambhoji taught about the five basic elements of life, i.e. Air, Water, Space, Fire, Earth, nine planets in our solar system, seven continents on our e**a**rth. In Kalash- Puja Mantra 'Age of Universe' is also described. Science depicted age of universe to be 13.7 billion years in 21st century which was already taught by Jambhoji in 15th century itself.

In general, there are 2 views on Origin & Evolution of Universe- Theism (Aastik) & Atheism (Naastik).

Theists attribute the origin of the universe to some sort of transcendent, intelligent Designer. Atheists envision a natural, undirected process by which universes spring into existence spontaneously. Prior to the 20th century most atheists believed the universe was eternal. This changed however as

discoveries throughout the 20th Century rendered that view untenable. Newton's theory of gravity (which has been thoroughly validated by extensive experimental confirmation) and Hubble's astronomical observations preclude an eternal universe. We now know beyond a reasonable doubt that the universe began at some point in the finite past. Now we understand that there are only two legitimate options for the origin of the universe:

(1) Someone made the universe (Intelligent Design), or

(2) the universe made itself (Random Chance).

The third option, the universe has always been here, is no longer a feasible alternative — it contradicts empirical science. No other scientifically plausible theories for the origin of the universe have ever been proposed.

The implications of various 20th century discoveries have put atheists in an awkward position. Logic now requires that they identify an uncontrolled mechanism by which the universe could have initiated, designed, created and developed itself without an Intelligent Director. Otherwise, INTELLECTUAL HONESTY requires the necessity of a CREATOR GOD.

So, in effort to propose an atheistic mechanism for the origin of universe, a scientist named Darwin proposed a theory. According to this Darwinian Theory, evolution seeks to explain the origin of complex life forms from their supposed simpler ancestors. And in this process of evolution, monkeys èchimpanzees supposedly evolved into Humans. But why this evolution stopped up to Humans only? Why aren't we evolved into more complex molecules after humans? This theory has no answer to these questions and hence its impact was very less which again establish Jambhoji's viewpoint on origin of universe.

There are three more theories put by scientists to explain the Origin and Evolution of the universe:

1. The Big Bang Theory
2. The Steady State Theory
3. The Pulsating Theory

1. The Big Bang Theory: Le Maitre and Gammow proposed this theory.

According to this theory, about 11 to 15 billion years ago, all of the matter and energy in the Universe was concentrated in an extremely dense and hot (~10^{12}K) fireball which Jambhoji already described as 'ind' in shabad no. 94. At this moment, matter, energy, space and time did not exist. Then suddenly, the Universe began to expand at an incredible rate and matter, energy, space and time came into being (the **Big Bang**). As the Universe expanded, matter began to coalesce into gas clouds, and then stars, planets and galaxies. Our solar system formed about 5 billion years ago when the Universe was about 65% of its present size. Today, the Universe continues to expand.

Lemaitre's Big-Bang model did not fit well with the available time scales of the 1930s.Nor did he provide enough mathematical detail to attract serious cosmologists. Its importance today is due more to the revival and revision it received at the hands of George Gamow and Ralph Alpher in 1948. The theory is now referred to as the Big Bang, a term first coined by Sir Fred Hoyle during a British Broadcasting Corporation (BBC) radio broadcast in 1950.Interestingly, there really wasn't any sort of explosion (or bang) as the name suggests, but rather the rapid expansion of space and time. It is like blowing up a balloon, as you blow air in, the exterior of the balloon expands outward.

In recent past, NASA has developed a supercomputer named "Pleiades". By running "Bolshoi" simulation code on Pleiades, researchers hope to explain how galaxies & other very large structures in the universe have changed since the Big Bang 13.7 billion years ago. The "Bolshoi" code took 18 days & millions of hours of computer time split up among more than 160000 processors to finish running on Pleiades, which is the 7th most powerful supercomputer in the world.

2. Steady State Theory:

Bondi, Gold and Fred Hoyle developed this theory. According to the theory, the number of galaxies in the observable universe is constant and new galaxies are continuously being created out of empty space, which fill up the gaps caused by those galaxies, which have crossed the boundary of the observable universe. As a result of it, the overall

size of mass of the observable universe remains constant. Thus a steady state of the universe is not disturbed at all.

3. Pulsating Theory: According to this theory, the universe is supposed to be expanding and contracting alternately i.e. pulsating. At present, the universe is expanding.

According to pulsating theory, it is possible that at a certain time, the expansion of the universe may be stopped by the gravitational pull and they may contract again. After it has been contracted to a certain size, explosion again occurs and the universe will start expanding. The alternate expansion and contraction of the universe give rise to pulsating universe.

Why do Most Scientists Accept the Big Bang Theory?

The acceptance of this theory by the scientific community is based on a number of observations.

1. If the Big Bang did occur, all of the objects within the Universe should be moving away from each other. In 1929, Edwin Hubble documented that the galaxies in our Universe are indeed moving away from each other. This universal expansion was predicted from general relativity by Alexander Friedmann in 1922 and Georges Lemaître in 1927.

2. The Big Bang should have left an "afterglow" from the explosion. In 1964 Arno Penzias and Robert Wilson accidentally discovered the cosmic background radiation (CMB), the so-called "afterglow" after the Big Bang explosion, while conducting diagnostic observations using a new microwave receiver owned by Bell Laboratories. Penzias and Wilson were awarded a Nobel Prize for their discovery.

3. If the Universe began with a Big Bang, extreme temperatures should have caused 25 percent of the mass of the Universe to become helium. This is exactly what is observed.

4. Matter in the Universe should be distributed homogeneously. Astronomical observations from the **Hubble Space Telescope** do indicate that matter in the Universe generally has a homogeneous distribution.

These are sometimes called *"the four pillars of the Big Bang theory"*.

Despite these evidences, all these theories are unable to answer lots of questions, because they do not follow established natural laws. For example, (i) The Law of Causality

(observed Effects require a related Cause); (ii) Law of Conservation of Angular Momentum; (iii) Laws of Thermodynamics, etc. Also unable to answer lots of other questions related to cosmological, chemical, stellar, planetary, biological causation, order & design. And in the end all the scientists believe in one common law,i.e., EXISTENCE OF ONE INTELLIGENT DESIGNER, that is, "*God", "Savambhoo", "Vishnu", "Paramsatta", "Parmeshwar", "Paarbraham", "Narayan", "Kevalyagyani", "Bismilla", "Krishna*".

The Big Bang Theory provided an atheistic explanation for the origin of the universe, but it's obvious simplicity was subject to multiple attacks. As a result, the original theory is no longer the dominant scientific explanation for the atheistic origin of the universe. While the original Big Bang Theory is now "dead," from its ashes have emerged the various Inflationary Universe Theories (IUTs). Starting with Alan Guth in the late 1990's (The Inflationary Universe: The Quest for a New Theory of Cosmic Origins), the scientific community has now proposed roughly 50 different IUT variants. It seems the only way to get realistic calculations to match an IUT model is to make assumptions that are poorly justified, hence, all scientists, even atheist end up with one common conclusion that the universe is designed intellectually by God, i.e., after drooling here & there they accepted what *Jambhoji told us almost 600 years ago*.

However, everyone was not happy with the idea that the universe had a beginning. For example, Aristotle, the most famous of the Greek philosophers, believed the universe had existed for ever. Something eternal is more perfect than something created. Eternity of universe is also discussed in 'Shabadvaani' so many times by Jambhoji.

Is there any scientific proof of God?

Before we can discuss the existence of scientific proof of God, we need to identify what we mean by proof. Also, to know what type of evidence supporting the existence of God would be considered by science, we also need to know which definition of science applies.

The definition of science has changed within the last century from an overall search for truth to a more limited scope

of natural explanations of natural processes. Using the current narrow scope definition, there is not any scientific proof of God. The truth or untruth of this statement is not based upon evidence or lack of evidence, but by definition alone. Even though there is extensive, solid evidence for God's existence, none of that evidence would be admissible in the science court of law using the current definition.

Scientific Proof of God – The Evidence

- First, the non-existence of God cannot be proven. One cannot prove a universal negative. Alternatively, the existence of God is provable.
- The concept, design, and intricate details of our world **necessitate an intelligent designer**.
- Both direct and indirect evidence for God's existence are well known and well documented. Nothing in history is better known or better documented than the birth, life, death, and resurrection of Jesus Christ. We even use the year of His birth as the basis for our calendar. He perfectly matched the over 100 unique Messianic prophecies in the Old Testament regarding His birth, life, death, and resurrection. The laws of probability cannot give us a reasonable explanation for either the Messianic predictions or the resurrection, let alone both by the same person. C. S. Lewis stated that Jesus couldn't have just been a good teacher. He was either a liar, lunatic, or Lord. He didn't even come close to meeting the profile of a liar or lunatic, so He had to be God.

❍ **Dr. Anu Bishnoi**
MSc., PGDEM,Ph.D. (Chemistry)
Hisar (Haryana)

वैश्विक सामाजिक बुराई नशा और गुरु जाम्भो जी का चिंतन

सामाजिक कुरीति : नशावृति प्रस्तावना

मनुष्य सदैव सुखी रहने की इच्छा करता है। इस इच्छा की पूर्ति धर्म द्वारा होती है। महर्षिणाद के अनुसार जिस आचारण के द्वारा मनुष्य की इस लोक में पूर्ण उन्नति और परलोक में सहमति प्राप्त हो उस विधान को धर्म कहते हैं अर्थात् धर्म मानव जीवन की एक उत्तम राह है जिसका अनुसरण कर मनुष्य अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जब जब होय धर्म की हानि, तब लेते विष्णु अवतार अर्थात् जब - मनुष्य ईश्वरीय विधान का उल्लंघन करके मनमाना आचरण करने लगता है तब परमपिता परमात्मा अपनी प्रतिज्ञानुसार अवतार धारण कर अपना विधान मानव के सामने प्रस्तुत करते हैं, जो मानव कल्याण का सुगम पंथ होता है जिसे शास्त्रीय भाषा में पंथ कहा जाता है। ऐसा ही पंथ 15वीं सदी में 'गुरु जंभेश्वर भगवान ने मरूभूमि में अवतार लेकर स्थापित किया जिसे बिश्नोई पंथ कहा जाता है। इस पंथ में मानव कल्याण का सच्चा स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। इस पंथ में 29 नियमों की आचार संहिता है जो मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है।

विश्नोई पंथ की 29 नियमों की आचार संहिता में वेद, दर्शन, पुराण, स्मृतियां इत्यादि समस्त धर्मशास्त्रों का निचोड़ है जो आज के भौतिक युग में भ्रमित मानव को सच्ची राह दिखाने की सामर्थ्या रखते हैं। सबदवाणी के सबद संख्या 39 में कहा गया है, ''सहज सुपंथू मरतक मोक्ष दवारूं'' अर्थात् 29 नियमों को धारण करने वाला व्यक्ति स्वभाव से ही उत्तम मार्ग का अनुसरण करता है और शरीर छूटने पर मोक्ष को प्राप्त होता है। बीस और नौ (उनतीस) निमयों की पालना करने के कारण ही इस पंथ को विश्नोई पंथ की संज्ञा दी गई है। साहबरामजी राहड़ ने जंभसागर के प्रकरण संख्या - 7 में पृष्ठ सं. 95 पर लिखा है, ''प्रियहू वचन कहूं तुम सारे। नव अरू बीस धरम उर धारे।।'' इसी प्रकार स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य द्वारा लिखित पुस्तक विश्नोई दर्पण में भी लिखा है,'' विशति जब जब नियम बताये। तब से ये विश्नोई कहाये।।''

क्या सामाजिक कुरीतियां :

किसी भी समाज के व्यवस्थित संचालन के निर्धारित आचार संहिता नियम या विधान कहलाते हैं जिनका पालन उस समाज या पंथ के सदस्य अनिवार्यत करते हैं। जब उस सामाजिक आचार संहिता का पालन उचित ढंग से होता रहता है तो उसे रीतियां नीति कहते हैं। परन्तु जब इनका उल्लंघन होता है यानी पालना नहीं

होती है तो उन्हें कुरीति की संज्ञा दी जाती है। देशकाल और परिस्थितियों के कारण रीति का कुरीति में बदल जाना स्वाभाविक है। गुरु जांभोजी ने सबदवाणी के सातवें सबद में कहा है, ''**जा दिन तेरे होम न जाप न तप न क्रिया, जाण के भागी कपिला गाई।**'' अर्थात् गाय की सेवा न करने पर वह घर छोड़कर चली जाती है। उसी प्रकार जप तप आदि धार्मिक कर्त्तव्य छोड़ने पर व्यक्ति कष्ट उठाता है।

वर्तमान में व्याप्त सामाजिक कुरीतियां :

गुरु जांभोजी ने मध्यकालीन समाज में व्याप्त पाखण्डों और कुरीतियों का घोर विरोध किया था। पाखण्डों के प्रति सचेत करते हुए सबदवाणी के सबद संख्या - 71 में कहा है, ''**ब्राह्मण नाऊं लादण रूडा, वूता नाऊं कूत्ता। बै अपहांनै पोह बतावै, बैर जगावे सूतां। भूत प्रेती जाखा खांणी यह पाखण्ड परवाणों।**'' अर्थात् पाखण्ड और कुरीतियों का सहारा लेने वाले लोग स्वयं अज्ञानी हैं तथा अन्य लोगों को भ्रम में डालने वाले हैं। उनसे तो गधे और कुत्ते भी अच्छे हैं जो निष्काम भाव से अपने स्वामी की सेवा करते हैं। जो पाखण्डी तांत्रिक स्वयं भूदेवता कहलाकर अपनी तांत्रिक क्रियाओं द्वारा शमशान भूमि में जाकर सोये भूत जगाते हैं और दुनियां को मुक्ति का मार्ग दिखाने का झूठा ढोंग रचते हैं, उनसे बड़ा पाखण्डी कोई नहीं है। भूत प्रेतों की सेवा करना, शमशान में साधना करना ये सब महापाखण्ड के प्रमाण हैं।

गुरु जाम्भोजी ने विश्नोई पंथ के लोगों को झूठ पाखण्ड, जादू-टोना, नशावृत्ति इत्यादि सभी बुराइयों से दूर रहने का उपदेश दिया था। जिन बुराइयों को दूर करने का गुरु जांभोजी ने 29 नियमों में उपदेश दिया था, उन्हीं बुराइयों में आज समाज फंसा हुआ है। फिर विश्नोई पंथ के अनुयायी फंसते नजर आ रहे हैं। सबदवाणी में कहा भी है - ''**भवंता ते फिरंता फिरंता ते भंवता।**'' अर्थात् अज्ञानता वश भ्रम में पड़े हुए निरन्तर भटक रहे हैं व्यर्थ में इधर-उधर चक्कर काट रहे हैं। कलयुगी नशो के फेर में फंसते जा रहे हैं। गुरु जांभोजी ने अमल खाना, शराब पीना, तमाखू खाना व पीना वर्जित किया था। 29 नियमों में कुछ बातें धारण करने की थी और कुछ छोड़ने की थी। परन्तु आज इसके विपरित हो रहा है। सबदवाणी के सबद 72 में कहा गया है'' भूलाजीव कुजीव कुलाणी'' अर्थात् जो बातें धारण करने की थी, उनको छोड़ दिया है। और जो बुराइयां छोड़ने की थी उनको धारण कर लिया है।

नशावृत्ति के कारण :

नशावृत्ति का कारण संगत का प्रभाव है। कई बार व्यक्ति संगत के कारण अफीम शराब व अन्य प्रकार का नशा करने लग जाता है। धीरे-धीरे वह लत का रूप ग्रहण कर लेता है जो छोड़ना कठिन हो जाता है तब सेवन करने वाला उसका

पक्षधर हो जाता है। नशा कभी भी फायदेमंद नहीं होता है। अफीम तथा शराब इत्यादि के लाभदायक होने का कहीं उल्लेख नहीं है। परन्तु इसके हानिकारक होने का हर कहीं उल्लेख मिलता है। यदि नशा करने वाला व्यक्ति फायदेमन्द होगा तो फिर काजू, किसमिस, बादाम आदि को कौन पूछेगा। जिस प्रकार जड़ी बूटियों से कोई अमर होता हो तो डाक्टर भी अमर रहने चाहिये। गुरु जांभोजी ने सबदवाणी के सबद संख्या 19 में कहा है, ''**जड़ियां बूटी जे जग जीवै। ता वैदां क्यूं मर जाहीं।**''

नशावृत्ति के मूल में संस्कारों की कमी भी एक महत्वपूर्ण कारक है। एक संस्कारहीन व्यक्ति उपदेशों की अपेक्षा बुराइयों का प्रभाव अधिक पड़ता है। संस्कारहीन व्यक्ति काली ऊन की भांति होता है। सबद वाणी के सबद संख्या 27 में गुरु जांभोजी ने कहा है, ''**नाना रे बहु रंग न सचै काली ऊन कुजीऊं।**'' अर्थात् संस्कारहीन (नुगरा) व्यक्ति पर धार्मिक उपदेशों का प्रभाव उसी भांति नहीं पड़ता, जिस प्रकार काली ऊन पर अन्य रंग नहीं चढ़ता।

सबद संख्या 57 में कहा गया है, **घट ऊंधै बरसत बहु मेहा नीर थयो पण खालूं।**'' अर्थात् अपार वर्षा के बावजूद ऊंचा रखा हुआ एक घड़ा खाली ही रहता है, उसी प्रकार एक (नुगरा) संस्कारहीन व्यक्ति अपने अहं (नशे) को छोड़ नहीं पाते वे सामाजिक कुरीतियों के शिकार होते हैं। जिस प्रकार एक सड़े हुए फल को ताजे फलों के साथ रखने पर वे भी सड़ने लगते हैं उसी एक सामाजिक बुराई पनपने पर अन्य को बढ़ावा मिला है।

नशावृत्ति से हानियां

नशावृत्ति में गुण एक भी नजर नहीं आता परन्तु अवगुण (हानियां) अनेक हैं। यदि नशे का आदि व्यक्ति इनके अवगुणों को समझ लें तो फिर वह कभी इसका सेवन नहीं कर सकता है। परन्तु उसके हृदय पर अज्ञानता रूपी बोझ के कारण समझने उसके वश की बात नहीं है। सबदवाणी के सबद संख्या - 35 में कहा गया है, नुगरां के मन भय अंधेरो.....।'' अर्थात संस्कारहीन व्यक्ति के मन में अंधेरा छा जाता है, जिससे उसको इन नशों की हानि का मान नहीं होता है। मोटे तौर पर नशावृत्ति से होने वाली हानि इस प्रकार है :

1. शारीरिक हानि

अमल तमाखू, भांग, शराब आदि नशीले पदार्थों के सेवन से बुद्धि मंद हो जाती है। शरीर में शक्ति कम हो जाती है। वात व पीत बढ़ जाते हैं तथा पेट की आंते खराब हो जाती हैं। पाचन शक्ति कमजोर पड़ जाती है। शरीर में आलस्य आ जाता है।

2. आर्थिक हानि :

नशीले पदार्थों रूप से हानिकारक हो जाता है। अफीम शराब इत्यादि का

आदि हो जाने पर घर में गरीबी आने लगती है। आलस्य के कारण घर व बाहर के काम धंधे बन्द हो जाते हैं। धन संपति बेचनी पड़ती है। अपनी तथा घर परिवार की इज्जत रखना कठिन हो जाता है।

3. शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ना

नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्ति का परिवार शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ जाता है। अफीम व शराब का सेवन करने वाला व्यक्ति अपने बाल बच्चों की शिक्षा की तरफ ध्यान नहीं दे सकता। क्योंकि उसकी पहली प्राथमिकता अफीम शराब आदि की आपूर्ति होती है, शिक्षा की तरफ उसका ध्यान नहीं जाता है। उसके बच्चे दर-दर की ठोकरें खाते फिरते रोटी कपड़ा व शिक्षा के मोहताज होते हैं।

4. अपराध प्रवृत्ति को बढ़ावा

नशे की दुनियां में अपराधियों का जन्म होता है। कोई भी नशा सस्ता नहीं होता है। अफीम शराब, स्मैक आदि महंगे नशे होते हैं। धनवान व्यक्ति तो मन बहलाने के लिए नशा करते हैं तो वे समर्थ हो सकते हैं। मगर आम आदमी तो दो वक्त की रोटी भी मुश्किल से जुटा पाते हैं। गरीब लोग जो नशे के आदि हो जाते हैं उनके लिए परिवार का खर्चा चलाना व नशे का प्रबन्ध करना मुश्किल हो जाता है। ऐसे लोगों के लिए धन संकट आने पर वे धनी लोगों की ओर देखते है। ''धनवान व्यक्ति मांगने से नहीं, बल्कि छिनने से ही धन दे सकते हैं।'' यही सोचकर नशेड़ी व्यक्ति बन्दूक या पिस्तौल उठाकर उन्हें लूटना प्रारंभ करते हैं और थोड़े नशे वाला जेब काटना प्रारंभ करता है। इस प्रकार से अपराधी को नया रास्ता मिल जाता है और उसकी आपराधी दुनियां का द्वार खुल जाता है। फिर उन्हें इस जीवन से मुक्ति नहीं मिलती है। कई बार जेल की हवा भी खानी पड़ती है। जेल काटकर आने पर पक्के अपराधी बन जाते हैं, उनको अपराधी जीवन का पंजीकरण प्रमाण पत्र मिल जाता है।

5. नशे के व्यापार से सेवन की आदत

कुछ लोग अफीम, भांग, शराब, गांजा, स्मैक आदि की तस्करी करते हैं और धीरे-धीरे उन नशीले पदार्थों का सेवन करना भी प्रारंभ कर देते हैं। जिस प्रकार खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है उसी प्रकार नशे का असर बढ़ता रहता है।

6. धनमद व राजमद से नशावृत्ति को बढ़ावा

धनमद व राजशक्ति भी एक नशा है। इनके सामने नियम, कायदे, सामाजिक रीति-रिवाज, परंपराएं आदि गौण हो जाते हैं। वे अपने प्रभाव का उपयोग कर अपराध प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं। इससे उनका हौंसला बुलन्द होता है तथा बड़े

आपराधिक काण्ड होते हैं जिससे पूरे पंथ को शर्मसार होना पड़ता है।

7. पाप का भागीदार बनना

नशे का आदि व्यक्ति अपने अपराध तथा अन्य लोगों के अपराध के पाप का भागीदार बनता है। वह होली दीपावली तथा शदी विवाह के अवसर पर स्वयं नशा करता है तथा अन्य लोगों को भी प्रोत्साहित करता है। क्योंकि इन शुभ अवसरों पर किये गये शुभा-शुभ कार्यों का फल अधिक ही होता है। इन दिनों नशीले पदार्थों का सेवन करना भारी भूल है तथा पाप की गठरी का बोझ बढ़ता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नशावृत्ति की बुराइयों का अन्त नहीं है। अर्थात् वे अनन्त है। गुरु जांभोजी ने सबदवाणी के सबद संख्या 42 में कहा है **''निश्चै कायो बांयो होयसी। जे गुरु बिन खेल पसारी।''** अर्थात् गुरु के संरक्षण के बिना और बिना ज्ञान प्राप्त किये अज्ञान अवस्था मे ंजो कार्य किया जाता है, इसका परिणाम हितकारी नहीं, बल्कि वह निश्चय ही छिन्न-भिन्न हो जाता है। सामाजिक कुरीतियों एवं नशावृति का प्रचलन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

नशा एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु करणीय उपाय

विश्नोई पंथ में संस्कारों का विशेष महत्व है। प्राचीन समय में संस्कारों का ही प्रभाव था जिससे प्रेरित होकर वृक्षों की रक्षार्थ एवं वन्य जीवों की रक्षार्थ विश्नोई पंथ के लोगों ने अपने जीवन का बलिदान देकर विश्व के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किये। इस पंथ से सुगरा संस्कार का विशेष महत्व है। इसी प्रकार जन्म संस्कार का भी विशेष महत्व है। ये दोनों संस्कार अन्य संस्कारों के मूल हैं। क्योंकि 29 निमयों की आचार संहिता इन्हीं दो संस्कारों पर निर्भर है।

परन्तु अफसोस का विषय है कि वर्तमान समय में विश्नोई पंथ में सुगरा संस्कार में शिथिलता आ रही है जिसके चलते इस पंथ में सामाजिक कुरीतियों एवं बुराइयों का प्रवेश हो रहा है जिनमें नशावृत्ति अपनी जड़ें काफी पुष्ट कर चुकी हैं। वर्तमान समय में विश्नोई पंथ में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों एवं नशावृति के उन्मूलन हेतु निम्नांकित उपाय किये जाने की महती आवश्यकता है

1. संस्कारों पर विशेष ध्यान

विश्नोई पंथ में पहला संस्कार जन्म संस्कार होता है जो बच्चे के जन्म के 30वें दिन संपन्न होता है। इस संस्कार के साथ ही जीव रक्षा, वृक्ष रक्षा एवं दया धर्म के संस्कार भी संपन्न हो जाते हैं। जिस प्रकार एक छोटे-पेड़ की जड़ें गहरी हो जाने पर वह बड़ा वृक्ष बन जाता है, उसी प्रकार जन्म संस्कार की जड़े मजबूत होने पर अन्य संस्कार स्वत: ही मजबूत हो जाते हैं। इस पंथ का दूसरा संस्कार सुगराकरण संस्कार होता है। यह संस्कार विश्नोई पंथ का मेरूदण्ड कहा जा सकता है। वर्तमान समय में पंथ में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों एवं बुराइयों के उन्मूलन हेतु इस पर

विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। विश्नोई पंथ रूपी खेत में पंथ के कर्णधारों को (जिनमें सामाजिक कार्यकर्ता साधुसन्त, साहित्यकार इत्यादि को) संस्कारों की खेती करके सामाजिक कुरीतियों, बुराइयों एवं नशावृति रूपी अकाल पर नियंत्रण करके विश्नोई पंथ की 29 नियमों की आचार संहिता को पुष्ट करना होगा।'' सांझे जम्मो सवेरे थापण'' अर्थात् सायंकाल के समय सत्संग हरि भजन करना तथा सवेरे हवन थरपना करना संस्कारों को पुष्ट करने के संकेत हैं। एक अन्य सबद में कहा गया है''**भल मूल सींचो रे प्राणी, ज्यूं तरवर मेलत डालूं।**'' अर्थात् जिस प्रकार वृक्ष की जड़ों को सींचने से उसकी डाल बढ़ती है। उसी प्रकार समाज में प्रारंभिक संस्कार व्यक्ति भावी जीवन की आचार संहिता को पुष्टता प्रदान करते हैं जिससे वह संस्कारवान व्यक्ति समाज में सुपंथ की ओर बढ़ता है। यदि प्रारंभ से ही हमारे संस्कार मजबूत होंगे तो कुरीतियों व बुराइयों तथा नशावृति को पंथ में प्रवेश करने का रास्ता ही नहीं मिलेगा।

2. प्राचीन सामाजिक पंचायत व्यवस्था को कायम करना

सन्त विल्होजी ने गुरु जाम्भो जी के वैश्विक चिंतन के प्रचार हेतु विश्नोई पंथ में सामाजिक पंचायत का गठन किया था तथा सन्त केसोजी ने हेलो प्रथा प्रारंभ की थी। विल्होजी के समय संपूर्ण भारत में विश्नोई पंथ की पंचायत के पांच केन्द्र जांभा, जांगलू, लोहावट, रामड़ावास तथा लोदीपुर-नगीना इत्यादि थे। इनके अन्तर्गत देश के विभिन्न भागों में रहने वाले विश्नोई गांव आते थे। विश्नोई पंथ से संबंधित जो कोई भी विवाद का विषय होता था, उसका निर्णय इस पंचायत द्वारा किया जाता था। इसका कार्य पंथ के नियमों के विपरित कार्य करने वालों के जुर्माना लगाना तथा हेला देना (यानी पंथ से बहिष्कृत करना) आदि था। परन्तु आज इनका महत्व कम हो गया, जिससे समाज में कुरीतियों व बुराइयों का प्रवेश हो गया है। क्योंकि गलती करने वालों को दण्ड का भय नहीं है।

वर्तमान समय में इस पुरानी पंचायती व्यवस्था को पुनः पुष्ट करने की आवश्यकता है ताकि सामाजिक कुरीतियों एवं बुराइयों पर नियंत्रण किया जा सके तथा गुरु जाम्भो जी के नशा विरोध विषयक वैश्विक चिंतन का अधिकाधिक प्रचार हो।

❍ **मास्टर बंशीलाल विश्नोई (ढाका)**
(पीएच-डी. शोधरत) वरिष्ठ अध्यापक
सदस्य - अखिल भारतीय विश्नोई महासभा
गुरु जम्भेश्वर मार्ग, इन्द्रा कालोनी, बाड़मेर (राजस्थान)

भूली बिसरी जांभाणी विरासतें

गुरु जंभेश्वर जी महाराज ने परिव्रज्या काल में विश्व के अनेकों देशों और भारत के अनेकों प्रान्तों, शहरों, नगरों, तीर्थों का भ्रमण किया था। भ्रमण करते हुए राजस्थान राज्य के अनेकों स्थानों पर आप पधारे थे। बहुत से ऐसे स्थान हैं, जो हमें ज्ञात है परन्तु अनेक ऐसे स्थान भी हैं, जिसके बारे में हमें आज दिन तक भी जानकारी नहीं हैं।

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज ने तथाकथित ब्राह्मणवाद से उत्पीड़ित धर्म से पद दलित लोगों को वैदिक धर्म की राह पर लाने के लिए पिछड़े एवं आदिवासी क्षेत्रों का सघन भ्रमण कर धर्म जागरण किया। गुरुदेव कुछ समय तक वहां रहकर ज्ञानोपदेश के बाद आगे प्रस्थान कर देते थे। अनपढ़ व अल्पज्ञानी होने के कारण धर्मोपदेशों को तो लोग भूल गए, परन्तु श्रद्धा के कारण उस स्थान पर मन्दिर बनाकर पूजा पाठ शुरू कर दिया करते थे तथा उक्त स्थान जांभेश्वर महादेव के नाम से प्रसिद्ध हो गये। परन्तु लम्बे समय तक जाम्भाणी संतों के उस क्षेत्र में नहीं पहुंचने एवं बिश्नोई आबादी नहीं होने के कारण वहां जांभाणी परम्पराएं धीरे-धीरे लुप्त हो गई और पुनः रूढ़िवादी मान्यताएं प्रचलन में आ गई, जो आज जांभाणी परम्पराओं से बिल्कुल ही मेल नहीं खाती हैं। जिससे लगता है कि गुरु जांभोजी महाराज का उनसे कभी कोई सम्पर्क भी रहा होगा।

भीलवाड़ा के क्षेत्र समेलिया में गुरु जंभेश्वर जी महाराज का मन्दिर आज भी विद्यमान है और वहां पर बिश्नोई आबादी भी है। जो हमारे जानकारी एवं सम्पर्क में है। परन्तु उदयपुर, सिरोही, बाड़मेर जिलों के आदिवासी क्षेत्रों में भी जांभेश्वर महादेव अथवा जांभाजी महादेव के मन्दिर आज भी मौजूद हैं किन्तु हमारी जानकारी में नहीं हैं तथा वहां पर बिश्नोई आबादी भी नहीं है। वहां के स्थानीय एवं आदिवासी लोग इन मन्दिरों में परम्परागत तरीके से पूजा-पाठ करते हैं। पिछले कुछ वर्षों से इस दिशा में कुछ सार्थक पहल एवं अनुसंधान हुए हैं। ऐसे कुछेक स्थानों का विवरण यहां प्रस्तुत है-

(1) जांभेश्वर महादेव- झामर, कोटड़ा मांईस उदयपुर

उदयपुर जिला मुख्यालय से करीब 25 कि.मी. दक्षिण में झामरी नदी के तट पर पहाड़ी की खोह में 'जम्भेश्वर महादेव' का मन्दिर है, जिसे स्थानीय आदिवासी लोग 'झाभेश्वर महादेव' के नाम से पुकारते हैं, जिसके चारों ओर

पहाड़ियां ही पहाड़ियां हैं। सैकड़ों वर्षों से यह स्थान आदिवासी लोगों की आस्था का केन्द्र बना हुआ है। स्थानीय आदिवासी कहते हैं कि यहां पर जंबुक मुनि ने तपस्या की थी, जिसे इस तीर्थ का नाम जांबेश्वर महादेव पड़ गया जिसे कालान्तर में जांभेश्वर महादेव कहा जाने लगा।

प्रतिवर्ष वैशाख पूर्णिमा के मौके पर यहां मेला लगता है, जो किसी बनवासी कुंभ से कम नहीं होता है। यहां के आदिवासी अपने हाथों से रंग-बिरंगी पताकाएं लेकर आते हैं और रातभर तंबूरे की तान पर जांभेश्वर महादेव के गुणगान करते हैं। यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने एवं अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए दूर-दराज से श्रद्धालु एवं पर्यटक आते हैं तथा झामर नदी में डुबकी लगातार कुंभ के गंगा स्नान का पुण्य प्राप्त करते हैं।

पहाड़ियों से गिरते जल प्रपात, नदी की बहती जलधारा और प्राकृतिक एवं वन्य जीवों का निर्भय विहार सौन्दर्य में चार चांद लगा देता है। वर्षा ऋतु में तो यहां कुदरत राग मेघ मल्हार गाती है, अन्य ऋतुएं भी अपना बारह मासा पूरा करती हैं। यह संयोग ही है कि इस क्षेत्र में जो चट्टानें मिली हैं, वे विश्व में बहुत पुरानी शैल श्रृंखलाओं वाली हैं। इन चट्टानों के अध्ययन के लिए कई देशी-विदेशी अध्येता, यहां आते-जाते रहते हैं और शोध जर्नल्स में अपने आलेख दे चुके हैं। यहां का बागदड़ा नेचर पार्क तो पर्यटकों का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है। यहीं पास में झामर कोटड़ा मांइस है जो कि राक फास्फेट के लिए प्रसिद्ध है। कुछ सालों पहले यहां आंतरिक जल स्रोत में ऐसी दुर्लभ मछलियां देखी गई थी जो कि हिमालय क्षेत्र में पाई जाती हैं। कुछ लोगों की मान्यता है कि झामर नदी लुप्त वैदिक सरस्वति नदी का प्रकट स्वरूप है।

(2) जांभेश्वर महादेव- वासा, रोहिड़ा, जिला सिरोही, राजस्थान

राजस्थान के सिरोही जिले की अरावली पर्वतमालाओं की हरीभरी वादियों में राजस्थान के एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल माउण्ट आबू से करीब 22 कि.मी. पूर्व में आदिवासी क्षेत्र रोहिड़ा के पास वासा गांव में 'जांबाजी महादेव' का अति प्राचीन, विशाल एवं भव्य मन्दिर बना हुआ है।

स्थानीय लोगों के अनुसार यह मन्दिर आज से लगभग 400 वर्ष से भी अधिक पुराना है। कहते हैं कि जांबाजी महादेव के भक्त एवं चंदावती नगरी के राजा योगीराज धरावर्षादेव ने इसका निर्माण करवाया था। 1937 में इस मन्दिर का

जीर्णोद्धार करवाया गया। इस मन्दिर में जांबाजी महादेव, पार्वती देवी, सूर्य, गणेश, गरुड़, हनुमान, कामधेनु, नंदीश्वर आदि की मूर्तियां तथा शिवलिंग की स्थापना की हुई है। पास में विशाल जम्भसरोवर तालाब, औरण प्राचीन कुआं एवं बावड़ी स्थित है। इस तालाब में स्नान करना गंगा स्नान के समान माना जाता है।

स्थानीय लोगों की मान्यता के अनुसार 'जांबा जी' ऋषि ने यहां तपस्या की थी। जिससे इसका नाम जांबेश्वर महादेव पड़ गया। प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि एवं पूरे सावन माह में अनेकों श्रद्धालु तथा देशी-विदेशी पर्यटक यहां आते हैं। विशाल मन्दिर परिसर, यज्ञशाला, भोजनशाला एवं अनेकों धर्मशालाएं बनी हुई हैं। आदिवासी क्षेत्र होते हुए भी जांबाजी महादेव के विस्तृत औरण पहाड़ी क्षेत्र में पेड़ों की कटाई और वन्य जीवों का शिकार निषेध की ससख्त परम्परा आज भी कायम है।

(3) बिश्नोईवाला- बन्धड़ा, जि. बाड़मेर (राज.)

बाड़मेर जिला मुख्यालय से लगभग 50 कि.मी. पश्चिम में बाड़मेर-जैसलमेर सीमा पर बाड़मेर जिले का बन्धड़ा गांव है। बन्धड़ा गांव के एक क्षेत्र विशेष को 'बिश्नोईवाला' के नाम से पुकारा जाता है। वर्तमान में वहां पर दूर-दूर तक कहीं भी बिश्नोई जाति की कोई आबादी नहीं है। स्थानीय लोगों से पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि किसी जमाने में इस क्षेत्र में बिश्नोई जाति के लोग रहा करते थे। इस वजह से इस क्षेत्र का नाम 'बिश्नोईवाला' पड़ गया। यह गांव वर्तमान में बाड़मेर जिले का भाग है। परन्तु पहले यह जैसलमेर जिले का भाग हुआ करता था। वहां निवास करने वाले बिश्नोइयों से जैसलमेर का राजा लगान नहीं लिया करता था।

ज्ञात हुआ है कि आलम जी गायणा को जैसलमेर राजा ने एक संगीत प्रतियोगिता से प्रसन्न होकर बन्धड़ा गांव जागीर में दिया था। कालान्तर में आलम जी साधु बन गए तथा बन्धड़ा गांव छोड़कर चले गए तथा यह क्षेत्र पुनः भाटी राजपूतों के अधिकार क्षेत्र में आ गया। परन्तु जैसलमेर राजा द्वारा गांव दान में दी गई जागीर होने के कारण इस क्षेत्र पर भाटियों ने काश्त नहीं की तथा अन्य किसी को काश्तकारी हेतु नहीं दी। इस कारण यह क्षेत्र आज भी बंजर पड़ा हुआ है। यहां पर भाटी राजपूत अपना मात्र गोवंश चराया करते हैं।

बन्धड़ा गांव का यह बंजर क्षेत्र आज भी गैर आबाद एवं वीरान पड़ा है। फिर भी स्थानीय लोग आज भी इसे 'बिश्नोई वाला' के नाम से पुकारते हैं। स्थानीय लोग इस क्षेत्र में गाएं चराते हैं। परन्तु लकड़ी काटना तथा शिकार करना

आज भी वर्जित है।

(4) आलम जी का मन्दिर- रडु व धोरीमना, जिला बाड़मेर

बाड़मेर जिले के धोरीमना पश्चिम क्षेत्र में, धोरीमना पर्वत तथा निकट स्थित रडु गांव में आलम जी का विशाल मन्दिर बने हुआ है। कालान्तर में आलम जी गायणा बन्धड़ा छोड़ धोरीमना पहाड़ स्थित पाण्डवों की गुफा में रहकर तपस्या करने लगे तथा बाद में रडु गांव के धोरों पर कुटिया बना कर रहने लगे। आलमजी के संसार त्यागने के बाद स्थानीय लोगों ने आलमजी की तपोस्थली पर पूजा पाठ तथा मनौतियां मांगना शुरू कर दिया जिससे ये स्थान प्रसिद्ध हो गए तथा मन्दिर आदि बना दिए गए। धोरीमना के मन्दिर पर कामड़िया मेघवाल तथा रडु मन्दिर पर जाट तथा रेवारी जाति के लोगों ने पूजा शुरू कर दी। जिसके बाद आज भी धोरीमना मन्दिर पर कामड़िया तथा रडु मन्दिर पर दशनामी साधुओं का अधिकार है। जिस समय आलम की महाराज ने इस क्षेत्र में घूम कर धर्म जागरण किया था, उस क्षेत्र में वर्तमान में बिश्नोइयों की सघन आबादी है। फिर भी हम हमारी विरासत को पहचान नहीं पा रहे हैं तथा चिन्तन मंथन भी नहीं कर पा रहे हैं। बिश्नोई समाज के सिवाय अन्य किसी भी समाज में आलम नाम का कोई व्यक्ति, साधु अथवा देवता नहीं हुआ है।

(5) गायणा भाखर- गांव डण्डाली, त. सिणधरी, जि. बाड़मेर (राज.)

बाड़मेर जिले की सिणधरी तहसील के डण्डाली गांव के पास स्थित पहाड़ को 'गायणा भाखर' कहते हैं। इस क्षेत्र में अधिकतर आबादी जाटों की है, परन्तु करना तथा भूंखा गांव में बिश्नोई रहते हैं। ज्ञात हुआ है कि इस पहाड़ में केसो जी नाम का एक गायणा रहता था जो बाद में साधु बन गया। साधु इस पहाड़ में रहकर संगीत, साधना किया करता था। हर समय पहाड़ में संगीत लहरियां निकलती रहती थी। करना तथा भूंखा गांव के बिश्नोई लोग इस साधु के लिए दूध तथा रसोई पहुंचाया करते थे। तब स्थानीय जाट समाज के लोग उनसे पूछते थे कि पहाड़ में तुम लोग किसके रसोई पहुंचाते हो। तब बिश्नोई लोगों ने बताया कि इस पहाड़ में एक साधु रहता उसके हम रसोई पहुंचाते हैं। इस कारण स्थानीय लोगों में पहाड़ को गायणा भाखर नाम से जाना जाने लगा।

कालान्तर में साधु ने अपना शरीर त्याग दिया परन्तु वहां संगीत साधना का कार्य अनवरत चलता रहा। लोगों के अनुसार आमवस्या के दिन निर्जन पहाड़ में स्वर लहरियां गूंजने लगती थी। स्थानीय लोगों ने माना कि साधु की आत्मा आज

भी पहाड़ में भटक रही है। अत: कोतुहलवश लोगों ने अमावस्या के दिन पहाड़ में जाकर इस रहस्य से पर्दा हटाना चाहा। जिससे स्वर लहरियां तो बन्द हो गई परन्तु अमावस्या की काली रात को पहाड़ में प्रकाश होने लगा लगा। जिससे लोग उसे गायणा भाखर की जगह चानणा भाखर कहकर पुकारने लगे। यह अलौकिक चमत्कार आज भी अमावस्या की रात को होता है। ऐसी स्थानीय लोगों की मान्यता है।

मेरा बिश्नोई समाज से विनम्र निवेदन यह है कि अपनी अज्ञात एवं भूली बिसरी विरासत को पुन: संजोने एवं संवारने का समय आ गया है। इस ओर व्यापक एवं ईमानदार प्रयास करने की अति आवश्यकता है।

❍ **उदयराज खिलेरी,** अध्यापक
मेघावा, पो. वीरावा, सांचोर, जालोर (राज.) मो. 9828751199